Hkx̀wlfgrk

Qfyr izdk'k

विषय-सूची

प्रथम प्रकरण
(आवश्यक जानकारियां)

द्वितीय प्रकरण
(बारह लग्नों की कुंडलियों का फलादेश)

मेष लग्न

वृषभ लग्न

मिथुन लग्न

कर्क लग्न

सिंह लग्न

कन्या लग्न

तुला लग्न

वृश्चिक लग्न

धनु लग्न

मकर लग्न

कुंभ लग्न

मीन लग्न

तृतीय प्रकरण
(ग्रहों की युति, उच्च-नीच स्थिति, महादशा, विशिष्ट योग आदि)

स्त्री-जातक

आवश्यक चक्र एवं कोष्ठक आदि

भृगु संहिता फलित प्रकाश

प्रथम प्रकरण

(आवश्यक जानकारियां)

विश्वसृड् नारदो व्यासो वसिष्ठोऽत्रिः पराशरः।
लोमशो यवनः सूर्यश्च्यवनः कश्यपो भृगुः॥
पुलस्त्यो मनुराचार्यः पौलिशः शौनकोऽङ्गिरा।
गर्गो मरीचिरित्येते ज्ञेया ज्योतिःप्रवर्त्तकाः॥

* * * *

म्लेच्छा हि यवनास्तेषु सम्यक् शास्त्रमिदं स्थितम्।
ऋषिवत्तेऽपि पूज्यन्ते किं पुनर्दैवविद् द्विजः॥

प्रारंभिक-ज्ञातव्य

इस पुस्तक की सहायता द्वारा जन्म-कुंडली स्थित विभिन्न ग्रहों के शुभाशुभ फल की जानकारी करने से पूर्व द्वादश राशि (मेष, वृष आदि) तथा नवग्रहों (सूर्य, चंद्र आदि) से संबंधित कुछ प्रारंभिक विषयों का ज्ञान प्राप्त कर लेना आवश्यक है। अस्तु, इस प्रकरण में पहले उन्हीं विषयों का वर्णन किया जा रहा है।

तिथियां

ज्योतिषशास्त्र में चंद्रमा की एक कला को तिथि माना जाता है। तिथियों की गणना शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से आरंभ होती है। अमावस्या के बाद की प्रतिपदा से लेकर पूर्णिमा तक की तिथियां शुक्ल पक्ष की तथा पूर्णिमा के बाद की प्रतिपदा से आरंभ करके अमावस्या तक की तिथियां कृष्ण पक्ष की होती हैं। इस प्रकार एक महीने में दो पक्ष होते हैं—(१) शुक्ल पक्ष और (२) कृष्ण पक्ष। दोनों पक्षों की पूर्णिमा और अमावस्या के अतिरिक्त अन्य तिथियों के नाम एक जैसे होते हैं, वे निम्नलिखित हैं :

प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी और चतुर्दशी। चतुर्दशी के बाद शुक्ल पक्ष की पंद्रहवीं तिथि को 'पूर्णिमा' तथा कृष्ण पक्ष की तीसवीं तिथि को 'अमावस्या' कहा जाता है।

तिथियों को १, २, ३ आदि अंकों के रूप में लिखा जाता है। पूर्णिमा तक यह क्रम 15 की संख्या तक चलता है, परंतु उसके बाद पुनः १, २, ३ आदि लिखा जाता है और जिस दिन अमावस्या होती है, उस दिन अमावस्या तिथि को ३० के अंक के रूप में लिखा जाता है।

निम्नलिखित चक्र में शुक्ल पक्ष तथा कृष्ण पक्ष की तिथियों के अंक प्रदर्शित किए गए हैं :

तिथिबोधक चक्र

तिथियों के अंक	कृष्ण पक्ष	तिथियों के अंक	शुकल पक्ष
१	प्रतिपदा	१	प्रतिपदा
२	द्वितीया	२	द्वितीया
३	तृतीया	३	तृतीया
४	चतुर्थी	४	चतुर्थी
५	पंचमी	५	पंचमी
६	षष्ठी	६	षष्ठी
७	सप्तमी	७	सप्तमी
८	अष्टमी	८	अष्टमी
९	नवमी	९	नवमी
१०	दशमी	१०	दशमी
११	एकादशी	११	एकादशी
१२	द्वादशी	१२	द्वादशी
१३	त्रयोदशी	१३	त्रयोदशी
१४	चतुर्दशी	१४	चतुर्दशी
३०	अमावस्या	१५	पूर्णिमा

तिथियों के स्वामी

प्रतिपदा तिथि के स्वामी अग्नि, द्वितीया के ब्रह्मा, तृतीया की गौरी, चतुर्थी के गणेश, पंचमी के शेषनाग, षष्ठी के कार्तिकेय, सप्तमी के सूर्य, अष्टमी के शिव, नवमी की दुर्गा, दशमी के काल, एकादशी के विश्वेदेवा, द्वादशी के विष्णु, त्रयोदशी के कामदेव, चतुर्दशी के शिव, पूर्णमासी के चंद्रमा तथा अमावस्या के पितर हैं।

तिथियों के शुभाशुभ का ज्ञान प्राप्त करते समय उनके स्वामियों के संबंध में विचार किया जाता है। जिस तिथि के स्वामी का जैसा स्वभाव है, वही स्वभाव उस तिथि का भी होता है।

नक्षत्र

आकाश-मंडल में असंख्य तारिकाओं के समूहों द्वारा जो विभिन्न प्रकार की आकृतियां बनती हैं, उन्हीं आकृतियों, अर्थात् ताराओं के समूह को 'नक्षत्र' कहा जाता है।

जिस प्रकार पृथ्वी पर स्थान की दूरी फर्लांग, मील अथवा किलोमीटरों में नापी जाती है, उसी प्रकार आकाश-मंडल की दूरी को नक्षत्रों द्वारा ज्ञात किया जाता है।

ज्योतिषशास्त्र ने संपूर्ण आकाश-मंडल को सत्ताईस भागों में विभाजित किया है और प्रत्येक भाग का नाम एक-एक 'नक्षत्र' रख दिया है। नक्षत्रों के नाम इस प्रकार हैं—

(१) अश्विनी, (२) भरणी, (३) कृत्तिका, (४) रोहिणी, (५) मृगशिरा, (६) आर्द्रा, (७) पुनर्वसु, (८) पुष्य, (९) आश्लेषा, (१०) मघा, (११) पूर्वाफाल्गुनी, (१२) उत्तराफाल्गुनी, (१३) हस्त, (१४) चित्रा, (१५) स्वाति, (१६) विशाखा, (१७) अनुराधा, (१८) ज्येष्ठा, (१९) मूल, (२०) पूर्वाषाढ़ा, (२१) उत्तराषाढ़ा, (२२) श्रवण, (२३) धनिष्ठा, (२४) शतभिषा, (२५) पूर्वाभाद्रपद, (२६) उत्तरा भाद्रपद और (२७) रेवती।

उक्त सत्ताईस नक्षत्रों के अतिरिक्त 'अभिजित्' नामक एक अट्ठाईसवां नक्षत्र भी माना जाता है। उत्तराषाढ़ा की अंतिम पंद्रह घटी तथा श्रवण के प्रारंभ की चार घटी—इस प्रकार कुल उन्नीस घटियों के मान वाला नक्षत्र 'अभिजित्' है। सामान्यत: एक नक्षत्र की साठ घटी होती है।

नक्षत्रों के स्वामी

अश्विनी नक्षत्र के स्वामी अश्विनी कुमार, भरणी के काल, कृत्तिका के अग्नि, रोहिणी के ब्रह्मा, मृगशिरा के चंद्रमा, आर्द्रा के रुद्र, पुनर्वसु के अदिति, पुष्य के बृहस्पति, आश्लेषा के सर्प, मघा के पितर, पूर्वाफाल्गुनी के भग, उत्तरा फाल्गुनी के अर्यमा, हस्त के सूर्य, चित्रा के विश्वकर्मा, स्वाति के पवन, विशाखा के शुक्राग्नि, अनुराधा के मित्र, ज्येष्ठा के इंद्र, मूल के निर्ऋति, पूर्वाषाढ़ा के जल, उत्तराषाढ़ा के विश्वेदेव, अभिजित् के ब्रह्मा, श्रवण के विष्णु, धनिष्ठा के वसु, शतभिषा के वरुण, पूर्वाभाद्रपद के अजैकापद, उत्तराभाद्रपद के अहिर्बुध्न्य तथा रेवती के पूषा हैं। इन नक्षत्रों के स्वामियों का जैसा गुण-स्वभाव है, वैसा ही गुण-स्वभाव नक्षत्रों का भी होता है।

नक्षत्रों के चरण

ज्योतिषशास्त्र ने सूक्ष्मता से समझने के लिए प्रत्येक नक्षत्र के चार-चार भाग किए हैं, जिन्हें प्रथम चरण, द्वितीय चरण, तृतीय चरण तथा चतुर्थ चरण कहा जाता है।

नक्षत्रों के चरणाक्षर

प्रत्येक नक्षत्र के जो चार-चार चरण होते हैं, उनमें से प्रत्येक नक्षत्र के प्रत्येक चरण का एक-

एक ' अक्षर ' ज्योतिषशास्त्र ने निर्धारित कर दिया है। जिस नक्षत्र के जिस चरण में जिस व्यक्ति का जन्म होता है, उसका नाम उसी जन्मकालीन नक्षत्र के चरणाक्षर पर रखा जाता है। उदाहरण के लिए यदि किसी व्यक्ति का जन्म अश्विनी नक्षत्र के द्वितीय चरण में हुआ है, तो उसका नाम अश्विनी नक्षत्र के द्वितीय चरणाक्षर 'चे' से प्रारंभ करके 'चेतराम', 'चेतसिंह', 'चैतन्यदास' आदि रखा जाएगा। किस नक्षत्र के कौन-कौन से चरणाक्षर होते हैं, इसे आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

नक्षत्रों का चरणाक्षर बोधक चक्र

नक्षत्र का नाम		चरणाक्षर			
		प्रथम चरण	द्वितीय चरण	तृतीय चरण	चतुर्थ चरण
१	अश्विनी	चू	चे	चो	ला
२	भरणी	ली	लू	ले	लो
३	कृत्तिका	आ	ई	ऊ	ए
४	रोहिणी	ओ	बा	बी	बू
५	मृगशिरा	बे	बो	का	की
६	आर्द्रा	कू	घ	ङ	छ
७	पुनर्वसु	के	को	हा	ही
८	पुष्य	हू	हे	हो	डा
९	आश्लेषा	डी	डू	डे	डो
१०	मघा	मा	मी	मू	मे
११	पूर्वाफाल्गुनी	मो	टा	टी	टू
१२	उत्तराफाल्गुनी	टे	टो	पा	पी
१३	हस्त	पू	ष	ण	ठ
१४	चित्रा	पे	पो	रा	री
१५	स्वाति	रू	रे	रो	ता
१६	विशाखा	ती	तू	ते	तो
१७	अनुराधा	ना	नी	नू	ने
१८	ज्येष्ठा	नो	या	यी	यू
१९	मूल	ये	यो	भा	भी
२०	पूर्वाषाढ़ा	भू	धा	फा	ढा
२१	उत्तराषाढ़ा	भे	भो	जा	जी
२२	अभिजित्	जू	जे	जो	खा
२३	श्रवण	खी	खू	खे	खो
२४	धनिष्ठा	गा	गी	गू	गे
२५	शतभिषा	गो	सा	सी	सू
२६	पूर्वाभाद्रपद	से	सो	दा	दी
२७	उत्तराभाद्रपद	दू	थ	झ	ञ
२८	रेवती	दे	दो	चा	ची

वार

ज्योतिषशास्त्र के अनुसार आकाश-मंडल में शनि, बृहस्पति, मंगल, रवि, शुक्र, बुध तथा चंद्रमा—इन सातों ग्रहों की स्थिति क्रमशः एक-दूसरे से नीचे मानी गई है, अर्थात् शनि की कक्षा सबसे ऊपर है। शनि से नीचे बृहस्पति, बृहस्पति से नीचे मंगल, मंगल से नीचे सूर्य, सूर्य से नीचे शुक्र, शुक्र से नीचे बुद्ध तथा बुद्ध से नीचे चंद्रमा की कक्षा है।

एक दिन-रात में चौबीस होराएं होती हैं, अर्थात् प्रत्येक होरा एक घंटे के बराबर होती है। यह भी कहा जा सकता है कि घंटे का ही दूसरा नाम 'होरा' है।

प्रत्येक होरा का स्वामी नीचे की कक्षा के क्रम से एक-एक ग्रह होता है। सृष्टि के प्रारंभ में सबसे प्रथम सूर्य दिखाई देता है, अतः पहली होरा का स्वामी सूर्य को माना गया है, इसलिए सृष्टि का पहला दिन सूर्य के दिन रविवार, आदित्यवार अथवा सूर्यवार के नाम से पुकारा जाता है। उसके पश्चात् प्रत्येक होरा (घंटे) पर एक-एक ग्रह का अधिकार रहता है, अर्थात् उस दिन की दूसरी होरा का स्वामी सूर्य के समीप वाला ग्रह शुक्र, तीसरी होरा का स्वामी बुध, चौथी होरा का स्वामी चंद्रमा, पांचवीं होरा का स्वामी शनि, छठी होरा का स्वामी बृहस्पति, सातवीं होरा का स्वामी मंगल, आठवीं होरा का स्वामी फिर सूर्य, नवीं होरा का स्वामी फिर शुक्र, दसवीं होरा का स्वामी फिर बुध, ग्यारहवीं होरा का स्वामी फिर चंद्रमा, बारहवीं होरा का स्वामी फिर शनि, तेरहवीं होरा का स्वामी फिर बृहस्पति, चौदहवीं होरा का स्वामी फिर मंगल तथा पंद्रहवीं होरा का स्वामी फिर सूर्य, सोलहवीं होरा का स्वामी फिर शुक्र, सत्रहवीं होरा का स्वामी फिर बुध, अठारहवीं होरा का स्वामी फिर चंद्रमा, उन्नीसवीं होरा का स्वामी फिर शनि, बीसवीं होरा का स्वामी फिर बृहस्पति, इक्कीसवीं होरा का स्वामी फिर मंगल, बाईसवीं होरा का स्वामी फिर सूर्य, तेईसवीं होरा का स्वामी फिर शुक्र तथा चौबीसवीं होरा का स्वामी फिर बुध होता है।

इस प्रकार पहले दिन की पहली होरा सूर्य से आरंभ होती है तथा चौबीसवीं होरा बुध पर समाप्त होती है।

दूसरे दिन की पहली होरा का स्वामी उपर्युक्त क्रम से 'चंद्रमा' होता है, अतः दूसरे दिन को 'चंद्रवार' अथवा 'सोमवार' कहा जाता है। इसी क्रम से तीसरे दिन की पहली होरा का स्वामी 'मंगल' होता है, अतः उस दिन को 'मंगलवार' कहा जाता है। चौथे दिन की पहली होरा का स्वामी 'बुध' होता है, अतः उस दिन को 'बुधवार' कहा जाता है। पांचवें दिन की पहली होरा का स्वामी 'गुरु' अथवा 'बृहस्पति' होता है, अतः उस दिन को 'गुरुवार' अथवा 'बृहस्पतिवार' कहा जाता है। छठे दिन की पहली होरा का स्वामी 'शुक्र' होता है, अतः उस दिन को 'शुक्रवार' कहा जाता है और सातवें दिन की पहली होरा का स्वामी 'शनि' होता है, अतः उस दिन को 'शनिवार' कहा जाता है।

आठवें दिन इसी क्रम में फिर पहली होरा 'सूर्य' की आ जाती है, अतः आठवां दिन फिर 'रविवार' के नाम से पुकारा जाता है। इसी तरह क्रमशः (१) सूर्य, (२) चंद्र, (३) मंगल, (४) बुध, (५) गुरु, (६) शुक्र और (७) शनि—ये सातों ग्रह दिन की पहली होरा के स्वामी होते हैं। यह क्रम निरंतर चलता रहता है, इसलिए इन सात ग्रहों की प्रथम होरा के आधार पर सात दिनों (सप्ताह) के नाम रखे गये हैं, जो क्रमशः इस प्रकार हैं—

(१) रविवार, (२) सोमवार, (३) मंगलवार, (४) बुधवार, (५) गुरुवार, (६) शुक्रवार और (७) शनिवार।

इन वारों की निरंतर पुनरावृत्ति होती रहती है। सात दिनों के इस समूह को 'सप्ताह' के नाम से पुकारा जाता है।

गुरुवार, सोमवार, बुधवार तथा शुक्रवार—ये चार वार 'सौम्य-संज्ञक' तथा मंगलवार, रविवार एवं शनिवार—ये तीन वार 'क्रूर-संज्ञक' माने जाते हैं। किसी भी शुभ कार्य को करने के लिए 'सौम्य-संज्ञक' वार श्रेष्ठ माना जाता है।

प्रत्येक वार का स्वामी उसी का अधिपति ग्रह होता है।

राशियां

आकाश स्थित भचक्र के ३६० अंश अथवा १०८ भाग निश्चित किए गए हैं तथा समस्त भचक्र को बारह राशियों में विभक्त किया गया है। अस्तु, तीस अंश अथवा नौ भाग की एक-एक राशि होती है।

बारह राशियों के नाम क्रमशः इस प्रकार हैं—(१) मेष, (२) वृष, (३) मिथुन, (४) कर्क, (५) सिंह, (६) कन्या, (७) तुला, (८) वृश्चिक, (९) धनु, (१०) मकर, (११) कुंभ और (१२) मीन।

मेष आदि प्रत्येक राशि के अन्तर्गत अश्विनी आदि नक्षत्रों के क्रमशः नौ-नौ चरण होते हैं।

अक्षरानुसार राशि-ज्ञान

प्रत्येक नक्षत्र के चार चरण होते हैं और उनमें से प्रत्येक चरण का एक-एक अक्षर होता है—यह बात पहले बताई जा चुकी है। किस-किस अक्षर की कौन-सी राशि होती है, इसे नीचे लिखे अनुसार समझ लेना चाहिए।

अक्षरानुसार राशि-ज्ञान बोधक चक्र

राशि नाम		राशि के अक्षर								
१	मेष	चू	चे	चो	ला	ली	लू	ले	लो	आ
२	वृष	ई	ऊ	ए	ओ	वा	वी	वू	वे	वो
३	मिथुन	का	की	कू	घ	ङ	छ	के	को	हा
४	कर्क	ही	हू	हे	हो	डा	डी	डू	डे	डो
५	सिंह	मा	मी	मू	मे	मो	टा	टी	टू	टे
६	कन्या	टो	पा	पी	पू	ष	ण	ठ	पे	पो
७	तुला	रा	री	रू	रे	रो	ता	ती	तू	ते
८	वृश्चिक	तो	ना	नी	नू	ने	नो	या	यी	यू
९	धनु	ये	यो	भा	भी	भू	धा	फा	ढा	भे
१०	मकर	भो	जा	जी	खी	खू	खे	खो	गा	गी
११	कुंभ	गू	गे	गो	सा	सी	सू	से	सो	दा
१२	मीन	दी	दू	थ	झ	ञ	दे	दो	चा	ची

किस राशि के अंतर्गत किस-किस नक्षत्र के कितने-कितने चरण होते हैं, इसे आगे लिखे अनुसार समझा जा सकता है।

नक्षत्र चरण बोधक राशि चक्र

राशियों के नाम		नक्षत्रों के चरण
१	मेष	अश्विनी तथा भरणी नक्षत्र के चारों चरण एवं कृत्तिका नक्षत्र का पहला चरण।
२	वृष	कृत्तिका नक्षत्र के अंतिम तीन चरण, रोहिणी नक्षत्र के चारों चरण तथा मृगशिरा नक्षत्र के पहले दो चरण।
३	मिथुन	मृगशिरा नक्षत्र के अंतिम दो चरण, आर्द्रा नक्षत्र के चारों चरण तथा पुनर्वसु नक्षत्र के पहले तीन चरण।
४	कर्क	पुनर्वसु नक्षत्र का अंतिम एक चरण तथा पुष्य और आश्लेषा नक्षत्र के चारों चरण।
५	सिंह	मघा तथा पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र के चारों चरण एवं उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र का पहला एक चरण।
६	कन्या	उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र के अंतिम तीन चरण, हस्त नक्षत्र के चारों चरण तथा चित्रा नक्षत्र के पहले दो चरण।
७	तुला	चित्रा नक्षत्र के अंतिम दो चरण, स्वाति नक्षत्र के चारों चरण तथा विशाखा नक्षत्र के पहले तीन चरण।
८	वृश्चिक	विशाखा नक्षत्र का अंतिम एक चरण एवं अनुराधा और ज्येष्ठा नक्षत्र के चारों चरण।
९	धनु	मूल तथा पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र के चारों चरण एवं उत्तराषाढ़ा नक्षत्र का पहला एक चरण।
१०	मकर	उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के अंतिम तीन चरण, श्रवण नक्षत्र के चारों चरण तथा धनिष्ठा नक्षत्र के पहले दो चरण।
११	कुंभ	धनिष्ठा नक्षत्र के अंतिम दो चरण, शतभिषा नक्षत्र के चारों चरण तथा पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के पहले तीन चरण।
१२	मीन	पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्र का अंतिम एक चरण तथा उत्तराभाद्रपदा एवं रेवती नक्षत्र के चारों चरण।

विशेष टिप्पणी—'अभिजित्' नक्षत्र की गणना मकर राशि के अंतर्गत की जाती है, अत: अभिजित् नक्षत्र के चारों चरणों के चार अक्षर 'जू, जे, जो, खा' की राशि भी 'मकर' ही समझनी चाहिए।

राशियों का स्वभाव और प्रभाव

किसी राशि का स्वभाव और प्रभाव कैसा है और उसके द्वारा किन बातों का विचार किया जाता है—इसे नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए:—

(१) मेष—यह राशि पुरुष जाति, लाल-पीले वर्ण वाली, कांतिहीन, क्षत्रिय-वर्ण, पूर्व दिशा की स्वामिनी, अग्नि तत्त्ववाली, चर-संज्ञक, समान अंगोंवाली, अल्प संततिवान् तथा पित्त प्रकृतिकारक है। इसका स्वभाव अहंकारी, साहसी तथा मित्रों के प्रति दयालुता का है। इसके द्वारा मस्तक का विचार किया जाता है।

(२) **वृष**—यह राशि स्त्री जाति, श्वेत वर्ण, कांतिहीन, वैश्य वर्ण, दक्षिण दिशा की स्वामिनी, भूमि तत्त्ववाली, स्थिर-संज्ञक, शिथिल शरीर, शुभकारक तथा महाशब्दकारी है। इसका स्वभाव स्वार्थी, सांसारिक कार्यों में दक्षता तथा बुद्धिमत्ता से काम लेने का है। इसे अर्ध-जलराशि भी कहा जाता है। इसके द्वारा मुंह और कपोलों का विचार किया जाता है।

(३) **मिथुन**—यह राशि पुरुष जाति, हरित वर्ण, चिकनी, शूद्र वर्ण, पश्चिम दिशा की स्वामिनी, वायु तत्त्ववाली, उष्ण, महाशब्दकारी, मध्यम संतति वाली, शिथिल शरीर तथा विषमोदयी है। इसका स्वभाव शिल्पी तथा विद्याध्ययनी है। इसके द्वारा शरीर के कंधों तथा बाजुओं का विचार किया जाता है।

(४) **कर्क**—यह राशि स्त्री जाति, रक्त-धवल, मिश्रित वर्ण, जलचारी, उत्तर दिशा की स्वामिनी, सौम्य तथा कफ प्रकृति वाली, बहु संतान एवं चरण वाली, रात्रिबली तथा समोदयी है। इसका स्वभाव लज्जा, सांसारिक उन्नति के लिए प्रयत्नशील रहना तथा समय के अनुसार चलना है। इसके द्वारा वक्षस्थल एवं गुर्दे का विचार किया जाता है।

(५) **सिंह**—यह राशि पुरुष जाति, पीत वर्ण, क्षत्रिय वर्ण, पूर्व दिशा की स्वामिनी, पित्त प्रकृति, अग्नि-तत्त्व वाली, उष्ण स्वभाव, पुष्ट शरीर, यात्राप्रिय, अल्प संततिवान् तथा निर्जल है। इसका स्वभाव मेष राशि के समान है, परन्तु इसमें उदारता एवं स्वातंत्र्यप्रियता अधिक पाई जाती है। इसके द्वारा हृदय का विचार किया जाता है।

(६) **कन्या**—यह राशि स्त्री जाति, पिंगल वर्ण, द्विस्वभाव, दक्षिण दिशा की स्वामिनी, वायु तथा शीत प्रकृति, पृथ्वी तत्त्व वाली, रात्रिबली तथा अल्प संतति वाली है। इसका स्वभाव मिथुन राशि जैसा है, परन्तु यह अपनी उन्नति तथा सम्मान पर विशेष रूप से ध्यान देती है। इसके द्वारा पेट का विचार किया जाता है।

(७) **तुला**—यह राशि पुरुष जाति, श्याम वर्ण, चर संज्ञक, शूद्र वर्ण, पश्चिम दिशा की स्वामिनी, वायु तत्त्व वाली, दिनबली, क्रूर-स्वभाव, शीर्षोदयी, अल्प संततिवान् तथा पादजल राशि है। इसका स्वभाव ज्ञानप्रिय, राजनीतिज्ञ, विचारशील एवं कार्य-संपादक है। इसके द्वारा नाभि से नीचे के अङ्गों का विचार किया जाता है।

(८) **वृश्चिक**—यह राशि स्त्री-जाति, शुभ्र वर्ण, कफ प्रकृति, ब्राह्मण वर्ण, उत्तर दिशा की स्वामिनी, रात्रिबली, बहु संततिवान् तथा अर्द्धजल-तत्त्व वाली है। इसका स्वभाव स्पष्टवादी, निर्मल, दृढ़-प्रतिज्ञ, हठी तथा दंभी है। इसके द्वारा जननेंद्रिय का विचार किया जाता है।

(९) **धनु**—यह राशि पुरुष जाति, स्वर्ण वर्ण, द्विस्वभाव, क्षत्रिय वर्ण, पूर्व दिशा की स्वामिनी, दिनबली, पित्तप्रकृति, अग्नितत्त्व वाली, अल्प संततिवान्, दृढ़ शरीर तथा अर्द्धजल राशि है। इसका स्वभाव करुणामय, मर्यादाशील तथा अधिकारप्रिय है, इसके द्वारा पांवों की संधि तथा जंघाओं का विचार किया जाता है।

(१०) **मकर**—यह राशि स्त्री जाति, पिंगल वर्ण, रात्रिबली, वैश्य वर्ण, दक्षिण दिशा की स्वामिनी, पृथ्वी-तत्त्व वाली, शिथिल शरीर तथा वात प्रकृति है। इसका स्वभाव उच्च स्थिति का अभिलाषी है। इसके द्वारा पांव के घुटनों का विचार किया जाता है।

(११) **कुंभ**—यह राशि पुरुष जाति, विचित्र वर्ण, वायु तत्त्व वाली, शूद्र-वर्ण, त्रिदोष प्रकृति वाली, पश्चिम दिशा की स्वामिनी, उष्ण स्वभाव, अर्द्धजल, मध्यम संतान वाली, शीर्षोदय, क्रूर तथा दिनबली है। इसका स्वभाव शांत, विचारशील, धार्मिक तथा नवीन वस्तुओं का आविष्कारकर्त्ता है। इसके द्वारा पेट के भीतरी भागों का विचार किया जाता है।

(१२) मीन—यह राशि स्त्री जाति, पिंगल वर्ण, जल-तत्त्व वाली, ब्राह्मण वर्ण, उत्तर दिशा की स्वामिनी, कफ प्रकृति तथा रात्रिबली है। यह पूर्ण रूप से जल राशि है। इसका स्वभाव दयालु, दानी तथा श्रेष्ठ है। इसके द्वारा पैरों का विचार किया जाता है।

ग्रहों का स्वभाव और प्रभाव

किस ग्रह का स्वभाव और प्रभाव कैसा है और उसके द्वारा किन बातों का विचार किया जाता है, इसे नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए —

(१) सूर्य—यह ग्रह पुरुष जाति, रक्त वर्ण, पित्त प्रकृति तथा पूर्व दिशा का स्वामी है। यह आत्मा, आरोग्य, स्वभाव, राज्य, देवालय का सूचक एवं पितृकारक है। इसके द्वारा शारीरिक रोग, मंदाग्नि, अतिसार, सिरदर्द, क्षय, मानसिक रोग, नेत्र-विकार, उदासी, शोक, अपमान, कलह आदि का विचार किया जाता है। मेरुदंड, स्नायु, कलेजा, नेत्र आदि अवयवों पर इसका विशेष प्रभाव होता है। इससे पिता के संबंध में विचार किया जाता है।

सूर्य लग्न से सप्तम स्थान में बली तथा मकर राशि से छह राशियों तक चेष्टाबली होता है। सूर्य को पाप ग्रह माना गया है।

(२) चंद्र—यह ग्रह स्त्री जाति, श्वेत वर्ण, जलीय तथा पश्चिमोत्तर दिशा का स्वामी है। यह मन, चित्तवृत्ति, शारीरिक, स्वास्थ्य, सम्पत्ति, राजकीय-अनुग्रह, माता-पिता तथा चतुर्थ स्थान का कारक है। इसके द्वारा पांडु रोग, क़फज तथा जलीय रोग, मूत्रकृच्छ, मानसिक रोग, स्त्रीजन्यरोग, पीनस, निरर्थक भ्रमण, उदर तथा मस्तक संबंधी विचार किया जाता है। यह रक्त का स्वामी है तथा वातश्लेष्मा इसकी धातु है।

चन्द्रमा लग्न से चतुर्थ स्थान में बली तथा मकर से छह राशियों में चेष्टाबली होता है। कृष्ण पक्ष की षष्ठी से शुक्ल पक्ष की दशमी तक चंद्रमा क्षीण रहता है। इस अवधि से चंद्रमा को पाप ग्रह माना जाता है। शुक्ल पक्ष की दशमी से कृष्ण पक्ष की पंचमी तक चंद्रमा पूर्ण ज्योतिवान् रहता है। इस अवधि में इसे शुभ ग्रह तथा बली माना जाता है। बली चंद्रमा ही चतुर्थ भाव में अपना पूर्ण फल प्रदान करता है, क्षीण चंद्रमा नहीं देता।

(३) मंगल—यह ग्रह पुरुष जाति, रक्त वर्ण, दक्षिण दिशा का स्वामी, अग्नि तत्त्व वाला तथा पित्त प्रकृति का है। यह धैर्य तथा पराक्रम का स्वामी, भाई-बहिन का कारक तथा रक्त एवं शक्ति का नियामक कारक है। ज्योतिषशास्त्र में इसे पाप ग्रह माना गया है। यह उत्तेजित करने वाला, तृष्णाकारक तथा सदैव दुःखदायक रहता है।

मंगल तीसरे तथा छठे स्थान में बली होता है, दशम स्थान में दिग्बली होता है, चन्द्रमा के साथ रहने पर चेष्टाबली होता है तथा द्वितीय स्थान में निष्फल (बलहीन) होता है।

(४) बुध—यह ग्रह नपुंसक जाति, श्याम वर्ण, उत्तर दिशा का स्वामी, त्रिदोष प्रकृति तथा पृथ्वी तत्त्व वाला है। यह ज्योतिष, चिकित्सा, शिल्प, कानून, व्यवसाय, चतुर्थ स्थान तथा दशम स्थान का कारक है। इसके द्वारा गुप्तरोग, संग्रहणी, वातरोग, श्वेत कुष्ठ, गूंगापन, बुद्धिभ्रम, विवेक, शक्ति, जिह्वा तथा तालु आदि शब्द के उच्चारण से संबंधित अवयवों का विचार किया जाता है।

बुध, सूर्य, मंगल, राहु, केतु तथा शनि—इन अशुभ ग्रहों के साथ ही तो अशुभ फल देता है और पूर्णचन्द्र, गुरु अथवा शुक्र—इन शुभ ग्रहों के साथ हो, तो शुभ फलदायक रहता है। यदि यह (बुध) चतुर्थ स्थान में बैठा हो, तो निष्फल रहता है।

ज्योतिषशास्त्र के अनुसार बुध जैसे ग्रहों के साथ हो, वैसा ही शुभ अथवा पाप ग्रह बन जाता है। अकेला हो, तो शुभ ग्रह है।

(५) गुरु—यह ग्रह पुरुष जाति, पीत वर्ण, पूर्वोत्तर दिशा का स्वामी तथा आकाश-तत्त्व वाला है। यह कफ धातु तथा चर्बी की वृद्धि करता है। इसके द्वारा शोथ (सूजन), गुल्म आदि रोग, घर, विद्या, पुत्र, पौत्र आदि का विचार किया जाता है। इसे हृदय की शक्ति का कारक भी माना जाता है।

गुरु लग्न में बैठा हो, तो बली होता है और यदि चंद्रमा के साथ कहीं बैठा हो, तो चेष्टाबली होता है। यह शुभ ग्रह है। इसके द्वारा पारलौकिक एवं आध्यात्मिक सुखों का विशेष विचार किया जाता है।

(६) शुक्र—यह ग्रह स्त्री जाति, श्याम-गौर वर्ण, दक्षिण-पूर्व दिशा का स्वामी, कार्य-कुशल तथा जलीय तत्त्व वाला है। यह कफ, वीर्य आदि धातुओं का कारक माना जाता है। इसके प्रभाव से जातक के शरीर का रंग गेहुआं होता है। यह काव्य-संगीत, वस्त्राभूषण, वाहन, शैया, पुष्प, आंख, स्त्री (पत्नी) तथा कामेच्छा आदि का कारक है। इसके द्वारा चतुरता एवं सांसारिक सुख संबंधी विचार किया जाता है। यदि जातक का जन्म दिन में हुआ हो, तो शुक्र के द्वारा माता के संबंध में भी विचार किया जाता है।

शुक्र छठे स्थान में बैठा हो, तो निष्फल होता है और यदि सातवें स्थान में हो, तो अनिष्टकर होता है।

ज्योतिषशास्त्र ने शुक्र को शुभ ग्रह माना है। इसके द्वारा सांसारिक तथा व्यावहारिक सुखों का विशेष विचार किया जाता है।

(७) शनि—यह ग्रह नपुंसक जाति, कृष्ण वर्ण, पश्चिम दिशा का स्वामी, वायु-तत्त्व तथा वातश्लेष्मिक प्रकृति का है। इसके द्वारा आयु, शारीरिक बल, दृढ़ता, विपत्ति, प्रभुता, मोक्ष, यश, ऐश्वर्य, नौकरी, योगाभ्यास, विदेशी भाषा एवं मूर्च्छा आदि रोगों का विचार किया जाता है। यदि जातक का जन्म रात्रि में हुआ हो, तो यह माता और पिता का कारक होता है।

शनि सप्तम स्थान में बली होता है तथा किसी वक्री ग्रह अथवा चंद्रमा के साथ रहने पर चेष्टाबली होता है।

शनि क्रूर तथा पाप ग्रह है, परन्तु इसका अंतिम परिणाम सुखद होता है। यह मनुष्य को दुर्भाग्य तथा संकटों के चक्कर में डालकर, अंत में उसे शुद्ध तथा सात्त्विक बना देता है।

(८) राहु—यह कृष्ण वर्ण, दक्षिण दिशा का स्वामी तथा क्रूर ग्रह है। यह जिस स्थान पर बैठता है, वहां की उन्नति को रोक देता है। यह गुप्त युक्तिबल, कष्ट तथा त्रुटियों का कारक है।

(९) केतु—यह कृष्ण वर्ण तथा क्रूर ग्रह है। इसके द्वारा नाक, हाथ-पांव, क्षुधाजनित कष्ट एवं चर्मरोग आदि का विचार किया जाता है। यह गुप्त शक्ति, बल, कठिन कर्म, भय की कमी का कारक है। कुछ स्थितियों में केतु शुभ ग्रह भी माना जाता है।

राशीश्वर

कौन-सा ग्रह किस राशि का स्वामी है, इसे नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए :

मेष एवं वृश्चिक—इन दोनों राशियों का स्वामी मंगल है।

१ ८

वृष एवं तुला—इन दोनों राशियों का स्वामी शुक्र है।

२ ७

मिथुन एवं कन्या—इन दोनों राशियों का स्वामी बुध है।
३ ६
कर्क—इस राशि का स्वामी चंद्रमा है।
४
सिंह—इस राशि का स्वामी सूर्य है।
५
धनु एवं मीन—इन दोनों राशियों का स्वामी गुरु है।
९ १२
मकर एवं कुंभ—इन दोनों राशियों का स्वामी शनि है।
१० ११

विशेष—राहु और केतु—ये दोनों छाया ग्रह हैं, अत: ये किसी पृथक् राशि के स्वामी नहीं हैं। फिर भी, कुछ ज्योतिषशास्त्रियों ने राहु को कन्या का स्वामी तथा केतु को मिथुन का स्वामी माना है।

निम्नांकित चक्र में राशि और राशीश्वरों को प्रदर्शित किया गया है :

राशीश्वर बोधक चक्र

राशीश्वर	राशि
मंगल	मेष
शुक्र	वृष
बुध/केतु	मिथुन
चंद्र	कर्क
सूर्य	सिंह
बुध/राहु	कन्या
शुक्र	तुला
मंगल	वृश्चिक
गुरु	धनु
शनि	मकर
शनि	कुंभ
गुरु	मीन

ग्रहों का राशि-भोग

कौन-सा ग्रह किस राशि पर कितने समय तक ठहरता है, इसे नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए :

सूर्य—एक राशि पर एक मास।
चंद्र—एक राशि पर सवा दो दिन।
मंगल—एक राशि पर डेढ़ मास।
बुध—एक राशि पर पौन मास।
गुरु—एक राशि पर तेरह मास।
शुक्र—एक राशि पर पौन मास।

शनि—एक राशि पर ढाई वर्ष।
राहु—एक राशि पर डेढ़ वर्ष।
केतु—एक राशि पर डेढ़ वर्ष।

टिप्पणी—सूर्य, चंद्र, राहु तथा केतु के अतिरिक्त शेष पांचों ग्रह—मंगल, बुध, गुरु, शुक्र तथा शनि—कभी-कभी वक्री, मार्गी अथवा अतिचारी हो जाया करते हैं, जिसके कारण ये ग्रह एक राशि पर अपनी निश्चित अवधि के समय को एक साथ लगातार भोगने के अतिरिक्त कुछ आगे-पीछे भी भोगा करते हैं। किस समय कौन-सा ग्रह मार्गी, वक्री अथवा अतिचारी है, इसका पता पंचाङ्ग (पत्रा) को देखकर चल सकता है। यदि किसी जातक के जन्म के समय कोई ग्रह वक्री, मार्गी अथवा अतिचारी होता है, तो वह उसे जीवन-भर उसी प्रकार का फल देता रहता है।

ग्रहों का पारस्परिक संबंध

कौन-सा ग्रह किस दूसरे ग्रह का मित्र, शत्रु अथवा सम है, इसे नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए :

(१) सूर्य ग्रह के चंद्रमा, मंगल तथा गुरु मित्र हैं, शुक्र तथा शनि शत्रु हैं एवं बुध सम हैं।
(२) चंद्र के सूर्य तथा बुध मित्र हैं एवं मंगल, शुक्र, शनि तथा बृहस्पति सम हैं।
(३) मंगल के सूर्य, चंद्र तथा गुरु मित्र हैं, बुध शत्रु हैं तथा शुक्र और शनि सम हैं।
(४) बुध के सूर्य तथा शुक्र मित्र हैं, चंद्रमा शत्रु है एवं मंगल, गुरु तथा शनि सम हैं।
(५) गुरु के सूर्य, चंद्र तथा मंगल मित्र हैं, शुक्र और बुध शत्रु हैं तथा शनि सम है।
(६) शुक्र के बुध तथा शनि मित्र हैं, सूर्य और चंद्र शत्रु हैं तथा मंगल एवं गुरु सम हैं।
(७) शनि के बुध तथा शुक्र मित्र हैं, सूर्य, चंद्र एवं मंगल शत्रु हैं तथा गुरु सम है।

नीचे दिए गए चक्र में उक्त सातों ग्रहों के पारस्परिक शत्रु-मैत्री संबंध को एक दृष्टि में प्रदर्शित किया गया है :

निसर्ग मैत्री चक्र

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मित्र	चंद्र मंगल गुरु	सूर्य बुध	सूर्य चंद्र गुरु	सूर्य शुक्र	सूर्य चंद्र मंगल	बुध शनि	बुध शुक्र
सम	बुध	मंगल शुक्र शनि गुरु	शुक्र शनि	मंगल गुरु शनि	शनि	मंगल गुरु	गुरु
शत्रु	शुक्र शनि		बुध	चंद्र	शुक्र बुध	सूर्य चंद्र	सूर्य चंद्र मंगल
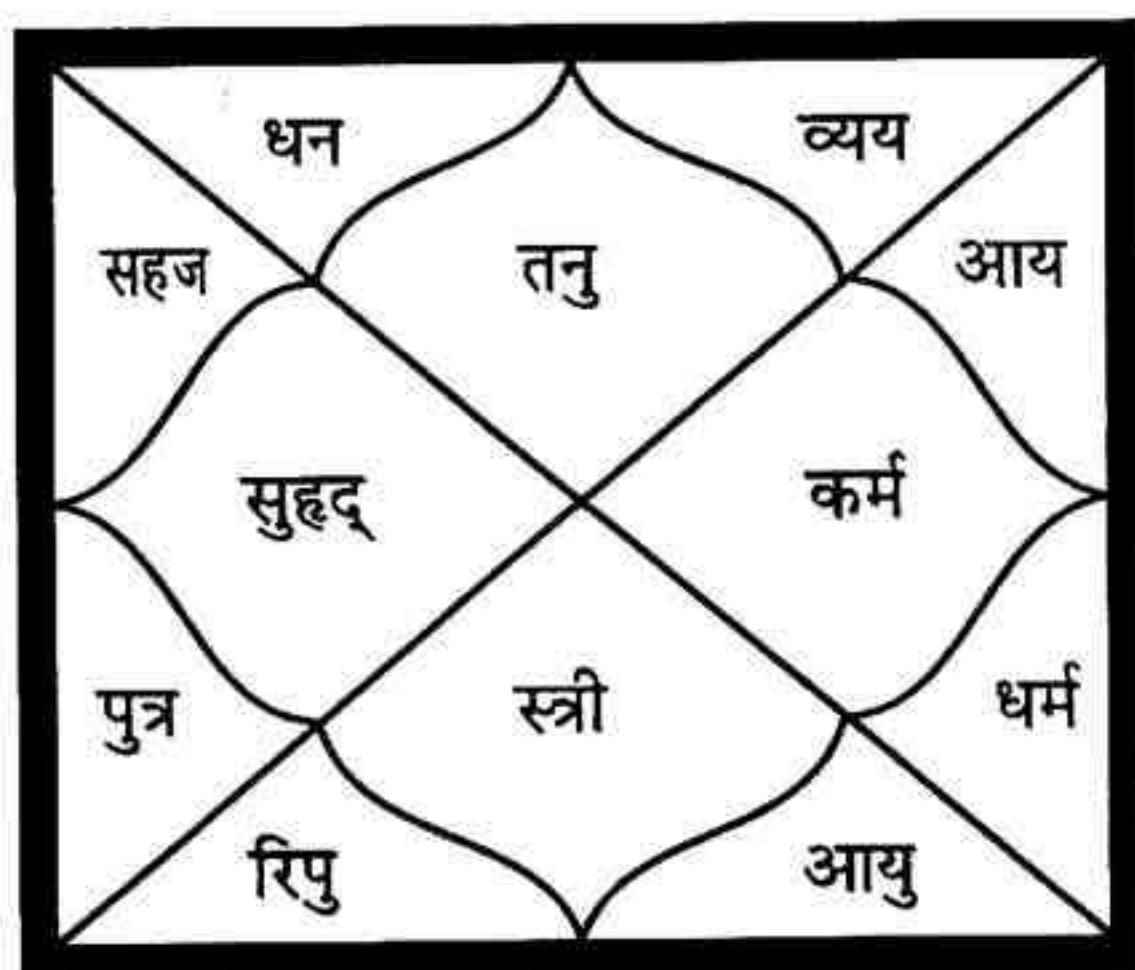
आवश्यक टिप्पणी—(१) कुछ विद्वानों के मत से चंद्रमा गुरु से शत्रुता मानते हैं।

(२) राहु तथा केतु छाया ग्रह हैं, अत: ग्रहों के 'निसर्ग मैत्री चक्र' में इन दोनों का उल्लेख नहीं किया गया है। विद्वानों के मतानुसार राहु और केतु—ये दोनों ग्रह शुक्र तथा शनि से मित्रता रखते हैं एवं सूर्य, चंद्रमा, मंगल एवं गुरु—इन चारों ग्रहों से शत्रुता रखते हैं। बुध इन दोनों (राहु और केतु) के लिए सम है। इसी प्रकार सूर्य, चंद्र, मंगल तथा गुरु—ये चारों ग्रह राहु तथा केतु से शत्रुता मानते हैं। शुक्र और शनि राहु तथा केतु के मित्र हैं तथा बुध इन दोनों से सम भाव रखता है।

द्वादशभाव

जन्म-कुंडली में बारह खाने होते हैं। इन्हें 'घर' 'स्थान' अथवा 'भाव' कहा जाता है।

जन्म-कुंडली के द्वादश भाव

३

ऊपर दी गई उदाहरण कुंडली में इन द्वादश भावों को प्रदर्शित किया गया है।

जन्म-कुंडली के बारह भावों के नाम क्रमश: इस प्रकार हैं:

१. तनु, २. धन, ३. सहज, ४. सुहृद्, ५. पुत्र, ६. रिपु, ७. जाया (स्त्री), ८. आयु, ९. धर्म, १०. कर्म, ११. लाभ, १२. व्यय।

द्वादशभावों का परिचय

जन्म-कुंडली के द्वादश भावों के नाम ऊपर बताए जा चुके हैं। इन भावों के विभिन्न नाम तथा इनके द्वारा किन-किन बातों का विचार किया जाता है, इसे नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए :

(१) प्रथमभाव—इसे 'तनु' के अतिरिक्त लग्न, वपु, कल्प, अंग, उदय, आत्मा, शरीर, शिर, हीरा, केंद्र, कण्टक, आद्य, मूर्ति, चतुष्टय तथा प्रथमभाव भी कहा जाता है।

इस भाव के द्वारा जातक के स्वरूप, जाति, आयु, विवेक, मस्तिष्क, शील, चिह्न, सुख-दुःख तथा आकृति आदि के संबंध में विचार किया जाता है।

इस भाव का कारक 'सूर्य' है। इसमें मिथुन, कन्या, तुला तथा कुंभ—इनमें से कोई राशि हो, तो उसे बलवान माना जाता है।

लग्नेश की स्थिति और बलाबल के अनुसार इस भाव से जातक की जातीय उन्नति-अवनति तथा कार्यकुशलता का ज्ञान प्राप्त किया जाता है।

(२) द्वितीयभाव—इसे 'धन' के अतिरिक्त अर्थ, कुटुंब, द्रव्य, कोश, वित्त, स्व, पणफर तथा द्वितीयभाव भी कहा जाता है। इस भाव का कारक 'गुरु' है।

इस भाव के द्वारा जातक के स्वर, सौंदर्य, आंख, नाक, कान, गायन, प्रेम, कुल, मित्र, सत्यवादिता, सुखोपभोग, बंधन, क्रय-विक्रय एवं स्वर्ण, चांदी, मणि, रत्न, आदि संचित पूंजी के संबंध में विचार किया जाता है।

(३) तृतीयभाव—इसे 'सहज' के अतिरिक्त पराक्रम, भ्रातृ, उपचय, दुश्चिक्य, आपोक्लिम तथा तृतीयभाव भी कहा जाता है। इस भाव का कारक 'मंगल' है।

इस भाव के द्वारा जातक के पराक्रम, कर्म, साहस, धैर्य, शौर्य, आयुष्य, सहोदर, नौकर-चाकर, गायन, योगाभ्यास, क्षय, श्वास, खांसी तथा दमा आदि के संबंध में विचार किया जाता है।

(४) चतुर्थभाव—इसे 'सुहृद्' के अतिरिक्त सुख, गृह, कंटक, तुर्य, हिबुक, वाहन, यान, नीर, अंबु, बंधु, पाताल, केंद्र तथा चतुर्थभाव भी कहा जाता है।

इस भाव के द्वारा जातक के सुख, गृह, ग्राम, मकान, संपत्ति, बाग-बगीचा, चतुष्पद, माता-पिता का सुख, अंतःकरण की स्थिति, दया, उदारता, छल, कपट, निधि, यकृत तथा पेट के रोग आदि के संबंध में विचार किया जाता है।

इस भाव का कारक 'चंद्रमा' है। इस स्थान को विशेषकर माता का स्थान माना जाता है।

(५) पंचमभाव—इसे 'पुत्र' के अतिरिक्त सुत, तनुज, बुद्धि, विद्या, आत्मज, वाणी, पणफर, त्रिकोण तथा पंचमभाव भी कहा जाता है।

इस भाव का कारक 'गुरु' है।

इस भाव के द्वारा जातक की बुद्धि, विद्या, विनय, नीति, देवभक्ति, संतान, प्रबंध-व्यवस्था, मामा का सुख, धन मिलने के उपाय, अनायास बहुत-से धन की प्राप्ति, नौकरी छूटना. हाथ का यश, मूत्र-पिण्ड, वस्ति एवं गर्भाशय आदि के संबंध में विचार किया जाता है।

(६) षष्ठभाव—इसे 'रिपु' के अतिरिक्त द्वेष, शत्रु, क्षत, वैरी, रोग, नष्ट, त्रिक, उपचय, आपोक्लिम तथा षष्ठभाव भी कहा जाता है।

इस भाव का कारक 'मंगल' है।

इस भाव के द्वारा जातक के शत्रु, चिंता, संदेह, जागीर, मामा की स्थिति, यश, गुदा-स्थान, पीड़ा, रोग तथा व्रण आदि के संबंध में विचार किया जाता है।

(७) सप्तमभाव—इसे 'जाया' के अतिरिक्त स्त्री, मदन, काम, सौभाग्य, जामित्र केंद्र तथा सप्तमभाव भी कहा जाता है।

इस भाव के द्वारा जातक की स्त्री, मृत्यु, कामेच्छा, कामचिंता, सहवास, विवाह, स्वास्थ्य, जननेन्द्रिय, अंग विभाग, व्यवसाय, झगड़ा-झंझट तथा बवासीर का रोग आदि के संबंध में विचार किया जाता है। इस भाव का कारक 'शुक्र' है।

इस भाव में वृश्चिक राशि हो, तो उसे बलवान माना जाता है।

(८) अष्टमभाव—इसे 'आयु' के अतिरिक्त त्रिक्, रंध्र, जीवन, चतुरस्त्र, पणफर तथा अष्टमभाव भी कहा जाता है।

इस भाव का कारक 'शनि' है।

इस भाव के द्वारा जातक की आयु, जीवन, मृत्यु, मृत्यु के कारण, व्याधि, मानसिक चिंताएं, झूठ, पुरातत्त्व, समुद्र-यात्रा, संकट, लिंग, योनि तथा अंडकोष के रोग आदि के संबंध में विचार किया जाता है।

(९) नवमभाव—इसे 'धर्म' के अतिरिक्त पुण्य, भाग्य, त्रिकोण तथा नवमभाव भी कहा जाता है।

इस भाव का कारक 'गुरु' है।

इस भाव के द्वारा जातक के तप, शील, धर्म, विद्या, प्रवास, तीर्थ यात्रा, दान, मानसिक-वृत्ति, भाग्योदय तथा पिता का सुख आदि के संबंध में विचार किया जाता है।

(१०) दशमभाव—इसे 'कर्म' के अतिरिक्त व्योम, गगन, नभ, रव, मध्य, आस्पद, मान, आज्ञा, व्यापार, केंद्र तथा दशमभाव भी कहा जाता है।

इस भाव का कारक 'बुध' है।

इस भाव के द्वारा जातक के अधिकार, ऐश्वर्य-भोग, यश-प्राप्ति, नेतृत्व, प्रभुता, मान-प्रतिष्ठा, राज्य, नौकरी, व्यवसाय तथा पिता के संबंध में विचार किया जाता है।

इस भाव में मेष, सिंह, वृष तथा मकर राशि का पूर्वार्द्ध एवं धनु राशि का उत्तरार्द्ध बलवान् होता है।

(११) एकादशभाव—इसे 'लाभ' के अतिरिक्त आय, उत्तम, उपचय, पणफर तथा एकादशभाव भी कहा जाता है।

इस भाव का कारक 'गुरु' है।

इस भाव के द्वारा जातक की संपत्ति, ऐश्वर्य, मांगलिक कार्य, वाहन, रत्न आदि के संबंध में विचार किया जाता है।

(१२) द्वादशभाव—इसे 'व्यय' के अतिरिक्त प्रांत्य, त्रिक, रिष्फ, अंतिम तथा द्वादशभाव कहा जाता है।
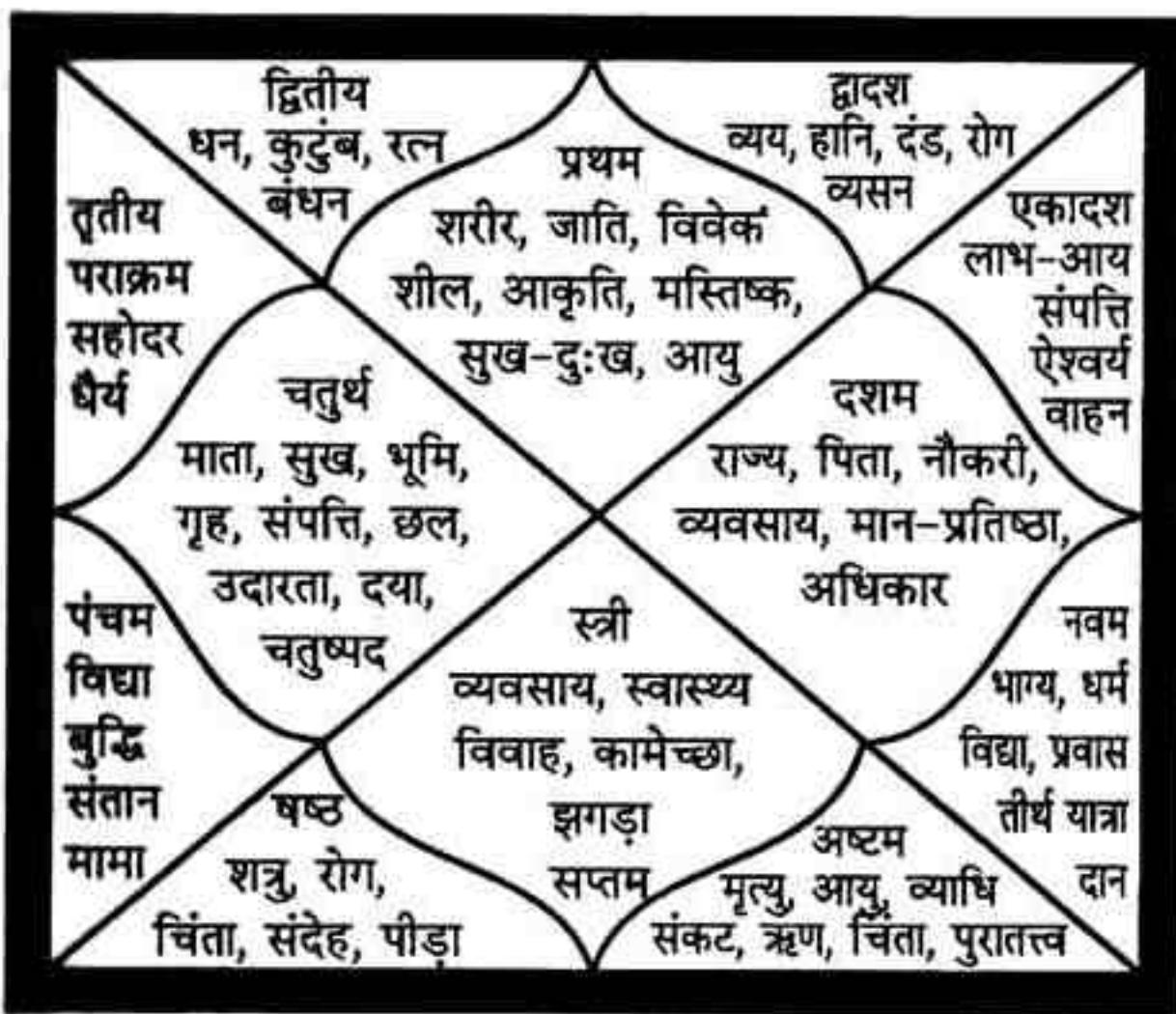
इस भाव का कारक 'शनि' है।

इस भाव के द्वारा जातक की हानि, व्यय, दंड, व्यसन, रोग, दान तथा बाहरी संबंध आदि के बारे में विचार किया जाता है।

उदाहरण कुंडली नं० ४ में किस-किस भाव के द्वारा किस-किस विषय के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त की जाती है, इसे प्रदर्शित किया गया है :
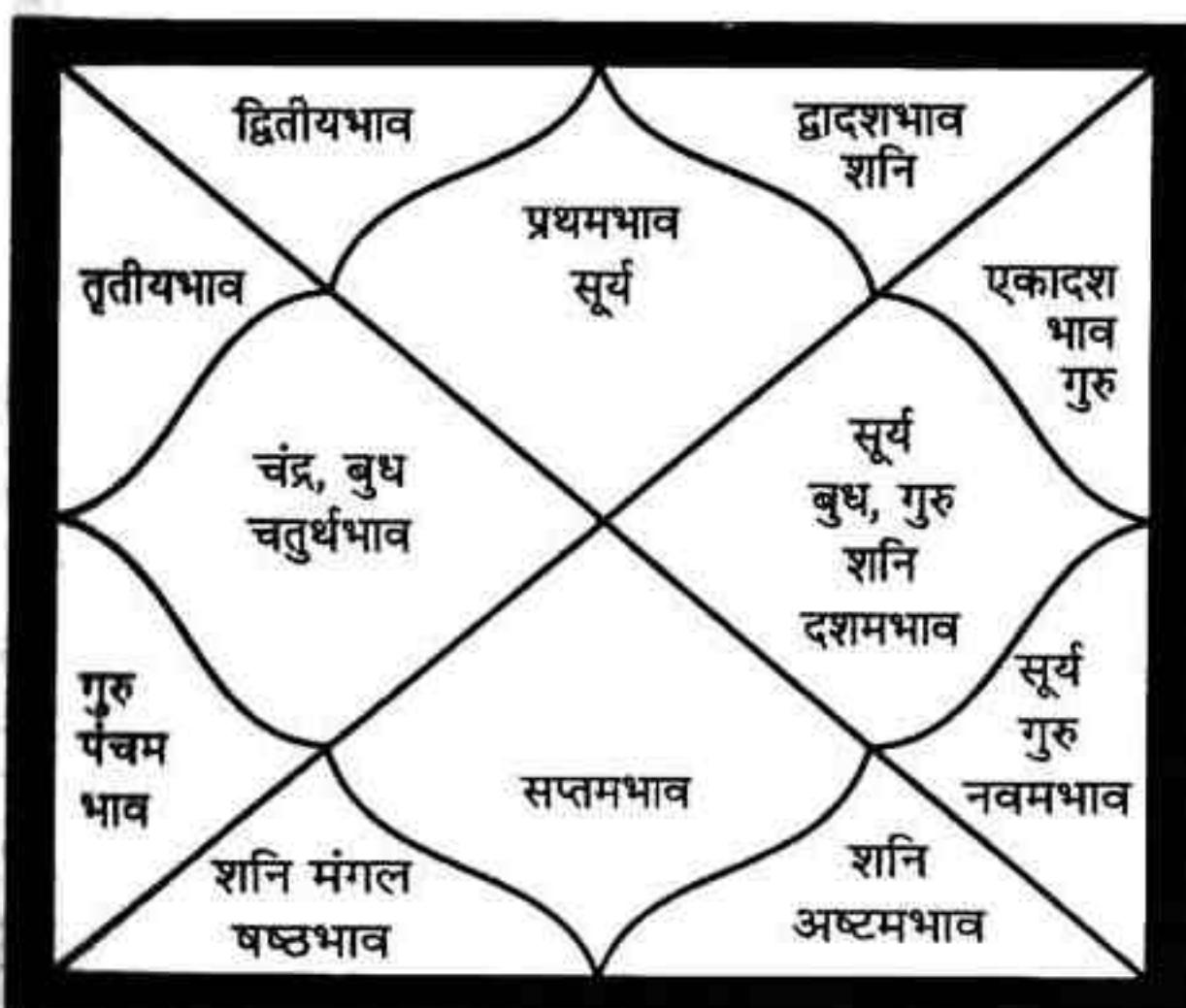
उदाहरण कुंडली नं० 5 में किस भाव का कौन-कौन सा ग्रह कारक (स्वामी) होता है, इसे प्रदर्शित किया गया है :

विभिन्न भावों से विचारणीय विषय चक्र

४

विभिन्न भावों के कारक ग्रह

५

त्रिकोण, केंद्र, पणफर, आपोक्लिम तथा मारक

त्रिकोण, केंद्र, पणफर, आपोक्लिम तथा मारक किन-किन भावों को कहा जाता है ? इसे नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए :
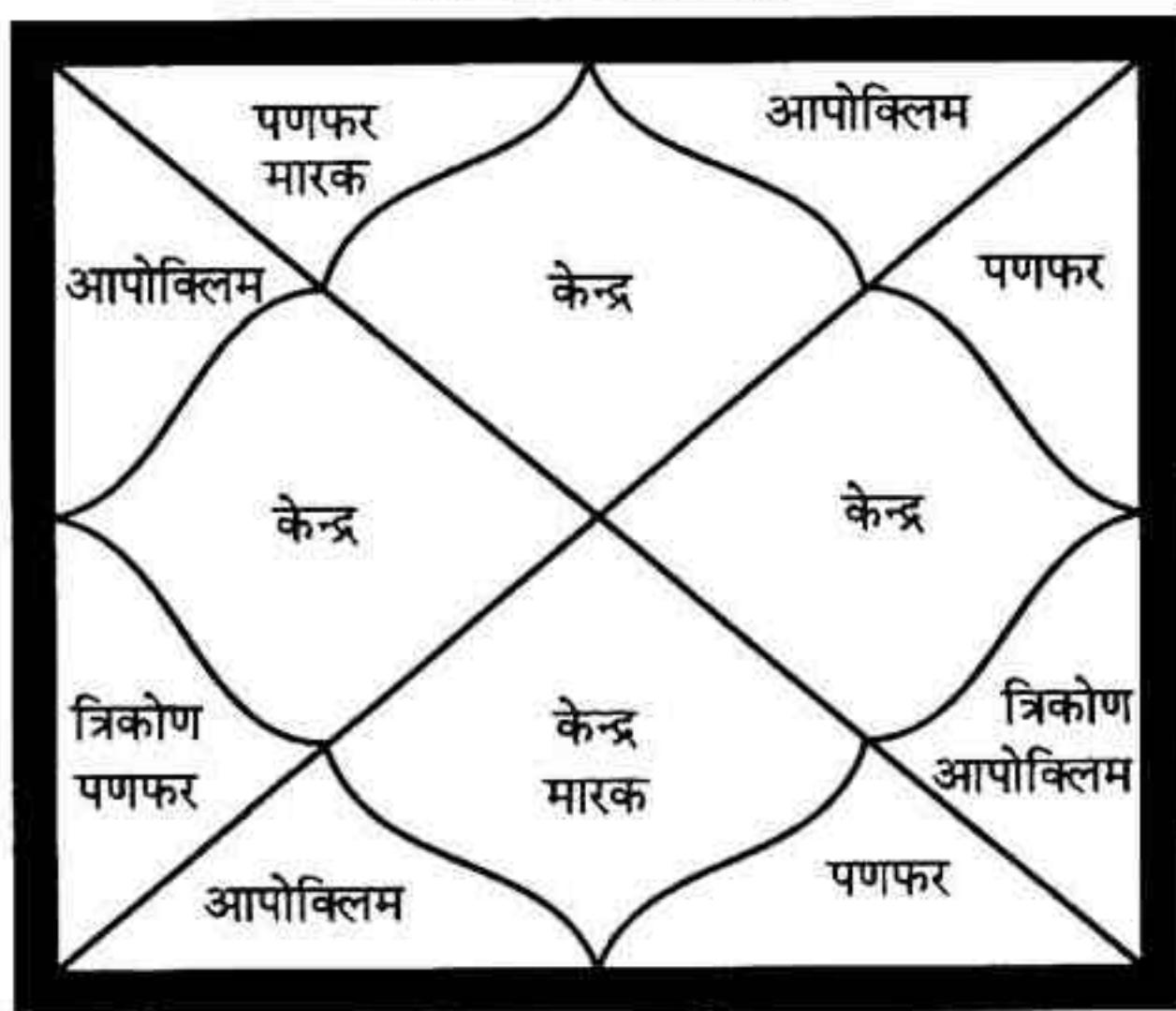
(१) **त्रिकोण**—पंचम तथा नवम भावों को 'त्रिकोण' कहा जाता है।

(२) **केंद्र**—प्रथम, चतुर्थ, सप्तम तथा दशम—इन चारों भावों को 'केंद्र' कहा जाता है।

(३) **पणफर**—द्वितीय, पंचम, अष्टम तथा एकादश—इन चारों भावों को 'पणफर' कहा जाता है।

(४) **आपोक्लिम**—तृतीय, षष्ठ, नवम तथा द्वादश—इन चारों भावों को 'आपोक्लिम' कहा जाता है।

(५) **मारक**—द्वितीय तथा सप्तमभाव को 'मारक' कहा जाता है।

नीचे दी गई उदाहरण कुंडली में उक्त त्रिकोण, केंद्र, पणफर, आपोक्लिम तथा मारक भावों की स्थिति को कुंडली के विभिन्न भावों में प्रदर्शित किया गया है:—

त्रिकोणादि बोधक चक्र

६

आवश्यक टिप्पणी—कुछ विद्वानों के मतानुसार द्वितीय तथा दशम भाव को पणफर एवं तृतीय तथा एकादश भाव को आपोक्लिम माना गया है। कुछ अन्य विद्वान षष्ठ तथा अष्टम भाव को पणफर तथा द्वितीय एवं द्वादश भाव को आपोक्लिम मानते हैं।

मूल त्रिकोण

जन्म कुंडली के द्वादश भावों में विभिन्न राशियां अलग-अलग भावों में रहती हैं। उनमें सामने लिखे अनुसार जिस राशि के जितने अंश पर जो ग्रह हो, उसे 'मूल त्रिकोण में स्थित' समझना चाहिए :
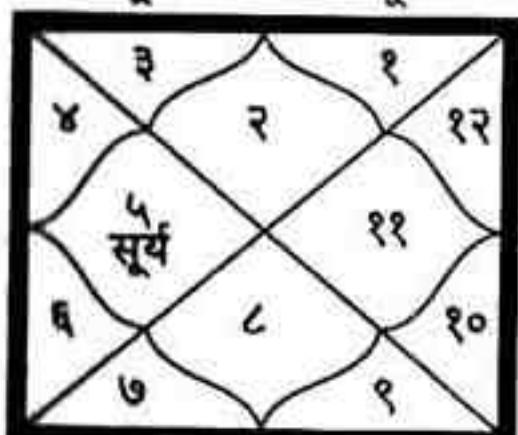
(१) सूर्य—सिंह राशि में, १ से २० अंश तक।
(२) चंद्र—वृष राशि में, ४ से ३० अंश तक।
(३) मंगल—मेष राशि में, १ से १८ अंश तक।
(४) बुध—कन्या राशि में, १ से १५ अंश तक।
(५) गुरु—धनु राशि में, १ से १३ अंश तक।
(६) शुक्र—तुला राशि में, १ से १० अंश तक।
(७) शनि—कुंभ राशि में, १ से २० अंश तक।

मूल त्रिकोण की राशि तथा ग्रह बोधक चक्र
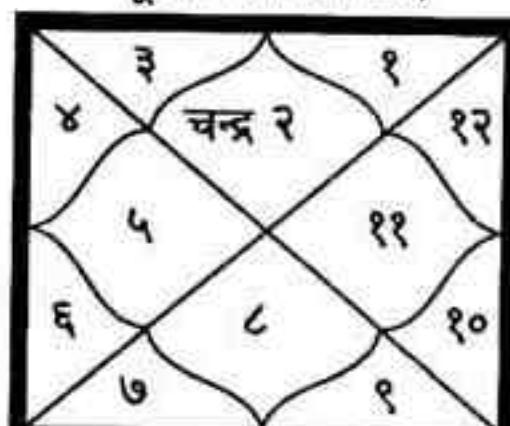
ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि	सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला	कुंभ

मूल त्रिकोण के ग्रहों की स्थिति को और अधिक स्पष्ट करने के लिए आगे आठ कुंडलियां दी जा रही हैं। इनमें पहली सात कुंडलियों में प्रत्येक ग्रह को अलग-अलग मूल त्रिकोण में स्थित दिखाया गया है तथा अंतिम कुंडली में मूल त्रिकोण के सभी ग्रहों को एक साथ अपनी-अपनी राशि में स्थित दिखाया गया है, अत: इन्हें देखकर मूल त्रिकोणस्थ ग्रहों के विषय में भली-भांति जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए। ये कुंडलियां वृष लग्न की हैं। इन्हीं के आधार पर अन्य लग्न वाली कुंडलियों के विषय में भी भी समझ लेना चाहिए।

मूल त्रिकोणस्थ सूर्य

७

मूल त्रिकोणस्थ चंद्र

८

मूल त्रिकोणस्थ मंगल

९

मूल त्रिकोणस्थ बुध

१०
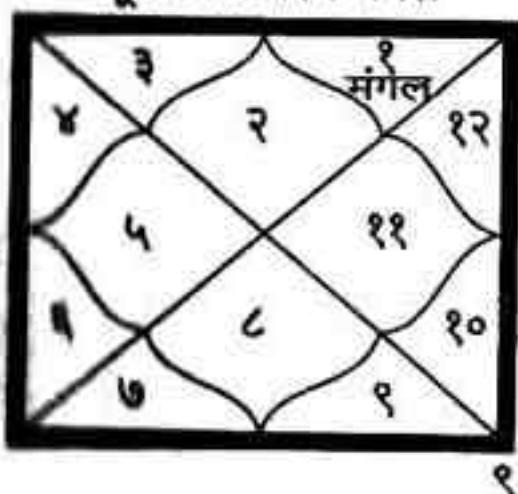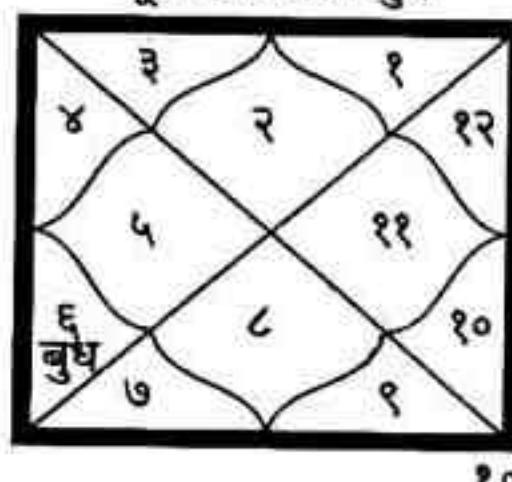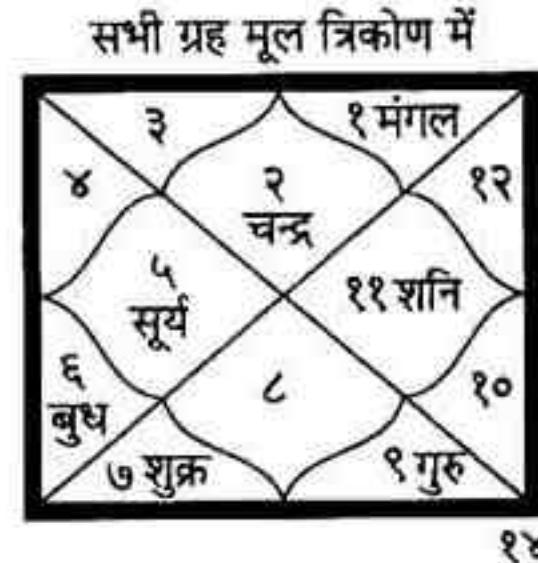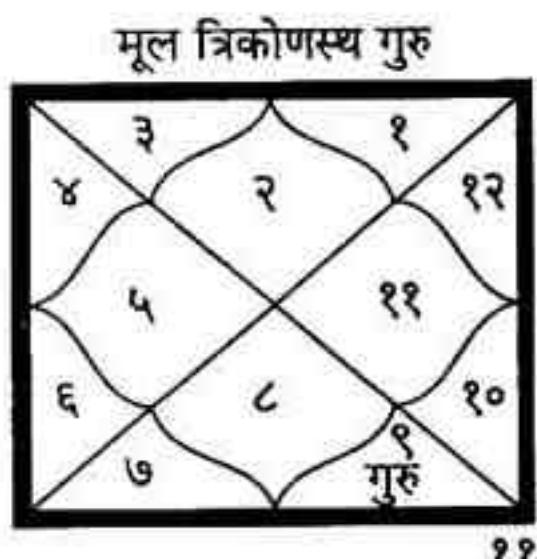
आवश्यक टिप्पणी—राहु को कर्क राशि में मूल त्रिकोणगत माना जाता है। इसी के आधार पर कुछ विद्वान केतु को मकर राशि में मूल त्रिकोणगत मानते हैं।

ग्रहों की उच्च तथा नीच स्थिति

जातक की जन्म कुंडली में जिस राशि के जितने अंश गत हो चुके हों, उसके अनुसार विभिन्न ग्रह उच्च तथा नीच स्थिति को प्राप्त करते हैं।

(१) ग्रहों की उच्च स्थिति—ग्रहों की उच्च स्थिति के बारे में नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए :

(१) सूर्य—मेष राशि के १० अंश पर उच्च का माना जाता है।
(२) चंद्र—वृष राशि के ३ अंश पर उच्च का माना जाता है।
(३) मंगल—मकर राशि के २८ अंश पर उच्च का माना जाता है।
(४) बुध—कन्या राशि के १५ अंश पर उच्च का माना जाता है।
(५) गुरु—कर्क राशि के अंश पर उच्च का माना जाता है।
(६) शुक्र—मीन राशि के २७ अंश पर उच्च का माना जाता है।
(७) शनि—तुला राशि के २० अंश पर उच्च का माना जाता है।

टिप्पणी—राहु तथा केतु छाया ग्रह हैं, अत: ज्योतिष शास्त्र के अनेक ग्रंथों में इनकी उच्च अथवा नीच स्थिति के विषय में कोई उल्लेख नहीं किया गया है, परन्तु कुछ विद्वानों के मत से मिथुन राशि के १५ अंश पर राहु उच्च का माना जाता है तथा कुछ के मतानुसार वृष राशि में राहु उच्च का माना जाता है। इसी प्रकार कुछ विद्वानों के मतानुसार धनु राशि के १५ अंश पर केतु उच्च का माना जाता है और कुछ के मतानुसार वृश्चिक राशि में केतु उच्च का माना जाता है।

(२) ग्रहों की नीच स्थिति—प्रत्येक ग्रह को जिस राशि के जितने अंशों पर उच्च का बताया गया है, उससे सातवीं राशि के उतने ही अंशों पर वह नीच का होता है। इसे नीचे लिखे अनुसार और अधिक स्पष्ट रूप में समझ लेना चाहिए :

(१) सूर्य—तुला राशि के १० अंश पर नीच का होता है।
(२) चन्द्र—वृश्चिक राशि के ३ अंश पर नीच का होता है।
(३) मंगल—कर्क राशि के २८ अंश पर नीच का होता है।
(४) बुध—मीन राशि के १५ अंश पर नीच का होता है।
(५) गुरु—मकर राशि के ५ अंश पर नीच का होता है।
(६) शुक्र—कन्या राशि के २७ अंश पर नीच का होता है।
(७) शनि—मेष राशि के २० अंश पर नीच का होता है।

टिप्पणी—राहु और केतु के विषय में यह है कि कुछ विद्वान धनु के १५ अंश पर राहु को नीच का मानते हैं और कुछ के मतानुसार वृश्चिक राशि में राहु नीच का होता है।

इसी प्रकार कुछ विद्वानों के मतानुसार मिथुन राशि के १५ अंश पर केतु नीच का होता है और कुछ के मतानुसार वृष राशि में केतु नीच का होता है।

नीचे दिये गए चक्र में ग्रहों की उच्च तथा नीच स्थिति को प्रदर्शित किया गया है :

ग्रहों की उच्च तथा नीच स्थिति बोधक चक्र

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	ग्रह
मेष १०	वृष ३	मकर २८	कन्या १५	कर्क ५	मीन २७	तुला २०	मिथुन १५ अथवा वृष राशि	धनु १५ अथवा वृश्चिक राशि	उच्च स्थिति
तुला १०	वृश्चिक ३	कर्क २८	मीन १५	मकर ५	कन्या २७	मेष २०	धनु १५	मिथुन १५ अथवा वृष राशि	नीच स्थिति

ग्रहों का बलाबल

प्रत्येक ग्रह उच्च का होने पर अधिक बलवान् होता है। उसके बाद यदि वह मूल त्रिकोण में हो तो अपनी राशि में रहने की अपेक्षा अधिक बली होता है। तत्पश्चात् स्वक्षेत्री ग्रह बलवान् होता है।

इस प्रकार ग्रहों की शक्ति की मुख्य रूप से चार स्थितियां होती हैं:—

(१) सर्वोच्चबली—उच्च का होने पर।
(२) उच्चबली—मूल त्रिकोण में रहने पर।
(३) बली—अपने नक्षत्र (घर) में रहने पर।
(४) निर्बल—नीच का होने पर।

उच्च क्षेत्र, मूल त्रिकोण तथा स्वग्रह के संबंध में विशेष विचार

नवग्रहों के उच्च क्षेत्रीय, मूल त्रिकोणस्थ तथा स्वग्रही होने के सम्बन्ध में विशेष रूप से नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए :

(१) सूर्य—सूर्य 'सिंह' राशि का स्वामी है, अतः यदि वह 'सिंह' राशि में स्थित हो तो उसे 'स्वग्रही' अथवा 'स्वक्षेत्री' कहा जाएगा। परंतु यदि सूर्य 'सिंह' राशि में स्थित हो तो सिंह राशि के १ से २० अंश तक उसका 'मूल त्रिकोण' माना जाता है तथा २१ से ३० अंश तक 'स्वक्षेत्र' कहा जाता है। मेष के १० अंश तक सूर्य 'उच्च' का तथा तुला के १० अंश तक 'नीच' का होता है, यह बात पहले बताई जा चुकी है।

(२) चंद्र—चन्द्र 'कर्क' राशि का स्वामी है, अतः यदि वह 'कर्क' राशि में स्थित हो तो उसे 'स्वग्रही' अथवा 'स्वक्षेत्री' कहा जाएगा। परंतु यदि चंद्रमा 'वृष' राशि में स्थित हो तो वह वृष राशि के ३ अंश तक उच्च का तथा इसी (वृष) राशि के ४ अंश से ३० अंश तक मूल त्रिकोण स्थित माना जाता है। वृश्चिक राशि के ३ अंश तक चन्द्रमा नीच का होता है, इसे पहले बताया जा चुका है।

(३) मंगल—मंगल 'मेष' तथा 'वृश्चिक' राशि का स्वामी है, अतः यदि वह 'मेष' अथवा 'वृश्चिक' राशि में स्थित हो तो उसे 'स्वग्रही' अथवा 'स्वक्षेत्री' कहा जाएगा। परंतु मेष राशि के १ से १८ अंश तक मंगल का 'मूल त्रिकोण' तथा १९ से २० अंश तक 'स्वक्षेत्र' कहा जाता है। मकर के २८ अंश तक मंगल उच्च का तथा कर्क के २८ अंश तक नीच का होता है, यह बात पहले बताई जा चुकी है।

(४) बुध—बुध 'कन्या' एवं 'मिथुन' राशि का स्वामी है, अतः यदि बुध 'कन्या' अथवा 'मिथुन' राशि में स्थित हो तो उसे 'स्वग्रही' अथवा 'स्वक्षेत्री' कहा जाएगा। परंतु कन्या राशि के १ से १८ अंश तक बुध का 'मूल त्रिकोण' तथा उससे आगे १९ से ३० अंश तक 'स्वक्षेत्र' माना जाता है। कन्या राशि के १५ अंश तक बुध उच्च का तथा मीन राशि के १५ अंश तक नीच का होता है, यह बात पहले बताई जा चुकी है।

इस प्रकार यदि बुध कन्या राशि में स्थित हो तो वह कन्या राशि के १ से १५ अंश तक उच्च का और इसके साथ ही १ से १८ अंश तक मूल त्रिकोण स्थित तथा १९ से ३० अंश तक स्वक्षेत्री होता है।

(५) गुरु—गुरु 'धनु' एवं 'मीन' राशि का स्वामी है, अतः यदि गुरु 'धनु' अथवा 'मीन' राशि में स्थित हो तो उसे 'स्वग्रही' अथवा 'स्वक्षेत्री' कहा जाएगा। परंतु धनु राशि के १ से १३ अंश तक गुरु का 'मूल त्रिकोण' होता है और उसके बाद १४ से ३० अंश तक 'स्वक्षेत्र' है। कर्क राशि के ५ अंश तक गुरु उच्च का तथा मकर राशि के ५ अंश तक नीच का होता है, यह बात पहले बताई जा चुकी है।

(६) शुक्र—शुक्र 'वृष' तथा 'तुला' राशि का स्वामी है, अतः यदि शुक्र 'वृष' अथवा 'तुला' राशि में स्थित हो तो उसे 'स्वग्रही' अथवा 'स्वक्षेत्री' कहा जाएगा। परंतु तुला राशि के १ से १० अंश तक शुक्र का 'मूल त्रिकोण' होता है, तत्पश्चात् ११ से ३० अंश तक उसका 'स्वक्षेत्र' है। मीन राशि के २७ अंश तक गुरु उच्च का तथा कन्या राशि के २७ अंश तक नीच का होता है, यह बात पहले बताई जा चुकी है।

(७) शनि—शनि 'मकर' तथा 'कुम्भ' राशि का स्वामी है, अत: यदि शनि 'मकर' अथवा 'कुंभ' राशि में स्थित हो तो उसे 'स्वग्रही' अथवा 'स्वक्षेत्री' कहा जाएगा। परंतु कुंभ राशि के १ से २० अंश तक शनि का 'मूल त्रिकोण' होता है और उसके बाद २१ से ३० अंश तक 'स्वक्षेत्र' है। तुला राशि के २० अंश तक शनि 'उच्च' का होता है, यह बात पहले बताई जा चुकी है।

(८) राहु—राहु को 'कन्या' राशि का स्वामी माना गया है, अत: यदि राहु 'कन्या' राशि में स्थित हो तो उसे 'स्वग्रही' अथवा 'स्वक्षेत्री' कहा जाता है।

कुछ विद्वानों के मतानुसार मिथुन राशि के ० अंश तक राहु उच्च का तथा धनु राशि के ० अंश तक नीच का होता है। इसके विपरीत कुछ अन्य विद्वानों के मत से 'वृष' राशि में राहु उच्च का तथा 'वृश्चिक' राशि में नीच का होता है, यह बात पहले बताई जा चुकी है।

कर्क राशि को राहु का मूल त्रिकोण माना जाता है।

(९) केतु—केतु को मिथुन राशि का स्वामी माना गया है, अत: यदि केतु 'मिथुन' राशि में स्थित हो तो उसे 'स्वग्रही' अथवा 'स्वक्षेत्री' कहा जाता है। धनु राशि के १५ अंश तक केतु उच्च का तथा मिथुन राशि के १५ अंश तक नीच का होता है, यह बात पहले बताई जा चुकी है।

इसके विपरीत कुछ अन्य विद्वानों के मत से 'वृश्चिक' राशि में केतु उच्च का तथा 'वृष' राशि में नीच का होता है।

सिंह राशि को केतु का मूल त्रिकोण माना जाता है।

पृष्ठ ४० पर दिये गए कोष्ठक द्वारा नवग्रहों की उच्च, नीच, मूल त्रिकोणगत तथा स्वक्षेत्री स्थिति को एक ही दृष्टि में ज्ञात किया जा सकता है।

ग्रहों के पद

नवग्रह मण्डल में सूर्य तथा चन्द्रमा को राजा, बुध को युवराज, मंगल को सेनापति, शुक्र और गुरु को मन्त्री तथा शनि को सेवक का पद प्राप्त है। जिस व्यक्ति के ऊपर जिस ग्रह का जितना अधिक प्रभाव होता है, उसे वह अपने ही समान बनाने का प्रयत्न करता है।

ग्रहों के बल

ग्रहों के निम्नलिखित ६ प्रकार के बल माने गए हैं :

(१) स्थान-बल।
(२) दिग्बल।
(३) कालबल।
(४) नैसर्गिक-बल।
(५) चेष्टाबल
(६) दृग्बल।

(१) स्थान-बल—जो ग्रह उच्च, स्वग्रही, मित्र-ग्रही अथवा मूल त्रिकोण में स्थित होता है, उसे 'स्थान बली' कहा जाता है।
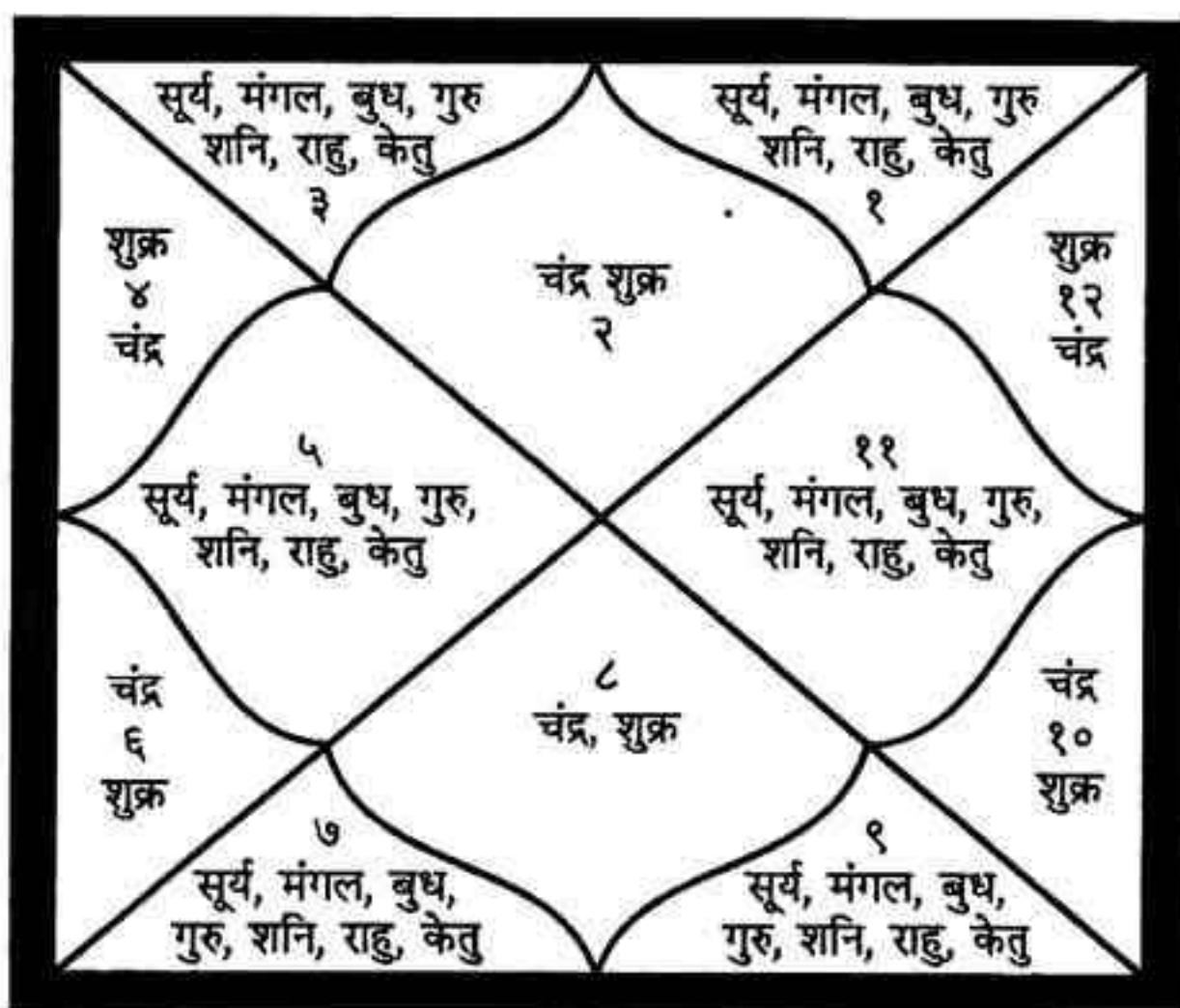
ग्रहों की उच्च, नीच तथा मूल त्रिकोणगत स्थिति बोधक चक्र

ग्रहों के नाम	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
कौन-सा ग्रह किस राशि का स्वामी है।	सिंह	कर्क	मेष वृश्चिक	कन्या मिथुन	धनु मीन	वृष तुला	मकर कुम्भ	कन्या	मिथुन
कौन-सा ग्रह किस राशि में उच्च का होता है।	मेष १० अंश तक	वृष ३ अंश तक	मकर २८ अंश तक	कन्या १५ अंश तक	कर्क ५ अंश तक	मीन २७ अंश तक	तुला २० अंश तक	मिथुन अंश तक (वृष)	धनु अंश तक (वृश्चिक)
कौन-सा ग्रह किस राशि में नीच का होता है।	तुला १० अंश तक	वृश्चिक ३ अंश तक	कर्क २८ अंश तक	मीन १५ अंश तक	मकर ५ अंश तक	कन्या २७ अंश तक	मेष २० अंश तक	धनु अंश तक	मिथुन अंश तक
कौन-सा ग्रह किस राशि में मूल त्रिकोणगत माना जाता है।	सिंह १ से २० अंश तक	वृष ४ से३० अंश तक	मेष १ से १८ अंश तक	कन्या १६ से २० अंश तक	धनु १ से १३ अंश तक	तुला १ से १० अंश तक	कुंभ १ से २० अंश तक	कर्क	सिंह
कौन-सा ग्रह किस राशि के किन अंशों में स्वक्षेत्री होता है।	सिंह २१से ३० अंश तक	कर्क १से३० अंश तक	मेष १९ से ३० अंश तक तथा वृश्चिक १ से ३० अंश तक	कन्या २१ से ३० अंश तक तथा मिथुन १ से ३० अंश तक	धनु १४ से ३० अंश तक तथा मीन १ से ३० अंश तक	तुला ११ से ३० अंश तक तथा वृष १ से ३० अंश तक	कुंभ २१ से ३० अंश तक तथा मकर १ से ३० अंश तक	कन्या १ से ३० अंश तक	मीन १ से ३० अंश तक

चन्द्रमा और शुक्र सम राशि—वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर तथा मीन—में तथा अन्य ग्रह (सूर्य, मंगल, बुध, गुरु, शनि, राहु एवं केतु) विषम राशि—मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु तथा कुम्भ—में स्थित होने पर स्थान बली होते हैं।

सामने दिये गए कुंडली चक्र नं० १५ में सम तथा विषम राशियों में कौन-सा ग्रह स्थान बली होता है इसे प्रदर्शित किया गया है—इसी के आधार पर अन्य कुंडलियों में भी समझ लेना चाहिए।

स्थानबली निरूपण चक्र

१५
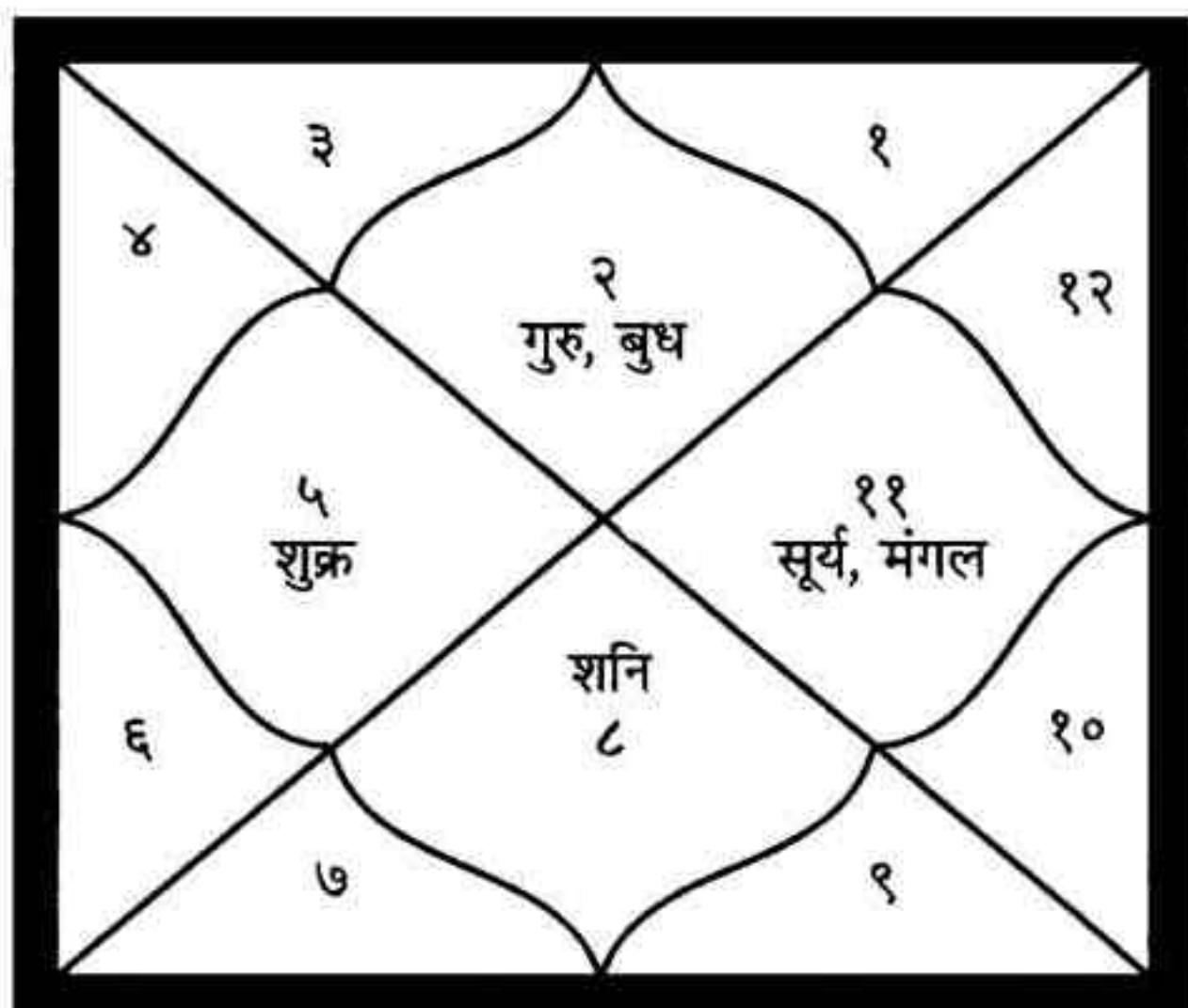
(२) दिग्बल—जन्म कुंडली में प्रथमभाव को पूर्व दिशा, चतुर्थभाव को उत्तर दिशा, सप्तमभाव को पश्चिम दिशा तथा दशमभाव को दक्षिण दिशा माना जाता है।

बुध और गुरु प्रथमभाव (लग्न) में रहने पर, चंद्रमा और शुक्र चतुर्थभाव में रहने पर, शनि सप्तम भाव में रहने पर तथा सूर्य और मंगल दशम भाव में स्थित रहने पर दिग्बली होते हैं।

आगे दिए गए कुंडली चक्र में कौन-सा ग्रह किस भाव में बैठने पर दिग्बली होता है, इसे प्रदर्शित किया गया है। इसी के आधार पर अन्य कुंडलियों को भी समझ लेना चाहिए।

(३) कालबल—जातक का जन्म रात्रि में हुआ हो तो चन्द्रमा, शनि और मंगल—ये तीनों ग्रह कालबली होते हैं और यदि दिन में जन्म हुआ हो तो सूर्य, बुध एवं शुक्र कालबली होते हैं गुरु सर्वकाल में बली होता है। मतान्तर से बुध को दिन रात्रि-दोनों में ही कालबली माना गया है।

दिग्बल निरूपण चक्र
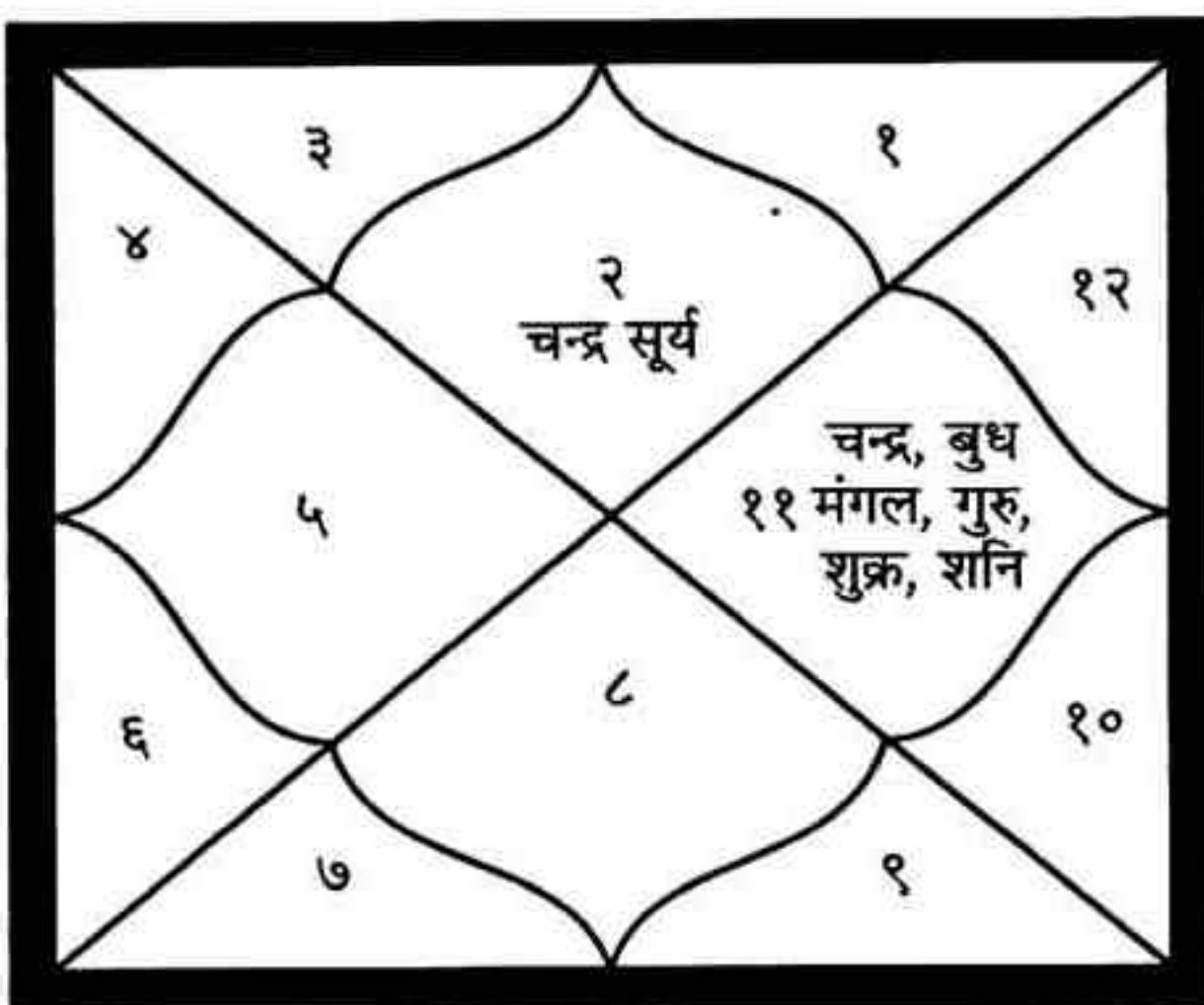
१६

(४) नैसर्गिक बल—शनि, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, चन्द्र तथा सूर्य—ये उत्तरोत्तर एक दूसरे से अधिक बली होते हैं, अर्थात् शनि से मंगल अधिक बलवान् है, मंलग से बुध अधिक बलवान् है, बुध से गुरु अधिक बलवान् है, गुरु से शुक्र अधिक बलवान् है, शुक्र से चंद्र अधिक बलवान् है तथा चंद्र से सूर्य अधिक बलवान् है। इसी क्रम के अनुसार सूर्य से चंद्रमा कम बली होता है, चंद्रमा से शुक्र कम बली होता है, शुक्र से गुरु कम बली होता है, गुरु से बुध कम बली होता है, बुध से मंगल कम बली होता है तथा मंगल से शनि कम बली होता है।

(५) चेष्टाबल—मकर राशि से मिथुन राशि तक किसी भी राशि में रहने से सूर्य तथा चंद्रमा चेष्टाबली होते हैं एवं मंगल, बुध, गुरु, शुक्र तथा शनि—ये ग्रह चंद्रमा के साथ रहने से चेष्टाबली होते हैं।

नीचे दिए गए कुंडली चक्र में नवग्रहों की चेष्टाबल स्थिति को प्रदर्शित किया गया है। इसी के अनुसार अन्य कुंडलियों में भी ग्रहों के चेष्टाबल को समझ लेना चाहिए।
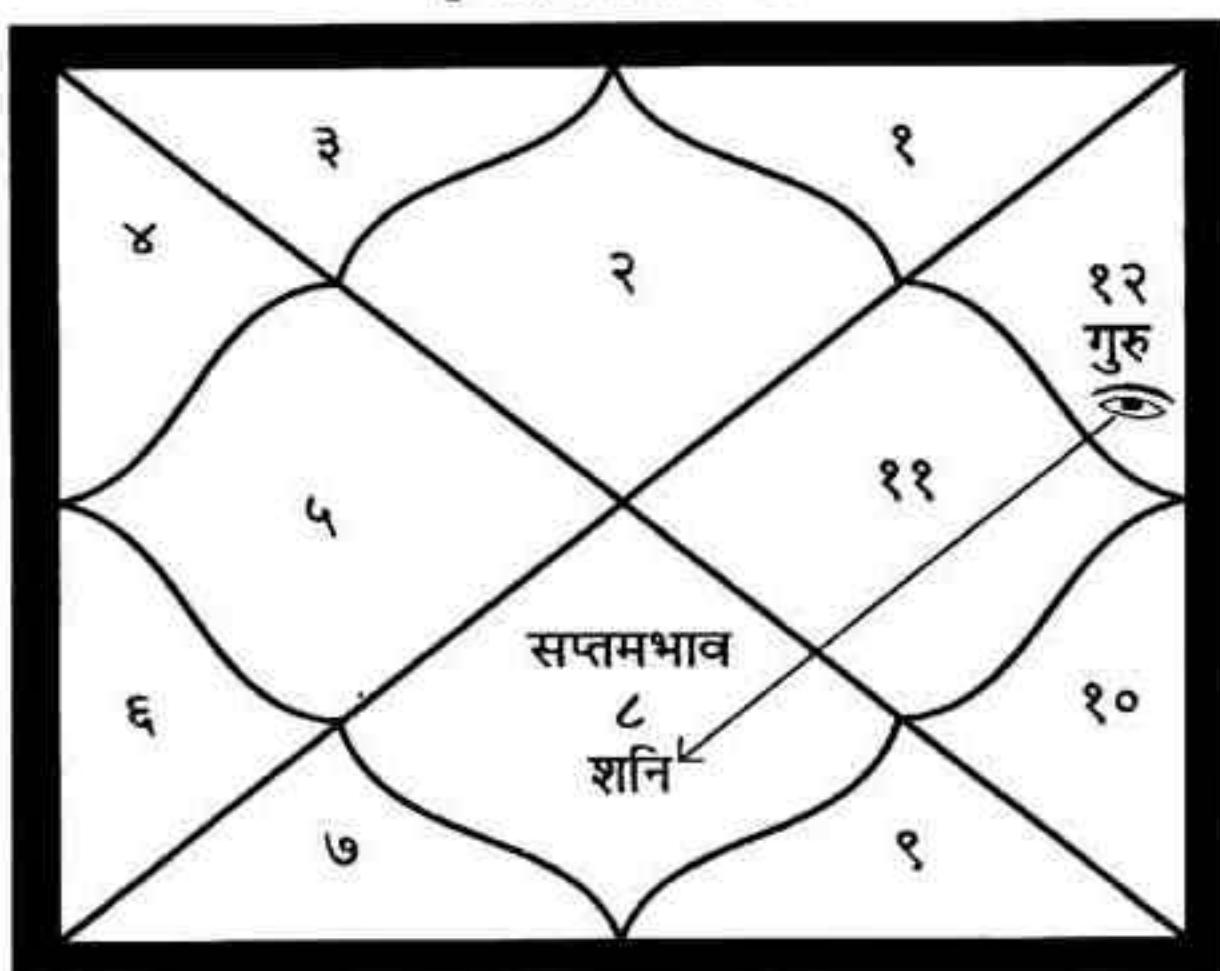
चेष्टाबल निरूपण चक्र

१७

(६) दृग्बल—जिन दुष्ट ग्रहों के ऊपर शुभ ग्रहों की दृष्टि पड़ रही हो, वे उनकी शुभ दृष्टि के बल को पाकर दृग्बली हो जाते हैं।

दृग्बल निरूपण चक्र

१८

उदाहरण के लिए किसी कुंडली में शनि सप्तम भाव में बैठा है और गुरु एकादश भाव में बैठा है, तो गुरु की शनि के ऊपर पूर्ण दृष्टि पड़ेगी, क्योंकि गुरु जिस भाव में बैठा होता है उस भाव से पांचवें, सातवें तथा नवें भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है (कौन-सा ग्रह किस भाव को देखता है इसका वर्णन आगे किया जाएगा)। ऐसी स्थिति में दुष्ट ग्रह शनि को शुभ ग्रह गुरु का दृष्टिबल प्राप्त होगा।

ऊपर दी गई कुंडली में उक्त स्थिति को प्रदर्शित किया गया है। इसी के अनुसार अन्य जन्म कुंडलियों के भी ग्रहों के दृष्टिबल को समझ लेना चाहिए।
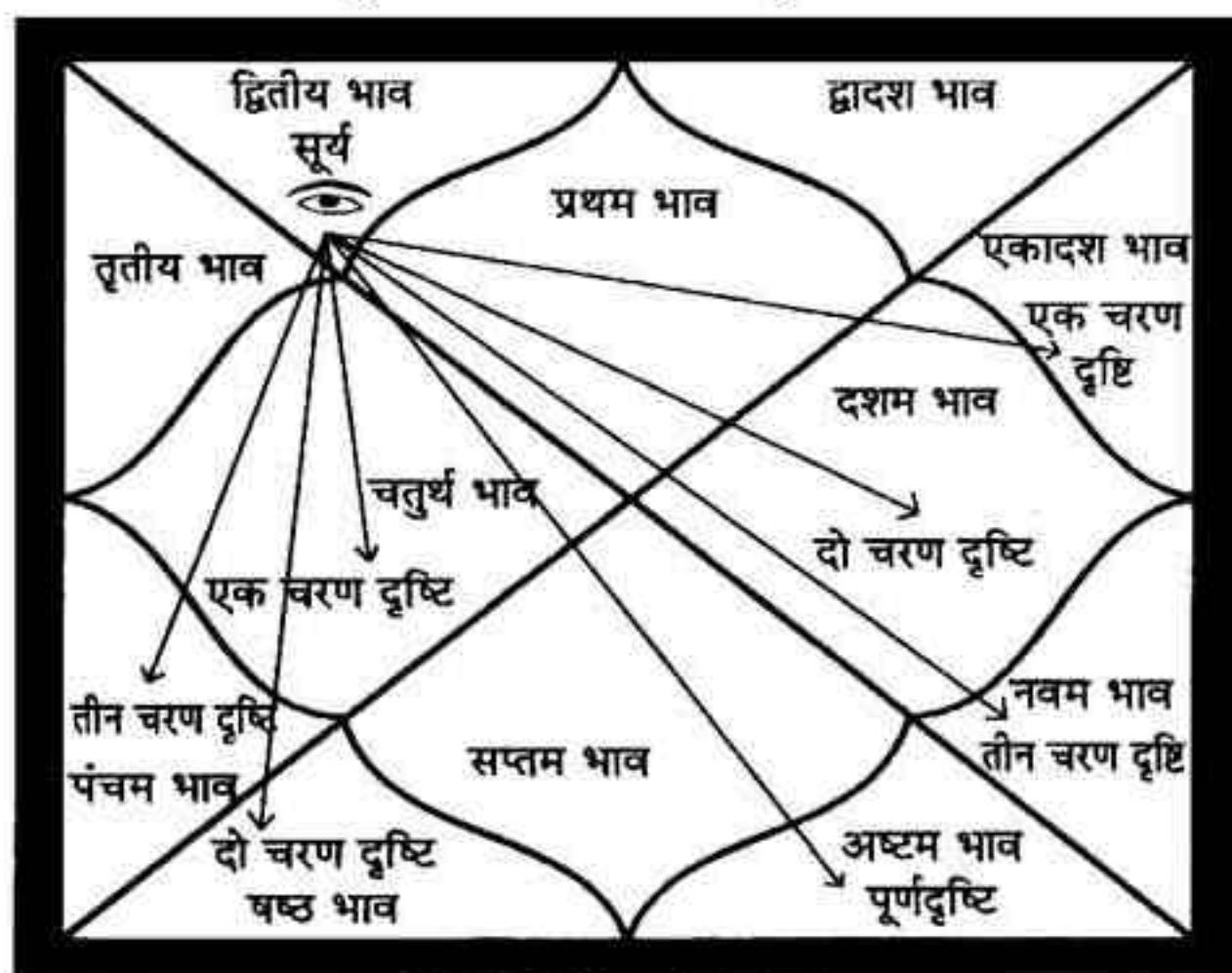
टिप्पणी—उपर्युक्त छह प्रकारों में से किसी भी प्रकार के बल को प्राप्त बलवान् ग्रह अपने स्वभाव के अनुसार जिस भाव में बैठा होता है, उस भाव का फल जातक को देता है। किसी भी भाव के शुभाशुभ फल की यथार्थ जानकारी प्राप्त करने के लिए उस भाव में स्थित राशि के स्वभाव तथा ग्रह के स्वभाव का समन्वय करके ही किसी निष्कर्ष पर पहुंचना चाहिए।

ग्रहों की दृष्टि

जन्म कुंडली में प्रत्येक ग्रह जिस भाव में बैठा होता है, उससे तीसरे तथा दसवें भाव को एक चरण दृष्टि से, पांचवें तथा नवें भाव को दो चरण दृष्टि से, चौथे तथा आठवें भाव को तीन चरण दृष्टि से तथा सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है, परंतु इन भावों को पूर्णापूर्ण दृष्टि से देखने के अतिरिक्त मंगल अपने बैठे हुए स्थान से चौथे तथा आठवें भाव को, गुरु अपने बैठे हुए स्थान से पांचवें तथा नवें भाव को तथा शनि अपने बैठे हुए स्थान से तीसरे और दसवें भाव को भी पूर्ण दृष्टि से देखता है।

नीचे दी गई विभिन्न कुंडलियों में विभिन्न ग्रहों की खंड तथा पूर्ण दृष्टि को प्रदर्शित किया गया है। इनके आधार पर अन्य जन्म कुंडलियों में भी ग्रहों की विभिन्न भावों पर पड़ने वाली दृष्टि की जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए।

सूर्य की विभिन्न भावों पर दृष्टि चक्र

१९
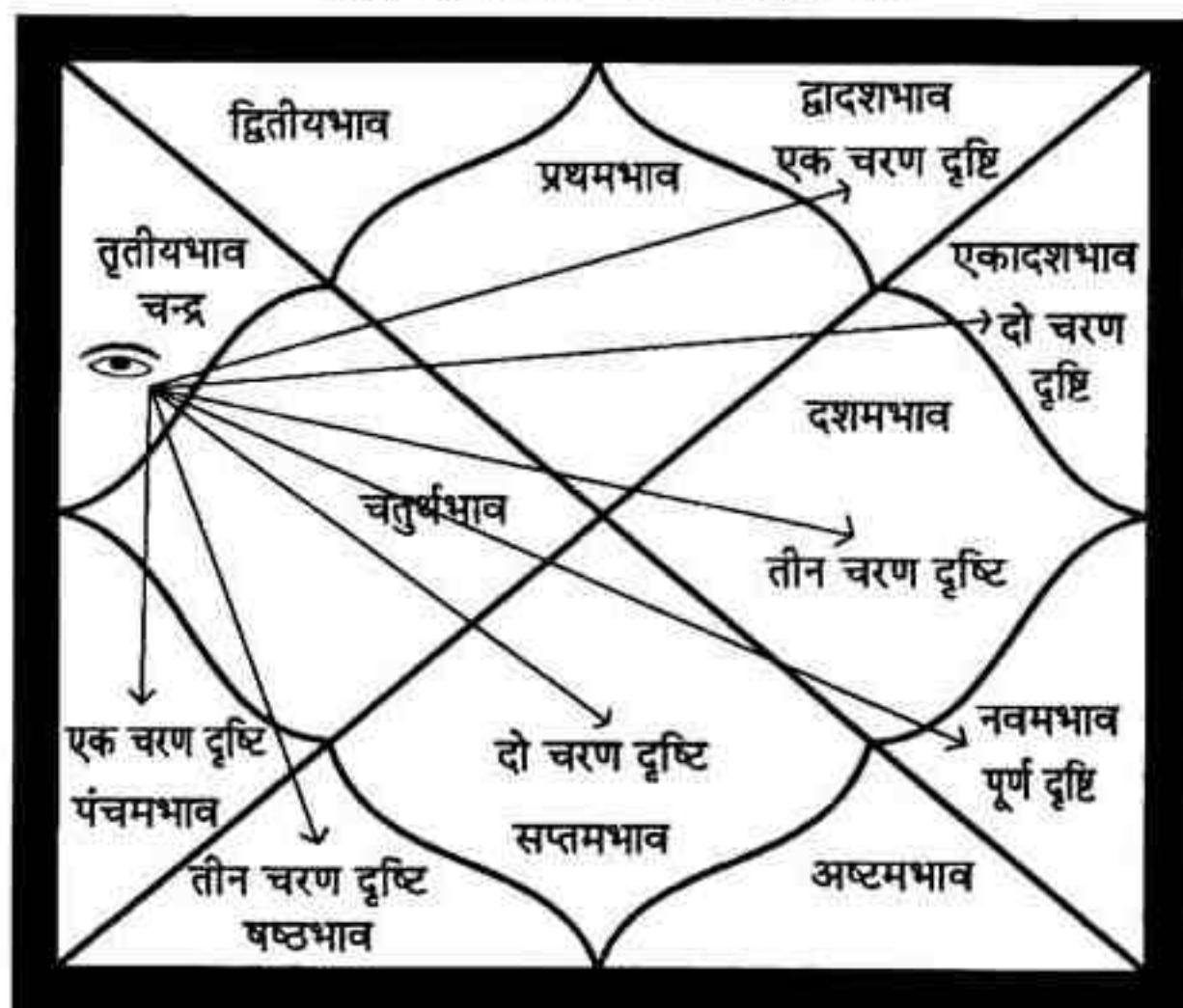
सूर्य की खंड तथा पूर्ण दृष्टि—सूर्य जिस भाव में भी बैठा हो, वहां से वह तीसरे तथा दसवें भाव को एक चरण दृष्टि से, पांचवें तथा नवें भाव को दो चरण दृष्टि से, चौथे तथा आठवें भाव को तीन चरण दृष्टि से एवं सातवें भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है।

इस उदाहरण कुंडली में सूर्य को द्वितीय भाव में बैठा हुआ दिखाया गया है, अत: द्वितीय भाव से आरंभ करके नियमानुसार विभिन्न भावों पर पड़ने वाली उसकी एक चरण, दो चरण, तीन चरण तथा पूर्ण दृष्टियों को प्रदर्शित किया गया है। जातक की जन्मकुंडली के जिस भाव में भी सूर्य की स्थिति हो, उसी भाव से आरंभ करके अन्य भावों पर पड़ने वाली उसकी खंड तथा पूर्ण दृष्टियों की जानकारी उपर्युक्त नियम के अनुसार प्राप्त कर लेनी चाहिए।

चंद्रमा की खंड तथा पूर्ण दृष्टि—चंद्रमा जिस भाव में बैठा हो, वहां से वह तीसरे तथा दसवें भाव को एक चरण दृष्टि से, पांचवें तथा नवें भाव को दो चरण दृष्टि से, चौथे तथा आठवें भाव को तीन चरण दृष्टि से एवं सातवें भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है।

चंद्रमा की विभिन्न भावों पर दृष्टि चक्र
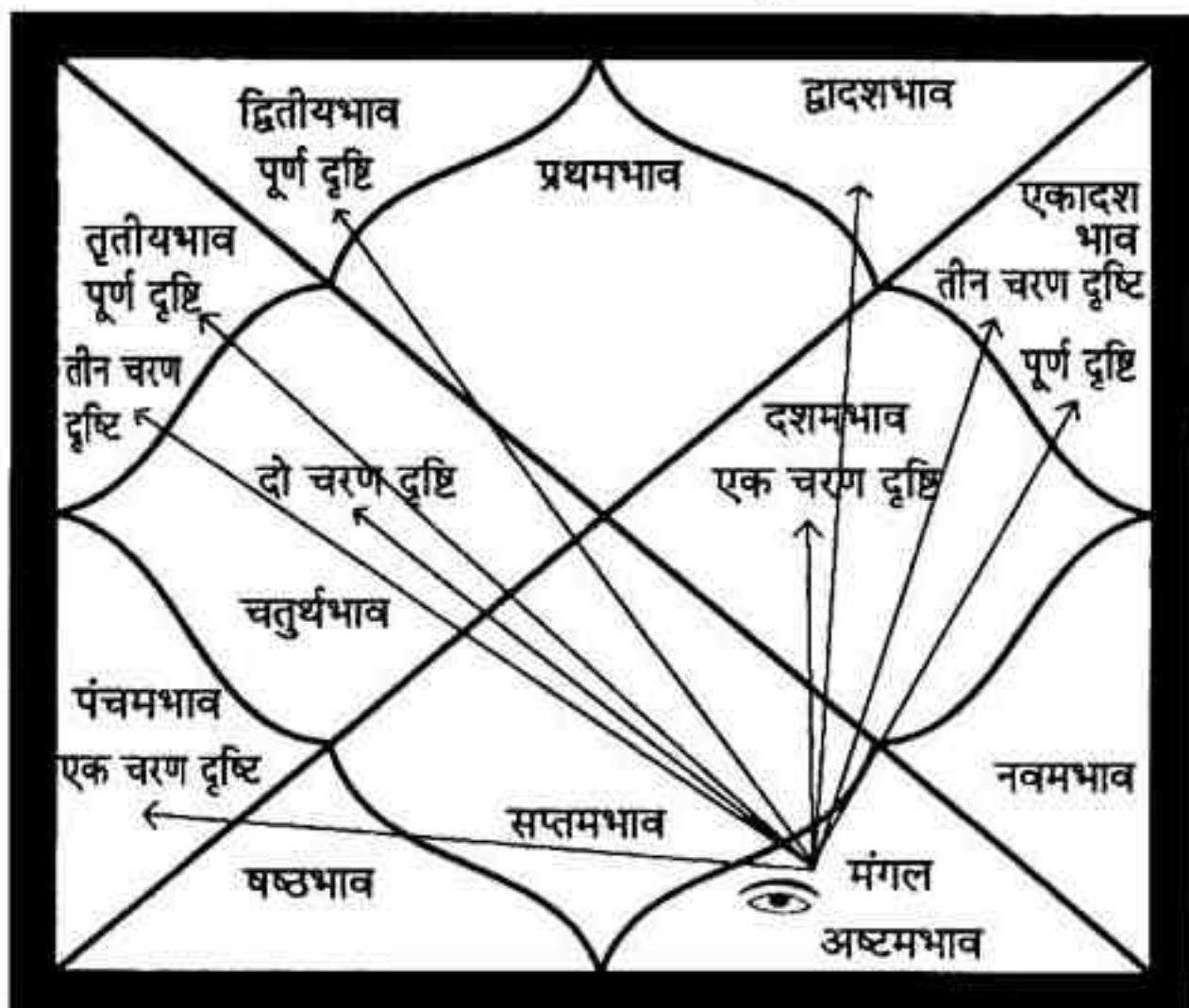
२०

इस उदाहरण कुंडली में चंद्रमा को तृतीयभाव में बैठा हुआ दिखाया गया है, अत: तृतीय भाव से आरंभ करके नियमानुसार विभिन्न भावों पर पड़ने वाली उसकी एक चरण, दो चरण, तीन चरण तथा पूर्ण दृष्टियों को प्रदर्शित किया गया है। जातक की जन्म कुंडली के जिस भाव में भी चंद्रमा की स्थिति हो, उसी भाव से आरंभ करके अन्य भावों पर पड़ने वाली उसकी खंड तथा पूर्ण दृष्टियों की जानकारी उपर्युक्त नियम के अनुसार प्राप्त कर लेनी चाहिए।

मंगल की खंड तथा पूर्ण दृष्टि—मंगल जिस भाव में भी बैठता है, वहां से वह तीसरे तथा दसवें भाव को एक चरण दृष्टि से, पांचवें तथा नवें भाव को दो चरण दृष्टि से, चौथे तथा आठवें भाव को तीन चरण दृष्टि से तथा सातवें, चौथे एवं आठवें—इन तीनों भावों को पूर्ण दृष्टि से देखता है। देखिए कुंडली नं० २१।

मंगल की विभिन्न भावों पर दृष्टि चक्र
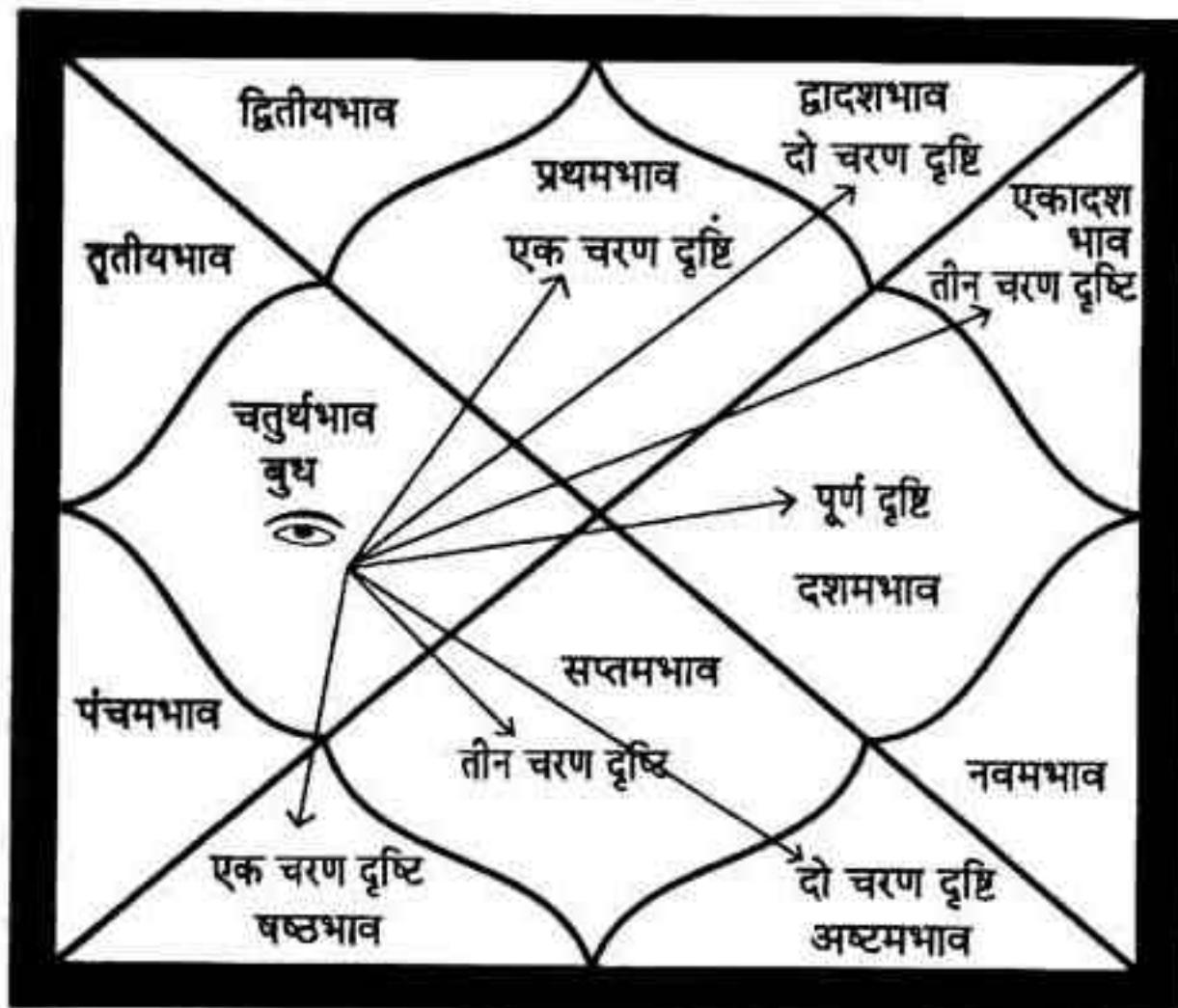
२१

इस उदाहरण कुंडली में मंगल को अष्टम भाव में बैठा हुआ दिखाया गया है, अतः अष्टमभाव से आरंभ करके नियमानुसार विभिन्न भावों पर पड़ने वाली उसकी एक चरण, दो चरण, तीन चरण तथा पूर्ण दृष्टियों को प्रदर्शित किया गया है। जातक की जन्म कुंडली के जिस भाव में मंगल की स्थिति हो, उसी भाव से आरंभ करके अन्य भावों पर पड़ने वाली उसकी खंड तथा पूर्ण दृष्टि की जानकारी उपर्युक्त नियम के अनुसार प्राप्त कर लेनी चाहिए।

बुध की खंड तथा पूर्ण दृष्टि—बुध जिस भाव में भी बैठा हो, वहां से वह तीसरे तथा दसवें भाव को एक चरण दृष्टि से, पांचवें तथा नवें भाव को दो चरण दृष्टि से, चौथे तथा आठवें भाव को तीन चरण दृष्टि से एवं सातवें भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है। देखिए कुंडली नं० २२।

बुध की विभिन्न भावों पर दृष्टि चक्र
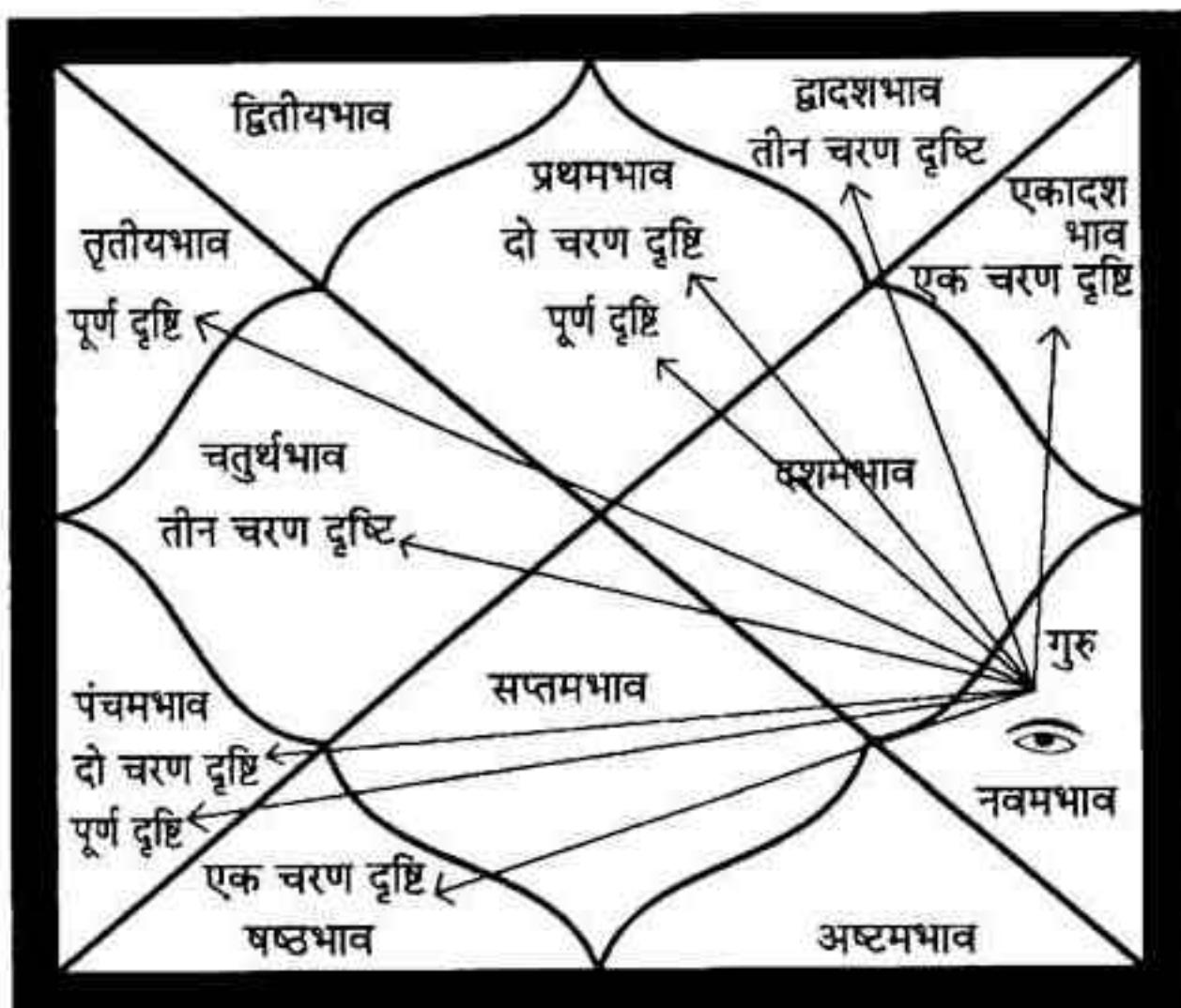
२२

इस उदाहरण कुंडली में बुध को चतुर्थभाव में बैठा हुआ दिखाया गया है, अतः चतुर्थभाव से आरंभ करके नियमानुसार विभिन्न भावों पर पड़ने वाली उसकी एक चरण, दो चरण, तीन चरण तथा पूर्ण दृष्टियों को प्रदर्शित किया गया है। जातक की जन्म कुंडली के जिस भाव में भी बुध की स्थिति हो, उसी भाव से आरंभ करके अन्य भावों पर पड़ने वाली उसकी खंड तथा पूर्ण दृष्टियों की जानकारी उपर्युक्त नियम के अनुसार प्राप्त कर लेनी चाहिए।

गुरु की खंड तथा पूर्ण दृष्टि—गुरु जिस भाव में भी बैठता है, वहां से वह तीसरे तथा दसवें भाव को एक चरण दृष्टि से, पांचवें तथा नवें भाव को दो चरण दृष्टि से, चौथे तथा आठवें भाव को तीन चरण दृष्टि से तथा सातवें, पांचवें एवं नवें—इन तीनों भावों को पूर्ण दृष्टि से देखता है। देखिए कुंडली नं० २३।
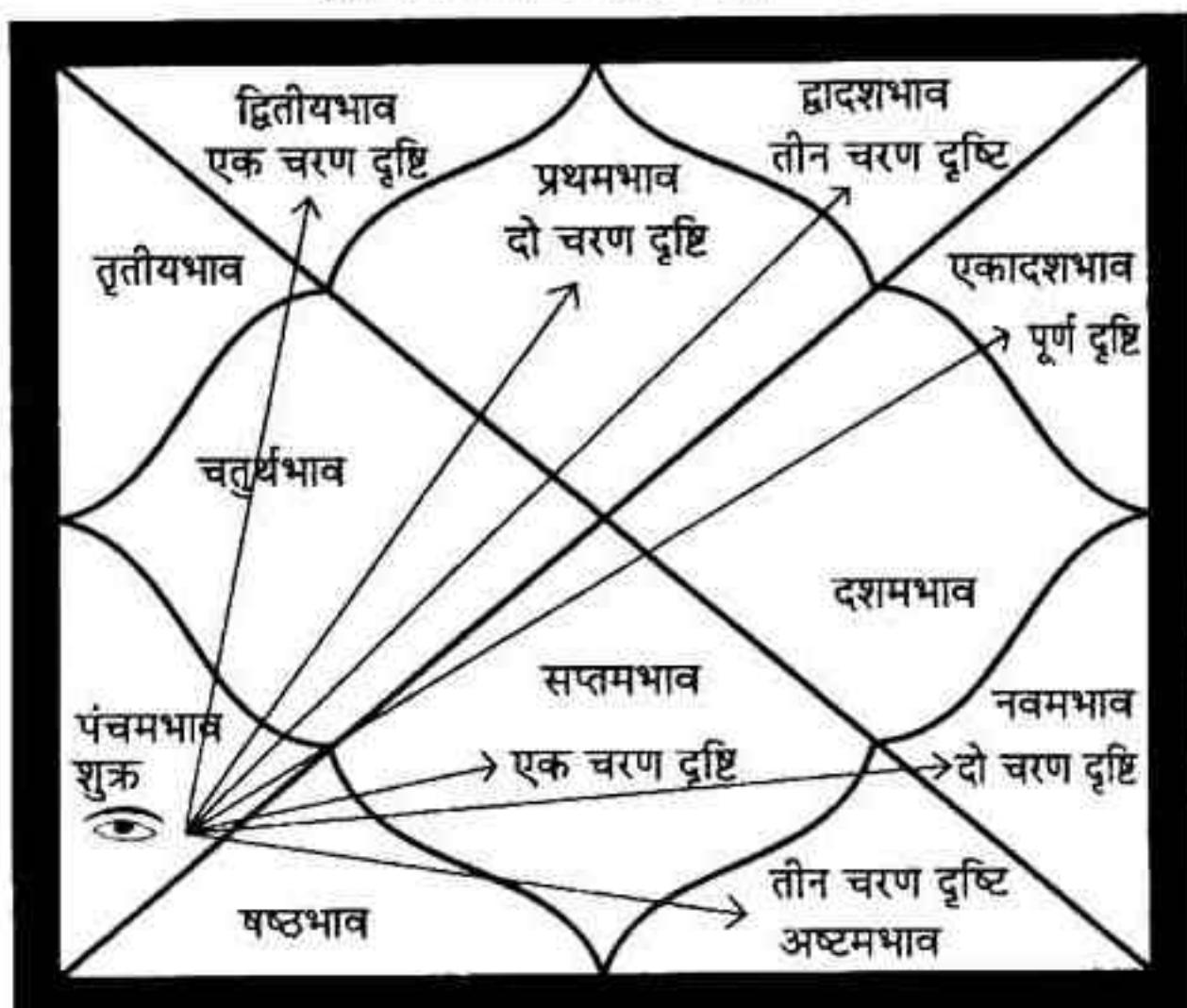
इस उदाहरण कुंडली में गुरु को नवमभाव में बैठा हुआ दिखाया गया है, अतः नवम भाव से आरंभ करके नियमानुसार विभिन्न भावों पर पड़ने वाली उसकी एक चरण, दो चरण, तीन चरण तथा पूर्ण दृष्टियों को प्रदर्शित किया गया है। जातक की जन्म कुंडली के जिस भाव में गुरु की स्थिति हो, उसी भाव से आरंभ करके अन्य भावों पर पड़ने वाली उसकी खंड तथा पूर्ण दृष्टियों की जानकारी उपर्युक्त नियम के अनुसार प्राप्त कर लेनी चाहिए।

गुरु की विभिन्न भावों पर दृष्टि चक्र

२३

शुक्र की विभिन्न भावों पर दृष्टि चक्र

२४
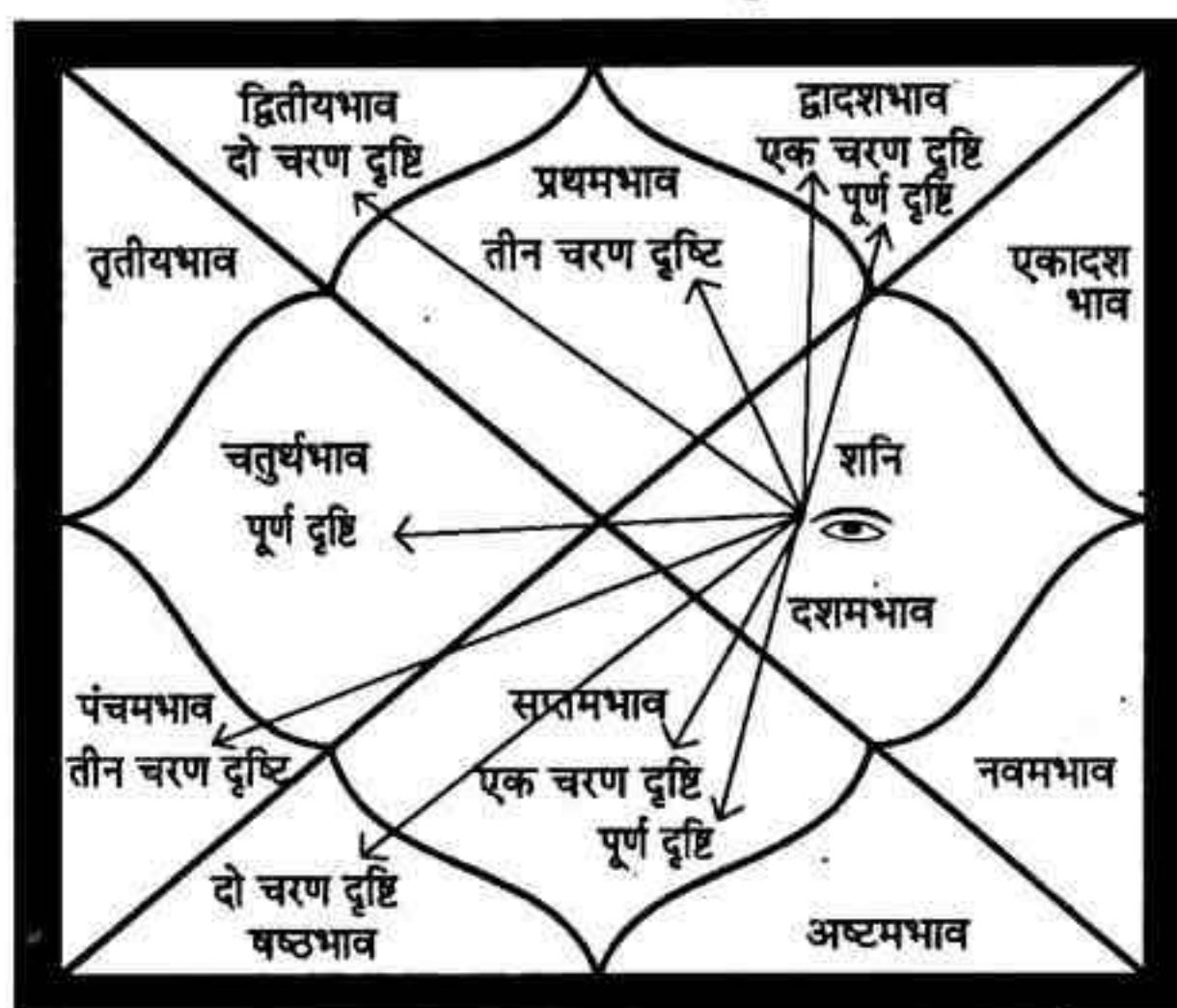
शुक्र की खंड तथा पूर्ण दृष्टि—शुक्र जिस भाव में भी बैठा हो, वहां से वह तीसरे तथा दसवेंभाव को एक चरण दृष्टि से, पांचवें तथा नवें भाव को दो चरण दृष्टि से, चौथे तथा आठवेंभाव को तीन चरण दृष्टि से एवं सातवें भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है।

इस उदाहरण-कुंडली में शुक्र को पंचमभाव में बैठा हुआ दिखाया गया है, अत: पंचम भाव से आरंभ करके नियमानुसार विभिन्न भावों पर पड़ने वाली उसकी एक चरण, दो चरण, तीन चरण तथा पूर्ण दृष्टियों को प्रदर्शित किया गया है। जातक की जन्म-कुंडली के जिस भाव में शुक्र की स्थिति हो, उसी भाव से आरंभ करके अन्य भावों पर पड़ने वाली उसकी खंड तथा पूर्ण दृष्टियों की जानकारी उपर्युक्त नियम के अनुसार प्राप्त कर लेनी चाहिए।

शनि की खंड तथा पूर्ण दृष्टि—शनि जिस भाव में भी बैठता है, वहां से वह तीसरे तथा दसवेंभाव को एक चरण दृष्टि से, पांचवें तथा नवेंभाव को दो चरण दृष्टि से, चौथे तथा आठवेंभाव को तीन चरण दृष्टि से तथा सातवें, तीसरे एवं दसवें—इन तीनों भावों को पूर्ण दृष्टि से देखता है। देखिए कुंडली नं० २५।

इस उदाहरण-कुंडली में शनि को दशमभाव में बैठा हुआ दिखाया गया है, अत: दशम भाव से आरंभ करके नियमानुसार विभिन्न भावों पर पड़ने वाली उसकी एक चरण, दो चरण, तीन चरण तथा पूर्ण दृष्टियों को प्रदर्शित किया गया है। जातक की जन्म कुंडली के जिस भाव में शनि की स्थिति हो, उसी भाव से आरंभ करके अन्य भावों पर पड़ने वाली उसकी खंड तथा पूर्ण दृष्टियों की जानकारी उपर्युक्त नियम के अनुसार प्राप्त कर लेनी चाहिए।
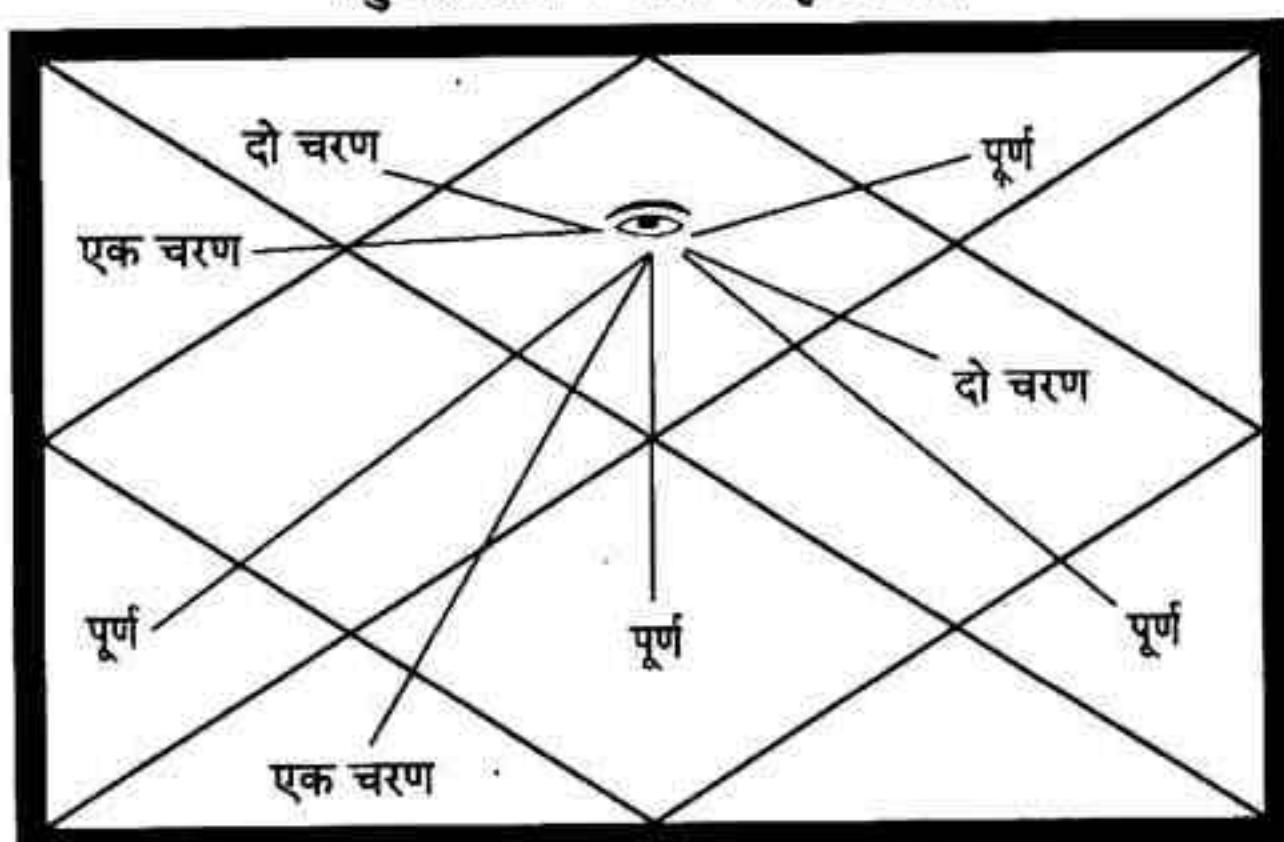
शनि की विभिन्न भावों पर दृष्टि चक्र

२५

राहु की खंड तथा पूर्ण दृष्टि—राहु जिस भाव में भी बैठा हो, वहां से वह तीसरे तथा छठे भाव को एक चरण दृष्टि से, दूसरे तथा दशमभाव को दो चरण दृष्टि से एवं पांचवें, सातवें, नवें तथा बारहवेंभाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है। देखिए कुंडली नं० २६।
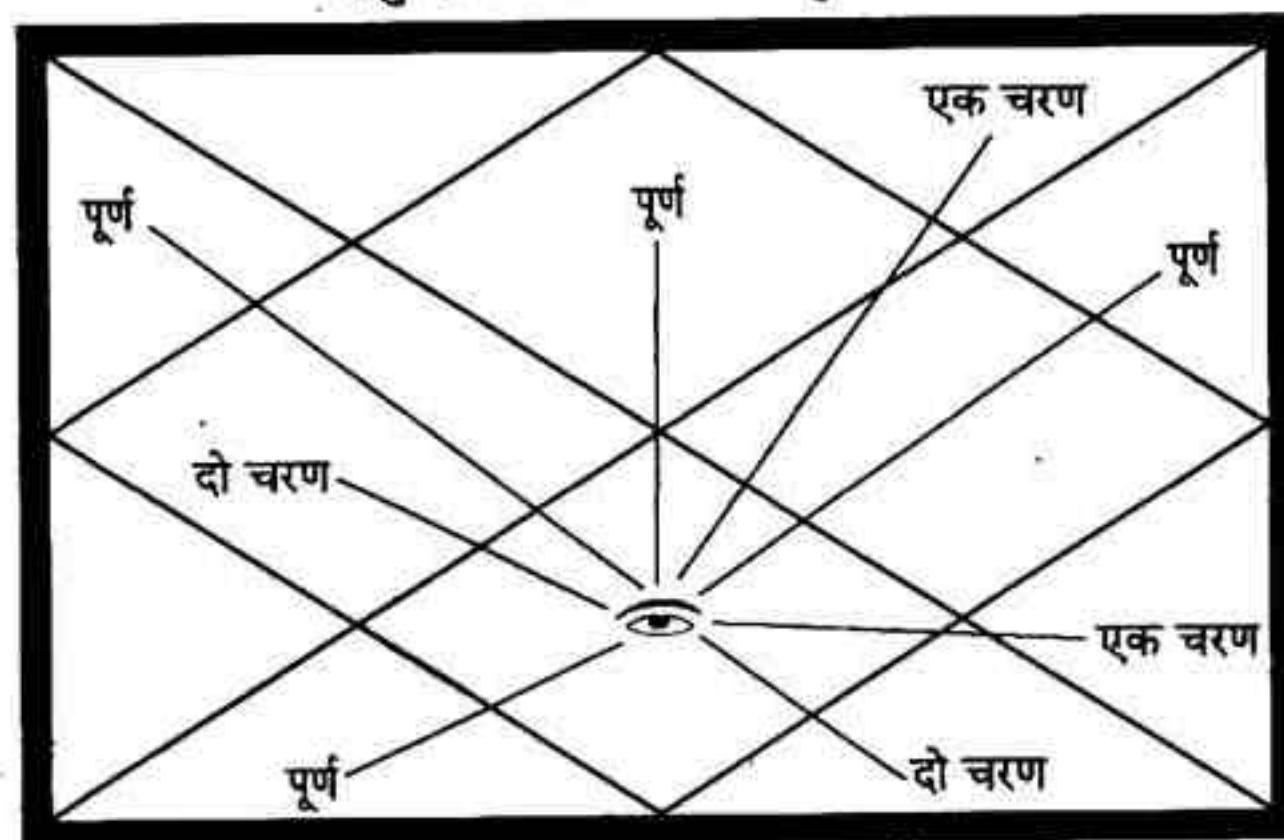
इस उदाहरण-कुंडली में राहु को प्रथमभाव में बैठा हुआ दिखाया गया है, अत: प्रथम भाव से आरंभ करके नियमानुसार विभिन्न भावों पर पड़ने वाली उसकी एक चरण, दो चरण तथा पूर्ण दृष्टियों को प्रदर्शित किया गया है। जातक की जन्म-कुंडली के जिस भाव में राहु की स्थिति हो, उसी भाव से आरंभ करके अन्य भावों पर पड़ने वाली उसकी खंड तथा पूर्ण दृष्टियों की जानकारी उपर्युक्त नियम के अनुसार प्राप्त कर लेनी चाहिए। राहु की त्रिपाद दृष्टि को 'अंध' माना गया है।

राहु की विभिन्न भावों पर दृष्टि चक्र

२६

केतु की विभिन्न भावों पर दृष्टि चक्र

२७

केतु की खंड तथा पूर्ण दृष्टि—केतु जिस भाव में भी बैठा हो, वहां से वह तीसरे तथा छठेभाव को एक चरण दृष्टि से, दूसरे तथा दशमभाव को दो चरण दृष्टि से, एवं पांचवें, सातवें, नवें तथा बारहवेंभाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है। देखिए कुंडली नं० २७।

इस उदाहरण-कुंडली में केतु को सप्तमभाव में बैठा हुआ दिखाया गया है, अत: सप्तमभाव से आरंभ करके नियमानुसार विभिन्न भावों पर पड़ने वाली उसकी एक चरण, दो चरण, तथा पूर्ण दृष्टि को प्रदर्शित किया गया है। जातक की जन्म-कुंडली के जिस भाव में केतु की स्थिति हो, उसी भाव से आरंभ करके अन्य भावों पर पड़ने वाली उसकी खंड तथा पूर्ण दृष्टि की जानकारी उपर्युक्त नियम के अनुसार प्राप्त कर लेनी चाहिए। केतु की त्रिपाद दृष्टि को 'अंध' माना गया है।

ग्रहों के अंश

प्रत्येक ग्रह के ३० अंश होते हैं। जातक के जन्म के समय कौन-सा ग्रह कितने अंश पर था, अर्थात् किस ग्रह के कितने अंश व्यतीत हो चुके थे, इसका ज्ञान उस समय के पंचांग द्वारा हो सकता है। प्रस्तुत पुस्तक में ग्रहों के अंश ज्ञात करने की विधि का वर्णन इसलिए नहीं किया जा रहा है कि वह इस पुस्तक के मूल विषय से बाहर की वस्तु हो जाएगी और सामान्य पाठकों के लिए अधिक उपयोगी भी नहीं रहेगी।

अतः जन्म-कुंडली स्थित ग्रहों के अंशों के संबंध में जानकारी किसी ज्योतिषी द्वारा प्राप्त कर लेनी चाहिए।

यहां हम पाठकों को केवल इतना ही बता देना चाहते हैं कि ३ से ९ अंश तक का ग्रह किशोरावस्था वाला होता है, १० से २२ अंश तक का ग्रह युवावस्था वाला होता है, २३ से २८ अंश तक का ग्रह वृद्धावस्था वाला होता है तथा २९ से २ अंश (२९, ३०, १ और २) तक का ग्रह मृतक-अवस्था में माना जाता है।

किशोरावस्था एवं वृद्धावस्था वाले ग्रह अपना प्रभाव कुछ कम प्रदर्शित करते हैं। युवावस्था वाले ग्रह अपना प्रभाव पूर्ण रूप से प्रदर्शित करते हैं तथा मृतक-अवस्था वाले ग्रह अपना प्रभाव अत्यंत सूक्ष्म रूप में प्रकट करते हैं।

मार्गी और वक्री गति

कौन-सा ग्रह मार्गी है और कौन-सा वक्री—इसका ज्ञान भी पंचांग देखने पर ही होता है। जातक के जन्म के समय जो ग्रह मार्गी होता है, वह उसे जीवन-भर मार्गी ग्रह के रूप में ही अपना फल देता है और जो ग्रह वक्री होता है, वह जीवन-भर वक्री ग्रह के रूप में ही अपना फल प्रदान करता है।

इसके अतिरिक्त पंचांग की दैनिक गोचर गति के अनुसार जो ग्रह मार्गी अथवा वक्री होते रहते हैं, वे जातक के जीवन पर अपनी उसी गति के अनुसार अलग से प्रभाव डालते हैं।

'मार्गी' का अर्थ है—वह ग्रह, जो अपने मार्ग पर सीधा आगे की ओर चलता रहे, अर्थात् यदि कोई ग्रह सिंह राशि पर है तो उसे सिंह राशि पर अपने भोग का समय पूरा करने के बाद, सिंह से आगे कन्या राशि पर, तत्पश्चात् क्रमश: तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ आदि राशियों पर सीधे चलते चला जाना चाहिए। ऐसी सीधी चाल वाले ग्रहों को 'मार्गी ग्रह' कहा जाता है।

वक्री का अर्थ है—वह ग्रह, जो अपने मार्ग पर सीधा आगे की ओर चलने की बजाय पीछे की ओर लौट जाता है, अर्थात् यदि कोई ग्रह सिंह राशि पर है तो उसे सिंह राशि पर अपने भोग का समय पूरा करने के बाद आगे कन्या राशि पर जाना चाहिए, परन्तु वह कन्या राशि पर न जाकर यदि पीछे कर्क राशि पर लौट जाये, तो उसे 'वक्री' कहा जाएगा।

ग्रहों के मार्गी तथा वक्री होने का ज्ञान किसी ज्योतिषी से पूछ कर प्राप्त कर लेना चाहिए।

उच्च राशिगत ग्रहों का फल

उच्च राशिगत ग्रहों का सामान्य फल नीचे लिखे अनुसार होता है—

उच्च राशिस्थ सूर्य

२८

जिस जातक की जन्म-कुंडली में सूर्य उच्च राशि (मेष) का हो, वह धनी, भाग्यवान, नेतृत्व-शक्ति संपन्न, विद्वान, सेनापति, यशस्वी एवं सुखी होता है।
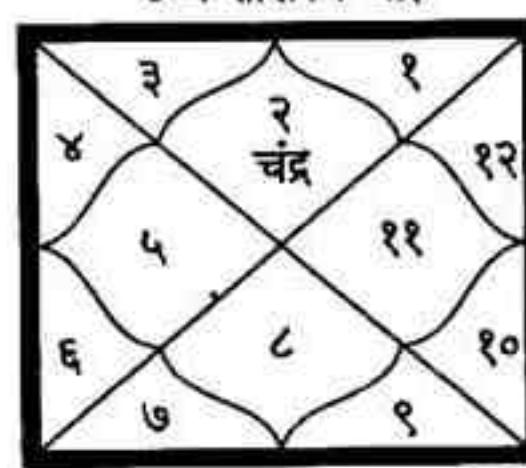
उदाहरण-कुंडली में जिस प्रकार सूर्य को मेष राशि में स्थित दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुंडलियों में भी समझ लेना चाहिए।

२९
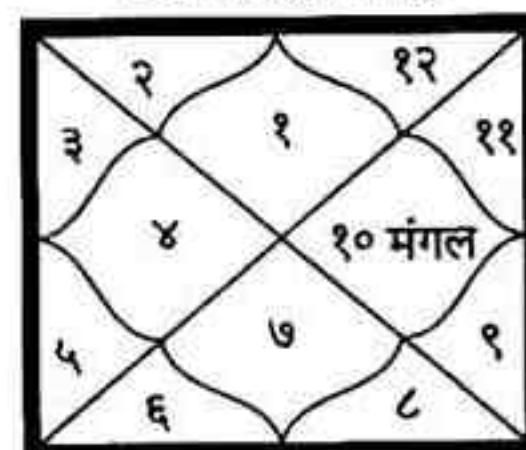
जिस जातक की जन्म-कुंडली में चंद्रमा उच्च राशि (वृष) का हो, वह विलासी, अलंकार-प्रिय, मिष्टान्न भोजी, यशस्वी, माननीय, सुखी एवं चपल स्वभाव का होता है।

उदाहरण-कुंडली में जिस प्रकार सूर्य को वृष राशि में स्थित दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुंडलियों में भी समझ लेना चाहिए।

उच्च राशिस्थ मंगल

३०
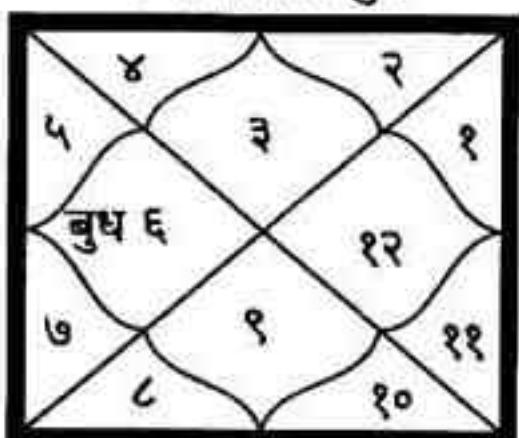
जिस जातक की जन्म-कुंडली में मंगल उच्च राशि (मकर) का हो, वह राज्य द्वारा सम्मान प्राप्त, कर्त्तव्यपरायण, साहसी तथा शूरवीर होता है।

उदाहरण-कुंडली में जिस प्रकार मंगल को मकर राशि में स्थित दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुंडलियों में भी समझ लेना चाहिए।

जिस जातक की जन्म-कुंडली में बुध उच्च राशि (कन्या) का हो, वह बुद्धिमान्, सुखी, लेखक, सम्पादक, राजा, राजमान्य, वंश-वृद्धिकर्त्ता, शत्रुनाशक तथा सुखी होता है।

उदाहरण-कुंडली में जिस प्रकार बुध को कन्या राशि में स्थित दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुंडलियों में भी समझ लेना चाहिए।

उच्च राशिस्थ बुध

३१
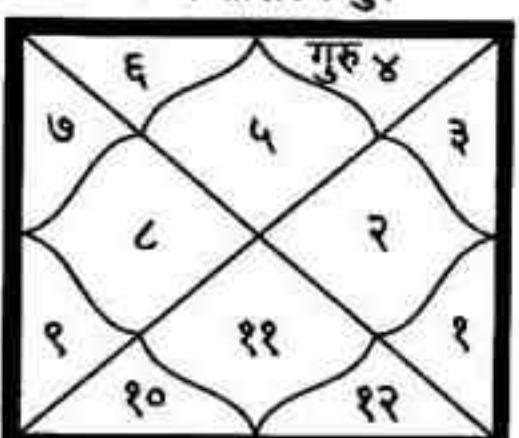
उच्च राशिस्थ गुरु

जिस जातक की जन्म-कुंडली में गुरु उच्च राशि (कर्क) का हो, वह विद्वान, शासक, मन्त्री, राजप्रिय, सुशील, चतुर, सुखी, ऐश्वर्यशाली तथा सद्गुणी होता है।

उदहारण-कुंडली में जिस प्रकार गुरु को कर्क राशि में स्थित दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुंडलियों में भी समझ लेना चाहिए।

३२
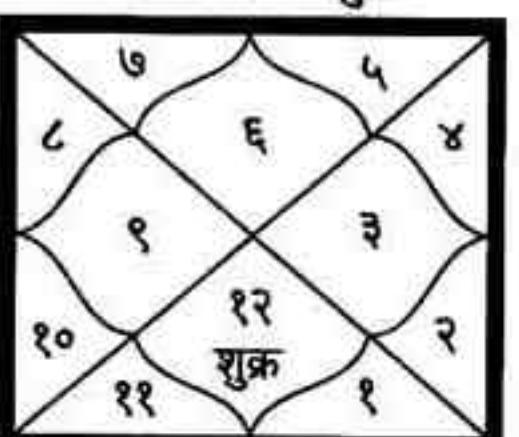
उच्च राशिस्थ शुक्र

जिस जातक की जन्म-कुंडली में शुक्र उच्च राशि (मीन) का हो, वह भाग्यवान्, कामी, विलासी, संगीत-प्रिय एवं सुखी होता है।

उदाहरण-कुंडली में जिस प्रकार शुक्र को मीन राशि में स्थित दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुंडलियों में भी समझ लेना चाहिए।

३३

उच्च राशिस्थ शनि

जिस जातक की जन्म-कुंडली में शनि उच्च राशि (तुला) का हो, वह पृथ्वीपति, कृषक, राजा, जमींदार, यशस्वी, ऐश्वर्यशाली तथा सुखी होता है।

उदाहरण-कुंडली में जिस प्रकार शनि को तुला राशि में स्थित दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुंडलियों में भी समझ लेना चाहिए।

३४

उच्च राशिस्थ राहु

३५
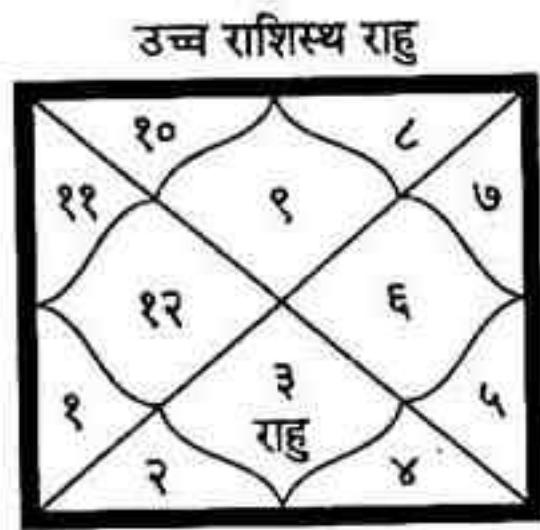
जिस जातक की जन्म-कुंडली में राहु उच्च राशि (मिथुन) का हो, वह धनी, शूरवीर, साहसी, लम्पट तथा सरदार होता है।
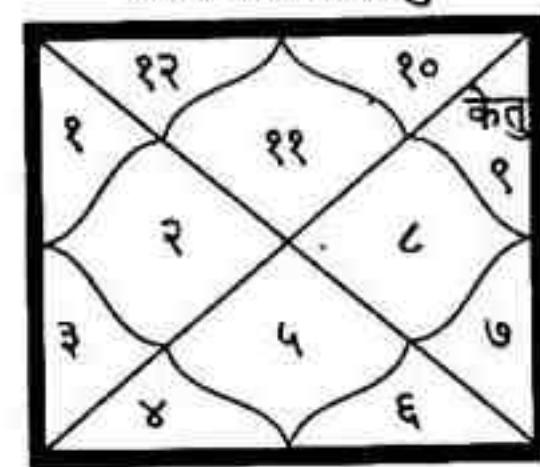
उदाहरण-कुंडली में जिस प्रकार राहु को मिथुन राशि में स्थित दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुंडलियों में भी समझ लेना चाहिये।

उच्च राशिस्थ केतु

३६

जिस जातक की जन्म-कुंडली में केतु उच्च राशि (धनु) का हो, वह सरदार, राजा प्रिय, भ्रमण प्रिय तथा नीच प्रकृति का होता है।
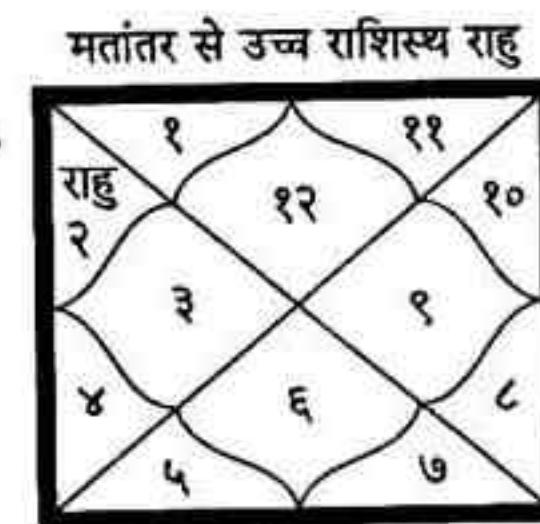
उदाहरण-कुंडली में जिस प्रकार केतु को धनु राशि में दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुंडलियों में भी समझ लेना चाहिए।

मतांतर से उच्च राशिस्थ राहु

३७

मतान्तर से 'वृष' राशि में स्थित राहु उच्च का माना जाता है। इसका फल भी वही होता है, जो ऊपर मिथुन राशिस्थ उच्च के राहु का बताया गया है।

उदाहरण-कुंडली में जिस प्रकार राहु को वृष राशि में स्थित दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुंडलियों में भी समझ लेना चाहिए।

मतांतर से उच्च राशिस्थ केतु

३८

मतान्तर से वृश्चिक राशि में स्थित केतु उच्च का माना जाता है। इसका फल भी वही होता है, जो ऊपर धनु राशि में स्थित उच्च के केतु का बताया गया है।

उदाहरण-कुंडली में जिस प्रकार केतु को वृश्चिक राशि में स्थित दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुंडलियों में भी समझ लेना चाहिए।
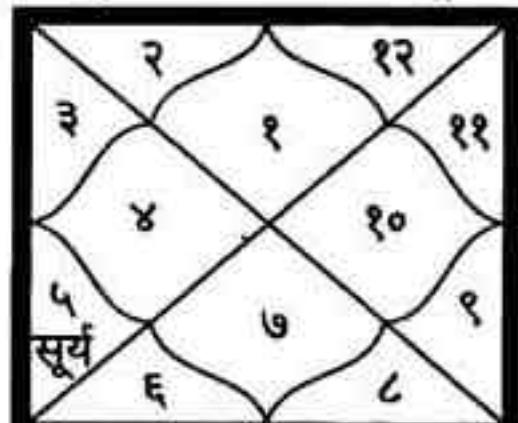
मूल त्रिकोण राशिगत ग्रहों का फल

मूल त्रिकोण राशिगत ग्रहों का सामान्य फल नीचे लिखे अनुसार होता है—

मूल त्रिकोण राशिगत सूर्य

३९

जिस जातक की जन्म-कुंडली में सूर्य मूल त्रिकोण (सिंह राशि के २० अंश तक) में हो, वह सम्माननीय, प्रतिष्ठित, पूज्य, धनी एवं सुखी होता है।

उदाहरण कुंडली में जिस प्रकार सूर्य को मूल त्रिकोण राशि में स्थित दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुंडलियों में भी समझ लेना चाहिए।

मूल त्रिकोण राशिगत चंद्र

४०
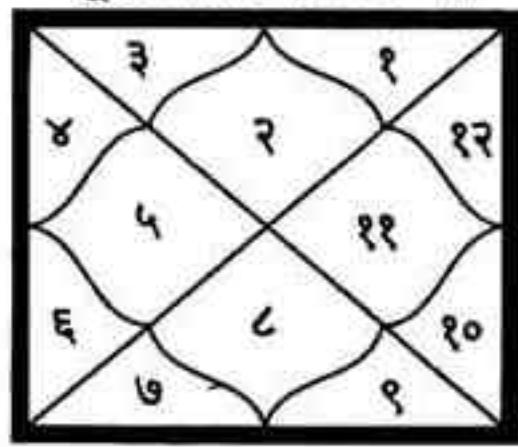
जिस जातक की जन्म-कुंडली में चंद्र मूल त्रिकोण (वृष राशि के ४ से ३० अंश तक) में हो, वह सुन्दर, सुखी, भाग्यशाली तथा धनवान होता है।

उदाहरण-कुंडली में चन्द्रमा को जिस प्रकार मूल त्रिकोण राशि में स्थित दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुंडलियों में भी समझ लेना चाहिए।

मूल त्रिकोण राशिगत मंगल

४१
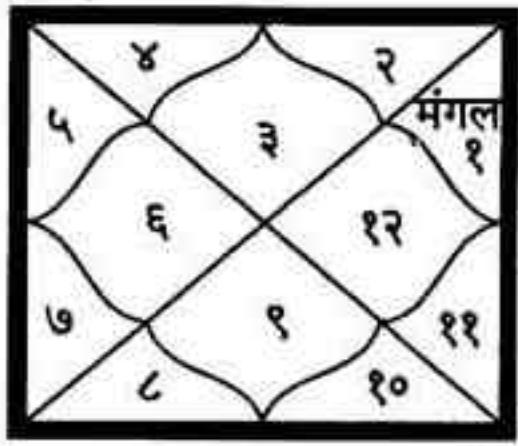
जिस जातक की जन्म-कुंडली में मंगल मूल त्रिकोण (मेष राशि के १८ अंश तक) में हो, वह सामान्य धनी, नीच, स्वार्थी, लम्पट, क्रोधी, चरित्रहीन, दुष्ट, निर्दयी तथा अपयशी होता है।

उदाहरण-कुंडली में जिस प्रकार मंगल को मूल त्रिकोण राशि में स्थित दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुंडलियों में भी समझ लेना चाहिए।
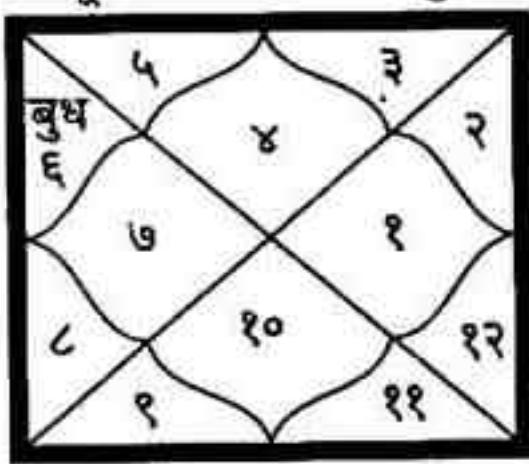
जिस जातक की जन्म-कुंडली में बुध मूल त्रिकोण (कन्या राशि के १६ से २० अंश तक) में हो, वह महत्वाकांक्षी, चिकित्सक, सैनिक, व्यवसायी, प्राध्यापक, विद्वान, राजमान्य तथा धनवान होता है।

उदाहरण-कुंडली में जिस प्रकार बुध को मूल त्रिकोण राशि में स्थित दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुंडलियों में भी समझ लेना चाहिए।

मूल त्रिकोण राशिगत बुध
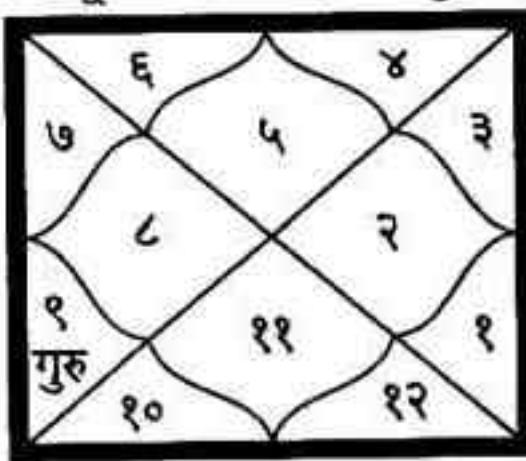
जिस जातक की जन्म-कुंडली में गुरु मूल त्रिकोणी (धनु राशि के १३ अंश तक) में हो, वह राजप्रिय, यशस्वी सम्माननीय, भोगी, तपस्वी तथा सुखी होता है।

उदाहरण-कुंडली में जिस प्रकार गुरु को मूल त्रिकोण राशि में स्थित दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुंडलियों में भी समझ लेना चाहिए।
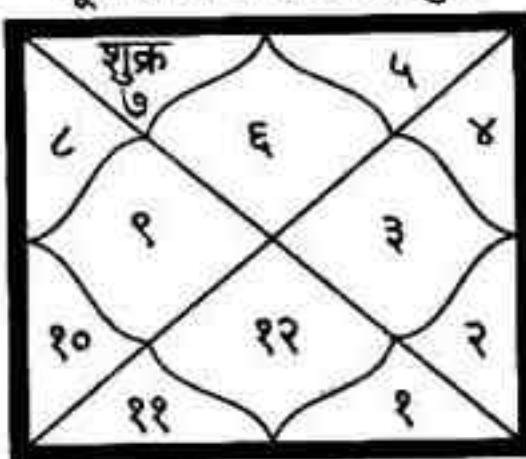
मूल त्रिकोण राशिगत गुरु

जिस जातक की जन्म-कुंडली में शुक्र मूल त्रिकोण (तुला राशि के १० अंश तक) में हो, वह जागीरदार स्त्रियों का प्रिय एवं अनेक प्रकार के पुरस्कारों को जीतने वाला होता है।

उदाहरण-कुंडली में जिस प्रकार शुक्र को मूल त्रिकोण राशि में स्थित दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुंडलियों में भी समझ लेना चाहिए।

मूल त्रिकोण राशिगत शुक्र
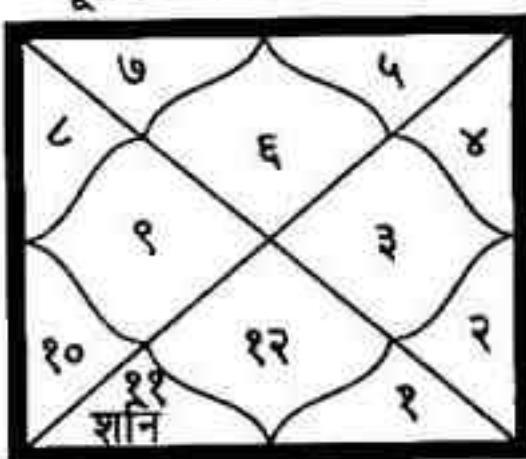
जिस जातक की जन्म-कुंडली में शनि मूल त्रिकोण (कुम्भ राशि के २० अंश तक) में हो, वह शूरवीर, साहसी, सेनापति, वैज्ञानिक, अस्त्र-शस्त्रों का निर्माता, कर्त्तव्यनिष्ठ एवं जहाज-चालक आदि होता है।

उदाहरण-कुंडली में जिस प्रकार शनि को मूल त्रिकोण राशि में स्थित दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुंडलियों में भी समझ लेना चाहिए।

मूल त्रिकोण राशिगत शनि
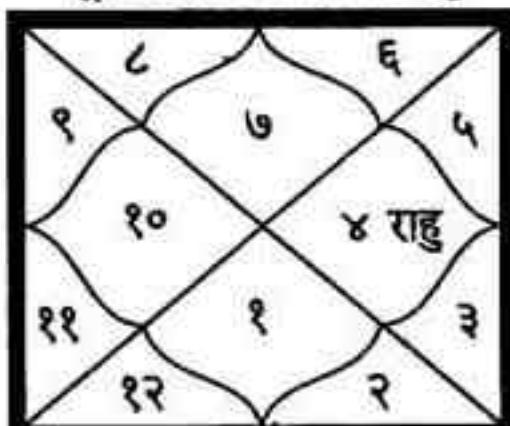
जिस जातक की जन्म-कुंडली में राहु मूल त्रिकोण (कर्क राशि) में हो, वह लोभी, वाचाल तथा धनी होता है।

उदाहरण-कुंडली में जिस प्रकार राहु को मूल त्रिकोण राशि में स्थित दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुंडलियों में भी समझ लेना चाहिए।

मूल त्रिकोण राशिगत राहु

४६
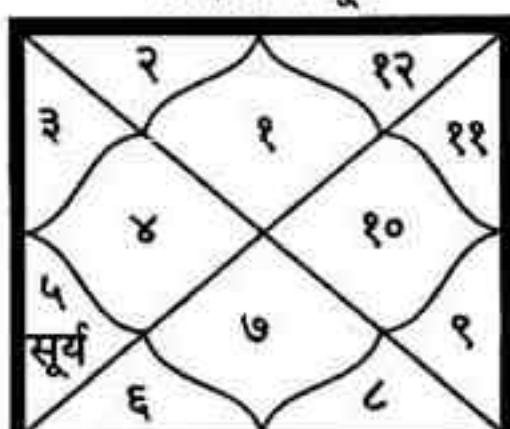
स्वक्षेत्रस्थ ग्रहों का फल
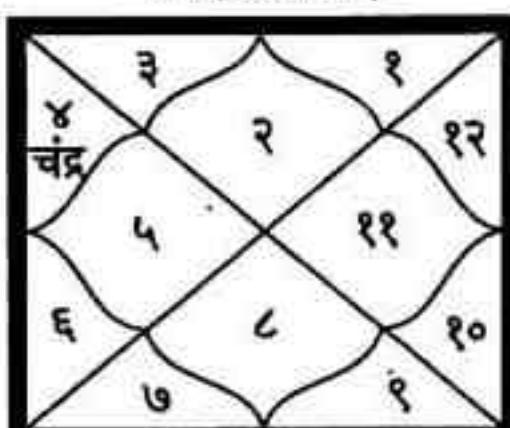
अपनी राशि (क्षेत्र) में स्थित ग्रहों का सामान्य फल नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
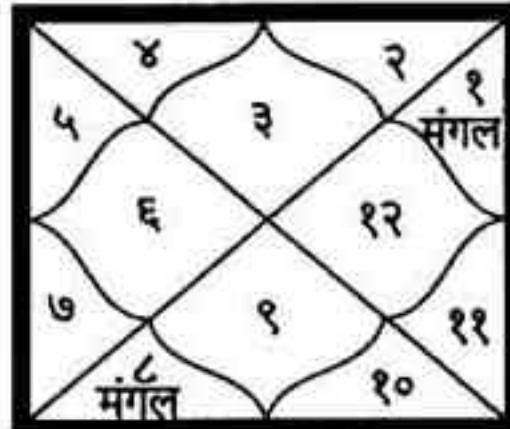
जिस जातक की जन्म-कुंडली में सूर्य स्वक्षेत्री (सिंह राशि का) हो, वह सुन्दर, ऐश्वर्यवान् सुखी, कामी तथा व्यभिचारी होता है।

उदाहरण-कुंडली में जिस प्रकार सूर्य स्वक्षेत्री दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुंडलियों में भी समझ लेना चाहिए।

स्वक्षेत्रस्थ सूर्य

४७

जिस जातक की जन्म-कुंडली में चंद्र स्वक्षेत्री (कर्क राशि का) हो, वह सुंदर, भाग्यशाली, धनी तथा तेजस्वी होता है।

उदाहरण-कुंडली में जिस प्रकार चंद्रमा को स्वक्षेत्री दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुंडलियों में भी समझ लेना चाहिए।

स्वक्षेत्रस्थ चंद्र

४८

जिस जातक की जन्म-कुंडली में मंगल स्वक्षेत्री (मेष राशि का) हो, वह जमींदार, किसान, साहसी, बलवान तथा यशस्वी होता है।

उदाहरण-कुंडली में जिस प्रकार मंगल को स्वक्षेत्री दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुंडलियों में भी समझ लेना चाहिए।

स्वक्षेत्रस्थ मंगल

४९

जिस जातक की जन्म-कुंडली में बुध स्वक्षेत्री (कन्या अथवा मिथुन राशि का) हो, वह शास्त्रज्ञ, लेखक, सम्पादक, विद्वान तथा बुद्धिमान होता है।
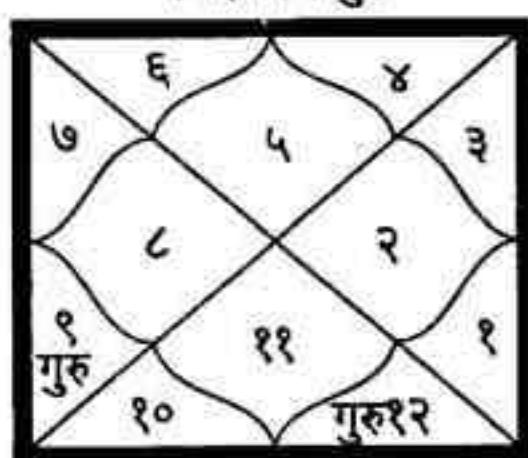
उदाहरण-कुंडली में जिस प्रकार बुध को स्वक्षेत्री दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुंडलियों में भी समझ लेना चाहिए।

स्वक्षेत्रस्थ बुध

५०

स्वक्षेत्रस्थ गुरु

५१

जिस जातक की जन्म-कुंडली में गुरु स्वक्षेत्री (धनु अथवा मीन राशि का) हो, वह काव्य-प्रेमी, शास्त्रज्ञ, वैद्य तथा सुखी होता है।

उदाहरण-कुंडली में जिस प्रकार गुरु को स्वक्षेत्री दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुंडलियों में भी समझ लेना चाहिए।

जिस जातक की जन्म-कुंडली में शुक्र स्वक्षेत्री (वृष अथवा तुला राशि का) हो, वह विचारवान्, स्वतंत्र प्रकृति का, धनी, गुणी एवं विद्वान होता है।
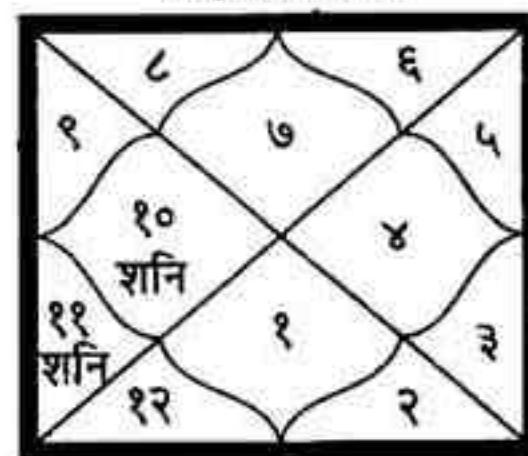
उदाहरण-कुंडली में जिस प्रकार शुक्र को स्वक्षेत्री दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुंडलियों में भी समझ लेना चाहिए।

स्वक्षेत्रस्थ शुक्र

५२

स्वक्षेत्रस्थ शनि

५३

जिस जातक की जन्म-कुंडली में शनि स्वक्षेत्री (मकर अथवा कुम्भ राशि का) हो, वह उग्र स्वभाव का, कष्ट-सहिष्णु तथा पराक्रमी होता है।

उदाहरण-कुंडली में जिस प्रकार शनि को स्वक्षेत्री दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुंडलियों में भी समझ लेना चाहिए।
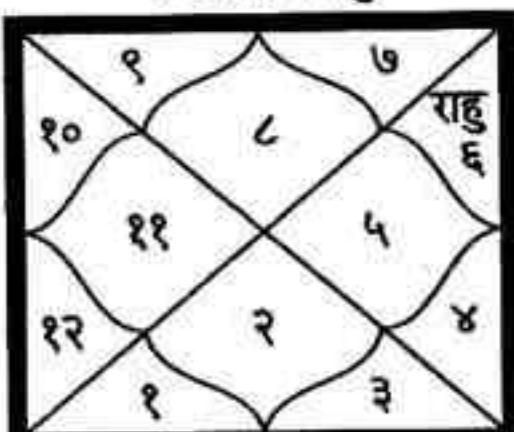
जिस जातक की जन्म-कुंडली में राहु स्वक्षेत्री (कन्या राशि का) हो, वह भाग्यवान्, यशस्वी तथा सुंदर होता है।

उदाहरण-कुंडली में जिस प्रकार राहु को स्वक्षेत्री दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुंडलियों में भी समझ लेना चाहिए।

स्वक्षेत्रस्थ राहु

५४

जिस जातक की जन्म-कुंडली में केतु स्वक्षेत्री (मिथुन राशि का) हो, वह गुप्त-युक्ति वाला, धैर्यवान्, चिंताशील, कष्ट सहिष्णु तथा कर्मठ होता है।

उदाहरण-कुंडली में जिस प्रकार केतु को स्वक्षेत्री दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुंडलियों में भी समझ लेना चाहिए।

स्वक्षेत्रस्थ केतु

५५

आवश्यक टिप्पणी—यदि किसी जातक की कुंडली में एक ग्रह स्वक्षेत्री हो तो वह अपनी जाति में श्रेष्ठ होता है। दो ग्रह स्वक्षेत्री हों तो कर्त्तव्यपरायण, धनी एवं सम्माननीय होता है। तीन ग्रह स्वक्षेत्री हों तो विद्वान, धनी, राजमंत्री होता है। चार ग्रह स्वक्षेत्री हों तो सरदार, धन-सम्पत्तिवान्, नेता एवं यशस्वी होता है। यदि पांच ग्रह स्वक्षेत्री हों तो राजा अथवा राजा के समान अधिकारों का उपयोग करने वाला परम ऐश्वर्यशाली, धनी, सुखी, गुणी, विद्वान तथा महायशस्वी होता है।
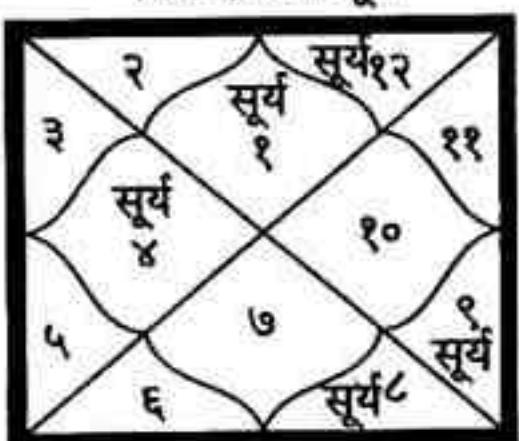
मित्र क्षेत्रगत ग्रहों का सामान्य फल

मित्र क्षेत्रगत ग्रहों का सामान्य फल नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

जिस जातक की जन्म-कुंडली में सूर्य अपने मित्र (चन्द्र, मंगल अथवा गुरु) की राशि (कर्क, मेष, वृश्चिक, धनु अथवा मीन) में बैठा हो, तो वह दानी, यशस्वी, व्यवहारकुशल तथा सौभाग्यशाली होता है।

उदाहरण-कुंडली में जिस प्रकार सूर्य को मित्र-क्षेत्री दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुंडलियों में भी समझ लेना चाहिए।

मित्र क्षेत्रगत सूर्य

५६

जिस जातक की जन्म-कुंडली में चंद्र अपने मित्र (सूर्य अथवा बुध) की राशि (सिंह, कन्या अथवा मिथुन) में बैठा हो, वह गुणवान्, धनवान् तथा सुखी होता है।
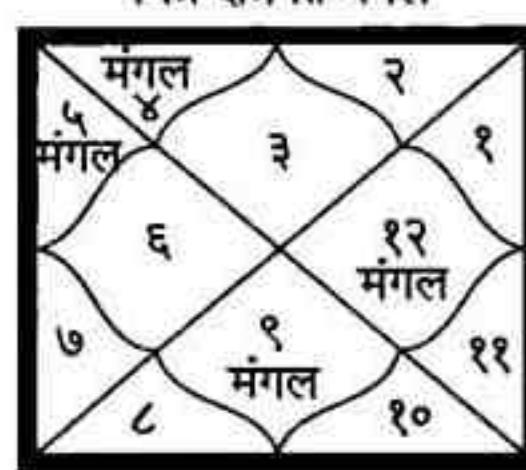
उदाहरण-कुंडली में जिस प्रकार चंद्रमा को मित्र-क्षेत्री दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुंडलियों में भी समझ लेना चाहिए।

मित्र क्षेत्रगत चंद्र

५७

जिस जातक की जन्म-कुंडली में मंगल अपने मित्र (सूर्य, चंद्र अथवा गुरु) की राशि (सिंह, कर्क, धनु अथवा मीन) में बैठा हो, वह धनवान् तथा मित्र-प्रेमी होता है।
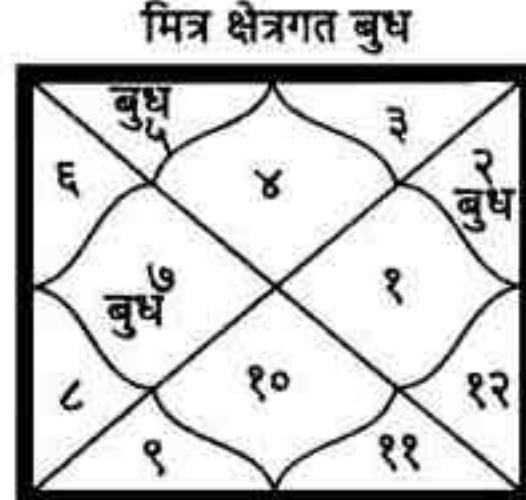
उदाहरण-कुंडली में जिस प्रकार मंगल को मित्र-क्षेत्री दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुंडलियों में भी समझ लेना चाहिए।

मित्र क्षेत्रगत मंगल

५८

जिस जातक की जन्म-कुंडली में बुध अपने मित्र (सूर्य अथवा शुक्र) की राशि (सिंह, वृष अथवा तुला) में बैठा हो, वह कार्यदक्ष, शास्त्रज्ञ तथा विनोदी स्वभाव का होता है।
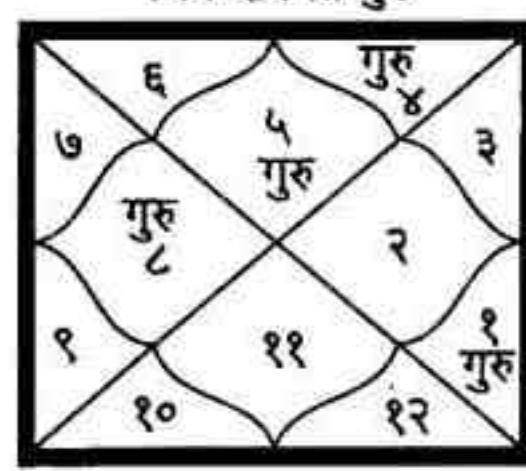
उदाहरण-कुंडली में जिस प्रकार बुध को मित्र-क्षेत्री दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुंडलियों में भी समझ लेना चाहिए।

मित्र क्षेत्रगत बुध

५९

जिस जातक की जन्म-कुंडली में गुरु अपने मित्र (सूर्य, चंद्र अथवा मंगल) की राशि (सिंह, कर्क, मेष अथवा वृश्चिक) में बैठा हो, वह बुद्धिमान्, सुखी तथा उन्नतिशील होता है।

उदाहरण-कुंडली में जिस प्रकार गुरु को मित्र-क्षेत्री दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुंडलियों में भी समझ लेना चाहिए।

मित्र क्षेत्रगत गुरु

६०

जिस जातक की जन्म-कुंडली में शुक्र अपने मित्र (बुध अथवा शनि) की राशि (कन्या, मिथुन, मकर अथवा कुंभ) में बैठा हो, वह सुखी, गुणवान् एवं संततिवान् होता है।

उदाहरण-कुंडली में जिस प्रकार शुक्र को मित्र-क्षेत्री दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुंडलियों में भी समझ लेना चाहिए।

मित्र क्षेत्रगत शुक्र

६१

जिस जातक की जन्म-कुंडली में शनि अपने मित्र (बुध अथवा शुक्र) की राशि (कन्या, मिथुन, वृष अथवा तुला) में बैठा हो, वह प्रेमी-स्वभाव का, धनी, सुखी तथा परान्न-भोजी होता है।

उदाहरण-कुंडली में जिस प्रकार शनि को मित्र-क्षेत्री दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुंडलियों में भी समझ लेना चाहिए।

मित्र क्षेत्रगत शनि

६२

आवश्यक टिप्पणी—(१) मित्र-क्षेत्री राहु तथा केतु का फल मित्र-क्षेत्री शनि के समान होता है।

(२) जिस जातक की जन्म-कुंडली में एक ग्रह मित्र-क्षेत्री हो, वह पराये धन का उपभोग करता है। यदि दो ग्रह मित्र-क्षेत्री हों तो जातक मित्र के धन का उपभोग करता है। यदि तीन ग्रह मित्र-क्षेत्री हों तो स्व-उपार्जित धन का उपयोग करता है। यदि चार ग्रह मित्र-क्षेत्री हों तो दानी होता है। यदि पांच ग्रह मित्र-क्षेत्री हों तो नेता, सरदार अथवा सेनापति होता है। यदि छः ग्रह मित्र-क्षेत्री हों तो राजमान्य, उच्च पदाधिकारी, प्रथम श्रेणी का नेता अथवा महान सेनानायक होता है। यदि सात ग्रह मित्र-क्षेत्री हों तो जातक राजा अथवा राजा के समान अधिकार प्राप्त करने वाला होता है।

शत्रु क्षेत्रगत ग्रहों का फल

शत्रु क्षेत्रगत ग्रहों का सामान्य फल नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

जिस जातक की जन्म-कुंडली में सूर्य अपने शत्रु (शुक्र अथवा शनि) की राशि (वृष, तुला, मकर अथवा कुंभ) में बैठा हो, वह नौकरी करने वाला तथा सर्वदा दुःखी रहने वाला होता है।
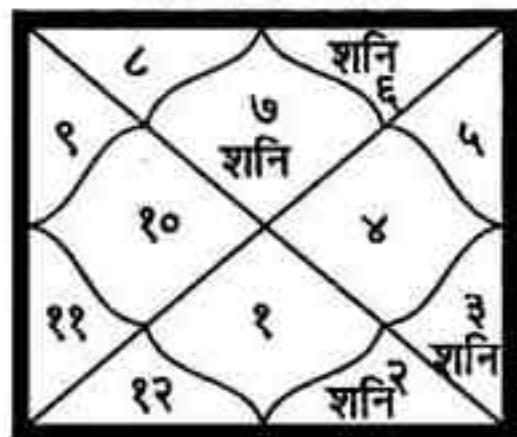
उदाहरण-कुंडली में जिस प्रकार सूर्य को शत्रु-क्षेत्री दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुंडलियों में भी समझ लेना चाहिए।

शत्रु क्षेत्रगत सूर्य

६३

शत्रु क्षेत्रगत चन्द्र

६४

जिस जातक की जन्म-कुंडली में चंद्रमा अपने शत्रु (राहु अथवा केतु) की राशि (कन्या अथवा मिथुन) में बैठा हो, वह अपनी माता के कारण दुःखी रहता है तथा हृदय रोगी होता है।

उदाहरण-कुंडली में जिस प्रकार चंद्रमा को शत्रु-क्षेत्री दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुंडलियों में भी समझ लेना चाहिए।

शत्रु क्षेत्रगत मंगल

६५

जिस जातक की जन्म-कुंडली में मंगल अपने शत्रु (बुध) की राशि (कन्या अथवा मिथुन) में बैठा हो, वह दीन, मलीन, विकलांग तथा व्याकुल रहने वाला होता है।

उदाहरण-कुंडली में जिस प्रकार मंगल को शत्रु-क्षेत्री दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुंडलियों में भी समझ लेना चाहिए।

शत्रु क्षेत्रगत बुध

६६

जिस जातक की जन्म-कुंडली में बुध अपने शत्रु (चंद्रमा) की राशि (कर्क) में बैठा हो, वह कर्त्तव्यहीन, वासनायुक्त तथा सामान्य सुख प्राप्त करने वाला होता है।

उदाहरण-कुंडली में जिस प्रकार बुध को शत्रु-क्षेत्री दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुंडलियों में भी समझ लेना चाहिए।

शत्रु क्षेत्रगत गुरु

६७

जिस जातक की जन्म-कुंडली में गुरु अपने शत्रु (शुक्र अथवा बुध) की राशि (वृष, तुला, कन्या अथवा मिथुन) में बैठा हो, वह चतुर तथा भाग्यशाली होता है।

उदाहरण-कुंडली में जिस प्रकार गुरु को शत्रु-क्षेत्री दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुंडलियों में भी समझ लेना चाहिए।

जिस जातक की जन्म-कुंडली में शुक्र अपने शत्रु (सूर्य अथवा चंद्रमा) की राशि (सिंह अथवा कर्क) में बैठा हो, वह नौकरी अथवा दास वृत्ति करके अपनी जीविका चलाता है।

उदाहरण-कुंडली में जिस प्रकार शुक्र को शत्रु-क्षेत्री दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुंडलियों में भी समझ लेना चाहिए।

शत्रु क्षेत्रगत शुक्र

६८

जिस जातक की जन्म-कुंडली में शनि अपने शत्रु (सूर्य, चंद्र अथवा मंगल) की राशि (सिंह, कर्क, मेष अथवा वृश्चिक) में बैठा हो, वह जीवन-भर किसी-न-किसी कारणवश दु:खी तथा चिंतित बना रहता है।

उदहारण-कुंडली में जिस प्रकार शनि को शत्रु-क्षेत्री दिखाया गया है,. उसी प्रकार अन्य कुंडलियों में भी समझ लेना चाहिए।

शत्रु क्षेत्रगत शनि

६९

आवश्यक टिप्पणी—(१) शत्रु-क्षेत्री राहु तथा केतु का प्रभाव भी शत्रु-क्षेत्री शनि के समान होता है।

(२) जिस जातक की जन्म-कुंडली में जितने अधिक ग्रह शत्रु-क्षेत्री होते हैं, वह उतना ही अधिक दु:खी, चिन्तित, निराश, दरिद्र तथा भाग्यहीन होता है। यदि तीन ग्रह शत्रु-क्षेत्री हों तो जीवन-भर दु:खी रहता है, परन्तु जीवन के अन्तिम भाग में सुख प्राप्त करता है।
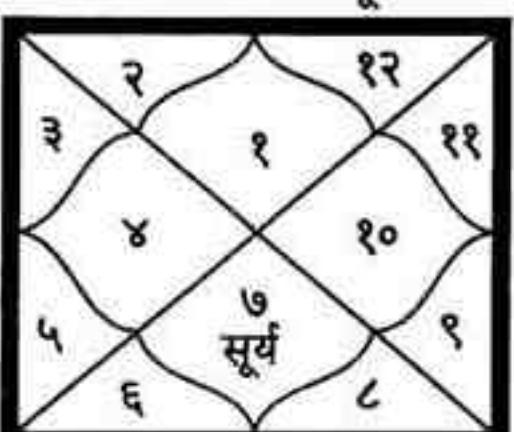
नीच राशिगत ग्रहों का फल

नीच राशिगत ग्रहों का सामान्य-फल आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

जिस जातक की जन्म-कुंडली में सूर्य नीच राशि (तुला) का हो, वह पाप कर्म करने वाला तथा बन्धु-सेवी होता है।

उदाहरण-कुंडली में जिस प्रकार सूर्य को नीच राशिगत दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुंडलियों में भी समझ लेना चाहिए।
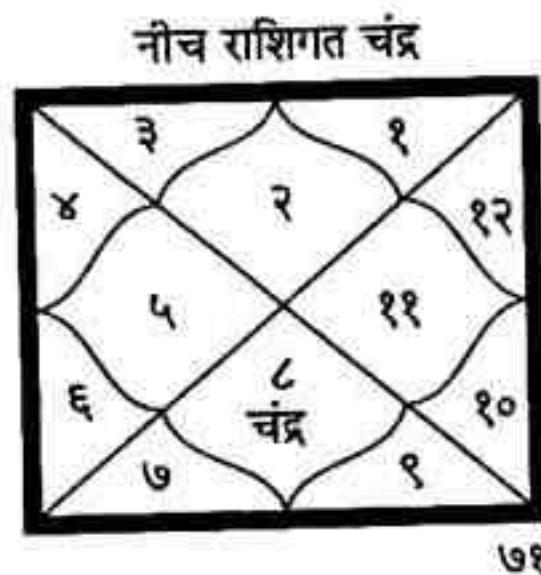
नीच राशिगत सूर्य

७०

जिस जातक की जन्म-कुंडली में चंद्रमा नीच राशि (वृश्चिक) का हो, वह अल्प धनी, नीच प्रकृति वाला तथा रोगी होता है।
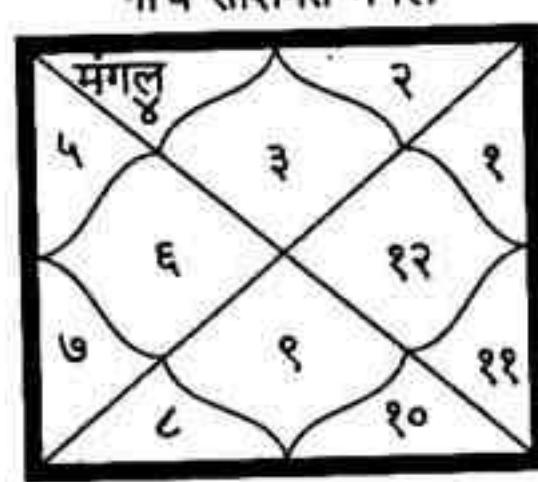
उदाहरण-कुंडली में जिस प्रकार चंद्रमा को नीच राशिगत दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुंडलियों में भी समझ लेना चाहिए।

नीच राशिगत चंद्र

७१

जिस जातक की जन्म-कुंडली में मंगल नीच राशि (कर्क) का हो, वह कृतघ्न तथा नीच स्वभाव का होता है।
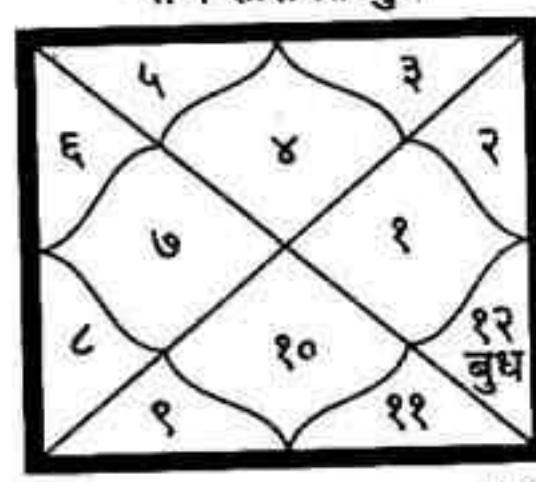
उदाहरण-कुंडली में जिस प्रकार मंगल को नीच राशिगत दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुंडलियों में भी समझ लेना चाहिए।

नीच राशिगत मंगल

७२

जिस जातक की जन्म-कुंडली में बुध नीच राशि (मीन) का हो, वह उग्र प्रकृति वाला, चंचल स्वभाव का तथा बंधु-विरोधी होता है।
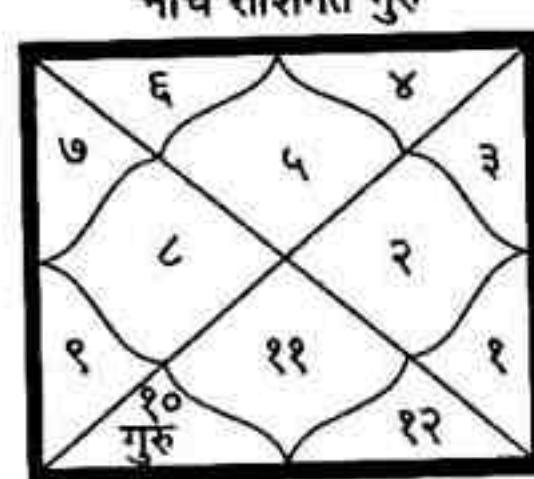
उदाहरण-कुंडली में जिस प्रकार बुध को नीच राशिगत दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुंडलियों में भी समझ लेना चाहिए।

नीच राशिगत बुध

७३

जिस जातक की जन्म-कुंडली में गुरु नीच राशि (मकर) का हो, वह दुष्ट, अपवादी तथा अपयश प्राप्त करने वाला होता है।

उदाहरण-कुंडली में जिस प्रकार गुरु को नीच राशिगत दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुंडलियों में भी समझ लेना चाहिए।

नीच राशिगत गुरु

७४

जिस जातक की जन्म-कुंडली में शुक्र नीच राशि (कन्या) का हो, वह सदैव किसी-न-किसी कारणवश दु:खी बना रहता है।

उदाहरण-कुंडली में जिस प्रकार शुक्र को नीच राशिगत दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुंडलियों में भी समझ लेना चाहिए।

नीच राशिगत शुक्र

७५

जिस जातक की जन्म-कुंर्डली में शनि नीच राशि (मेष) का हो, वह दु:खी तथा दरिद्री होता है।

उदाहरण-कुंडली में जिस प्रकार शनि को नीच राशिगत दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुंडलियों में भी समझ लेना चाहिए।

नीच राशिगत शनि

७६

आवश्यक टिप्पणी—(१) नीच राशि स्थित राहु तथा केतु का प्रभाव भी नीच राशि स्थित शनि के समान ही होता है।

(२) जन्म-कुंडली में जितने अधिक ग्रह नीच के होते हैं, जातक उतना ही अशुभ फल प्राप्त करता है। यदि तीन ग्रह नीच के हों तो जातक मूर्ख होता है।
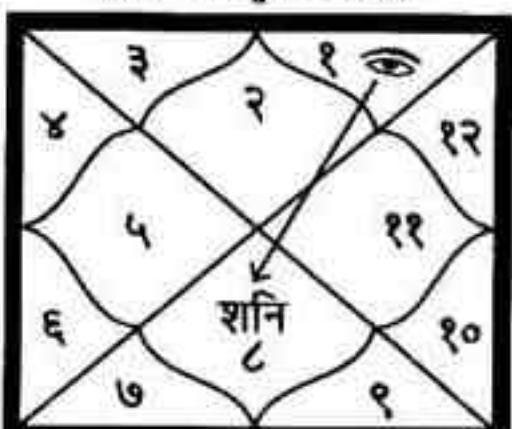
ग्रहों की दृष्टि और स्थान-संबंध

ग्रहों की दृष्टि एवं स्थान-संबंध के विषय में नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

(१) दृष्टि संबंध—जब कोई ग्रह अपने बैठे हुए स्थान से किसी अन्य स्थान (भाव) को देखता है अथवा उस स्थान पर बैठे हुए किसी ग्रह को देखता है, तो उसे उस ग्रह का 'दृष्टि संबंध' कहा जाता है।

उदाहरण-कुंडली में द्वादश भाव में बैठा हुआ गुरु सप्तम भाव में स्थित शनि को अपनी पूर्ण दृष्टि से देख रहा है, अत: इसे गुरु और शनि का 'दृष्टि संबंध' कहा जाएगा। इसी प्रकार अन्य ग्रहों के दृष्टि-संबंध के विषय में भी समझ लेना चाहिए।

ग्रहों का दृष्टि संबंध

७७

(२) पारस्परिक दृष्टि संबंध—जब कोई भी दो ग्रह अलग-अलग स्थानों (भावों) में बैठे हुए एक दूसरे के ऊपर अपनी दृष्टि डालते हैं, तो उसे उन ग्रहों का 'पारस्परिक दृष्टि संबंध' कहा जाता है।

ग्रहों का पारस्परिक दृष्टि संबंध

७८

उदाहरण-कुंडली में लग्न में बैठा हुआ मंगल अपने स्थान से चौथे भाव में स्थित शनि के ऊपर अपनी पूर्ण दृष्टि डाल रहा है। साथ ही चौथे भाव में बैठा हुआ शनि भी अपने स्थान से दसवें भाव में स्थित मंगल के ऊपर अपनी पूर्ण दृष्टि डाल रहा है। इस प्रकार दोनों ग्रह परस्पर एक दूसरे को पूर्ण-दृष्टि से देख रहे हैं, अतः इसे ग्रहों का 'पारस्परिक दृष्टि संबंध' कहा जाएगा।

इसी प्रकार अन्य ग्रहों के पारस्परिक दृष्टि-संबंध के विषय में भी समझ लेना चाहिए।

(३) स्थान संबंध—जब कोई भी दो ग्रह अलग-अलग एक दूसरे के स्थान में बैठे हुए हों, तो उसे उन ग्रहों का 'स्थान संबंध' कहा जाता है।

ग्रहों का स्थान संबंध

७९

उदाहरण-कुंडली में बुध के स्थान मिथुन राशि पर शुक्र बैठा है तथा शुक्र के स्थान तुला राशि पर बुध बैठा हुआ है। इस प्रकार दोनों ग्रह अपने-अपने स्थान छोड़कर एक दूसरे के स्थान पर बैठे हुए हैं, अतः इसे शुक्र तथा बुध का 'स्थान-संबंध' कहा जाएगा।

इसी प्रकार अन्य ग्रहों के 'स्थान संबंध' के विषय में भी समझ लेना चाहिए।

उपर्युक्त दृष्टि-संबंध, पारस्परिक-दृष्टि-संबंध तथा स्थान-संबंध का प्रभाव यह होता है कि ग्रहों का ऐसा पारस्परिक संबंध होने पर वे अपने-अपने गुण, कर्म तथा स्वभाव को एक दूसरे से मिलाकर जातक के जीवन पर प्रभाव डालते हैं अर्थात् एक ग्रह में दूसरे ग्रह का स्वभाव सम्मिलित हो जाता है, परंतु इन संबंधों में मुख्य बात विचार करने की यह है कि पारस्परिक संबंध वाले दोनों ग्रह आपस में मित्र हैं, शत्रु हैं अथवा समभाव रखने वाले हैं।

यदि दोनों ग्रह परस्पर मित्र होंगे, तो वे जातक के जीवन पर अपना एक-सा विशेष प्रभाव डालेंगे, यदि परस्पर शत्रु होंगे तो वे जातक के जीवन पर एक दूसरे के विपरीत विशेष प्रभाव डालेंगे और यदि समभाव रखने वाले होंगे तो अपना संयुक्त सामान्य प्रभाव डालेंगे।

ग्रहों के उक्त पारस्परिक संबंधों पर विचार करते समय उनके उच्च राशिगत, मूल त्रिकोण राशिगत, नीच राशिगत, स्वक्षेत्रगत, मित्र क्षेत्रगत अथवा शत्रु क्षेत्रगत होने आदि पर भी विचार कर लेना आवश्यक है क्योंकि इन सब बातों पर विचार करने के उपरांत सबके समन्वय एवं निष्कर्ष के रूप में जो फल निकलता है, वही जातक के जीवन पर घटित होता है।

स्थानाधिपति
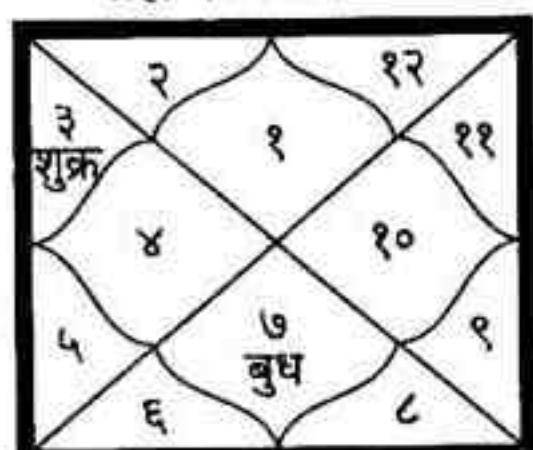
जन्म-कुंडली में जो बारह खाने होते हैं, उन्हें 'द्वादशभाव' कहा जाता है, यह बात पहले बताई जा चुकी है। जिस प्रकार जन्म-कुंडली के खानों की संख्या बारह है, उसी प्रकार मेष
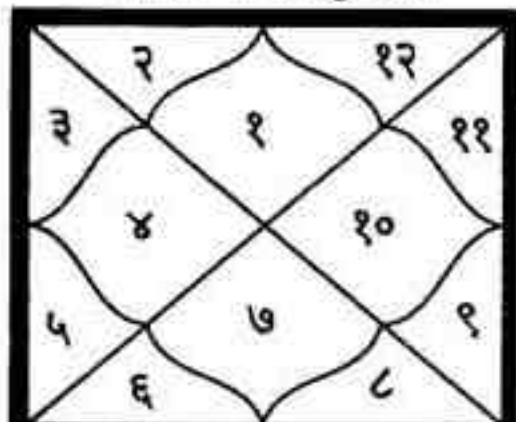
आदि राशियों की संख्या भी बारह ही होती है। जातक के जन्म के समय जिस राशि की लग्न वर्तमान होती है, वही राशि जन्म-कुंडली के लग्न स्थान अर्थात् प्रथम भाव में बैठती है। शेष राशियां अपने क्रम के अनुसार कुंडली के अगले भावों में बैठती हैं।
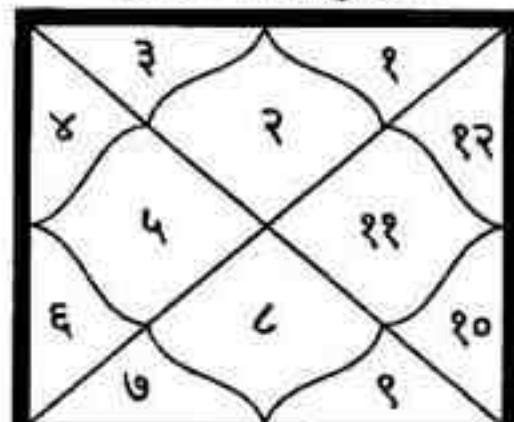
उदाहरण के लिए, यदि किसी जातक का जन्म वृष लग्न में हुआ है, तो उसे उसकी जन्म-कुंडली में वृष राशि को प्रथम भाव में स्थापित किया जाएगा। तत्पश्चात् अगले भावों में क्रमश: मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ, मीन तथा मेष राशि को स्थापित किया जाएगा। नीचे दी गई बारह उदाहरण कुंडलियां बारह विभिन्न लग्नों में जन्म लेने वाले लोगों की हैं। कुंडली संख्या ८० मेष लग्न में जन्म लेने वाले व्यक्ति की; कुंडली संख्या ८१ वर्ष लग्न में जन्म लेने वाले व्यक्ति की; कुंडली संख्या ८२ मिथुन लग्न में जन्म लेने वाले व्यक्ति की; कुंडली संख्या ८३ कर्क लग्न में जन्म लेने वाले व्यक्ति की; कुंडली संख्या ८४ सिंह लग्न में जन्म लेने वाले व्यक्ति की; कुंडली संख्या ८५ कन्या लग्न में जन्म लेने वाले व्यक्ति की; कुंडली संख्या ८६ तुला लग्न में जन्म लेने वाले व्यक्ति की; कुंडली संख्या ८७ वृश्चिक लग्न में जन्म लेने वाले व्यक्ति की; कुंडली संख्या ८८ धनु लग्न में जन्म लेने वाले व्यक्ति की; कुंडली संख्या ८९ मकर लग्न में जन्म लेने वाले व्यक्ति की; कुंडली संख्या ९० कुंभ लग्न में जन्म लेने वाले व्यक्ति की तथा कुंडली संख्या ९१ मीन लग्न में जन्म लेने वाले व्यक्ति की है।

मेष लग्न की कुंडली

८०
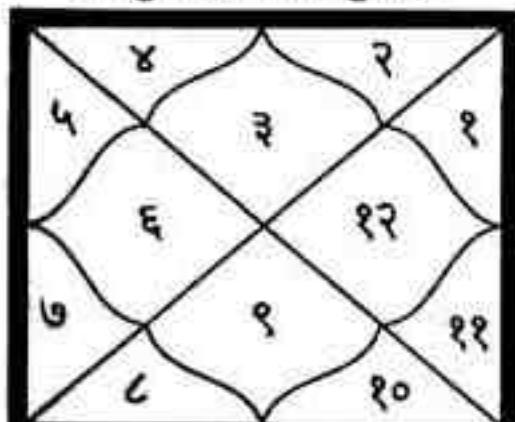
वृष लग्न की कुंडली

८१
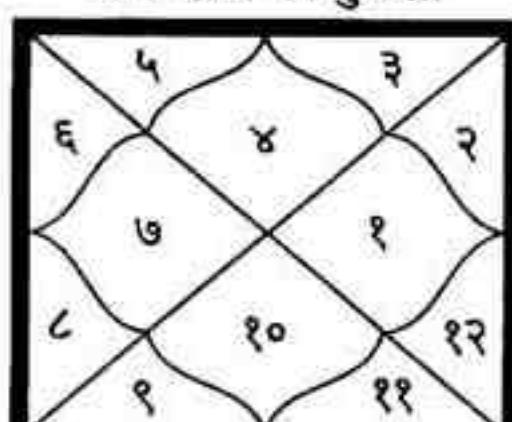
कुंडली में कौन-सा ग्रह किस स्थान पर बैठना चाहिए, इसका निर्णय जातक के जन्मकालीन समय तथा उस समय की ग्रह स्थिति के अनुसार पंचांग के आधार पर किया जाता है। ज्योतिषी लोग इस विषय को जानते हैं, अत: यदि जिज्ञासा हो तो इस संबंध में उनसे जानकारी प्राप्त करनी चाहिए या फिर इस विषय से संबंधित ज्योतिष-ग्रंथों का अध्ययन करना चाहिए।

मिथुन लग्न की कुंडली
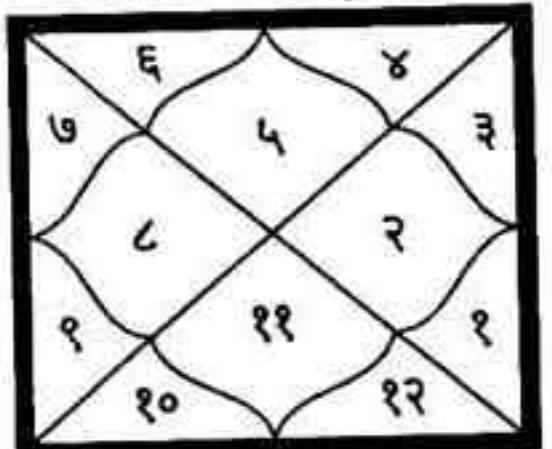
८२

कर्क लग्न की कुंडली
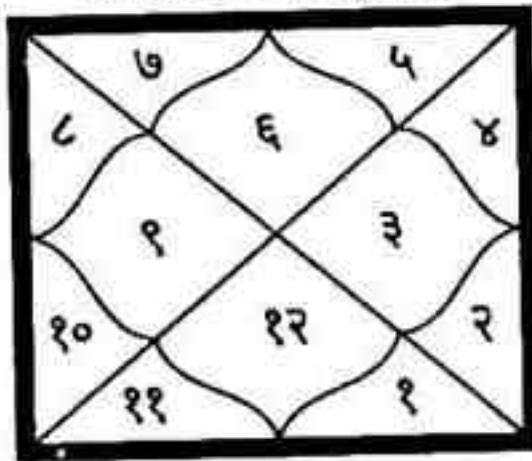
८३

सिंह लग्न की कुंडली
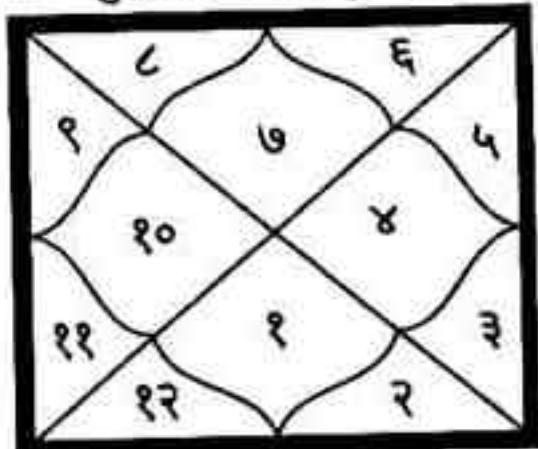
८४

कन्या लग्न की कुंडली
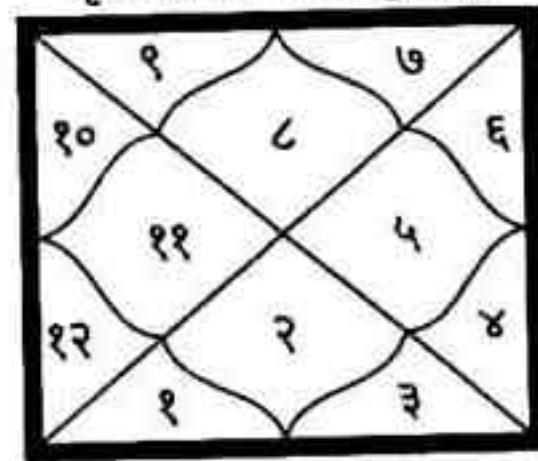
८५

तुला लग्न की कुंडली
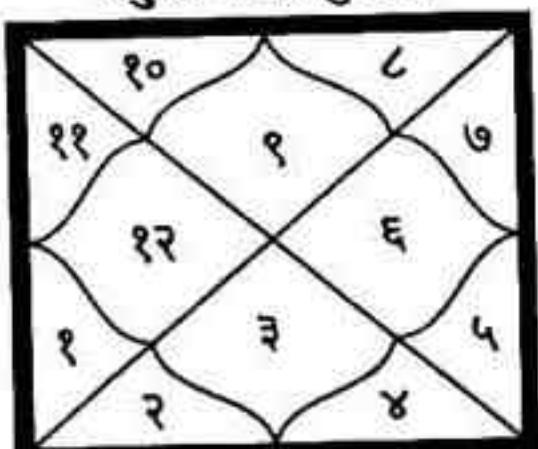
८६

वृश्चिक लग्न की कुंडली
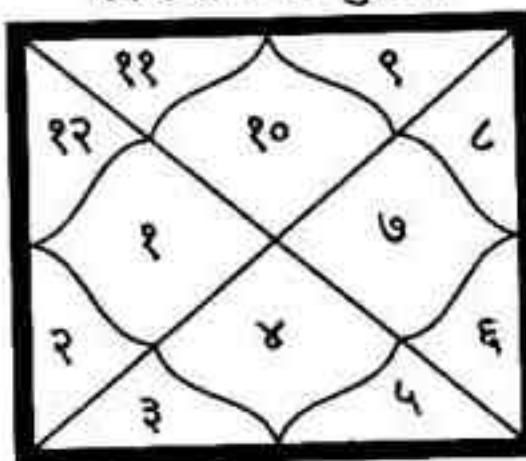
८७

धनु लग्न की कुंडली
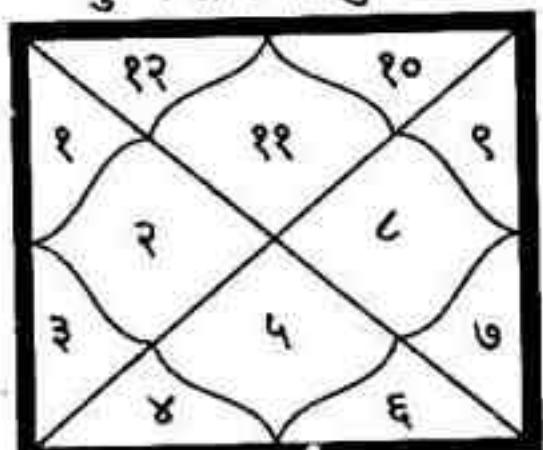
८८

मकर लग्न की कुंडली
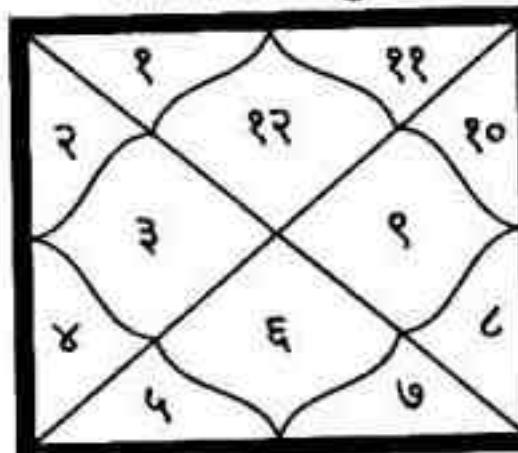
८९

कुम्भ लग्न की कुंडली

९०

मीन लग्न की कुंडली

९१

जन्म-कुंडली में जो राशि जिस स्थान (भाव) में स्थित होती है, उस राशि का स्वामी ही उस स्थान (भाव) का अधिपति होता है।
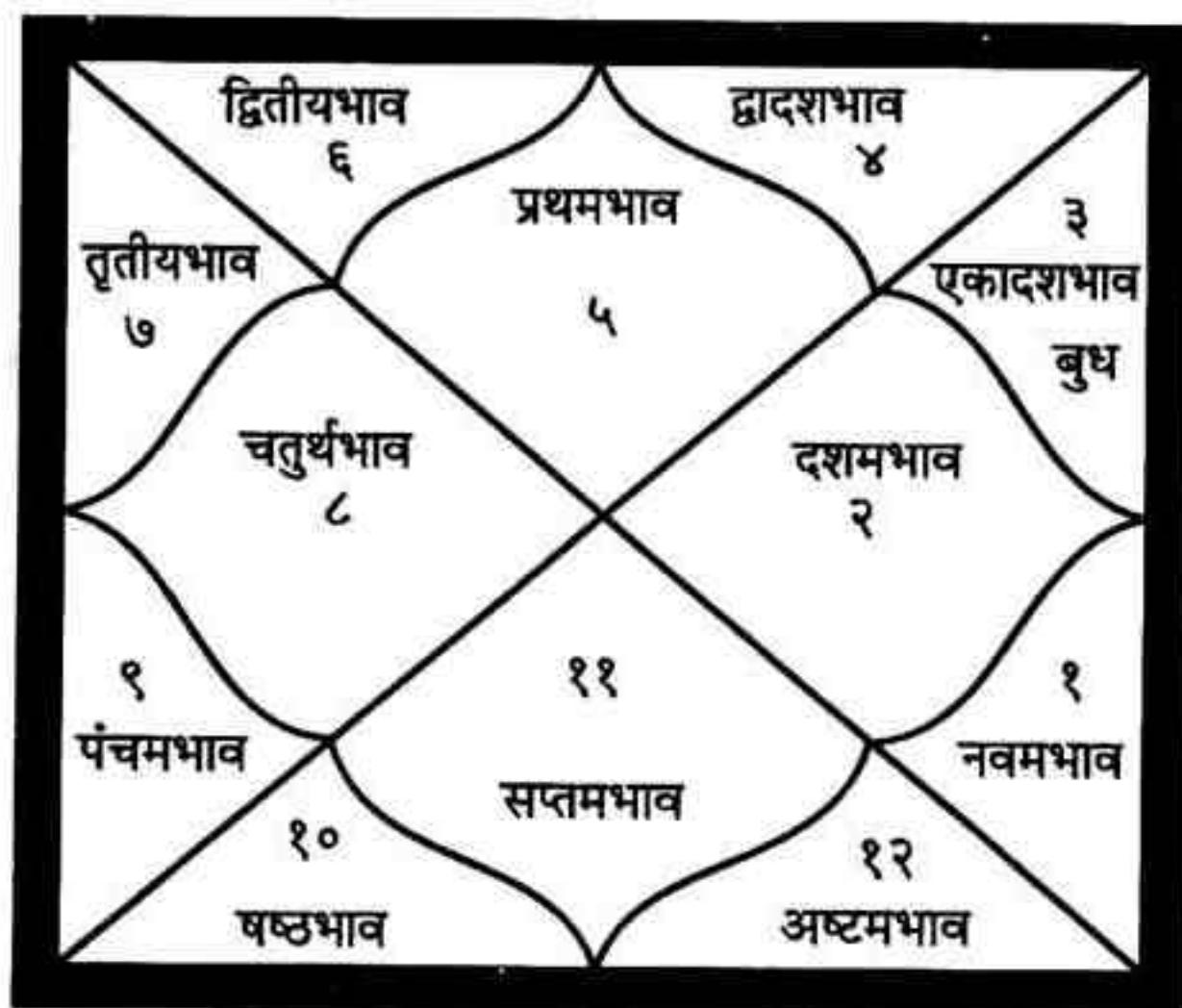
उदाहरण के लिए ९२ नम्बर की कुंडली के ग्यारहवें भाव में--जिससे कि लाभ तथा आमदनी का विचार किया जाता है—मिथुन राशि स्थित है, तो ऐसी स्थिति में मिथुन राशि के स्वामी बुध को ही ग्यारहवें भाव का अधिपति, अर्थात् एकादशेश या लाभेश माना जाएगा।

इसी प्रकार यदि ग्यारहवें भाव में कर्क राशि स्थित हुई तो उसका स्वामी चंद्रमा एकादश भाव का अधिपति, अर्थात् एकादशेश या लाभेश माना जाएगा।

संक्षेप में यह है कि जिस भाव में जो राशि स्थित होती है, उस राशि का स्वामी ही उस भाव का अधिपति होता है।
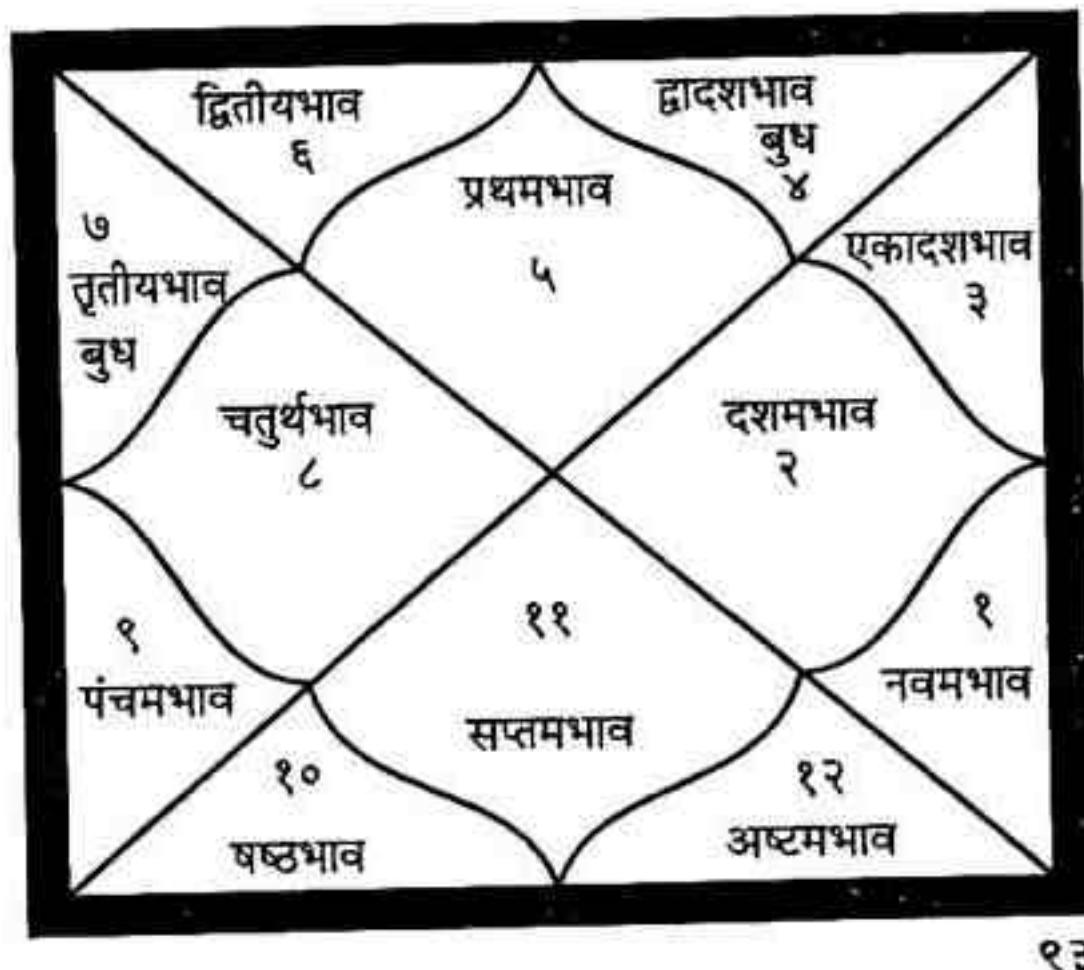
जिस भाव में जो राशि स्थित हो, उसका स्वामी उसी भाव में स्थित हो, यह आवश्यक नहीं है। उदाहरण के लिए यदि एकादश भाव में मिथुन राशि स्थित है और उसका स्वामी बुध कर्क राशि वाले द्वादशभाव में स्थित है, तो उस समय यह कहा जाएगा कि एकादशेश अथवा लाभेश द्वादश भाव में, अर्थात् व्यय-स्थान में चला गया है। यदि बुध कर्क राशि वाले द्वादशभाव की बजाय तुला राशि वाले तृतीय भाव में चला गया हो, तो उस स्थिति में यह कहा जाएगा कि एकादशेश तृतीयभाव में चला गया है। कुंडली नं० ९२ तथा ९३ देखिए।

इसी प्रकार अन्य सभी भावों, राशियों तथा ग्रहों के विषय में समझ लेना चाहिए।

९२

स्थानाधिपतियों के नाम

जन्म-कुंडली में जो द्वादश भाव होते हैं, उनमें से प्रत्येक भाव के स्वामी को, उसी भाव के नाम अथवा गुण के अनुरूप संबोधित किया जाता है। इस संबंध में नीचे लिखे अनुसार समझ लेना चाहिए—

९३

(१) प्रथमभाव के स्वामी को 'प्रथमेश', 'लग्नेश' तथा 'देहाधीश' कहा जाता है।

(२) द्वितीयभाव के स्वामी को 'द्वितीयेश' तथा 'धनेश' कहा जाता है।

(३) तृतीयभाव के स्वामी को 'तृतीयेश' तथा 'पराक्रमेश' कहा जाता है।

(४) चतुर्थभाव के स्वामी को 'चतुर्थेश' तथा 'सुखेश' कहा जाता है।

(५) पंचमभाव के स्वामी को 'पंचमेश' कहा जाता है।

(६) षष्ठभाव के स्वामी को 'षष्ठेश' कहा जाता है।

(७) सप्तमभाव के स्वामी को 'सप्तमेश' कहा जाता है।

(८) अष्टमभाव के स्वामी को 'अष्टमेश' कहा जाता है।

(९) नवमभाव के स्वामी को 'नवमेश', 'भाग्येश' तथा 'धर्मेश' कहा जाता है।

(१०) दशमभाव के स्वामी को 'दशमेश' तथा 'राज्येश' कहा जाता है।

(११) एकादशभाव के स्वामी को 'एकादशेश' तथा 'लाभेश' कहा जाता है।

(१२) द्वादशभाव के स्वामी को 'द्वादशेश' तथा 'व्ययेश' कहा जाता है।

विभिन्न भावों में ग्रहों का शुभाशुभ फल

(१) केंद्र (पहला, चौथा, सातवां तथा दसवां भाव) में बैठे हुए ग्रह अधिक शक्तिशाली होते हैं, अतः वे अपना पूर्ण फल प्रदान करते हैं।

(२) त्रिकोण (पांचवां तथा नवां भाव) में बैठे हुए ग्रह भी जातक के ऊपर अपनी शक्ति एवं सामर्थ्य का पूरा-पूरा प्रभाव डालते हैं।

(३) धन तथा लाभ स्थान (दूसरा तथा ग्यारहवें भाव) में बैठे हुए ग्रह जातक के धन की वृद्धि करते हैं। एकादश भाव में बैठा हुआ ग्रह विशेष लाभ देता है।

(४) पराक्रम स्थान (तृतीय भाव) में बैठे हुए ग्रह जातक के पराक्रम की वृद्धि करते हैं, जिसके कारण वह सफलता प्राप्त करता है।

इस प्रकार प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पंचम, सप्तम, नवम, दशम तथा एकादश भाव— ये नौ स्थान और इनमें बैठे हुए ग्रह उत्तम फल देने वाले बताए गए हैं।

(५) षष्ठ, अष्टम तथा द्वादश भाव में बैठे हुए ग्रह जातक के लिए परेशानियां उत्पन्न करने वाले होते हैं, क्योंकि छठा स्थान शत्रु का, आठवां स्थान मृत्यु का एवं बारहवां स्थान व्यय (खर्च) का होता है।

परंतु सभी अच्छे स्थानों में बैठे हुए ग्रह शुभ फल ही देते हों और छठे, आठवें तथा बारहवें घर में बैठे हुए ग्रह अशुभ फल ही देते हों, ऐसी बात भी नहीं है। राशि, स्थिति, अंश, उच्च, नीच, स्व-क्षेत्र, मित्र-क्षेत्र, शत्रु-क्षेत्र, अन्य ग्रहों की दृष्टि, युति आदि कारणों से अच्छे तथा बुरे स्थानों में बैठे हुए ग्रहों के प्रभाव में भी सहस्त्रों प्रकार के भले-बुरे परिवर्तन हो जाते हैं— इस बात को सदैव स्मरण रखना चाहिए।

अन्य ज्ञातव्य विषय

(१) लग्न से तीसरे, छठे तथा ग्यारहवें भाव में क्रूर ग्रहों का बैठना जातक को शक्ति प्रदान करता है। ग्यारहवें भाव में सभी ग्रह शुभ फल देते हैं।

(२) स्वग्रही, उच्च-क्षेत्री, मित्र-क्षेत्री अथवा स्व-क्षेत्र या उच्च क्षेत्र पर दृष्टि डालने वाले ग्रह उस स्थान के गुणों की वृद्धि करते हैं।

इसे और अधिक स्पष्ट रूप में नीचे लिखे अनुसार समझ लेना चाहिए—

सूर्य—सिंह अथवा मेष राशि पर बैठा हुआ हो अथवा इन राशियों पर सूर्य की दृष्टि पड़ती हो।

चंद्र—कर्क अथवा वृष राशि पर बैठा हुआ हो अथवा इन राशियों पर चंद्रमा की दृष्टि पड़ती हो।

मंगल—मेष, वृश्चिक अथवा मकर राशि पर बैठा हुआ हो अथवा इन राशियों पर मंगल की दृष्टि पड़ती हो।

बुध—मिथुन अथवा कन्या राशि पर बैठा हुआ हो अथवा इन राशियों पर बुध की दृष्टि पड़ती हो।

गुरु—धनु, मीन अथवा कर्क राशि पर बैठा हुआ हो अथवा इन राशियों पर गुरु की दृष्टि पड़ती हो।

शुक्र—वृष, तुला अथवा मीन राशि पर बैठा हुआ हो अथवा इन राशियों पर शुक्र की दृष्टि पड़ती हो।

शनि—मकर, कुंभ अथवा तुला राशि पर बैठा हुआ हो अथवा इन राशियों पर शनि की दृष्टि पड़ती हो।

राहु—मिथुन राशि पर बैठा हुआ हो अथवा लग्न से तीसरे, छठे या ग्यारहवें किसी भी ऐसे स्थान में बैठा हो, जिसमें धनु राशि न हो।

केतु—धनु राशि पर बैठा हुआ हो अथवा लग्न से तीसरे, छठे या ग्यारहवें किसी भी ऐसे स्थान में बैठा हो, जिसमें मिथुन राशि न हो।

(३) जो ग्रह सूर्य के बराबर अथवा उसके समीपी अंशों पर होता है, उसे पूर्ण अस्त माना जाता है। जो ग्रह सूर्य से ८ अंश की दूरी पर होता है, उसे आधा अस्त माना जाता है तथा जो ग्रह सूर्य से १५ अंश की दूरी पर होता है, उसे पूर्ण उदय माना जाता है।

पूर्ण उदय ग्रह अपना पूर्ण प्रभाव देता है, आधा अस्त ग्रह अपना आधा प्रभाव देता है तथा पूर्ण अस्त ग्रह प्रभावहीन हो जाता है।

(४) किसी भाव का स्वामी पाप ग्रह (दुष्ट ग्रह) हो और वह लग्न (प्रथम भाव) से तृतीय स्थान में बैठा हो तो अच्छा फल देता है, परंतु जिस भाव का स्वामी शुभ ग्रह हो, वह यदि उस भाव से तीसरे स्थान में बैठे तो मध्यम फल देता है।

(५) जिस भाव में शुभ ग्रह बैठा होता है, उसका फल उत्तम होता है तथा जिसमें पाप ग्रह रहता है, उस भाव के फल की हानि होती है।

(६) जिस भाव में उसका अधिपति ग्रह अथवा शुक्र, बुध या गुरु बैठा हुआ हो अथवा इनकी दृष्टि पड़ रही हो अथवा वह अपने भाव के स्वामी के अतिरिक्त किसी अन्य ग्रह से युक्त अथवा दृष्ट न हो, तो वह शुभ फल देता है।

(७) जिस भाव का अधिपति शुभ ग्रह से युक्त अथवा दृष्ट हो, अथवा जिस भाव में शुभ ग्रह बैठा हो अथवा जिस भाव को शुभ ग्रह देख रहा हो, वह शुभ फल देता है।

(८) जिस भाव में कोई पाप ग्रह बैठा हो अथवा उसके अधिपति के साथ कोई पाप ग्रह बैठा हो अथवा उसके अधिपति पर पाप ग्रह की दृष्टि पड़ रही हो अथवा उस भाव को ही कोई पाप ग्रह देख रहा हो, तो उसका फल अशुभ होता है।

(९) जिस भाव का अधिपति उच्च राशि का स्व-क्षेत्री, मित्र-क्षेत्री या मूल-त्रिकोण स्थित हो, उस भाव का फल शुभ होता है।

(१०) सूर्य, मंगल, शनि तथा राहु क्रम से एक दूसरे से अधिक पाप ग्रह हैं। ये ग्रह यदि अपनी राशि में बैठे हों, तो अधिक पापी होते हैं अर्थात् जातक को अधिक अशुभ फल प्रदान करते हैं। यही ग्रह यदि अपने मित्र की राशि, किसी शुभ ग्रह की राशि अथवा अपनी उच्च राशि में बैठे हुए हों, तो अल्प पापी होते हैं, अर्थात् अशुभ फल न्यून मात्रा में देते हैं।

(११) चंद्रमा, बुध, शुक्र, केतु तथा गुरु ये सब क्रम से एक-दूसरे से अधिक शुभ ग्रह हैं। फल का विचार करने में केतु को प्राय: पाप ग्रह माना जाता है, परंतु वैसे केतु की गणना शुभ ग्रहों में की जाती है। यह ग्रह यदि अपनी राशियों में बैठे हों, तो अधिक शुभ फल प्रदान करते हैं और यदि पाप ग्रहों (सूर्य, मंगल, शनि और राहु) की राशि में बैठे हों, तो अल्प शुभ फल प्रदान करते हैं।

(१२) आठवें तथा बारहवें भाव में बैठे हुए सभी ग्रह जातक को थोड़ी-बहुत हानि अवश्य पहुंचाते हैं।

(१३) गुरु छठे भाव में बैठा हो, तो वह शत्रुनाशक होता है। शनि आठवें भाव में बैठा हो, वह दीर्घायु देने वाला होता है। इसी प्रकार मंगल दसवें स्थान में बैठा हो, तो जातक के भाग्य को उत्तम बनाता है।

(१४) आठवें भाव में जो राशि हो, उसका अधिपति अर्थात् अष्टमेश जिस भाव में बैठा होता है, उस भाव को बिगाड़ता है। इसी प्रकार राहु, केतु जिस भाव में रहते हैं, उस भाव को बिगाड़ देते हैं।

(१५) राहु और केतु के प्रभाव में एक बड़ी विशेषता यह है कि राहु जिसे अशुभ फल प्रदान करता है, केतु उसे शुभ फल देता है और केतु जिसे अशुभ फल प्रदान करता है, राहु उसे शुभ फल देता है।

(१६) यदि द्वितीय, पंचम तथा सप्तम भाव में गुरु अकेला बैठा हुआ हो, तो वह जातक के धन, पुत्र तथा स्त्री के लिए सदैव अनिष्टकारक होता है।

(१७) जिस भाव का जो ग्रह कारक माना गया है, वह यदि अकेला उस भाव में बैठा हुआ हो, तो उस भाव को बिगाड़ देता है।

(१८) भावों की गणना लग्न से ही की जाती है। लग्न को पहला भाव मानकर उसके बाईं ओर से गिनते हुए क्रमशः द्वादश भावों की गणना करनी चाहिए। किसी भी लग्न से भावों की गणना में कोई अंतर नहीं आता।

(१९) जन्म-कुंडली के बारह भावों में राशियों के नामों को अंकों द्वारा प्रदर्शित किया जाता है। मेष आदि बारह राशियों को क्रमशः १ से १२ तक के अंकों में लिखा जाता है। बारह उदाहरण-कुंडलियों के माध्यम से इस विषय की विस्तृत चर्चा पहले ही की जा चुकी है।

(२०) बृहस्पति यदि पहले, चौथे, पांचवें, नवें तथा दसवें भाव में स्थित हो, तो उसे सब दोषों को नष्ट करने वाला कहा गया है। सूर्य ग्यारहवें स्थान में स्थित हो तथा चंद्रमा शुभ लग्न में स्थित हो, तो वह नवांश दोषों को नष्ट करता है। बुध प्रथम, चतुर्थ, पंचम, नवम और दशम भाव में स्थित हो, तो उसे सौ दोषों को दूर करने वाला बताया गया है। इन्हीं स्थानों में यदि शुक्र हो, तो उसे दो-सौ दोषों को दूर करने वाला और बृहस्पति हो तो उसे एक लाख दोषों को दूर करने वाला माना जाता है। लग्न का स्वामी यदि चौथे, दसवें अथवा ग्यारहवें भाव में हो, तो वह अनेक दोषों को दूर कर देता है। इन सब बातों के संबंध में विशेष विचार विवाह के लिए वर-कन्या की जन्म-कुंडली मिलाते समय किया जाता है।

जन्म-कुंडली का फलादेश

जन्म-कुंडली में बारह भाव (स्थान) होते हैं, उनमें बारह राशियां तथा नौ ग्रह बैठते हैं— यह बात पाठकों की समझ में अब तक भली-भांति आ चुकी होगी।

जन्म-कुंडली के किस भाव से किस विषय का विचार किया जाता है, कौन-सा ग्रह किस राशि अथवा किस भाव में बैठकर किस प्रकार फल देता है, इन सब बातों पर पिछले पृष्ठों में पर्याप्त प्रकाश डाला जा चुका है।

इस पुस्तक को लिखने का उद्देश्य ज्योतिष शास्त्र से अनभिज्ञ अथवा उसका सामान्य ज्ञान रखने वाले पाठकों को किसी भी जातक की जन्म-कुंडली को देखकर उसके फलादेश के विषय में जानकारी प्रदान करना है, अतः प्रारंभिक विषयों का वर्णन करने के उपरांत अब अगले द्वितीय

प्रकरण में विभिन्न लग्नों में जन्म लेने वाले व्यक्तियों की कुंडली स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का अलग-अलग वर्णन किया जाएगा।

पाठकों को चाहिए कि वे जिस जन्म-कुंडली का फलादेश जानना चाहें, उसके विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश को अगले खंड में दिए गए निर्देशों के अनुसार विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में देखकर मालूम कर लें।

अधिकांश कुंडलियों में एक ही स्थान पर दो, तीन, चार, पांच अथवा छः ग्रह तक बैठे हुए देखने को मिलते हैं। उन्हें 'ग्रहों की युति' कहा जाता है। एक ही स्थान पर विभिन्न ग्रहों की युति होने पर उनके फलादेश में भी अंतर आ जाता है। विभिन्न ग्रहों की युति के फलादेश का वर्णन इस पुस्तक के तीसरे प्रकरण में किया गया है।

तीसरे प्रकरण में ही जन्मकालीन नक्षत्र द्वारा ग्रह-दशा का ज्ञान, विभिन्न ग्रहों की दशा का फल, विशिष्ट योग तथा जातक की आयु के संबंध में किस प्रकार विचार करना चाहिए, आदि विषयों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है।

पुरुष और स्त्री

सामान्यत: पुरुष अथवा स्त्री—दोनों की कुंडलियों में स्थित ग्रह दोनों के ऊपर एक जैसा ही प्रभाव डालते हैं। द्वितीय खंड में विभिन्न लग्न वाली कुंडलियों के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों के जिस फलादेश का उल्लेख किया गया है, उसे पुरुष तथा स्त्री, बालक, युवा अथवा वृद्ध—सभी पर समान रूप से लागू होने वाला समझना चाहिए। द्वितीय खंड के फलादेश में जहां कहीं 'पुरुष' शब्द आया हो, वहां पर यदि 'स्त्री' की जन्मकुंडली का फलादेश मालूम किया जा रहा हो तो 'स्त्री' समझना चाहिए। इसी प्रकार जहां 'पत्नी' अथवा 'प्रेमिका' शब्द आया हो, वहां स्त्री की कुंडली का फलादेश ज्ञात करते समय 'पति' अथवा 'प्रेमी' समझना चाहिए।

कुछ विशेष स्थितियों में कुछ ग्रह पुरुष की अपेक्षा स्त्रियों के ऊपर कुछ अन्य प्रकार का प्रभाव भी डालते हैं, उनके संबंध में आवश्यक जानकारी तथा स्त्रियों के सौभाग्य आदि के संबंध में विचार आदि विषयों का वर्णन इस पुस्तक के तीसरे प्रकरण में किया गया है, अत: किसी स्त्री की कुंडली का ठीक-ठीक फलादेश ज्ञात करने के लिए द्वितीय प्रकरण में वर्णित फलादेश को देखने के उपरांत तृतीय प्रकरण में वर्णित फलादेश को भी देखना चाहिए।

दैनिक ग्रह गोचर

अपनी दैनिक आकाशीय गति के अनुसार विभिन्न ग्रह विभिन्न समयों पर विभिन्न राशियों में पहुंचते रहते हैं। कौन-सा ग्रह किस राशि पर कितने समय तक रहता है, इसका उल्लेख पिछले पृष्ठों में किया जा चुका है, अत: प्रत्येक मनुष्य के जीवन पर प्रत्येक ग्रह अपना दो प्रकार से प्रभाव डालता है। एक स्थायी प्रभाव तो वह होता है, जो जातक के जन्मकालीन ग्रहों की स्थिति के कारण उसके जीवन पर निरंतर पड़ता रहता है और दूसरा प्रभाव वह होता है, जो ग्रहों की दैनिक गति तथा विभिन्न-राशियों में आवागमन के कारण निरंतर बदलता रहता है।

उदाहण के लिए यदि किसी जातक की जन्म-कुंडली में चंद्रमा लग्न में वृष राशि पर बैठा हुआ है तो वह उच्च का और शुभ फल देने वाला होगा, परंतु दैनिक ग्रह गोचर में यदि वह किसी नीच राशि में चला गया हैं, तो वह जिस राशि या स्थान में उस समय बैठा है, उसका

कुछ-न-कुछ बुरा फल भी उतने समय तक जातक के ऊपर अवश्य डालेगा, जब तक कि वह दैनिक ग्रह गोचर में उस स्थान अथवा राशि से हट न जाएं।

दैनिक ग्रह गोचर में किस समय कौन-सा ग्रह किस स्थान अथवा राशि में बैठा है, इसका ज्ञान पंचांग को देखकर आसानी से प्राप्त किया जा सकता है।

प्रत्येक पंचांग में एक-एक सप्ताह के ग्रह गोचरों की कुंडलियां दी गई होती हैं। उन्हें देखकर यह बात सरलता से मालूम की जा सकती है कि इस समय कौन-सा ग्रह किस भाव में और किस राशि पर चल रहा है। अन्य ग्रहों में कोई भी ग्रह ऐसा नहीं है, जो दैनिक ग्रह गोचर में एक राशि पर २१ दिन से कम ठहरता हो। अकेला चंद्रमा ही ऐसा ग्रह है, जो हर सवा दो दिन के बाद अपनी राशि को बदल देता है, अत: चंद्रमा की स्थिति को दैनिक ग्रह गोचर में विशेष रूप से देख लेना चाहिए। कौन-सा ग्रह किस राशि पर कितने दिन ठहरता है, इसका उल्लेख आरम्भ में किया जा चुका है।

ऊपर यह बात बताई जा चुकी है कि दैनिक ग्रह गोचर में जो ग्रह जिस स्थान तथा राशि में बैठा होता है, वह जातक के ऊपर अपना कुछ-न-कुछ अच्छा-बुरा प्रभाव अवश्य डालता है, इसलिए जब तक जन्म-कुंडली के साथ ही जातकों की दैनिक ग्रह गोचर कुंडली का मिलान नहीं किया जाता, तब तक फलादेश ठीक नहीं बैठता।

दैनिक ग्रह गोचर की स्थिति को किसी ज्योतिषी से पूछकर मालूम कर लेना चाहिए। यह विषय इतना सरल है कि किसी भी ज्योतिषी से बहुत थोड़े ही समय में ग्रहों की सामयिक-स्थिति के बारे में जानकारी प्राप्त करने की विधि आसानी से सीखी जा सकती है। उस विधि को सीख लेने के बाद फिर बार-बार ज्योतिषी से ग्रहों की तात्कालिक स्थिति को पूछने की आवश्यकता नहीं रहती। पंचांग देखकर उसे स्वयं ही जान लिया जाता है।

जन्म-कुंडली के जिस भाव तथा राशि में स्थित जिस ग्रह का जो फल द्वितीय खंड के फलादेशों में बताया गया है, दैनिक ग्रह गोचर कुंडली के विभिन्न भावों तथा राशियों में स्थित विभिन्न ग्रहों का फलादेश भी ठीक वैसा ही होता है।

किस दिन, मास अथवा वर्ष में दैनिक ग्रह गोचर स्थित किसी ग्रह का फलादेश किस उदाहरण-कुंडली में देखना चाहिए तथा जन्म-कुंडली स्थित ग्रहों का फलादेश किस उदाहरण-कुंडली में देखना चाहिए, इसकी स्पष्ट जानकारी प्रत्येक लग्न की उदाहरण कुंडलियों का फलादेश आरंभ करने से पूर्व ही यथास्थान दे दी गई है। पाठकों को चाहिए कि वे जन्म-कुंडली स्थित ग्रहों का फलादेश ज्ञात करते समय दैनिक ग्रह गोचर की स्थिति का फलादेश भी अवश्य मालूम कर लें। उन दोनों फलदेशों के समन्वय स्वरूप जो निष्कर्ष निकलता हो, उसी को यथार्थ फलादेश समझना चाहिए।

सम्मिलित परिवार

जन्म-कुंडली द्वारा फलादेश ज्ञात करने के इच्छुक महानुभावों को एक बात और भी स्मरण रखनी चाहिए, वह यह कि एक ही परिवार में सम्मिलित रूप से रहने वाले सभी व्यक्तियों का भाग्य एक दूसरे के साथ बंधा हुआ रहता है और सभी की जन्म कुंडली स्थित ग्रहों का थोड़ा-बहुत प्रभाव संयुक्त-परिवार के सभी सदस्यों पर पड़ता है।

उदाहरण के लिए पति के ऊपर पत्नी की जन्म कुंडली के ग्रहों को प्रभाव अवश्य पड़ता है। इसी प्रकार पत्नी भी पति की जन्म-कुंडली स्थित ग्रहों के प्रभाव से प्रभावित होती है।

बालक जब तक अवयस्क होता है अथवा माता-पिता के आश्रय में रहता है, तब तक उसकी जन्म-कुंडली स्थित अच्छे-बुरे ग्रहों का प्रभाव माता-पिता तथा भाई-बहनों के ऊपर भी पड़ता रहता है। इसी प्रकार घर की लड़की का जब तक विवाह नहीं हो जाता, तब तक उसके ग्रहों के प्रभाव से भी माता-पिता, भाई-बहन आदि प्रभावित होते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि गृह-स्वामी अपने सभी आश्रितों के ग्रहों से प्रभावित होता है और गृह-स्वामी के ग्रहों के प्रभाव से आश्रित लोग भी थोड़े-बहुत अवश्य प्रभावित होते हैं। निकटस्थ मित्रों की जन्म-कुंडली के ग्रह भी जातक पर अपना थोड़ा-बहुत प्रभाव डाला करते हैं।

अस्तु, किसी भी स्त्री अथवा पुरुष की कुंडली को देखते समय उसके पति, पत्नी, पुत्र तथा अविवाहिता-पुत्री की जन्म-कुंडलियों में स्थित ग्रहों के प्रभाव को देखना भी आवश्यक है। इसी प्रकार माता-पिता, भाई-बहन आदि संयुक्त-परिवार के सभी सदस्यों एवं निकटस्थ मित्रों की जन्म-कुंडली के ग्रहों की स्थिति को देखकर, उन सबके ग्रहों के एक दूसरे के ऊपर पड़ने वाले प्रभाव के समन्वयस्वरूप जो निष्कर्ष निकाला जाता है, वही पूर्ण रूप से अंतिम और यथार्थ होता है।

इस पुस्तक की सहायता से किसी भी स्त्री-पुरुष, बालक, वृद्ध, युवा—मनुष्य की जन्म-कुंडली में स्थित ग्रहों के शुभाशुभ प्रभाव की जानकारी बहुत थोड़े ही समय में अत्यंत सरलतापूर्वक प्राप्त की जा सकती है, अत: पाठकों को चाहिए कि वे इस पुस्तक से पूरा-पूरा लाभ उठाते रहें।

गलत जन्म-कुंडली को सुधारना

किसी भी जन्म-कुंडली का संपूर्ण फल उसकी शुद्ध लग्न के ऊपर आश्रित रहता है। यदि लग्न ठीक न हो, तो जन्म-कुंडली का फल भी ठीक नहीं बैठ सकता।

बालक के जन्म के समय कौन-सी लग्न वर्तमान है, इसका ठीक-ठीक ज्ञान 'उस समय क्या बजा है', इसकी सही जानकारी मिलने पर ही हो सकता है।

किसी भी जन्म-कुंडली का निर्माण करने के लिए, जिस स्थान पर बालक उत्पन्न हुआ है, वहां की घड़ी के स्टैण्डर्ड टाइम पर विचार न करके, उस स्थान पर होने वाले सूर्योदय के समय का विचार किया जाता है।

विभिन्न स्थानों पर सूर्योदय का समय अलग-अलग होता है, जबकि घड़ियों का स्टैंडर्ड टाइम देश के सभी स्थानों के लिए एक-सा रखा जाता है। अस्तु, यदि स्टैंडर्ड टाइम के आधार पर ही जन्म-कुंडली का निर्माण कर दिया जाये, तो उसकी लग्न प्राय: गलत हो जाती है। लग्न के गलत हो जाने पर जन्म-कुंडली स्थित सभी ग्रहों का फलादेश भी बदल जाता है, इसलिए सही फलादेश जानने के लिए जन्म-कुंडली की लग्न का शुद्ध होना अत्यंत आवश्यक है।

शुद्ध जन्म-कुंडली किस प्रकार बनाई जाए, यह विषय कुंडली निर्माण तथा गणित से संबंधित है। जो महानुभाव इस विषय की जानकारी प्राप्त करना चाहते हों, उन्हें या तो किसी ज्योतिषी से सीखना चाहिए अथवा फिर हमारी लिखी 'वृहद् ज्योतिर्विज्ञान' शीर्षक पुस्तक का अध्ययन करना चाहिए।

यहां पर हम गलत लग्न वाली कुंडली को सुधारने की एक सरल विधि का वर्णन करते हैं। इस विधि के अनुसार कोई भी व्यक्ति सहज में ही अपनी कुंडली की लग्न का सुधार कर सकता है। लग्न को सुधारने की विधि इस प्रकार है—

जिस जातक की जन्म-कुंडली पर विचार करना है, उसमें स्थित ग्रहों के शुभाशुभ फल को इस पुस्तक में पढ़कर जान लीजिए। फिर यह देखिए कि वह फलादेश उस जातक के जीवन पर ठीक-ठीक घटित होता है या नहीं। यदि फलादेश ठीक-ठीक घटित होता है, तो यह समझ लेना चाहिए कि जन्म-कुंडली की लग्न ठीक है। उस स्थिति में जन्म-कुंडली के ठीक होने के संबंध में संदेह करने की कोई आवश्यकता नहीं है।

परंतु यदि यह देखा जाये कि उस जन्म-कुंडली के ग्रहों का फलादेश जातक के जीवन पर ठीक-ठीक घटित नहीं होता, तो उस स्थिति में जन्म-कुंडली की लग्न को अशुद्ध समझकर दो कुंडलियां इस प्रकार की तैयार करनी चाहिए, जिसमें से एक में एक लग्न आगे की हो और दूसरी में एक लग्न पीछे की। फिर उनमें उन्हीं लग्नों के अनुसार ग्रहों को बैठाकर दोनों कुंडलियों में स्थिति ग्रहों के शुभाशुभ फल को जातक के जीवन पर घटित करके देखना चाहिए तथा उन दोनों में से जिस लग्न वाली कुंडली का फलादेश ठीक-ठीक घटित होता हो, उसी लग्न वाली कुंडली को ठीक समझ लेना चाहिए।

उदाहरण के लिए नीचे एक वृष लग्न वाली कुंडली दी जा रही है। उसी के साथ वृष से एक आगे मिथुन लग्न वाली तथा एक लग्न पीछे मेष लग्न वाली दो कुंडलियां भी दी जा रही हैं। इन तीनों कुंडलियों में जिस कुंडली के ग्रहों का फलादेश जातक के जीवन पर ठीक-ठीक घटित होगा, उसी को उस जातक की शुद्ध लग्न वाली कुंडली माना जाएगा।

वृष लग्न वाली कुंडली

९४

मिथुन लग्न वाली कुंडली

९५

उपर्युक्त तीनों उदाहरण-कुंडलियों द्वारा जिस प्रकार लग्न को बदलकर और उसी के अनुसार विभिन्न भावों में ग्रह-स्थापित करके शुद्ध लग्न ज्ञात करने अथवा जातक की जन्म-कुंडली ठीक है या नहीं, इस बात का पता लगाने की जो विधि ऊपर बताई गई है, उसके अनुसार जिस जन्म-कुंडली की लग्न शुद्धि के विषय में संदेह हो, उसे एक लग्न आगे-पीछे हटाकर ठीक कर लेना चाहिए।

वर्ष कुंडली के फलादेश का ज्ञान

वर्ष कुंडली स्थित ग्रहों के फलादेश की जानकारी भी जन्म-कुंडली स्थित ग्रहों के फलादेश के समान ही इस पुस्तक की सहायता द्वारा प्राप्त की जा सकती है। किस भाव तथा राशि स्थित किस ग्रह का क्या फल होता है, इसका संपूर्ण विवरण अगले फलादेश-प्रकरण में विस्तारपूर्वक दिया गया है।
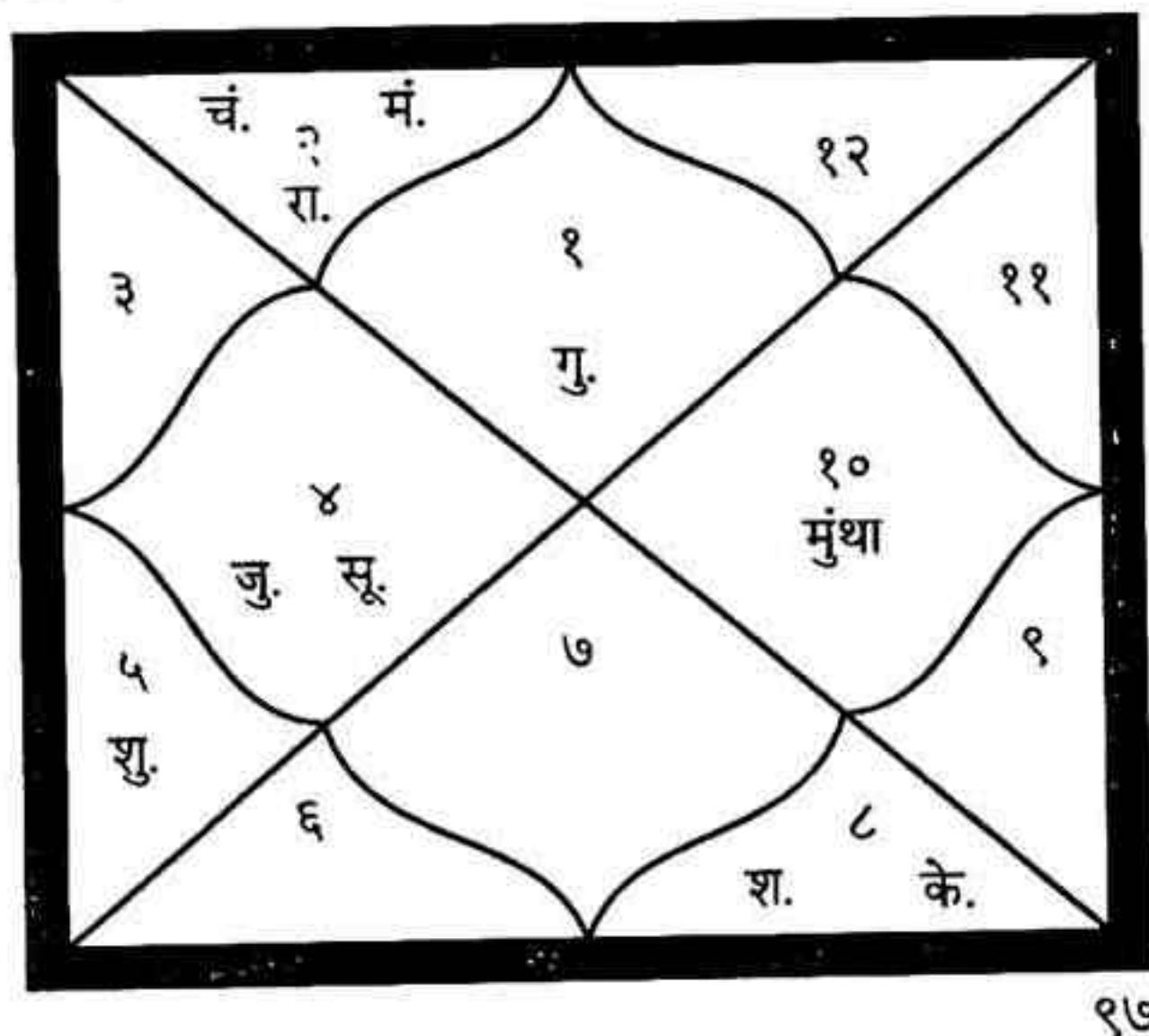
मेष लग्न वाली कुंडली

९६

वर्ष कुंडली में नवग्रहों के समान ही एक ग्रह 'मुंथा' विशेष रूप से माना गया है। जातक की वर्ष कुंडली बनाते समय ज्योतिषी लोग वर्ष कुंडली में 'मुंथा' किस भाव में बैठा है, इसे स्पष्ट लिख देते हैं। नीचे की उदाहरण-कुंडली में नवग्रहों की स्थिति के साथ ही एक भाव में मुंथा की स्थिति को भी प्रदर्शित किया गया है।

मुंथा का संक्षिप्त फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

लगन—यदि मुंथा वर्ष-कुंडली के प्रथमभाव में स्थित हो, तो उस वर्ष जातक को शांति, सुख एवं स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है।

द्वितीयभाव—यदि मुंथा वर्ष-कुंडली के द्वितीयभाव में स्थित हो, तो जातक को उस वर्ष व्यवसाय से लाभ, आकस्मिक लाभ एवं धन प्राप्ति के अन्य अवसर प्राप्त होते हैं।

तृतीयभाव—यदि मुंथा वर्ष-कुंडली के तृतीयभाव में स्थित हो, तो उस वर्ष जातक के बल, पौरुष, पराक्रम तथा गौरव की वृद्धि होती है।

चतुर्थभाव—यदि मुंथा वर्ष-कुंडली के चतुर्थभाव में स्थित हो, तो उस वर्ष जातक को दुःख, कलह एवं अशांति पूर्ण समय व्यतीत करना होता है।

पंचमभाव—यदि मुंथा वर्ष-कुंडली के पंचमभाव में स्थित हो, तो उस वर्ष जातक को कुटुंबियों से प्रेम, आरोग्य तथा धन लाभ के योग प्राप्त होते हैं।

षष्ठभाव—यदि मुंथा वर्ष-कुंडली के षष्ठभाव में स्थित हो, तो उस वर्ष जातक को शत्रु, रोग एवं अग्नि भय का सामना करना पड़ता है।

सप्तमभाव—यदि मुंथा वर्ष-कुंडली के सप्तमभाव में स्थित हो, तो उस वर्ष जातक की स्त्री को रोग तथा संतान को कष्टों का सामना करना पड़ता है।

अष्टमभाव—यदि मुंथा वर्ष-कुंडली के अष्टमभाव में स्थित हो, तो उस वर्ष जातक को मृत्यु अथवा मृत्यु-तुल्य कष्ट की प्राप्ति होती है।

नवमभाव—यदि मुंथा वर्ष-कुंडली के नवमभाव में स्थित हो, तो उस वर्ष जातक को धर्म तथा धन का लाभ होता है एवं भाग्य की वृद्धि होती है।

दशमभाव—यदि मुंथा वर्ष-कुंडली के दशमभाव में स्थित हो, तो उस वर्ष जातक को राज्य द्वारा सम्मान, शासन में अधिकार एवं यश की प्राप्ति होती है।

एकादशभाव—यदि मुंथा वर्ष-कुंडली के एकादशभाव में स्थित हो, तो उस वर्ष जातक को व्यापार में क्षति एवं अन्य प्रकार की हानियां उठानी पड़ती हैं।

द्वादशभाव—यदि मुंथा वर्ष-कुंडली के द्वादशभाव में स्थित हो, तो उस वर्ष जातक को कष्ट, हानि तथा रोगों का सामना करना पड़ता है।

वर्षेश

वर्ष-कुंडली में जिस प्रकार मुंथा को एक ग्रह के रूप में स्वीकार किया जाता है, उसी प्रकार किसी एक ग्रह को वर्ष का स्वामी—'वर्षेश' भी माना जाता है।

वर्षेश का संक्षिप्त प्रभाव नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

यदि वर्षेश पूर्ण बलवान हो, तो जातक को उस वर्ष धन, यश तथा सुख की प्राप्ति होती है। यदि वर्षेश निर्बल हो, तो जातक को उस वर्ष रोग, धन-हानि तथा अन्य अनेक प्रकार के कष्टों का सामना करना पड़ता है। यदि वर्षेश वर्ष-कुंडली के छठे, आठवें अथवा बारहवें (६-८-१२) भाव में स्थित हो तो वह जातक को अनिष्टकारक फल प्रदान करता है। यदि इनके अतिरिक्त अन्य भावों में हो तो वह शुभ फल देता है।
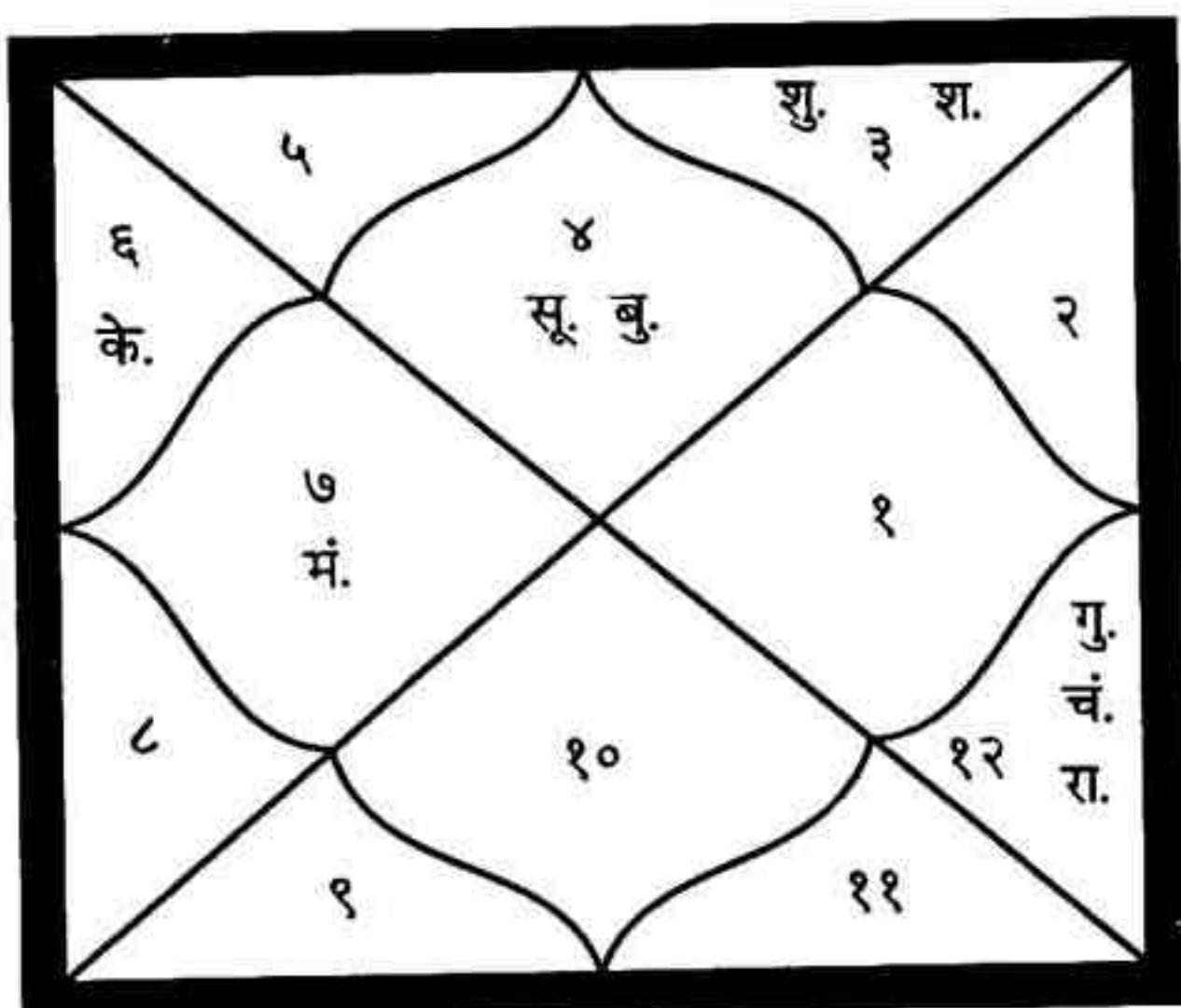
किस ग्रह के वर्षेश होने पर क्या फल होता है, इसे संक्षेप में नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

यदि वर्षेश सूर्य पूर्ण बली हो तो धन, प्रतिष्ठा, यश, स्वास्थ्य आदि का लाभ होता है। मध्यम बली हो, तो अल्प-सुख और अल्प-बली हो तो धन-हानि, रोग, शत्रु-भय आदि समझना चाहिए।

यदि वर्षेश चंद्रमा पूर्ण बली हो तो स्त्री, पुत्र, वैभव, विलासिता का सुख मिलता है। यदि वर्षेश मंगल पूर्ण बली हो तो अधिकार, शासन, विजय कीर्ति, यश, पुत्र आदि की प्राप्ति होती है। यदि वर्षेश बुध पूर्ण बली हो तो विद्या, बुद्धि, कलाओं का लाभ होता है। यदि वर्षेश गुरु पूर्ण बली हो तो शत्रुनाश, सुबुद्धि एवं अन्य अनेक प्रकार के लाभ होते हैं। यदि वर्षेश शुक्र पूर्ण बली हो तो प्रसन्नता, सुख, विलासिता, व्यवसाय, सम्मान आदि का लाभ होता है। यदि वर्षेश शनि पूर्ण बली हो तो नवीन भूमि, भवन, खेत, स्वास्थ्य तथा उच्च पद आदि की प्राप्ति होती है।

वर्षेश के अल्प बली होने पर अल्प लाभ होता है तथा बलहीन होने पर सभी ग्रह अशुभ फल देते हैं। मुंथा और वर्षेश का विशेष ज्ञान किसी ज्योतिषी से पूछकर प्राप्त कर लेना चाहिए।

९८

द्वितीय प्रकरण

बारह लग्नों की कुंडलियों का फलादेश

दुष्ट ग्रहों की शांति के लिए दान

यदि किसी जातक के लिए कोई ग्रह अशुभ हो, तो उसकी शांति एवं प्रसन्नता के लिए ज्योतिष शास्त्र में निम्नलिखित वस्तुओं को दान करना बताया गया है—

सूर्य के लिए—गेहूं, तांबा, माणिक्य, लाल चंदन, गुड़, कमल, गाय और लाल रंग का कपड़ा।

चंद्रमा के लिए—चांदी, मोती, शंख, कपूर, गाय, चावलों से भरी बांस की पिटारी, जलपूर्ण घट तथा श्वेत वस्त्र।

मंगल के लिए—स्वर्ण, लाल रंग का बैल, कनेर के फूल, तांबा, मसूर, गेहूं, मूंगा तथा लाल रंग का वस्त्र।

बुध के लिए—स्वर्ण, हाथी दांत, पन्ना, मूंगा, घी, पीले फल, कांसी तथा नीले रंग का वस्त्र।

गुरु के लिए—घोड़ा, मिश्री, स्वर्ण, हल्दी, पीले रंग का अन्न तथा वस्त्र, पुखराज और नमक।

शुक्र के लिए—चित्र-विचित्र रंग के वस्त्र, घी, सफेद रंग का घोड़ा, स्वर्ण, चावल, गाय तथा सुगंधित वस्तुएं।

शनि के लिए—तिल, तेल, उड़द, सोना, भैंस, काले रंग की गाय, काले रंग का वस्त्र, नीले रंग का कंबल।

राहु के लिए—तलवार, घोड़ा, गोमेद, रत्न, स्वर्ण, तेल, तिल, कंबल तथा काले रंग का वस्त्र।

केतु के लिए—कंबल, कस्तूरी, वैदूर्यमणि, तिल का तेल, सोना, शस्त्र तथा बकरा।

जन्म-कुंडलियों का फलादेश देखने की विधि

'भृगु संहिता फलित प्रकाश' के इस द्वितीय खंड में बारह लग्नों की कुंडलियों के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का अलग-अलग वर्णन किया गया है।

फलादेश के साथ ही उस ग्रह की अन्य भावों पर पड़ने वाली दृष्टि, उसके स्व-क्षेत्री, मित्र-क्षेत्री, शत्रु-क्षेत्री, उच्च राशिगत, नीच राशिगत, केंद्रगत, त्रिकोणगत अथवा मूल त्रिकोणगत होने की स्थिति आदि विषयों का यथास्थान उल्लेख कर दिया गया है।

प्रत्येक लग्न की कुंडलियों के अलग-अलग अध्यायों में विभाजित कर दिया गया है, जिससे पाठकों को अपनी कुंडली का फलादेश ज्ञात करने में सुविधा रहे।

किस लग्न की कुंडली का फलादेश किन-किन संख्या वाली उदाहरण-कुंडलियों में देखना चाहिए, इसे नीचे अनुसार समझ लें—

(१) 'मेष' लग्न वाली जन्म-कुंडलियों का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०१ से २०८ तक में देखना चाहिए।

(२) 'वृष' लग्न वाली जन्म-कुंडलियों का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २१२ से ३१९ तक में देखना चाहिए।

(३) 'मिथुन' लग्न वाली जन्म-कुंडलियों का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३२३ से ४३० तक में देखना चाहिए।

(४) 'कर्क' लग्न वाली जन्म-कुंडलियों का फलादेश उदहारण-कुंडली संख्या ४३४ से ५४१ तक में देखना चाहिए।

(५) 'सिंह' लग्न वाली जन्म-कुंडलियों का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५४५ से ६५२ तक में देखना चाहिए।

(६) 'कन्या' लग्न वाली जन्म-कुंडलियों का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६५६ से ७६३ तक में देखना चाहिए।

(७) 'तुला' लग्न वाली जन्म-कुंडलियों का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७६७ से ८७४ तक में देखना चाहिए।

(८) 'वृश्चिक' लग्न वाली जन्म-कुंडलियों का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८७८ से ९८५ तक में देखना चाहिए।

(९) 'धनु' लग्न वाली जन्म-कुंडलियों का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ९८९ से १०९६ तक में देखना चाहिए।

(१०) 'मकर' लग्न वाली जन्म-कुंडलियों का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११०० से १२०७ तक में देखना चाहिए।

(११) 'कुंभ' लग्न वाली जन्म-कुंडलियों का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२११ से १३१८ तक में देखना चाहिए।

(१२) 'मीन' लग्न वाली जन्म-कुंडलियों का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १३२२ से १४२९ तक में देखना चाहिए।

दैनिक ग्रह गोचर के अनुसार विभिन्न ग्रह विभिन्न राशियों पर निरंतर भ्रमण करते रहते हैं, अतः जन्म-कुंडलीस्थ ग्रहों का फलादेश जानने के साथ ही ग्रहगोचर के अनुसार ग्रहों की तात्कालिक स्थिति के फलादेश को जानना भी आवश्यक है। यह बात पहले ही बताई जा चुकी है।

जिस समय जो ग्रह जिस राशि पर चल रहा हो, उसका ज्ञान पंचांग द्वारा अथवा किसी ज्योतिषी से पूछकर प्राप्त कर लेना चाहिए, तदुपरांत उस ग्रह का जातक के ऊपर क्या प्रभाव पड़ेगा, इसकी जानकारी उदाहरण-कुंडलियों में प्रदर्शित विभिन्न राशियों पर स्थित ग्रहों के फलादेश के आधार पर प्राप्त कर लेनी चाहिए।

किस दिन, मास अथवा वर्ष में कौन-सा ग्रह किस राशि पर स्थित होने पर जातक के ऊपर अपना क्या प्रभाव डालता है और उसके फलादेश को किन-किन उदाहरण कुंडलियों द्वारा ज्ञात किया जा सकता है—इसका उल्लेख प्रत्येक लग्न की उदाहरण-कुंडलियों के प्रारंभ में ही यथास्थान कर दिया गया है।

यह स्मरणीय है कि जन्म-कुंडली स्थित ग्रहों का प्रभाव जातक के जीवन पर स्थायी रूप से पड़ता रहता है तथा दैनिक गोचर स्थित ग्रहों का प्रभाव अस्थायी रूप से पड़ता तथा हटता बना रहता है।
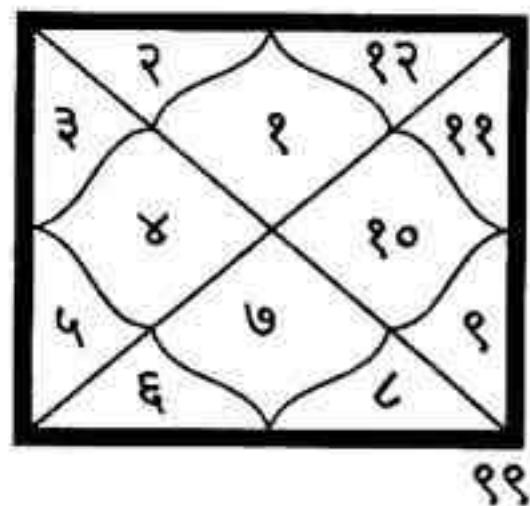
दैनिक ग्रह गोचर कुंडली स्थित ग्रहों के अपने ऊपर पड़ने वाले फलादेश को किस प्रकार जाना जाये, इस विषय को प्रत्येक लग्न की कुंडली का फलादेश आरंभ करते समय स्पष्ट कर दिया गया है, अत: उसी के अनुसार दैनिक ग्रहों के प्रभाव की जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए।

अधिकांश जन्म-कुंडलियों में एक ही भाव में दो अथवा अधिक ग्रह बैठे रहते हैं। उन्हें 'ग्रहों की युति' कहा जाता है। विभिन्न ग्रहों की युति के प्रभाव का वर्णन इस पुस्तक के तीसरे प्रकरण में किया गया है, अत: उसे यथास्थान देख लेना चाहिए।

इस पुस्तक में वर्णित किसी भी विषय को समझने में कठिनाई हो, तो ग्रंथ-लेखक को जवाबी-पत्र लिखकर पूछताछ की जा सकती है। ज्योतिष संबंधी अन्य विषयों की जानकारी तथा कार्यों के लिए भी ग्रंथ-लेखक से संपर्क स्थापित किया जा सकता है। पता निम्नलिखित है—

पं० राजेश दीक्षित, कृष्णापुरी, मथुरा

मेष लग्न

मेष लग्न वाली कुंडलियों के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का अलग-अलग फलादेश

मेष लग्न का संक्षिप्त फलादेश

मेष लग्न में जन्म लेने वाला जातक दुबले-पतले शरीर वाला, अधिक बोलने वाला, उग्र स्वभाव वाला, रजोगुणी, अहंकारी, चंचल, बुद्धिमान, धर्मात्मा, अत्यंत चतुर, अल्पसंततिवान, अधिक पित्त वाला, सब प्रकार के भोजन करने वाला, उदार, कुल दीपक तथा स्त्रियों से अल्प स्नेह अथवा द्वेष रखने वाला (जातक यदि स्त्री हो, तो पुरुषों से कम स्नेह अथवा द्वेष रखने वाली) होता है। इसके शरीर का रंग कुछ लालिमा लिए होता है।

मेष लग्न में जन्म लेने वाले जातक को अपनी आयु के छठें, आठवें, पन्द्रहवें, इक्कीसवें, छत्तीसवें, चालीसवें, पैतालीसवें, छप्पनवें तथा तिरसठवें वर्ष में शारीरिक कष्ट एवं धन-हानि का सामना करना पड़ता है।

मेष लग्न में जन्म लेने वाले जातक को अपनी आयु के सोलहवें, बीसवें, अट्ठाइसवें, चौंतीसवें, इकतालीसवें, अड़तालीसवें तथा इक्यावनवें वर्ष में धन की प्राप्ति, वाहन-सुख, भाग्य-वृद्धि आदि विविध प्रकार के लाभ एवं आनंद प्राप्त होते हैं।

मेष लग्न
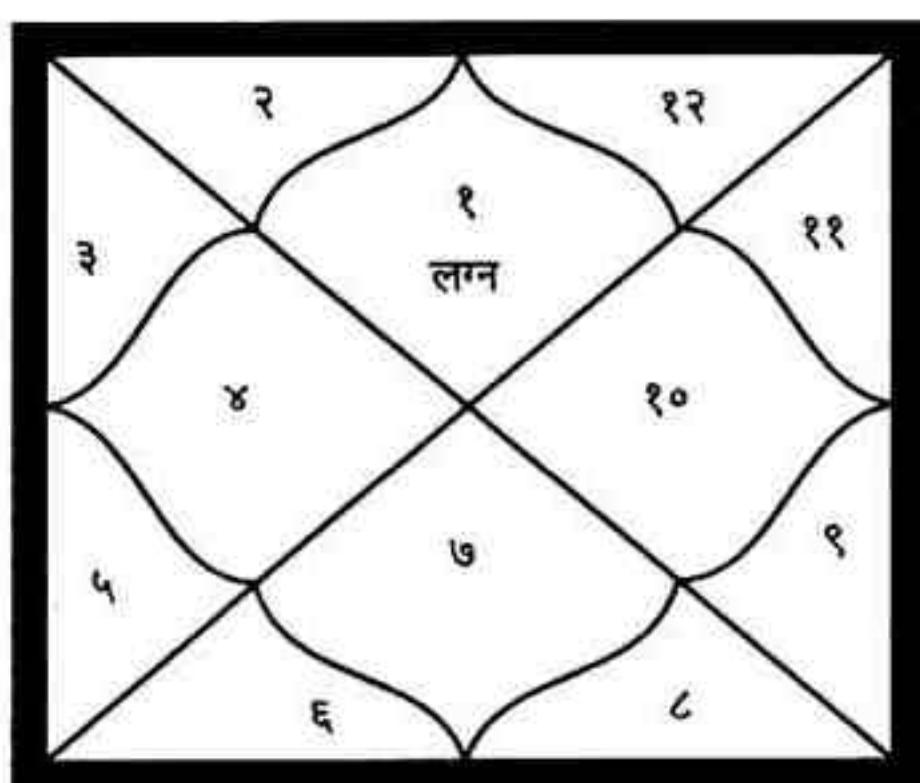
यह बात पहले बताई जा चुकी है कि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन पर नवग्रहों का प्रभाव मुख्यत: दो प्रकार से पड़ता है—

(१) ग्रहों की जन्म-कालीन स्थिति के अनुसार।

(२) ग्रहों की दैनिक गोचर गति के अनुसार।

जातक की जन्म-कालीन ग्रह स्थिति 'जन्म-कुंडली' में दी गई होती है। उसमें जो ग्रह जिस भाव में और जिस राशि पर बैठा होता है, वह जातक के जीवन पर अपना निश्चित प्रभाव निरंतर स्थायी रूप से डालता रहता है।

दैनिक गोचर गति के अनुसार विभिन्न ग्रहों की जो स्थिति होती है, उसकी जानकारी पंचांग द्वारा की जा सकती है। ग्रहों की दैनिक गोचर गति के संबंध में या तो किसी ज्योतिषी से पूछ

१००

लेना चाहिए अथवा स्वयं ही उसे मालूम करने का तरीका सीख लेना चाहिए। इस संबंध में पुस्तक के पहले प्रकरण में विस्तारपूर्वक लिखा जा चुका है।

दैनिक गोचर गति के अनुसार विभिन्न ग्रह जातक के जीवन पर अस्थायी रूप से अपना प्रभाव डालते हैं।

उदाहरण के लिए, यदि किसी जातक की जन्म-कुंडली में सूर्य मेष राशि पर प्रथमभाव में बैठा है, तो उसका स्थायी प्रभाव जातक के जीवन पर आगे दी गई उदाहरण-कुंडली संख्या १०१ के अनुसार स्थायी रूप से पड़ता रहेगा, परंतु यदि दैनिक ग्रह गोचर में कुंडली देखते समय सूर्य वृष राशि के द्वितीयभाव में बैठा है, तो उस स्थिति में वह उदाहरण-कुंडली संख्या २१३ के अनुसार उतनी अवधि तक जातक के जीवन पर अपना अस्थायी प्रभाव अवश्य डालेगा, जब तक कि वह वृष राशि से हटकर मिथुन राशि में नहीं चला जाता। मिथुन राशि में पहुंचकर वह मिथुन राशि के अनुरूप प्रभाव डालना आरंभ कर देगा, अत: जिस जातक की जन्म-कुंडली में सूर्य मेष राशि के प्रथमभाव में बैठा हो, उसे उदाहरण-कुंडली संख्या १०१ में फलादेश देखने के पश्चात्, यदि उन दिनों सूर्य वृष राशि के द्वितीयभाव में बैठा हो, तो उदहारण-कुंडली संख्या २१३ का फलादेश भी देखना चाहिए तथा इन दोनों फलादेशों के समन्वय स्वरूप जो निष्कर्ष निकलता हो, उसी को अपने वर्तमान जीवन पर प्रभावकारी समझना चाहिए। इसी प्रकार प्रत्येक ग्रह के विषय में जान लेना चाहिए।

मेष लग्न में जन्म लेने वाले जातकों की जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का वर्णन उदहारण-कुंडली संख्या १०१ से २०८ तक में किया गया है। पंचांग की दैनिक ग्रह-गति के अनुसार मेष लग्न में जन्म लेने वाले जातकों को किन-किन उदाहरण-कुंडलियों द्वारा विभिन्न ग्रहों के तात्कालिक प्रभाव को देखना चाहिए—इसका विस्तृत वर्णन अगले पृष्ठों में किया गया है, अत: उसके अनुसार ग्रहों की तात्कालिक स्थिति के सामयकि-प्रभाव की जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए। तदुपरांत दोनों फलादेशों के समन्वय स्वरूप जो निष्कर्ष निकलता हो, उसी को सही फलादेश समझना चाहिए।

इस विधि से प्रत्येक व्यक्ति प्रत्येक ज़न्म-कुंडली का ठीक-ठीक फलादेश सहज में ही ज्ञात कर सकता है।

टिप्पणी—(१) पहले बताया जा चुका है कि जिस समय जो ग्रह २७ अंश से ऊपर अथवा ३ अंश के भीतर होता है, वह प्रभावकारी नहीं रहता। इसी प्रकार जो ग्रह सूर्य से अस्त होता है, वह भी जातक के ऊपर अपना प्रभाव या तो बहुत कम डालता है, या फिर पूर्णत: प्रभावहीन रहता है।

(२) स्थायी जन्म-कुंडली स्थित विभिन्न ग्रहों के अंश किसी ज्योतिषी द्वारा अपनी कुंडली में लिखवा लेने चाहिएं, ताकि उनके अंशों के विषय में बार-बार जानकारी प्राप्त करने के झंझट से बचा जा सके। तात्कालिक गोचर के ग्रहों के अंशों की जानकारी पंचांग द्वारा अथवा किसी ज्योतिषी से पूछकर प्राप्त कर लेनी चाहिए।

(३) स्थायी जन्म-कुंडली अथवा तात्कालिक ग्रह-गति कुंडली में यदि किसी भाव में एक से अधिक ग्रह एक साथ बैठे होते हैं अथवा जिन-जिन स्थानों पर उनकी दृष्टियां पड़ती हैं,

तो जातक का जीवन उनके द्वारा भी प्रभावित होता है। इस पुस्तक के तीसरे प्रकरण में 'ग्रहों की युति का प्रभाव' शीर्षक के अन्तर्गत विभिन्न ग्रहों की युति के फलादेश का वर्णन किया गया है, अत: इस विषय की जानकारी वहां से प्राप्त कर लेनी चाहिए।

(४) विशोंत्तरी दशा के सिद्धांतानुसार प्रत्येक जातक की पूर्णायु १२० वर्ष की मानी जाती है। इस आयु-अवधि में जातक नवग्रहों की दशाओं का भोग कर लेता है। विभिन्न ग्रहों का दशा-काल भिन्न-भिन्न होता है, परन्तु अधिकांश व्यक्ति इतनी लम्बी आयु तक जीवित नहीं रह पाते, अत: वे अपने जीवन-काल में कुछ ही ग्रहों की दशाओं का भोग कर पाते हैं। जातक के जीवन के जिस काल में जिस ग्रह की दशा—जिसे 'महादशा' कहा जाता है—चल रही होती है, जन्म-कालीन ग्रह स्थिति के अनुसार उसके जीवन-काल की उतनी अवधि उस ग्रह-विशेष के प्रभाव से विशेष रूप से प्रभावित रहती है। जातक का जन्म किस ग्रह की महादशा में हुआ है और उसके जीवन मेंकिस अवधि से किस अवधि तक किस ग्रह की महादशा चलेगी और वह महादशा जातक के ऊपर अपना क्या विशेष प्रभाव डालेगी—इन सब बातों का उल्लेख भी तीसरे प्रकरण में किया गया है।

इस प्रकार (१) जन्म-कुंडली, (२) तात्कालिक ग्रहगोचर कुंडली एवं (३) ग्रहों की महादशा—इन तीनों विधियों से फलादेश प्राप्त करने की सरल विधि का वर्णन इस पुस्तक में किया गया है, अत: इन तीनों के समन्वयस्वरूप फलादेश का ठीक-ठीक निर्णय करके अपने भूत, वर्तमान तथा भविष्य-कालीन जीवन के विषय में सम्यक् जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए।

मेष (१) जन्म-लग्न वालों के लिए
जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में
'सूर्य' का फलादेश

मेष (१) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०१ से ११२ तक में देखना चाहिए।

मेष (१) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित सूर्य का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'सूर्य' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०१ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'सूर्य' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०२ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'सूर्य' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०३ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'सूर्य' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०४ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'सूर्य' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०५ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'सूर्य' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०६ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'सूर्य' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०७ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'सूर्य' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०८ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'सूर्य' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १०९ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'सूर्य' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११० के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'सूर्य' 'कुंभ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १११ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'सूर्य' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११२ के अनुसार समझना चाहिए।

मेष (१) जन्म-लग्न वालों के लिए जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में 'चंद्रमा' का फलादेश

मेष (१) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'चंद्रमा' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११३ से १२४ तक में देखना चाहिए।

मेष (१) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित चंद्रमा का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस दिन 'चंद्रमा' 'मेष' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११३ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस दिन 'चंद्रमा' 'वृष' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११४ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस दिन 'चंद्रमा' 'मिथुन' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११५ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस दिन 'चंद्रमा' 'कर्क' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११६ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस दिन 'चंद्रमा' 'सिंह' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११७ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'कन्या' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११८ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस दिन 'चंद्रमा' 'तुला' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ११९ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस दिन 'चंद्रमा' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२० के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस दिन 'चंद्रमा' 'धनु' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२१ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस दिन 'चंद्रमा' 'मकर' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२२ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस दिन 'चंद्रमा' 'कुंभ' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२३ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस दिन 'चंद्रमा' 'मीन' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२४ के अनुसार समझना चाहिए।

मेष (१) जन्म-लग्न वालों के लिए जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में 'मंगल' का फलादेश

मेष (१) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२५ से १३६ तक में देखना चाहिए।

मेष (१) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'मंगल' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२५ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'मंगल' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२६ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'मंगल' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२७ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'मंगल' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२८ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'मंगल' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२९ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'मंगल' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १३० के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'मंगल' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १३१ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'मंगल' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १३२ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'मंगल' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १३३ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'मंगल' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १३४ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'मंगल' 'कुंभ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १३५ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'मंगल' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १३६ के अनुसार समझना चाहिए।

मेष (१) जन्म-लग्न वालों के लिए
जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में
'बुध' का फलादेश

मेष (१) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १३७ से १४८ तक में देखना चाहिए।

मेष (१) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'बुध' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १३७ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'बुध' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १३८ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'बुध' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १३९ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'बुध' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १४० के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'बुध' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १४१ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'बुध' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १४२ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'बुध' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १४३ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'बुध' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १४४ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'बुध' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १४५ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'बुध' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १४६ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'बुध' 'कुंभ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १४७ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'बुध' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १४८ के अनुसार समझना चाहिए।

मेष (१) जन्म-लग्न वालों के लिए
जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में
'गुरु' का फलादेश

मेष (१) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १४९ से १६० तक में देखना चाहिए।

मेष (१) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १४९ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'गुरु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १५० के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १५१ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १५२ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'गुरु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १५३ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १५४ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'गुरु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १५५ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'गुरु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १५६ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'गुरु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १५७ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १५८ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कुंभ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १५९ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १६० के अनुसार समझना चाहिए।

मेष (१) जन्म-लग्न वालों के लिए
जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में
'शुक्र' का फलादेश

मेष (१) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' **का स्थायी**-फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १६१ से १७२ तक में देखना चाहिए।

मेष (१) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' **का अस्थायी**-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'शुक्र' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १६१ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'शुक्र' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १६२ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'शुक्र' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १६३ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'शुक्र' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १६४ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'शुक्र' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १६५ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'शुक्र' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १६६ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'शुक्र' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १६७ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'शुक्र' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १६८ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'शुक्र' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १६९ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'शुक्र' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १७० के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'शुक्र' 'कुंभ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १७१ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'शुक्र' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १७२ के अनुसार समझना चाहिए।

मेष (१) जन्म-लग्न वालों के लिए जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में 'शनि' का फलादेश

मेष (१) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १७३ से १८४ तक में देखना चाहिए।

मेष (१) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'शनि' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १७३ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'शनि' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १७४ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'शनि' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १७५ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'शनि' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १७६ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'शनि' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १७७ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'शनि' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १७८ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'शनि' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १७९ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'शनि' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १८० के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'शनि' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १८१ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'शनि' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १८२ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'शनि' 'कुंभ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १८३ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'शनि' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १८४ के अनुसार समझना चाहिए।

मेष (१) जन्म-लग्न वालों के लिए
जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में
'राहु' का फलादेश

मेष (१) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १८५ से १९६ तक में देखना चाहिए।

मेष (१) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'राहु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १८५ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'राहु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १८६ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'राहु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १८७ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'राहु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १८८ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'राहु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १८९ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'राहु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १९० के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'राहु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १९१ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'राहु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १९२ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'राहु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १९३ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'राहु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १९४ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'राहु' 'कुंभ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १९५ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'राहु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १९६ के अनुसार समझना चाहिए।

मेष (१) जन्म-लग्न वालों के लिए
जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में
'केतु' का फलादेश

मेष (१) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १९७ से २०८ तक में देखना चाहिए।

मेष (१) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'केतु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १९७ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'केतु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १९८ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'केतु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १९९ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'केतु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २०० के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'केतु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २०१ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'केतु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २०२ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'केतु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २०३ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'केतु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २०४ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'केतु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २०५ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'केतु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २०६ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'केतु' 'कुंभ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २०७ के अनुसार समझना चाहिए।
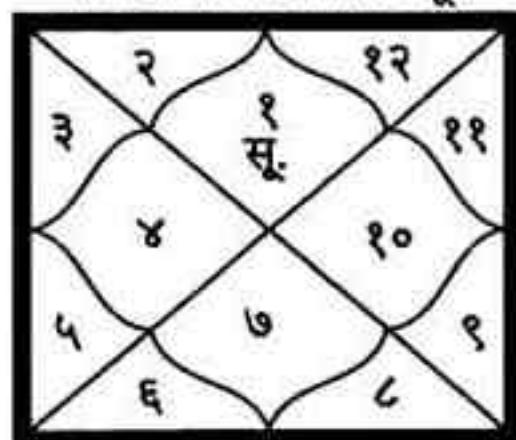
(१२) जिस वर्ष में 'केतु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २०८ के अनुसार समझना चाहिए।

'मेष' लग्न में 'सूर्य' का फल

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे सूर्य का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

१०१

सूर्य शरीर स्थान में उच्च का होकर अपने मित्र मंगल की राशि पर बैठा हुआ है, अत: इसके प्रभाव से जातक स्वस्थ शरीर वाला, मध्यम कद वाला स्वाभिमानी, तेजस्वी तथा परम विद्वान होगा। उसकी वाणी प्रभावशाली होगी, जिसे दूसरे लोग बड़े ध्यान और आदर के साथ सुना करेंगे। सन्तान पक्ष की प्रबलता, बुद्धिमत्ता, साहस, धैर्य, शक्ति, व्यवहारकुशलता, महत्वाकांक्षा आदि गुण जातक को सहज में प्राप्त होंगे।

परन्तु स्त्री, व्यवसाय, स्वास्थ्य तथा झगड़े-टंटे के घर सप्तम भाव पर सूर्य की नीच-दृष्टि पड़ रही है, इसलिए जातक को दाम्पत्य-सुख में कुछ कमी और क्लेश की प्राप्ति होगी। इसी प्रकार उसे अपनी जीविकोपार्जन के क्षेत्र में भी अनेक प्रकार की कठिनाइयों का सामना करते रहना होगा। ऐसे सूर्य वाले जातक की पत्नी (या पति) अधिक सुंदर नहीं होती और वह उसकी मर्जी के मुताबिक भी कुछ कम ही चल पाती है।

जिस जातक का जन्म मेष लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे सूर्य का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

१०२
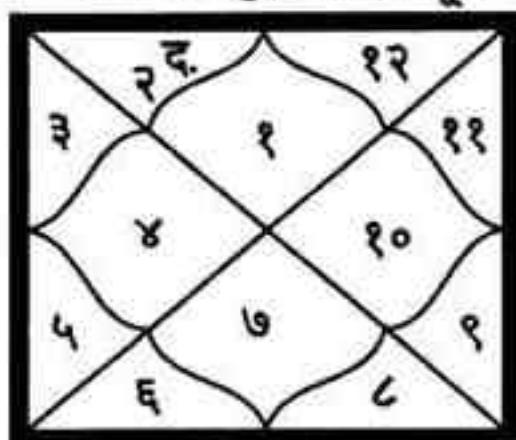
सूर्य धन स्थान में अपने शत्रु शुक्र की राशि पर बैठा हुआ है, अत: इसके प्रभाव से जातक को आर्थिक मामलों में कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। द्वितीयभाव कुटुंब, रत्न, बंधन आदि का भी है, अत: इस भाव में शत्रु-क्षेत्री सूर्य की स्थिति के कारण जातक के संतानपक्ष में बाधायें आयेंगी तथा विद्याध्ययन में भी कमी बनी रहेगी।

द्वितीय भावास्थ वृष राशि का सूर्य अपनी पूर्ण दृष्टि से आयु, मृत्यु तथा पुरातत्त्व के अष्टमभाव को अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिए जातक दीर्घायु होगा तथा उसे अपने बुद्धि-बल से पुरातत्त्व (गड़ा हुआ धन अथवा आकस्मिक अर्थ-प्राप्ति) का लाभ भी होगा।

ऐसे जातक के ऊपर अपने कुटुंब का प्रभाव भी कुछ-न-कुछ बना रहेगा। धनोपार्जन के लिए बुद्धि-बल का विशेष प्रयोग करने पर भी उसका अधिक संचय नहीं हो पाएगा।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे सूर्य का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्नः तृतीयभावः सूर्य

१०३

सूर्य तीसरे पराक्रम के स्थान में अपने मित्र बुध की राशि पर बैठा हुआ है, अतः इसके प्रभाव से जातक को विद्या एवं बुद्धि का बल विशेष रूप से प्राप्त होगा तथा पराक्रम की वृद्धि होगी।

सूर्य सातवीं दृष्टि से भाग्य तथा धर्म स्थान को भी देख रहा है, जो उसके मित्र गुरु का है, अतः जातक भाग्यशाली, धर्मात्मा, दानी तथा तीर्थ यात्रा करने वाला भी होगा। वह अपनी बुद्धि तथा पराक्रम के योग्य से भाग्य की वृद्धि करेगा, साथ ही ईश्वराराधन, धर्म-पालन आदि शुभ कार्यों को भी करता रहेगा।

तीसरे स्थान पर गरम स्वभाव वाला ग्रह बैठा हो, तो वह अत्यधिक शक्तिशाली हो जात है, अतः यह सूर्य जातक को अत्यंत प्रभावशाली व्यक्ति बनाएगा तथा उसकी वाणी में भी तेज लाएगा। तीसरा स्थान भाई का भी होता है, अतः जातक को अपने भाइयों एवं संतान से सुख भी प्राप्त होगा।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली में 'चतुर्थभाव' में 'सूर्य की स्थिति हो, उसे सूर्य का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्नः चतुर्थभावः सूर्य

१०

सूर्य चौथे माता, सुख, सम्पत्ति, भूमि, गृह आदि के भाव में अपने मित्र चंद्रमा की राशि में बैठा हुआ है, अतः इसके प्रभाव से जातक भूमि, मकान तथा विविध प्रकार के सुखों का उपभोग करेगा। उसे विद्या का भी विशेष लाभ होगा। सूर्य के प्रभाव से जातक के मस्तिष्क में कुछ तेजी रहेगी, परन्तु चंद्रमा की राशि होने के कारण उस पर शांति का अधिकार बना रहेगा।
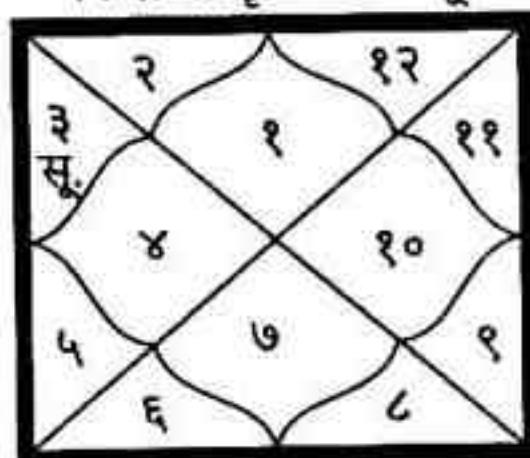
सूर्य अपनी सातवीं पूर्ण दृष्टि से शत्रु शनि की राशि वाले दशमभाव से देख रहा है, इसलिए जातक को अपने पिता से कुछ वैमनस्य एवं राज्य के संबंधों में कुछ उदासीनता एवं विफलता का अनुभव होता रहेगा, परंतु सूर्य की ऐसी स्थिति वाला जातक कु मिलाकर सर्वत्र थोड़ा बहुत सम्मान अवश्य प्राप्त करेगा तथा प्रभावशाली भी बना रहेगा।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'सूर की स्थिति हो, उसे सूर्य का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्नः पंचमभावः सूर्य

१०

सूर्य पांचवें विद्या, बुद्धि एवं संतान के भाव में स्वक्षेत्री होकर बैठा है, अतः इसके प्रभाव से जातक अत्यंत विद्वान, बुद्धिमान, प्रभावशाली तथा वाणी का धनी होगा एवं अपने संतानपक्ष से शक्ति प्राप्त करेगा। इस जातक को एक अत्यंत प्रतापी पुत्र की प्राप्ति होगी।
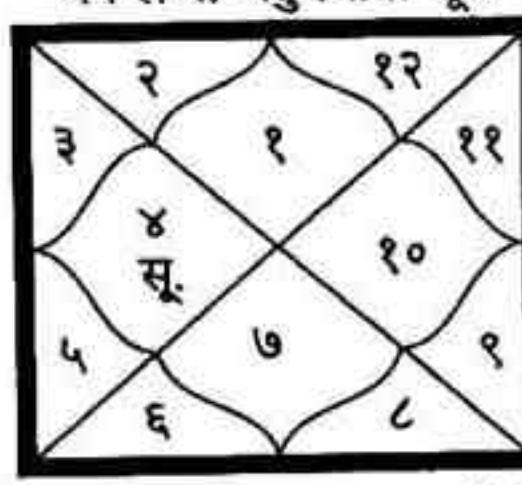
पंचम स्थान का सूर्य अपने शत्रु शनि की कुंभ राशि वाले ग्यारहवें घर को सातवीं शत्रु दृष्टि से देख रहा है, अतः जातक की आमदनी के मार्गों में रुकावटें पड़ा करेंगी और उसे धनोपार्जन के लिए विशेष प्रयत्न करते रहना होगा।
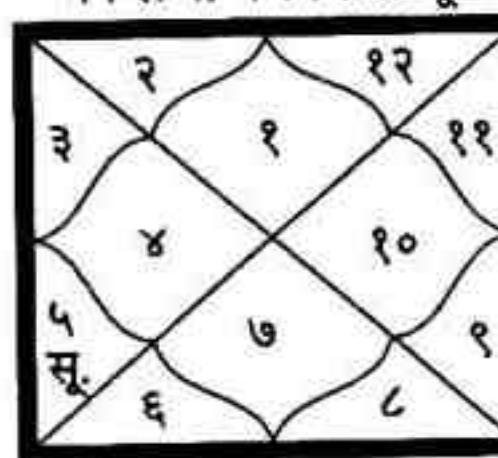
ऐसी ग्रह स्थिति वाला व्यक्ति अपने लाभ के लिए कटु शब्दों का प्रयोग भी करता है और उसके कारण सफलता प्राप्त करता है। वह बुद्धि में अन्य लोगों को अपने सामने तुच्छ गिनता है, अतः कुछ लोग उसके परोक्ष-आलोचक भी बन जाते हैं।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे सूर्य का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्नः षष्ठभावः सूर्य

१०६

छठे शत्रु रोग तथा झगड़े के स्थान में अपने सामान्य मित्र बुध की राशि पर बैठा हुआ सूर्य जातक के लिए विद्याध्ययन के समय कठिनाइयां उत्पन्न करता है। अतः जातक को विद्याध्ययन में कुछ कठिनाइयां तो पड़ेंगी, परंतु छठे स्थान पर बैठा हुआ उष्ण स्वभावी ग्रह अत्यंत शक्तिशाली माना गया है, अतः जातक विद्वान भी होगा और बुद्धिमान भी होगा, साथ ही शत्रु पक्ष पर निरंतर विजय भी प्राप्त करता रहेगा।

सूर्य अपनी सातवीं दृष्टि से अपने मित्र गुरु की मीन राशि वाले व्यय-स्थान को भी देख रहा है, अतः जातक बहुत अधिक खर्च करने वाला होगा तथा बाहरी संबंधों से लाभ एवं सफलता भी खूब प्राप्त करेगा। उसे स्वदेश की अपेक्षा बाहरी स्थानों में अधिक सम्मान प्राप्त होगा। इस सूर्य के प्रभाव से संतानपक्ष के प्रति मन में कुछ चिन्ताएं एवं परेशानियां अवश्य बनी रहेंगी।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे सूर्य का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्नः सप्तमभावः सूर्य

१०७

सातवें स्त्री, स्वास्थ्य तथा व्यवसाय के स्थान में सूर्य तुला राशि पर नीच का होकर अपने शत्रु की राशि में बैठा हुआ है, अतः इसके प्रभाव से जातक का स्वास्थ्य कुछ दुर्बल रहेगा तथा स्त्री के संबंध में भी कुछ-न-कुछ परेशानी बनी रहेगी।

इस घर से सूर्य अपनी सातवीं उच्चदृष्टि द्वारा मित्र मंगल की मेष राशि को देख रहा है, अतः जातक का शरीर कुछ लंबे कद का होगा। उसके हृदय में स्वाभिमान की मात्रा अधिक रहेगी तथा युक्तिबल एवं बुद्धिबल द्वारा वह सम्मान तथा प्रभाव भी प्राप्त करता रहेगा।

सूर्य की इस स्थिति के कारण संतानपक्ष कमजोर बना रहेगा तथा स्त्री का सुख भी अच्छा प्राप्त नहीं होगा। जीवन-यापन के मार्ग में निरंतर कठिनाइयां आती रहेंगी तथा विद्या-क्षेत्र भी कुछ कमजोर बना रहेगा।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में सूर्य की स्थिति हो, उसे सूर्य का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें मृत्यु, आयु, व्याधि, चिंता तथा पुरातत्त्व के घर में अपने मित्र मंगल को वृश्चिक राशि पर बैठा हुआ सूर्य जातक को विद्याध्ययन में कठिनाई तथा संतानपक्ष की ओर से कष्ट का अनुभव करने वाला माना जाता है। इसके प्रभाव से आयु में वृद्धि होगी तथा पुरातत्त्व के संबंध में भी लाभ प्राप्त होगा, परंतु मस्तिष्क में तथा दैनिक जीवन में कुछ-न-कुछ परेशानियां उठ खड़ी होती रहेंगी।

मेष लग्न: अष्टमभाव: सूर्य

१०८

आठवें घर का सूर्य अपनी सातवीं दृष्टि से धन तथा कुटुंब के द्वितीय स्थान को अपने शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, अतः इसके प्रभाव स्वरूप धन-संग्रह तथा कुटुंब के निर्वाह के लिए अत्यधिक प्रयत्न करना पड़ेगा, फिर भी कुछ-न-कुछ असंतोष बना ही रहेगा।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे सूर्य का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
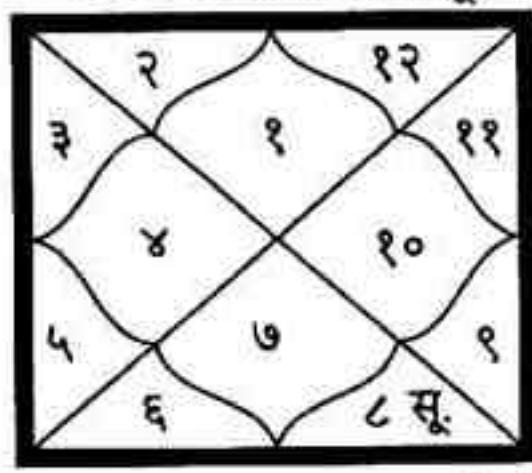
नवें भाग्य धर्म तथा विद्या के घर त्रिकोण स्थान में सूर्य अपने मित्र गुरु की धनुराशि पर बैठा हुआ है। इसके प्रभाव से जातक को श्रेष्ठ बुद्धि, विद्या तथा ज्ञान की प्राप्ति होगी। ऐसा जातक धर्मात्मा, धर्मशास्त्रों का ज्ञाता, ईश्वर भक्त, भाग्यशाली, यशस्वी, न्यायी, दयालु, तीर्थ यात्री तथा दानी भी होगा। भाग्य तथा उन्नति के क्षेत्र में उसे निरंतर सफलताएं मिलती रहेंगी।

मेष लग्न: नवमभाव: सूर्य

१०९

नवीं धनुराशि में बैठा हुआ सूर्य अपनी सातवीं दृष्टि से तृतीय पराक्रम स्थान को अपने मित्र बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिए जातक पराक्रमी, भाई-बहनों वाला पुरुषार्थी तथा श्रेष्ठ योग्यता वाला भी होगा। कुल मिलाकर सूर्य की इस स्थिति को बहुत अच्छा समझना चाहिए।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे सूर्य का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
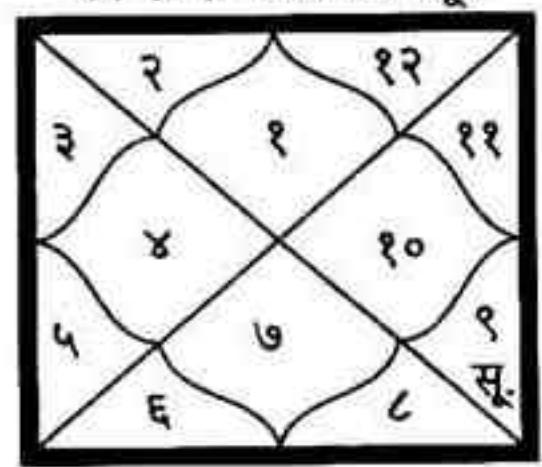
दसवें राज्य, पिता, व्यवसाय तथा मान-प्रतिष्ठा वाले केंद्र स्थान में अपने शत्रु 'शनि' की मकर राशि पर बैठे हुए सूर्य के प्रभाव से जातक को अपने पिता, व्यवसाय, नौकरी एवं मान-प्रतिष्ठा के क्षेत्र में कुछ त्रुटियों का सामना करना पड़ता है परंतु ऐसा जातक विदेशी भाषा तथा राजभाषा का अच्छा जानकार होता है।
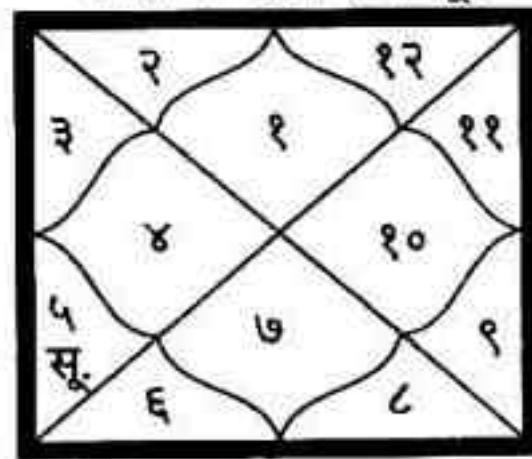
मेष लग्न: दशमभाव: सूर्य

११०

ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक क्रोधी, अहंकारी तथा असहिष्णु स्वभाव का होता है। मकर राशिस्थ सूर्य अपनी सातवीं पूर्ण दृष्टि से माता सुख तथा भूमि के चौथे स्थान को अपने मित्र चंद्रमा की कर्क राशि में देखता है, अतः जातक को भूमि, मकान तथा माता का सुख अच्छा प्राप्त होगा और उसे अपने बुद्धिबल द्वारा राजकीय क्षेत्र तथा व्यावसायिक क्षेत्रों में भी सफलता प्राप्त होती रहेगी।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे सूर्य का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: एकादशभाव: सूर्य

१११

ग्यारहवें लाभ, ऐश्वर्य, सम्पत्ति तथा आमदनी के स्थान में अपने शत्रु शनि की कुंभ राशि पर बैठे हुए सूर्य के प्रभाव से जातक को अर्थोपार्जन के लिए अत्यंत कठिन परिश्रम करना आवश्यक बना रहेगा। ग्यारहवें स्थान पर बैठा हुआ गरम ग्रह अत्यंत शक्तिशाली माना गया है, इस कारण जातक को लाभ तथा आमदनी तो होगी, परंतु उसे शारीरिक श्रम तथा बुद्धि का उपयोग भी बहुत करना पड़ेगा।

इस भाव में स्थित सूर्य अपनी सातवीं पूर्ण दृष्टि से विद्या तथा संतान के पंचम-भाव को अपनी ही राशि में देख रहा है, अतः जातक विद्या, बुद्धि तथा संतान की विशेष शक्ति प्राप्त करेगा। वह अपने स्वार्थ-साधन के लिए कटु-वचनों का प्रयोग भी करेगा और उससे लाभ भी उठाएगा।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे सूर्य का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: द्वादशभाव: सूर्य

११२

बारहवें व्यय, हानि, दंड तथा रोग के भाव में अपने मित्र बृहस्पति की मीन राशि पर बैठा हुआ सूर्य जातक का बाहरी स्थानों से अच्छा संबंध कराएगा, परंतु खर्च की अधिकता बनी रहेगी। ऐसी स्थिति में जातक को अपना खर्च चलाने के लिए बुद्धिबल का अधिक प्रयोग करना पड़ेगा। संतानपक्ष के लिए चिंता तथा हानि योग भी उपस्थित होंगे।
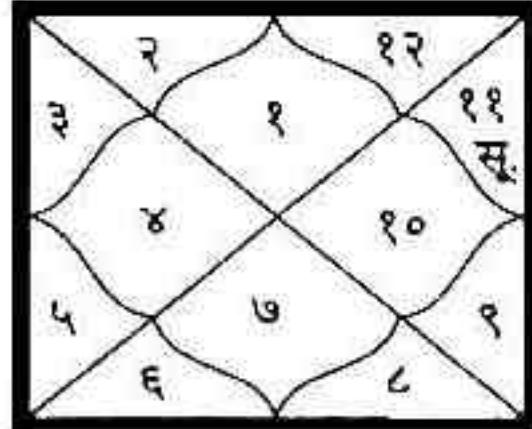
इस भाव में स्थित सूर्य अपनी सातवीं पूर्ण दृष्टि से छठे घर में अपने मित्र बुध की कन्या राशि में देख रहा है, अतः जातक को शत्रु-पक्ष पर विजय एवं निर्भयता प्राप्त होगी। परंतु उसे मानसिक चिंताओं का शिकार बना रहना पड़ेगा तथा विद्या लाभ के पक्ष में भी कमजोरी रहेगी।

'मेष' लग्न में 'चंद्रमा' का फल

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे चंद्रमा का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
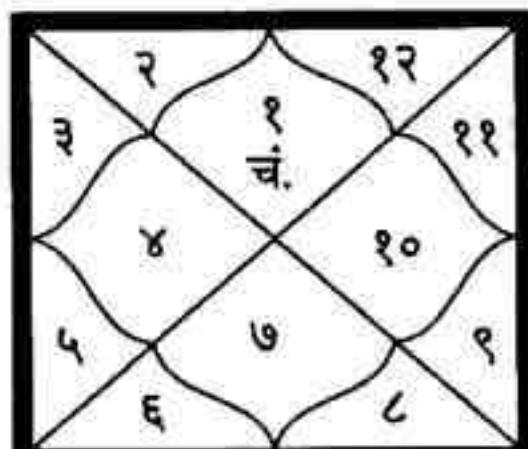
मेष लग्नः प्रथमभावः चंद्र

११३

पहले शरीर, जाति, विवेक, आकृति, मस्तिष्क के घर तथा मुख्य केंद्र और लग्न स्थान में चंद्रमा अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर बैठा हो, तो उसके प्रभाव से जातक को घरेलू सुख तथा मानसिक शांति की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक बुद्धिमान, विवेकी, सुंदर शरीर वाला एवं भूमि-मकान तथा घरेलू सुख-सम्पत्ति को प्राप्त करने वाला होता है। इस भाव में स्थित चंद्रमा सातवें स्त्री, व्यवसाय, विवाह के स्थान को अपने सामान्य मित्र शुक्र की तुला राशि पर भी दृष्टि डालता है, अतः जातक को स्त्री एवं व्यवसाय के संबंध में भी सफलता एवं प्रसन्नता प्राप्त होती है।

चंद्रमा मन का स्वामी है। वह जब केंद्र स्थान में बैठता है, तो जातक के मन को प्रसन्नता प्रदान करता रहता है। कुल मिलाकर ऐसी चंद्र स्थिति वाला जातक सुख, शांति, दाम्पत्य प्रेम, व्यावसायिक उन्नति एवं शारीरिक स्वास्थ्य को प्राप्त करता है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे चंद्रमा का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्नः द्वितीयभावः चंद्र

११४

दूसरे धन तथा कुटुंब स्थान में वृष का चंद्रमा उच्च का होकर अपने सामान्य मित्र शुक्र की राशि पर बैठा हो, तो उसके प्रभाव से जातक बहुत धनी एवं जमीन-जायदाद वाला होता है। धन तथा कुटुंब के स्थान में मित्र क्षेत्री शुभ ग्रह चंद्रमा की उपस्थिति के कारण जातक के कुटुंब की वृद्धि होती है, परंतु दूसरा स्थान धन का भी माना गया है, इसलिए जातक को अपनी माता के संबंध में किसी-न-किसी कमी का अनुभव भी होता रहेगा।

इस स्थान में बैठा हुआ चंद्रमा अपनी सातवीं नीच दृष्टि से अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि वाले आयु, चिंता, व्याधि, संकट तथा पुरातत्त्व के आठवें स्थान को भी देखता है। चंद्रमा की इस दृष्टि के प्रभाव से जातक को आयु, स्वास्थ्य तथा पुरातत्त्व के संबंध में कुछ न्यूनता एवं परेशानियों का सामना करना पड़ेगा तथा दैनिक जीवनक्रम में भी कुछ-न-कुछ अशांति बनी रहेगी।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे चंद्रमा का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई तथा पराक्रम के स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर चंद्रमा बैठा हुआ हो, तो उसके प्रभाव से जातक को भाई-बहनों का सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है।

११५

चंद्रमा की ऐसी स्थिति के कारण जातक की मानसिक-शक्ति प्रबल होती है, वह भूमि, मकान आदि का सुख प्राप्त करता है तथा आनंदमय जीवन बिताता है।

इस स्थान से चंद्रमा सातवीं दृष्टि से अपने मित्र गुरु की धनुराशि वाले भाग्य, धर्म तथा विद्या के नवें स्थान को भी देख रहा है, इसके प्रभाव से जातक का भाग्यवान, धर्मात्मा, विद्वान, दानी तथा उदार-स्वभाव वाला होना भी सुनिश्चित है। कुल मिलाकर ऐसी चंद्र स्थिति वाला जातक सौभाग्यशाली, विद्वान, धनी, धर्मात्मा, मनोबल संपन्न तथा यशस्वी होगा और उसे जीवन में सफलताएं प्राप्त होती रहेंगी।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे चंद्रमा का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
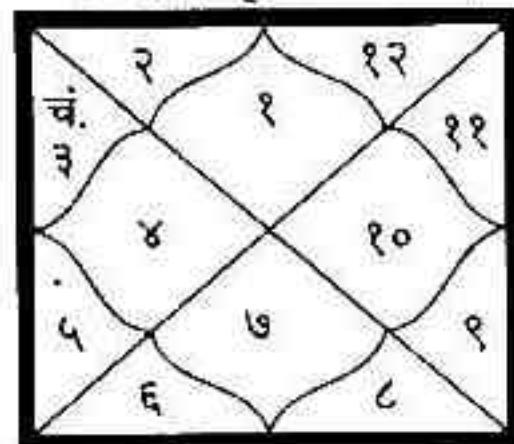
चौथे माता, सुख, भूमि तथा संपत्ति के घर में चंद्रमा अपनी राशि कर्क पर स्वक्षेत्री होकर बैठा है, इसके प्रभाव से जातक को अपनी माता, भूमि, मकान तथा संपत्ति के विषय में पूर्ण सुख प्राप्त होगा। मनोरंजन के विविध साधन भी निरंतर उपलब्ध होते रहेंगे।

११६

चतुर्थभाव में बैठा हुआ चंद्रमा अपनी सातवीं दृष्टि से, शनि की मकर राशि वाले दसवें घर को देख रहा है। दसवां घर पिता, राज्य, व्यवसाय तथा मान-प्रतिष्ठा का है, अत: चंद्रमा की इस दृष्टि के प्रभाव से जातक का अपने पिता से कुछ वैमनस्य बना रहेगा तथा राजकीय कार्य एवं सम्मान के क्षेत्र में भी कुछ त्रुटि बनी रहेगी। कुल मिलाकर ऐसी चंद्र स्थिति वाला जातक पिता से कुछ वैमनस्य रखने वाला, माता से सुख प्राप्त करने वाला तथा धन, संपत्ति, कुटुंब-सुख एवं आनंदोपभोग को प्राप्त करने वाला होता है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे चंद्रमा का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

११७
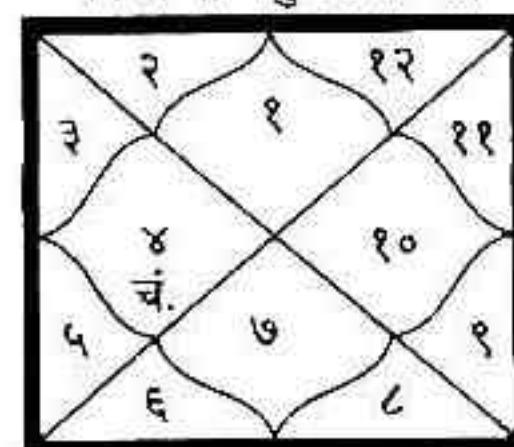
पांचवें विद्या, बुद्धि तथा संतान के घर में चंद्रमा अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित हो, तो उसके प्रभाव से जातक बहुत बड़ा विद्वान, बुद्धिमान एवं संततिवान होता है। उसे भूमि, माता, संपत्ति, मकान तथा मनोरंजन आदि का सुख भी प्राप्त होता है।
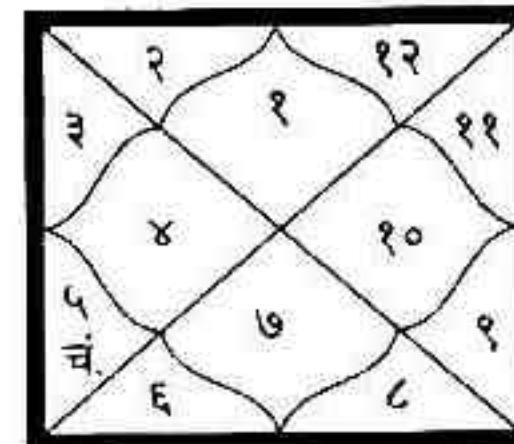
उक्त स्थान में स्थित चंद्रमा की सातवीं, दृष्टि, ग्यारहवें लाभ तथा आय के भवन में शनि की कुंभ राशि पर पड़ रही है, अतः इस कारण जातक को अपनी आय के साधनों में कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा, परंतु अपने शीतल स्वभाव एवं शांत बुद्धि के कारण वह उन कठिनाइयों से हंसते हुए संघर्ष करके अंत में सफलता प्राप्त करता रहेगा। कुल मिलाकर ऐसी चंद्र स्थिति वाला जातक विद्वान, बुद्धिमान, धन-संपत्तिवान, गंभीर, शांत, संतोषी, अत्यन्त चतुर, भू-संपत्ति का स्वामी, माता के सुख से युक्त परंतु व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों का अनुभव करने वाला होता है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे चंद्रमा का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझाना चाहिए—

मेष लग्नः षष्ठभावः चंद्र

११८

छठे शत्रु, रोग एवं पीड़ा के घर में चंद्रमा अपने मित्र बुध की राशि कन्या पर बैठा हो, तो उसके प्रभाव से जातक के घरेलू वातावरण में अनेक प्रकार की कमियां तथा अशांतियां बनी रहती हैं। परंतु अपने शत्रु-पक्ष में वह शांति का अनुभव करता है तथा बड़े-बड़े संघर्षों, कठिनाइयों, विपत्तियों एवं संकटों पर अपने धैर्य एवं विनम्रता के बल पर विजय प्राप्त कर लेता है।

षष्ठभाव स्थित चंद्रमा की सातवीं दृष्टि बारहवें व्यय तथा हानि के भाव पर पड़ती है। बारहवें स्थान में मित्र गुरु की मीन राशि होने के कारण जातक अच्छे कार्यों में अत्यधिक व्यय करता है तथा अपने जन्म-स्थान से दूर के बाहरी स्थानों द्वारा सुख एवं लाभ भी प्राप्त करता है।

कुल मिलाकर ऐसी चंद्र स्थिति वाला जातक धैर्यवान, विनम्र, माता एवं घरेलू पक्ष में कमी का अनुभव करने वाला तथा अनेक प्रकार के झंझटों तथा खर्चों में फंसा रहने वाला होता है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे चंद्रमा का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्नः सप्तमभावः चंद्र

११९
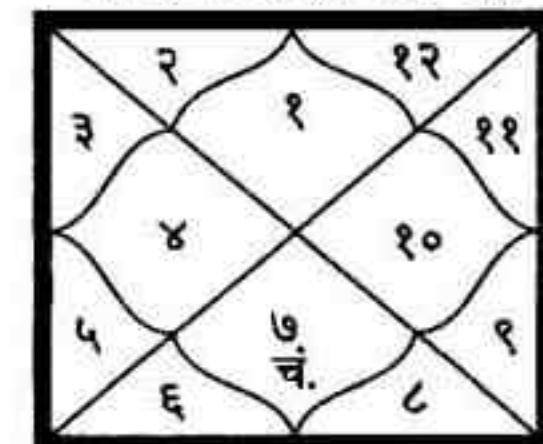
सातवें स्त्री, व्यवसाय, विवाह आदि के भवन में चंद्रमा अपने सामान्य मित्र शुक्र की राशि पर स्थित हो, तो उसके प्रभाव से जातक को सौंदर्य, भोगविलास तथा स्त्री-सुख की प्राप्ति होती है। साथ ही भूमि, संपत्ति एवं व्यवसाय के मार्ग में भी सफलता प्राप्त होती है।

सप्तमभाव स्थित चंद्रमा की सातवीं दृष्टि शरीर तथा विवेक के प्रथमभाव लग्न में पड़ती है। वहां चंद्रमा के मित्र मंगल की मेष राशि होने के कारण, जातक को शारीरिक सौंदर्य, सुख, मनोरंजन एवं यश-सम्मान आदि निरंतर प्राप्त होते रहेंगे।

कुल मिलाकर ऐसी चंद्र स्थिति वाला जातक सौंदर्यवान, स्त्रीवान, विलासी, भू-संपत्ति का स्वामी, व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने वाला तथा यश-सम्मान का अधिकारी होता है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे चंद्रमा का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: अष्टमभाव: चंद्र

१२०

आठवें मृत्यु, व्याधि, संकट, चिन्ता, तथा पुरातत्त्व के घर में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि में बैठे हुए नीच 'चंद्रमा' के प्रभाव से जातक के माता संबंधी सुख में कमी आती है तथा भूमि, पुरातत्त्व एवं अचल-संपत्ति को भी हानि पहुंचती है।

ऐसी ग्रह स्थिति वाले जातक को आयु के संबंध में भी संकटों का सामना करना पड़ता है। इसी प्रकार उसके दैनिक जीवन में भी विभिन्न प्रकार की कठिनाइयां उपस्थित होती रहती हैं। घरेलू सुख-शांति में भी कमी बनी रहती है। पुरातत्त्व के संबंध में हानि उठानी पड़ती है तथा अपनी जन्म-भूमि से बाहर जाकर भी रहना पड़ता है। परंतु इस भाव में बैठे हुए चंद्रमा की सातवीं उच्चदृष्टि धन, कुटुंब तथा राज्य के द्वितीयभाव में पड़ती है, इस कारण जातक को सुख तथा धन संबंधी योग निरंतर प्राप्त होते रहेंगे और वह सुख तथा धन उपार्जित करने के लिए विशेष मनोयोग के साथ निरंतर प्रयत्नशील भी बना रहेगा।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नवें भाग्य, धर्म, विद्या, तीर्थ-यात्रा आदि के त्रिकोण स्थान में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर बैठा हुआ चंद्रमा अपने प्रभाव से जातक को प्रबल बनाता है और उसे माता, भूमि तथा संपत्ति का सुख प्रदान करता है।

मेष लग्न: नवमभाव: चंद्र

१२१
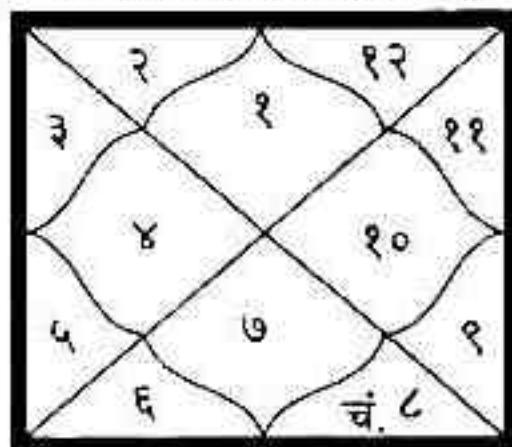
चंद्रमा चूंकि मन का स्वामी है, और नवें धर्म स्थान में बैठा है, इसलिए इसके प्रभाव से जातक का मन धर्म-कर्म की ओर विशेष आकर्षित बना रहेगा और वह दान-पुण्य, तीर्थ-यात्रा आदि सत्कार्य भी करता रहेगा।

नवम स्थान में बैठा हुआ चंद्रमा अपनी सातवीं पूर्ण दृष्टि से अपने मित्र बुध की मिथुन राशि वाले पराक्रम एवं भाई के स्थान को भी देखता है। इस कारण जातक को भाई-बहनों का सुख भी प्राप्त होगा और उसके पराक्रम में भी वृद्धि होती रहेगी।

कुल मिलाकर ऐसी चंद्र स्थिति वाला जातक सौभाग्यवान, सुखी, धन संपत्ति, भाई-बहनों से युक्त धार्मिक विचारों का होता है।
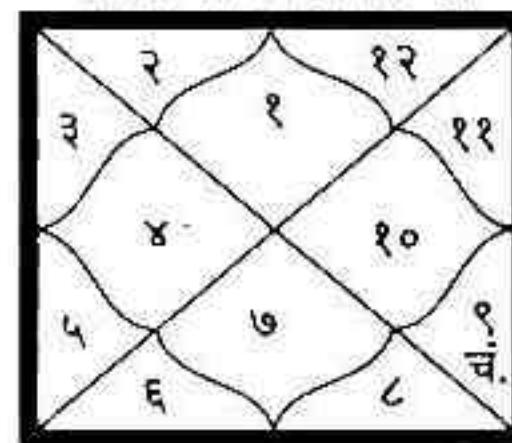
जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें राज्य, व्यवसाय, पिता तथा मान-प्रतिष्ठा के केंद्र स्थान में शनि की मकर राशि पर बैठे हुए चंद्रमा के प्रभाव से जातक का अपने पिता से वैमनस्य बना रहता है। उसे राज्य में सम्मान की प्राप्ति होती है तथा अपने परिश्रम एवं मनोयोग के द्वारा व्यवसाय में सफलता भी मिलती है।

मेष लग्न: दशमभाव: चंद्र

१२२

इस भाव में बैठे हुए चंद्रमा की सातवीं पूर्ण दृष्टि माता सुख, भूमि, संपत्ति के चौथे घर में अपनी स्वयं की कर्क राशि पर पड़ती है, इसके प्रभाव से जातक को माता की ओर से श्रेष्ठ सुख एवं शांति की प्राप्ति होती है तथा भूमि, संपत्ति आदि का भी लाभ होता है।

कुल मिलाकर ऐसी चंद्र स्थिति वाला जातक का अपने पिता से वैमनस्य, परंतु माता से स्नेह बना रहता है और वह धन-संपत्ति तथा मकान के सुख को अपने परिश्रम एवं मनोबल के योग से प्राप्त करता है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ, आय, संपत्ति तथा आयु का घर में शनि की कुंभ राशि पर बैठा हुआ चंद्रमा अपने प्रभाव से जातक को सुखपूर्वक आय के साधनों में कुछ असंतोष एवं कठिनाइयां देने वाला होता है। फिर भी, ऐसी चंद्र स्थिति वाला जातक अपने मनोबल के प्रभाव से आय के साधनों में वृद्धि करता है तथा सुखी-जीवन बिताता है।

मेष लग्न: एकादशभाव: चंद्र

१२३
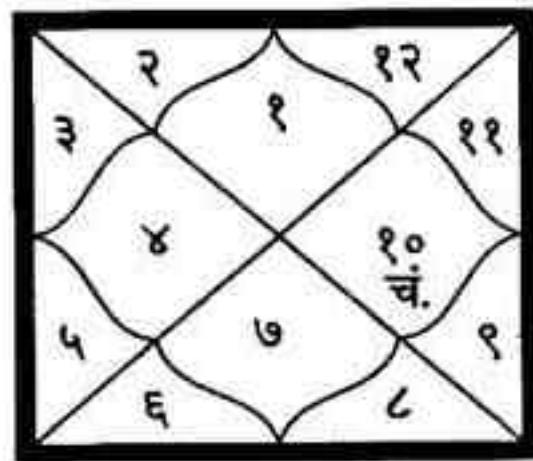
इस स्थान पर बैठे हुए चंद्रमा का सातवीं पूर्ण दृष्टि अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि में पड़ती है। यह पांचवां स्थान विद्या, बुद्धि एवं संतान का है, अत: इसके प्रभाव से जातक का संतान-पक्ष प्रबल होता है और उसे विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में उन्नति प्राप्त होती है।

कुल मिलाकर ऐसी चंद्र स्थिति वाला जातक बुद्धिमान, विद्वान, संततिवान तथा कुछ कठिनाइयों के साथ अपनी आय एवं सुख के साधनों में वृद्धि करने वाला होता है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: द्वादशभाव: चंद्र

१२४
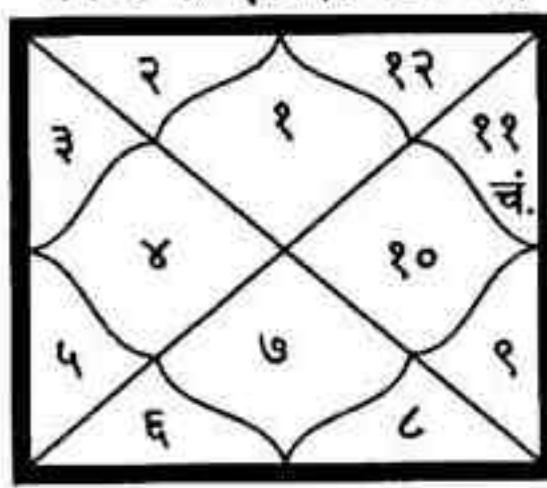
बारहवें व्यय, हानि तथा रोग के घर में अपने सामान्य मित्र गुरु की राशि पर बैठे हुए चंद्रमा के प्रभाव से जातक का खर्च शुभ कामों तथा ठाठ-बाट में होता रहेगा, परंतु उसे किसी प्रकार का दु:ख नहीं होगा। बारहवां घर बाहरी स्थानों से संबंध का द्योतक भी है, अत: इस भवन में चंद्रमा की स्थिति से जातक का बाहरी स्थानों से श्रेष्ठ संबंध बना रहेगा।
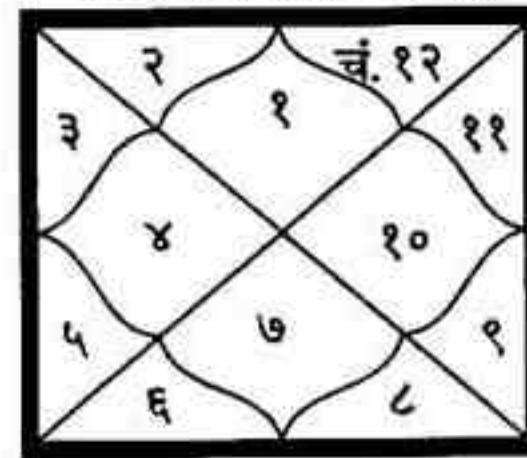
इस भवन में स्थित चंद्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की कन्या राशि वाले शत्रु, चिंता तथा पीड़ा के घर को देखता है, इस कारण जातक शत्रु पक्ष के प्रति शांतिपूर्वक रवैया अपनाएगा और हर प्रकार के झगड़े-झंझटों में बुद्धिमत्ता एवं संतोष से काम लेगा।

कुल मिलाकर ऐसी चंद्र स्थिति वाला जातक सुखी तथा संतुष्ट जीवन व्यतीत करता है। वह शत्रु-पक्ष पर अपनी शालीनता एवं संतोषी वृत्ति के द्वारा विजय प्राप्त करता है, परंतु उसके माता के सुख में थोड़मंगली कमी बनी रहती है।

'मेष' लग्न में 'मंगल' का फल

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: प्रथमभाव: मंगल

१२५

पहले शरीर स्थान में अपनी ही राशि पर बैठे हुए मंगल के प्रभाव से जातक का शरीर पुष्ट होता है तथा उसमें आत्म-बल प्रचुर मात्रा में पाया जाता है, परंतु मंगल के अष्टमेश होने के कारण उसे कभी-कभी रोगों का शिकार भी बनना पड़ता है।
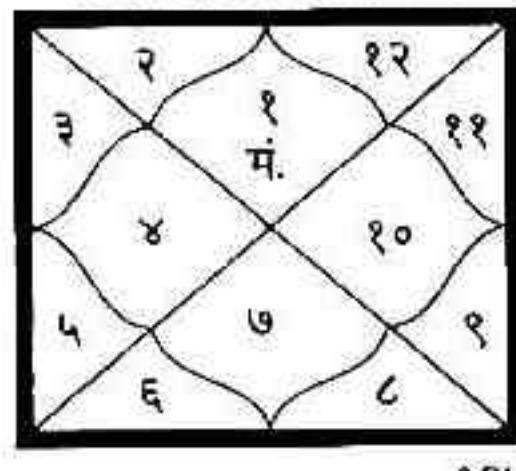
मंगल की ऐसी स्थिति होने पर जातक को माता के सुख, घर, मकान आदि के संबंध तथा व्यवसाय एवं पत्नी के मामले में कुछ परेशानियां उठानी पड़ती हैं। अष्टम आयु भवन को पूर्ण दृष्टि से देखने के कारण जातक की आयु लम्बी होती है तथा उसे पुरातत्त्व का लाभ भी होता है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीय भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: द्वितीयभाव: मंगल

१२६

दूसरे धन एवं कुटुंब के घर में मंगल शुक्र की राशि पर बैठा हो, तो उसके प्रभाव से जातक को धन-संचय में कमी तथा शरीर-स्थान में कष्टों का सामना करना पड़ता है। मंगल चतुर्थ मित्रदृष्टि से विद्या, बुद्धि के पंचम स्थान को देखता है, अत: जातक को विद्या प्राप्ति के मार्ग में कठिनाइयों तथा संतान-पक्ष में भी कुछ कष्टों का सामना करना पड़ेगा। सातवीं दृष्टि से आयु एवं पुरातत्त्व भाव को देखने के कारण जातक को दीर्घायु एवं पुरातत्व का लाभ होगा। मंगल आठवीं मित्रदृष्टि से भाग्य भवन को भी देखता है, अत: भाग्य में भी रुकावटें आएंगी।
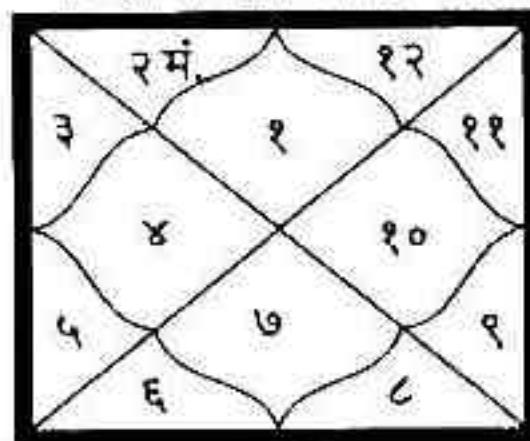
जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे पराक्रम स्थान में अपने मित्र बुध की राशि पर मंगल की स्थिति होने पर जातक को पराक्रम तथा हिम्मत की विशेष प्राप्ति होती है, परंतु अष्टमेश होने के कारण भाई-बहन के सुख में परेशानियां बनी रहती हैं। मंगल चौथी मित्रदृष्टि से शत्रु भवन को देखता है, अतः जातक अपने शत्रुओं को मारने में हिम्मत से काम लेगा और उन पर अपना प्रभाव भी रखेगा। आठवीं उच्च दृष्टि से राज्य एवं पिता के स्थान को देख रहा है, इस कारण जातक को राज्य द्वारा सम्मान प्राप्त होगा तथा पिता का सुख भी मिलेगा।

मेष लग्न: तृतीयभाव: मंगल

१२७

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
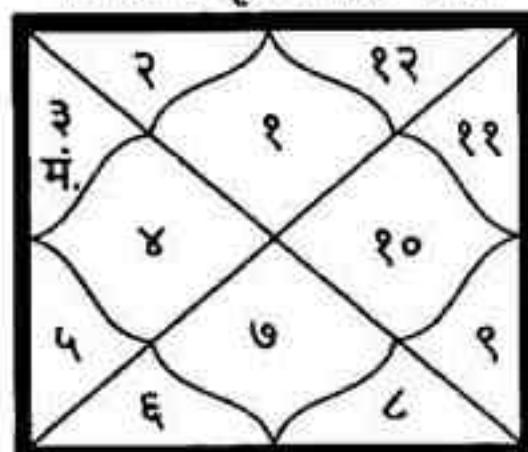
चौथे माता, सुख तथा भूमि के घर में मंगल नीच का होकर अपने मित्र चंद्रमा की राशि पर बैठा हो, तो उसके प्रभाव से जातक को माता के सुख में कमी प्राप्त होती है। इसी प्रकार भूमि, मकान एवं घरेलू सुखों में भी कमजोरी बनी रहेगी। मंगल की चौथी दृष्टि स्त्री भवन पर पड़ती है, अतः स्त्री एवं व्यवसाय के संबंध में भी जातक को क्लेश उठाने पड़ेंगे। परंतु सातवीं उच्चदृष्टि से मंगल पिता एवं राज्य के दशमभाव को भी देखता है, अतः जातक को अपने पिता एवं राज्य द्वारा लाभ प्राप्त होता रहेगा। मंगल की आठवीं शत्रुदृष्टि लाभ स्थान में पड़ रही है, अतः लाभ के क्षेत्र में जातक को विशेष परिश्रम करना पड़ेगा।

मेष लग्न: चतुर्थभाव: मंगल

१२८

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पांचवें त्रिकोण एवं विद्या के स्थान में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर मंगल की स्थिति होने से जातक को विद्या, बुद्धि तथा संतान के पक्ष में कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। मंगल चौथी दृष्टि से पुरातत्त्व एवं आयु भाव को अपनी वृश्चिक राशि में देख रहा है, अतः जातक दीर्घायु प्राप्त करेगा और उसे पुरातत्त्व का लाभ भी होगा। सातवीं मित्रदृष्टि से लाभ स्थान को देख रहा है, अतः कुछ परेशानी के साथ लाभ के योग भी प्राप्त होंगे। साथ ही आठवीं मित्रदृष्टि से बारहवें व्यय भाव को देख रहा है, अतः खर्च अधिक होगा, परंतु बाहरी स्थानों से आजीविका प्राप्त होने के संबंध बने रहेंगे।
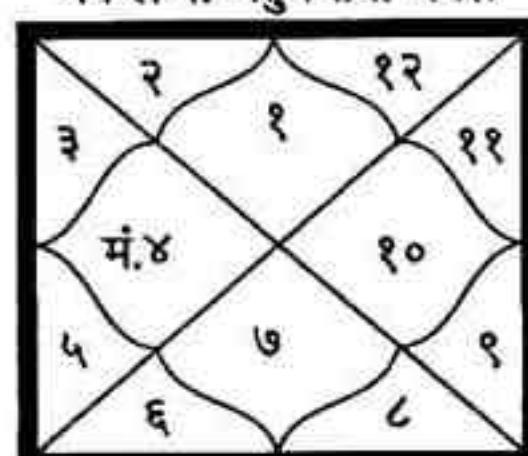
मेष लग्न: पंचमभाव: मंगल

१२९

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
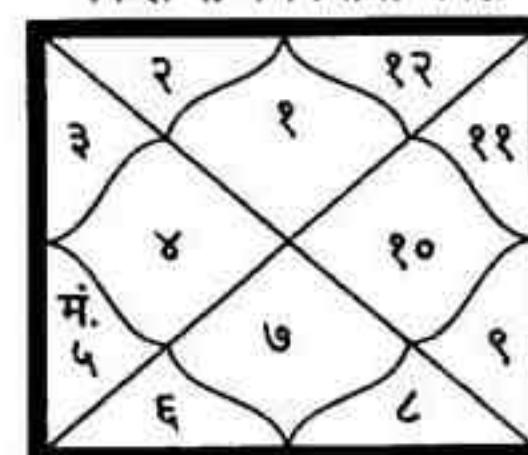
छठे शत्रु एवं रोग स्थान में मंगल अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित हो, तो उसके प्रभाव से जातक अपने शत्रुओं पर प्रभाव बनाए रहेगा तथा बहुत निडर और साहसी बना रहेगा। मंगल की चौथी मित्रदृष्टि भाग्य भवन पर पड़ती है, अत: भाग्य के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयां उत्पन्न होंगी। सातवीं मित्रदृष्टि व्यय भाव पर पड़ने से खर्च अधिक होगा तथा बाहरी स्थानों से लाभ भी प्राप्त होगा। आठवीं दृष्टि अपनी ही मेष राशि पर पड़ने से शरीर स्वस्थ रहेगा तथा स्वाभिमान एवं प्रभाव प्रबल बना रहेगा।

मेष लग्न: षष्ठभाव: मंगल

१३०

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
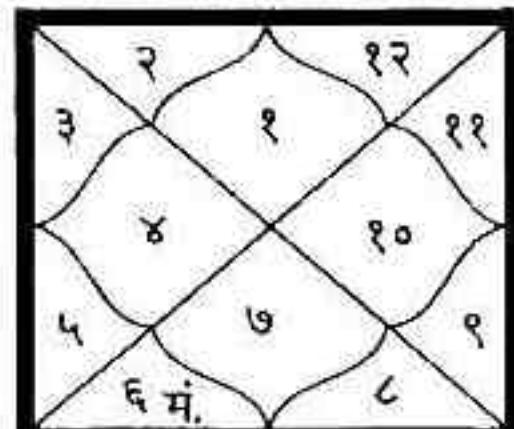
सप्तम केंद्र तथा स्त्री-भवन में मंगल की स्थिति होने से जातक को स्त्री-पक्ष से कुछ कष्ट रहेगा तथा व्यवसाय में भी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। मंगल की चौथी उच्चदृष्टि राज्य भवन पर पड़ती है, अत: पिता एवं राज्य द्वारा उन्नति के साधन तथा यश की प्राप्ति होगी। सातवीं दृष्टि शरीर भवन पर पड़ने से जातक का शरीर स्वस्थ रहेगा और वह प्रभावशाली तथा यशस्वी बना रहेगा। आठवीं दृष्टि धन एवं कुटुंब के द्वितीय भवन पर पड़ती है, अत: धन तथ कुटुंब की वृद्धि के लिए अधिक प्रयत्न करने पर भी थोड़ी ही सफलता प्राप्त होगी।

मेष लग्न: सप्तमभाव: मंगल

१३१

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें मृत्यु भवन में मंगल स्वक्षेत्री होकर बैठा हो, तो जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है, परंतु शरीर स्थान का स्वामी होकर अष्टम भवन में बैठा है, इसलिए शरीर की सुंदरता में कमी रहेगी। मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से लाभ-स्थान को देख रहा है, अत: आमदनी के क्षेत्र में परेशानियों के साथ सफलता मिलेगी। सातवीं दृष्टि से धन एवं कुटुंब स्थान को शत्रु की राशि में देखने से धन तथा कुटुंब के विषय में भी असंतोष बना रहेगा और आठवीं मित्रदृष्टि से पराक्रम स्थान को देख रहा है, अत: पराक्रम अधिक होगा, परंतु अष्टमेश होने के कारण भाई-बहन के सुख में कमी रहेगी।
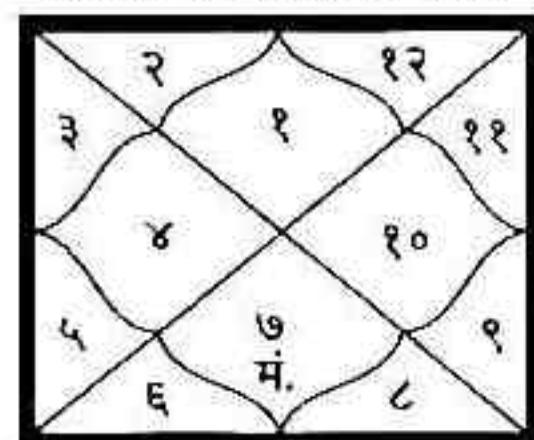
मेष लग्न: अष्टमभाव: मंगल

१३२

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
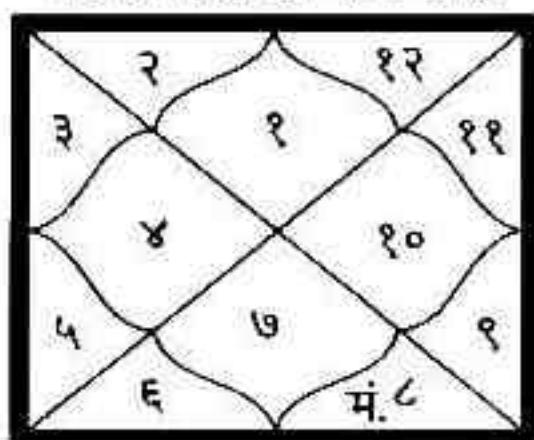
नवें, त्रिकोण एवं भाग्य स्थान में मंगल की स्थिति के प्रभाव से जातक का भाग्य अच्छा बना रहेगा, परंतु अष्टमेश होने के कारण कुछ असंतोष एवं कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ेगा। चौथी मित्रदृष्टि से व्यय भाव को देखने के कारण खर्च की अधिकता रहेगी तथा बाहरी स्थानों से विशेष संबंध बना रहेगा। सातवीं मित्रदृष्टि से पराक्रम के द्वितीयभाव को देख रहा है, अतः पराक्रम अधिक रहेगा परंतु अष्टमेश होने के कारण भाई-बहन के सुख में कमी रहेगी। आठवीं नीचदृष्टि से माता तथा भूमि के चतुर्थभाव को देख रहा है, अतः माता के सुख एवं भूमि, मकान आदि के संबंध से भी कमी बनी रहेगी।

मेष लग्न: नवमभाव: मंगल

१३३
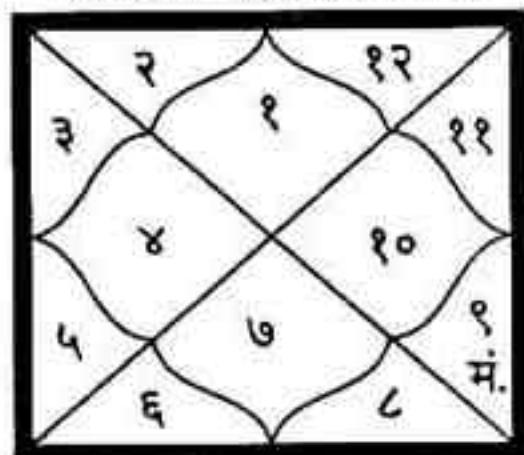
जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केंद्र स्थान तथा राज्य एवं पिता के भवन में मंगल अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर उच्च का होकर बैठा है। इसके प्रभाव से जातक अपने पिता के वैमनस्य रखता हुआ भी उस स्थान तथा व्यवसाय की उन्नति करेगा और उसे राज्य द्वारा भी सम्मान की प्राप्ति होती रहेगी। मंगल चौथी दृष्टि से शरीर स्थान को स्वक्षेत्री में देख रहा है अतः शारीरिक प्रभाव में उन्नति रहेगी। सातवीं नीचदृष्टि से माता तथा भूमि के चौथे स्थान को देख रहा है, अतः माता तथा भूमि के सुख में कमी का योग बनेगा। परंतु आठवीं मित्रदृष्टि से विद्या एवं संतान-स्थान को भी देख रहा है, अतः विद्या, बुद्धि एवं संतान के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त होगी।

मेष लग्न: दशमभाव: मंगल

१३४

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
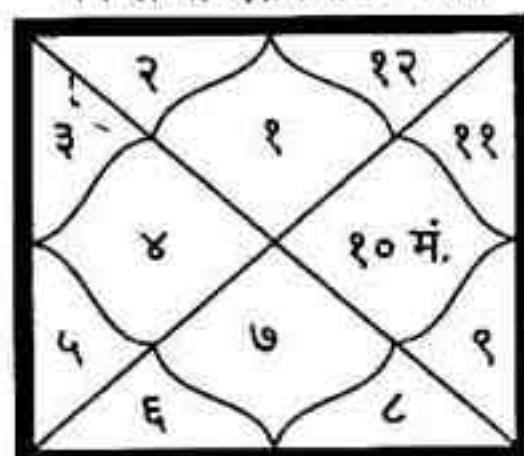
ग्यारहवें लाभ भवन में अपने सममित्र शनि की कुंभ राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को आय के साधनों में सफलता प्राप्त होती रहेगी, परंतु अष्टमेश का दोष होने के कारण आमदनी के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयां भी आती रहेंगी। मंगल चौथी दृष्टि से धन एवं कुटुंब के द्वितीयभाव को अपने शत्रु शुक्र की राशि में देख रहा है, अतः धन तथा कुटुंब से असंतोष बना रहेगा। सातवीं मित्रदृष्टि से विद्या एवं संतान भवन को देख रहा है, अतः संतान तथा विद्या के पथ में भी कुछ कमी बनी रहेगी और आठवीं मित्रदृष्टि से छठे शत्रु भवन को देख रहा है, अतः जातक शत्रु पक्ष में प्रभाव रखने वाला तथा अत्यंत साहसी भी होगा।
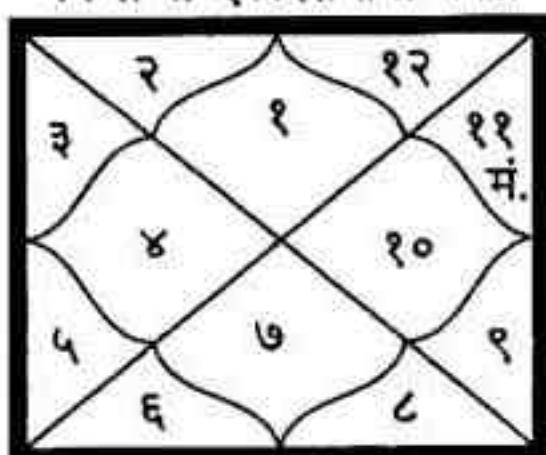
मेष लग्न: एकादशभाव: मंगल
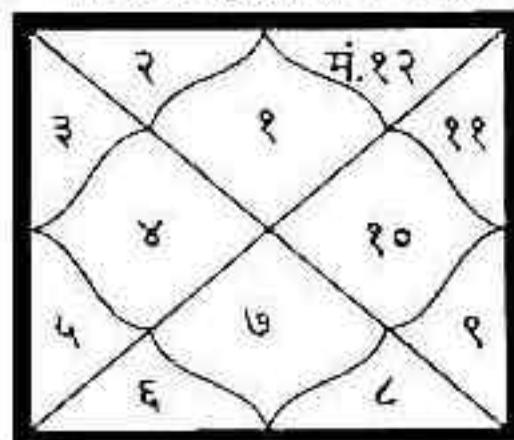
१३५

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक बहुत अधिक खर्च करने वाला, बाहरी स्थानों में भ्रमण करने वाला तथा शारीरिक सौंदर्य में कुछ कमी पाने वाला रहेगा। मंगल की चौथी मित्रदृष्टि पराक्रम भवन पर पड़ती है, अत: जातक पराक्रमी तो होगा, परंतु मंगल के अष्टमेश होने के कारण उसे भाई-बहनों के सुख में कुछ कठिनाइयां भी रहेंगी। सातवीं दृष्टि से शत्रु स्थान को देखने के कारण जातक शत्रु पक्ष में प्रबल बना रहेगा और आठवीं दृष्टि स्त्री भवन पर पड़ने के कारण जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में परेशानियों का सामना करना पड़ेगा तथा विशेष परिश्रम के बाद ही सफलता मिलेगी।

मेष लग्न: द्वादशभाव: मंगल

१३६

'मेष' लग्न में 'बुध' का फल

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
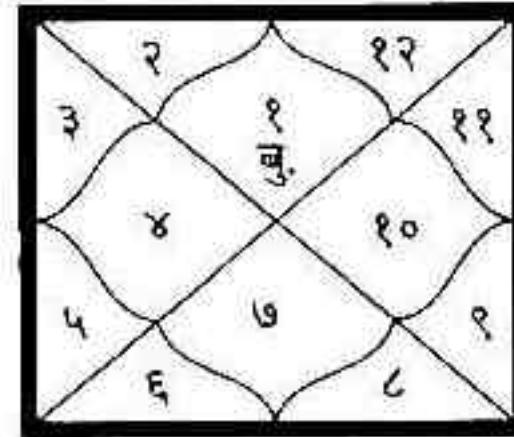
पहले केंद्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक पुरुषार्थी होता है, परंतु षष्ठेश का दोष होने के कारण शरीर रोगपीड़ित भी बना रहता है। भाई-बहनों के सुख-संबंध में भी इसी कारण कुछ कमी आ जाती है। बुध सातवीं मित्रदृष्टि से स्त्री एवं व्यवसाय के भवन को देखता है, अत: जातक को पुरुषार्थी एवं परिश्रम द्वारा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी, परंतु स्त्री-पक्ष में कुछ परेशानियों के साथ सफलता मिलेगी।

मेष लग्न: प्रथमभाव: बुध

१३७

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन भाव में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक के पुरुषार्थ एवं पराक्रम में वृद्धि होती है, परंतु बुध स्वयं शत्रु स्थान का स्वामी है, अत: उसे धन की प्राप्ति के मार्ग में कभी-कभी हानि एवं कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ेगा। द्वितीयभाव बंधन का भी माना गया है, अत: भाई-बहनों के सुख में कुछ कमी रहेगी। बुध सातवीं मित्रदृष्टि से आयु स्थान को देखता है, अत: जातक की आयु में वृद्धि होगी तथा पुरातत्त्व का भी लाभ होगा।

मेष लग्न: द्वितीयभाव: बुध

१३८

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे पराक्रम स्थान में अपनी ही राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक अत्यंत पराक्रमी तथा हिम्मती बना रहेगा। बुध शत्रु स्थान का स्वामी भी है, अत: जातक अपने शत्रुओं पर बड़ा भारी प्रभाव रखेगा, परंतु बुध के शत्रु स्थानाधिपति होने के कारण भाई-बहनों के सुख में कुछ कमी बनी रहेगी। बुध सातवीं मित्रदृष्टि से भाग्य भवन को देख रहा है, अत: जातक अपने पराक्रम द्वारा भाग्य में वृद्धि करेगा तथा धर्म पालन में भी कुछ कमी के साथ अपना मन लगाए रहेगा। बुध को विवेक का स्वामी माना गया है, अत: उसके प्रभाव से जातक विवेकयुक्त तथा परिश्रमी भी बना रहेगा।

मेष लग्न: तृतीयभाव: बुध

१३९

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चुतर्थभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
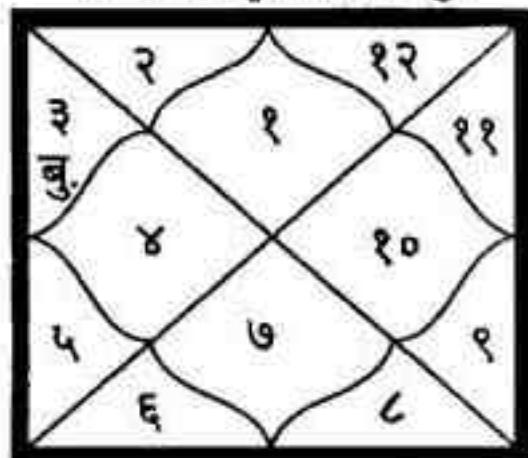
चौथे माता, सुख भूमि के स्थान में बुध अपने शत्रु चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित हो, तो उसके प्रभाव से जातक माता के सुख में कुछ कमी का अनुभव करेगा, इसी प्रकार उसे भूमि, मकान आदि के पक्ष में भी कमियां बनी रहेंगी। बुध सातवीं दृष्टि से अपने मित्र शनि को मकर राशि में राज्य एवं पिता के दशमभाव को देखता है, अत: जातक पिता एवं राज्य के पक्ष में भी सफलता तथा यश प्राप्त करेगा। ऐसे जातक का जीवन कुछ परेशानियों के साथ सफल रहेगा।

मेष लग्न: चतुर्थभाव: बुध

१४०

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पांचवें त्रिकोण एवं विद्या, बुद्धि भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक विद्या, बुद्धि एवं संतान के सुख को प्राप्त करने में विशेष परिश्रम करके सफलता पाएगा, क्योंकि बुध में शत्रु स्थानाधिपति होने का दोष विद्यमान है। बुध सातवीं मित्रदृष्टि से लाभ के ग्यारहवें स्थान को अपने सामान्य मित्र शनि की राशि में देख रहा है, अत: जातक अपनी बुद्धि एवं विवेक के द्वारा भाग्य तथा आमदनी की वृद्धि करेगा साथ ही शत्रु पक्ष में भी सफलता प्राप्त करता रहेगा।
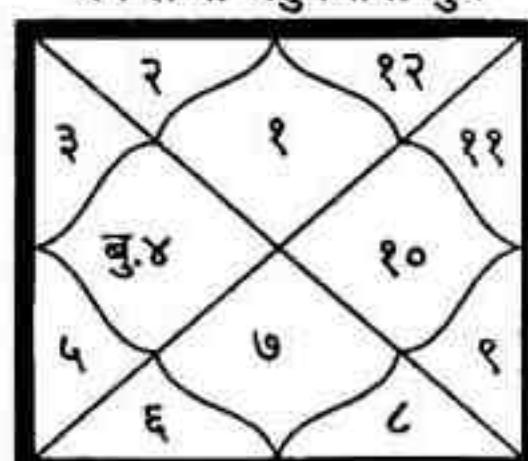
मेष लग्न: पंचमभाव: बुध

१४१

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
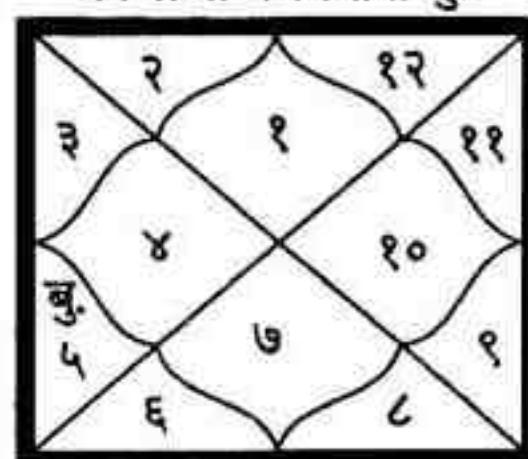
छठे शत्रु एवं रोग भवन में बुध स्वक्षेत्री एवं उच्च का होकर कन्या राशि पर बैठा हो, तो उसके प्रभाव से जातक शत्रुओं पर अपना विशेष प्रभाव रखने वाला होता है, तथा अपने पुरुषार्थ के बल पर बड़े-बड़े काम कर दिखाता है परंतु शत्रु स्थानाधिपति होने के कारण भाई-बहन से कुछ विरोध भी रखता है तथा पराक्रम में कुछ आंतरिक कमी का अनुभव भी होता है। बुध सातवीं नीचदृष्टि से व्यय स्थान को देखता है अत: जातक को खर्च एवं बाह्य स्थानों के संबंध में कुछ परेशानियां उठानी पड़ती हैं, परंतु वह हिम्मत नहीं हारता।

मेष लग्न: षष्ठभाव: बुध

१४२

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
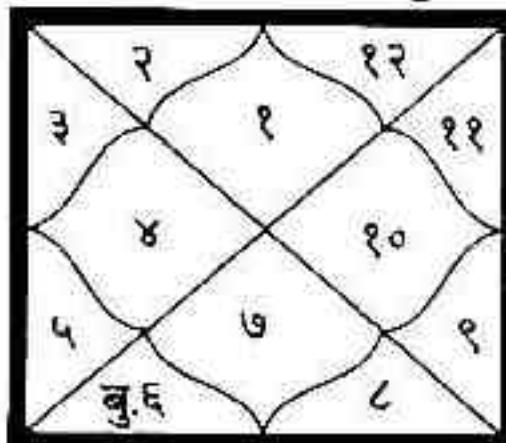
सप्तम केंद्र एवं स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में बुध अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित हो, तो जातक अपने पुरुषार्थ एवं उद्योग द्वारा व्यवसाय में सफलता प्राप्त करता है तथा बुध के शत्रु स्थानाधिपति होने के कारण कुछ कठिनाइयां भी आती रहती हैं। यही स्थिति स्त्री पक्ष के विषय में भी रहती हैं। बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की मेष राशि वाले प्रथम शरीर भाव को भी देखता है, अत: जातक को कुछ शारीरिक कष्टों का सामना भी करना पड़ता है तथा रोगों का शिकार भी बनना पड़ता है। बुध की ऐसी स्थिति के प्रभाव से जातक को भाई-बहन के द्वारा सहयोग भी मिलता है तथा विवेक-बुद्धि प्रबल बनी रहती है।

मेष लग्न: सप्तमभाव: बुध

१४३

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें मृत्यु एवं पुरातत्त्व के भाव में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को पुरुषार्थ, आयु एवं पुरातत्त्व के संबंध में कुछ कठिनाइयों तथा परेशानियों का सामना करना पड़ता है। उत्साह में कमी आ जाती है तथा शत्रु-पक्ष से हानि पहुंचने की संभावना भी रहती है। बुध सातवीं मित्रदृष्टि से धन कुटुंब के द्वितीयभाव को अपने मित्र शुक्र की वृष राशि में देखता है, अत: जातक को अर्थोपार्जन के लिए विशेष परिश्रम एवं दौड़-धूप करनी पड़ती है।
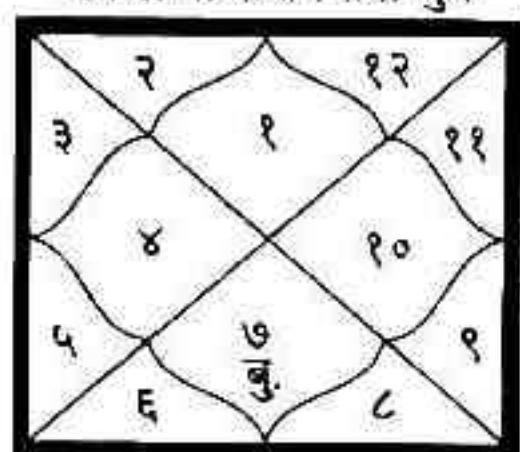
मेष लग्न: अष्टमभाव: बुध

१४४

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: नवमभाव: बुध

१४५
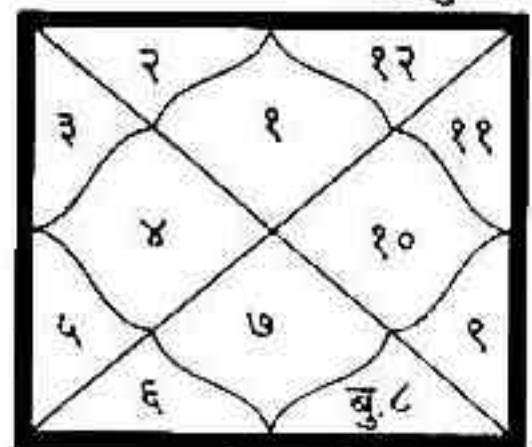
नवें भाग्य भवन में बुध अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित हो, तो उसके प्रभाव से जातक को भाग्य पक्ष में कुछ परेशानियों का अनुभव करना पड़ता है, परंतु शत्रु-पक्ष के संबंध से उसे भाग्य संबंधी सफलताएं प्राप्त होती रहती हैं। बुध सातवीं दृष्टि से द्वितीय पराक्रम स्थान को अपनी ही राशि में देखता है, इस कारण जातक का पराक्रम बल बना रहता है और उसे अपने विवेक, पराक्रम एवं भाई-बहनों द्वारा लाभ प्राप्त होता है। संक्षेप में, ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक कुछ झंझटों के साथ उन्नति करता है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
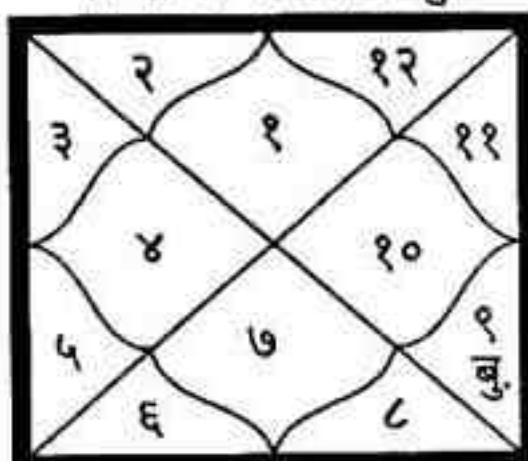
दसवें केंद्र एवं राज्य तथा पिता के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर बैठे हुए बुध के प्रभाव से जातक अपने पुरुषार्थ एवं पराक्रम द्वारा अत्यधिक उन्नति करता है, परंतु बुध के शत्रु स्थानाधिपति होने के कारण पिता के साथ कुछ वैमनस्य भी बना रहता है। राज्य द्वारा मान-प्रतिष्ठा तथा विवेक द्वारा शत्रु-पक्ष में सफलता प्राप्त होती है। बुध अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से चंद्रमा की कर्क राशि में चौथे माता एवं भूमि के स्थान को देखता है, अत: जातक को माता, भूमि, मकान आदि के सुख में कुछ कमी रहती है।

मेष लग्न: दशमभाव: बुध

१४६

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
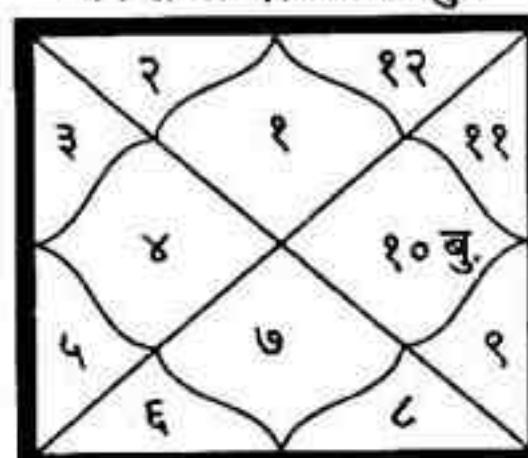
ग्यारहवें लाभ स्थान में अपने मित्र शनि की कुंभ राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक अपने परिश्रम तथा विवेक द्वारा आमदनी के क्षेत्र में अत्यधिक सफलता प्राप्त करता है तथा भाई-बहन का लाभ भी पाता है, परंतु बुध के शत्रु स्थानाधिपति होने के कारण मार्ग में कुछ झंझट भी बने रहते हैं। बुध सातवीं मित्रदृष्टि से विद्या, बुद्धि तथा संतान के पंचमभाव को अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि में भी देखता है। उसके प्रभाव से जातक को विद्या के क्षेत्र में सफलता मिलती है तथा कुछ कठिनाइयों के साथ संतानपक्ष में भी सुख प्राप्त होता है।

मेष लग्न: एकादशभाव: बुध

१४७

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
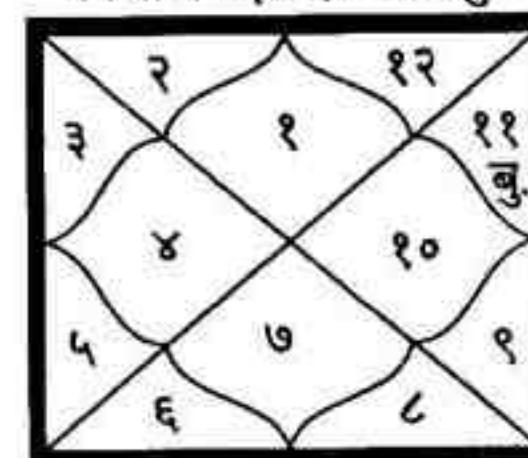
बारहवें व्यय स्थान में अपने सामान्य मित्र गुरु की राशि में बैठे हुए नीच के बुध के प्रभाव से जातक को खर्च के मामलों में तथा बाहरी संबंधों में परेशानियों का सामना करना पड़ता है तथा भाई बहन के सुख में भी कमी बनी रहती है। बुध के शत्रु स्थानाधिपति होने के कारण सभी कार्यों में कठिनाइयां भी आती रहती है। बुध सातवीं मित्रदृष्टि से शत्रु स्थान को अपनी कन्या राशि में देखता है, इस लिए जातक अपने विवेक के द्वारा शत्रुपक्ष पर प्रभाव स्थापित करवाने में सफल होता है और वह गुप्त युक्ति वाला एवं धैर्यवान भी होता है।

मेष लग्नः द्वादशभावः बुध

१४८

'मेष' लग्न में 'गुरु' का फल

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
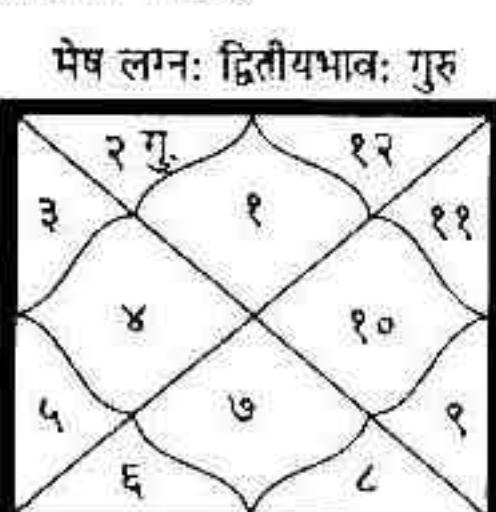
प्रथम केंद्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र मंगल की राशि पर बैठे हुए गुरु के प्रभाव से जातक अत्यधिक यश, उन्नति एवं बाहरी स्थानों से प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। गुरु पांचवीं मित्रदृष्टि से संतान एवं विद्या स्थान को देखता है, इसलिए जातक बुद्धिमान, विद्वान तथा संततिवान भी होता है। सातवीं दृष्टि से शत्रु की तुला राशि में स्त्री एवं व्यवसाय के स्थान को देखता है। अतः स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयां उपस्थित होती हैं। नवीं दृष्टि से भाग्य एवं धर्म स्थान को स्वक्षेत्र में देखता है। अतः भाग्य एवं धर्म की वृद्धि होती है। संक्षेप में, ऐसा जातक यशस्वी, धनी, सुखी, धर्मात्मा, विद्वान तथा बुद्धिमान होता है।

मेष लग्नः प्रथमभावः गुरु

१४९

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

द्वितीय धन कुटुंब के भाव में शत्रु शुक्र की वृष राशि पर बैठे हुए गुरु के प्रभाव से जातक बाहरी स्थानों के संपर्क से धन एवं भाग्य की वृद्धि करता है, परंतु कभी-कभी हानि भी उठाता है। गुरु की पांचवीं दृष्टि शत्रु स्थान पर पड़ती है, अतः शत्रुपक्ष में अपनी होशियारी से सफलता पाता है। सातवीं मित्रदृष्टि आयु एवं पुरातत्त्व भाव में पड़ने से आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। नवीं नीचदृष्टि पिता एवं राज्य स्थान में पड़ने से पिता तथा राज्य के पक्ष में परेशानी एवं त्रुटि बनी रहती है तथा उन्नति के मार्ग में कठिनाइयां आती हैं।

मेष लग्नः द्वितीयभावः गुरु

१५०

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे पराक्रम भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक भाई-बहनों का सुख तथा पराक्रम की शक्ति प्राप्त करता है। गुरु पांचवीं दृष्टि से स्त्री तथा व्यवसाय के भाव को देखता है, अत: स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ परेशानियां बनी रहेंगी। सातवीं दृष्टि से भाग्य स्थान को स्वक्षेत्र में देख रहा है, अत: भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होगी और नवीं शत्रुदृष्टि से जन्म स्थान को देख रहा है, अत: आमदनी के मार्ग में कुछ कठिनाइयां आती रहेंगी। संक्षेप में, ऐसा जातक कठिनाइयों के साथ अपने भाग्य, धर्म तथा व्यवसाय की वृद्धि करेगा तथा कुछ परेशानियों के साथ स्त्री तथा भाई-बहनों का सुख प्राप्त करेगा।

मेष लग्न: तृतीयभाव: गुरु

१५१

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
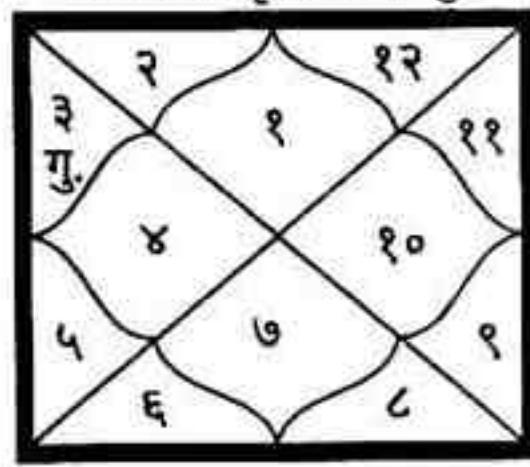
चौथे केंद्र तथा माता एवं भूमि के भवन में मित्र चंद्रमा की राशि पर उच्च के गुरु के प्रभाव से जातक को माता, भूमि, मकान आदि का भरपूर सुख प्राप्त होगा। गुरु पांचवीं दृष्टि से आय एवं पुरातत्त्व भाव को देखता है, अत: आयु एवं पुरातत्त्व का भी लाभ होगा। सातवीं नीचदृष्टि से पिता एवं राज्य भवन को देखता है, अत: पिता के सुख में कमी एवं राज्य के क्षेत्र में असंतोष बना रहेगा। नवीं दृष्टि से व्यय स्थान को अपनी राशि में देखता है, इसलिए खर्च अधिक रहेगा तथा बाहरी स्थानों से अच्छा संबंध बनेगा। संक्षेप में, ऐसा जातक भाग्यवान, धर्मात्मा तथा संपत्तिवान होता है।

मेष लग्न: चतुर्थभाव: गुरु

१५२

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पांचवें त्रिकोण एवं संतान तथा विद्या के भाव में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक विद्वान तथा संततिवान होता है। गुरु पांचवीं दृष्टि से शरीर स्थान को देखता है, अत: दृष्टि से भाग्य भवन को स्वराशि में देखता है, अत: बुद्धि के योग से जातक के भाग्य की वृद्धि होती रहेगी। सातवीं शत्रुदृष्टि से लाभ स्थान को देखता है, अत: आय के साधनों में कभी-कभी अड़चनें पड़ेंगी और नवीं मित्रदृष्टि से शरीर स्थान को देखता है, अत: शरीर सुंदर तथा स्वस्थ होगा। संक्षेप में ऐसा जातक धनी, बुद्धिमान, धर्मात्मा तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है।
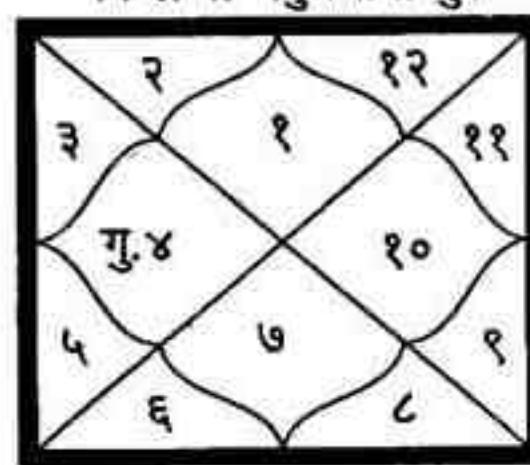
मेष लग्न: पंचमभाव: गुरु

१५३

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: षष्ठभाव: गुरु

१५४
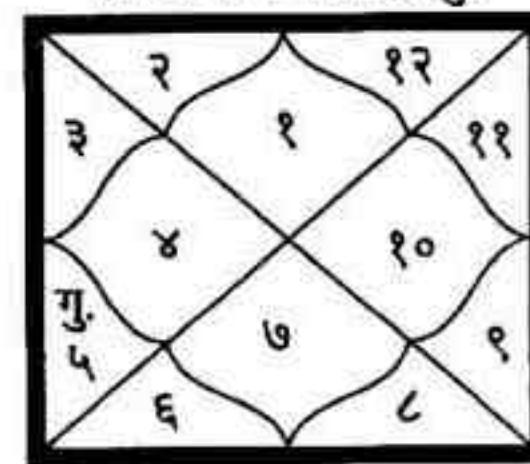
छठे शत्रु स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति के मार्ग में रुकावटें तो आती हैं, परंतु भाग्य की वृद्धि भी होती है और शत्रुपक्ष में भी सफलता प्राप्त होती है। गुरु पांचवीं नीचदृष्टि से पिता एवं राज्य भवन को देखता है, अतः पिता एवं राज्य के संबंध में त्रुटि बनी रहेगी। सातवीं दृष्टि से व्यय भाव को मित्रक्षेत्र में देखता है, अतः खर्च की कुछ परेशानी के साथ ही बाहरी संबंध में सफलता भी प्राप्त होती रहेगी। नवीं दृष्टि से धन एवं कुटुंब के द्वितीय स्थान को देखता है, अतः कुटुंब से मतभेद रहेगा। भाग्येश के छठे होने के कारण दूसरों के सहयोग से भाग्य की उन्नति होगी।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: सप्तमभाव: गुरु

१५५
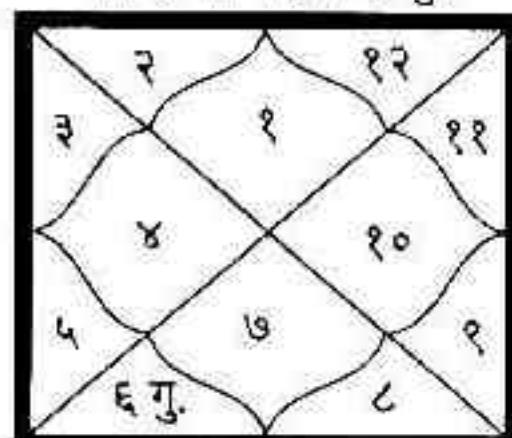
सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु शुक्र की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयां प्राप्त होंगी। यहां से गुरु पांचवीं शत्रुदृष्टि से लाभ स्थान को देखता है, अतः आमदनी के मार्ग में सीमित सफलताएं भी मिलेंगी। सातवीं मित्रदृष्टि से शरीर स्थान को देखता है, अतः शरीर सुंदर तथा प्रभावशाली रहेगा और लोग जातक को भाग्यवान समझते रहेंगे। नवीं मित्रदृष्टि से पराक्रम एवं भाई के स्थान को देखता है, अतः भाई-बहन एवं पराक्रम का पक्ष अच्छा रहेगा। संक्षेप में, ऐसा जातक कुछ कठिनाइयों के साथ भाग्योन्नति एवं सफलता प्राप्त करता है तथा स्वरूपवान होता है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें मृत्यु एवं पुरातत्त्व स्थान में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर बैठे हुए गुरु के प्रभाव से उसके व्ययेश होने के कारण जातक की भाग्योन्नति में बहुत बाधाएं आती हैं तथा अपयश प्राप्त होता है, परंतु उसे आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। इस स्थान से गुरु की पांचवीं दृष्टि व्ययभाव में पड़ती है, अतः खर्च अधिक होगा एवं बाहरी स्थानों से विशेष संबंध बना रहेगा। सातवीं दृष्टि धन एवं कुटुंब के द्वितीय स्थान में पड़ने से धन एवं कुटुंब की सामान्य वृद्धि होगी तथा नवीं उच्चदृष्टि सीधे माता और भूमि के स्थान में पड़ने से जातक को माता, भूमि तथा मकान का सुख भी प्राप्त होगा।
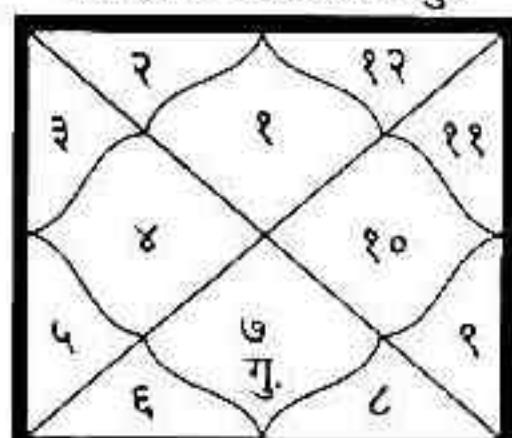
मेष लग्न: अष्टमभाव: गुरु

१५६

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
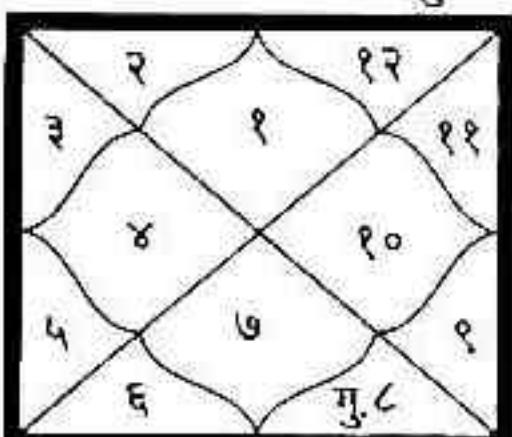
नवें त्रिकोण तथा भाग्य एवं धर्म के स्थान में गुरु के स्वक्षेत्री होने के प्रभाव से जातक अत्यंत भाग्यशाली तथा धर्मात्मा होता है। यहां से गुरु की पांचवीं दृष्टि शरीर स्थान पर मंगल की मेष राशि पर पड़ती है। अत: जातक का शरीर स्वस्थ एवं सुंदर होगा। सातवीं मित्रदृष्टि भाई एवं पराक्रम के तृतीयभाव में पड़ने से जातक भाई-बहनों का सुख पाएगा तथा पराक्रमी होगा और नवीं मित्रदृष्टि विद्या एवं संतान के पंचमभाव में पड़ने से विद्या, बुद्धि तथा संतान के पक्ष में भी विशेष सफलता प्राप्त करेगा। संक्षेप में, ऐसा जातक भाग्यवान, धर्मात्मा, यशस्वी, संपत्तिवान तथा सुंदर होता है।

मेष लग्न: नवमभाव: गुरु

१५७

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
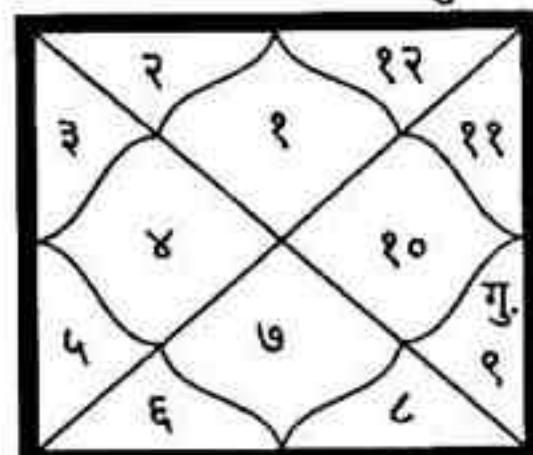
दसवें केंद्र, राज्य तथा पिता के स्थान में अपने शत्रु शनि की राशि पर बैठे हुए व्ययेश तथा नीच के गुरु के प्रभाव से जातक को पिता तथा राज्य के पक्ष में हानि एवं व्यवसाय के पक्ष में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, अत: उसके भाग्य की विशेष उन्नति नहीं हो पाती। गुरु पांचवीं दृष्टि से धनभाव को देखता है, अत: कुटुंब तथा धन का अल्प लाभ होता है। सातवीं उच्चदृष्टि से माता तथा सुख के चतुर्थभाव को देखता है, अत: माता और भूमि का सुख मिलता है एवं नवीं मित्रदृष्टि से शत्रु स्थान को देखता है, अत: शत्रु पक्ष में जातक अपने भाग्य की शक्ति द्वारा सफलता प्राप्त करता है।

मेष लग्न: दशमभाव: गुरु

१५८

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने शत्रु शनि की कुंभ राशि पर बैठे हुए व्ययेश गुरु के प्रभाव से जातक को भाग्य की शक्ति से धन का लाभ तो होता है, परंतु उसमें कुछ कमी बनी रहती है। इस स्थान से गुरु पांचवीं दृष्टि से पराक्रम भवन को देखता है, अत: भाई-बहन एवं पराक्रम के पक्ष में भी कुछ कमी के साथ सफलता मिलती है। सातवीं मित्रदृष्टि से विद्या एवं पंचमभाव को देखता है, अत: विद्या, बुद्धि एवं संतान पक्ष का सहयोग प्राप्त होगा तथा नवीं दृष्टि से स्त्री एवं व्यवसाय के सप्तमभाव को अपने शत्रु की तुला राशि में देखता है, अत: स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष में भी कठिनाइयों के साथ सफलता मिलेगी।

मेष लग्न: एकादशभाव: गुरु

१५९
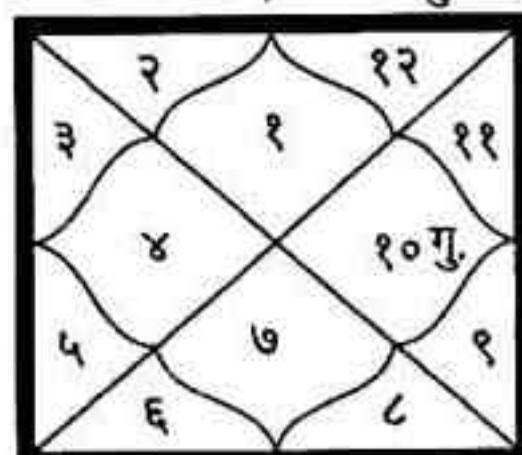
जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
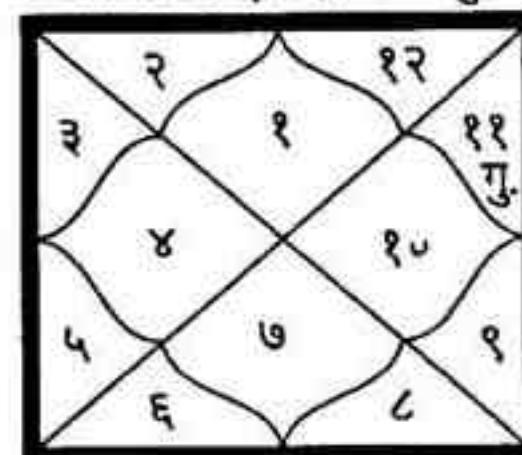
बारहवें व्यय स्थान में स्वराशि गत गुरु के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों में उसे लाभ भी प्राप्त होता है। इस स्थान से गुरु पांचवीं दृष्टि से चतुर्थभाव को देखता है, अतः माता, मकान एवं भूमि का सुख बना रहता है। सातवीं मित्रदृष्टि से शत्रु स्थान को देखता है, अतः शत्रु पक्ष में अपनी समझदारी से प्रभाव प्राप्त होता है एवं नवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखता है, अतः आयु एवं पुरातत्त्व के संबंध में भी जातक को सफलता मिलती है, परंतु बृहस्पति के व्ययेश होने के कारण इन सभी क्षेत्रों में सफलता पाने के लिए जातक को कुछ कठिनाइयों का भी सामना करना पड़ता है।

मेष लग्नः द्वादशभावः गुरु

२ गु.१२
३ १ ११
४ १०
५ ७ ९
६ ८

१६०

'मेष' लग्न में 'शुक्र' का फल

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
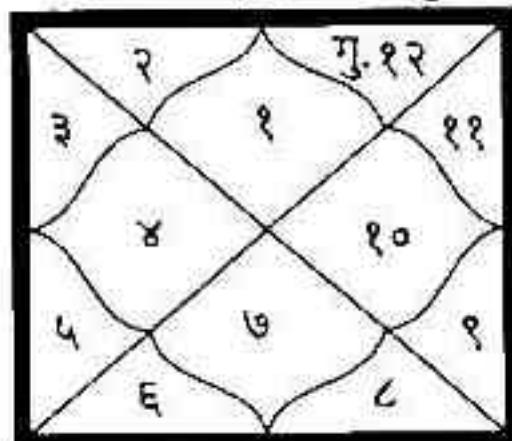
पहले केंद्र तथा शरीर स्थान में मेष का शुक्र, अपने शत्रु मंगल की राशि पर स्थित हो, तो उसके प्रभाव से जातक को सुंदर शरीर, सम्मान, सफलता एवं चातुर्य्य आदि का लाभ होता है। इस स्थान से शुक्र सातवीं दृष्टि से स्त्री एवं व्यवसाय भवन को स्वक्षेत्र में देखता है, अतः जातक को स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त होती है, परंतु शुक्र के धनेश होने के कारण जातक को गृहस्थी तथा व्यवसाय कार्यों के संचालन में कुछ कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ता है। संक्षेप में, ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक सुखी, सुंदर, यशस्वी एवं भाग्यशाली होता है।

मेष लग्नः प्रथमभावः शुक्र

१६१

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन भवन में स्वराशि स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक धनवान, कुटुंबवान तथा सौभाग्यवान होता है, परंतु द्वितीयभाव बंधन का भी होता है, अतः जातक को स्त्री एवं व्यवसाय से संबंधित कार्यों में कुछ कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ता है। इस स्थान से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपने सामान्य शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि को देखता है, अतः जातक को आयु एवं पुरातत्त्व के संबंध में भी अपनी योग्यता के कारण सफलता एवं लाभ की प्राप्ति होती है। संक्षेप में, ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक सुखी तथा ऐशो-आराम का जीवन व्यतीत करता है।

मेष लग्नः द्वितीयभावः शुक्र

१६२
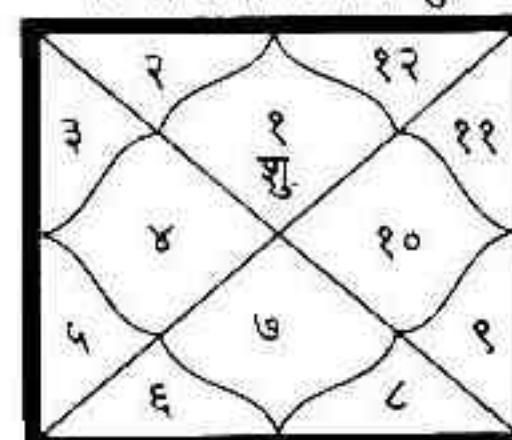
जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
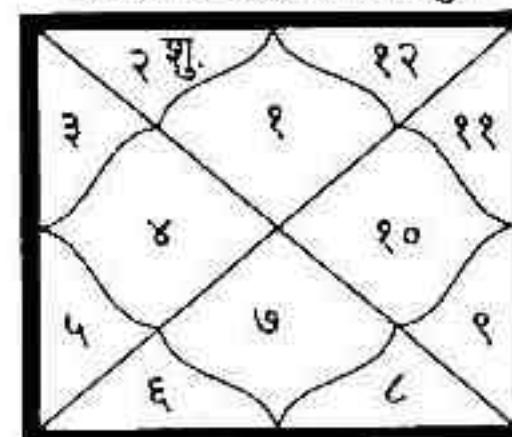
तृतीय पराक्रम स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक के पराक्रम एवं चातुर्य्य में वृद्धि होती है, जिसके कारण उसे कुटुंब तथा धन का श्रेष्ठ लाभ होता है, परंतु स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख होते हुए भी कुछ कठिनाइयां आती रहती हैं। इस स्थान से शुक्र सातवीं दृष्टि से भाग्य तथा धर्म के नवेंभाव को देखता है, अत: जातक भाग्यवान होने के साथ ही धर्म का पालन भी करता है। संक्षेप में, ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक धनी, धर्मात्मा तथा भाग्यशाली होता है और उसे कुटुंब, स्त्री तथा व्यावसायिक क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती रहती है।

मेष लग्न: तृतीयभाव: शुक्र

१६३

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
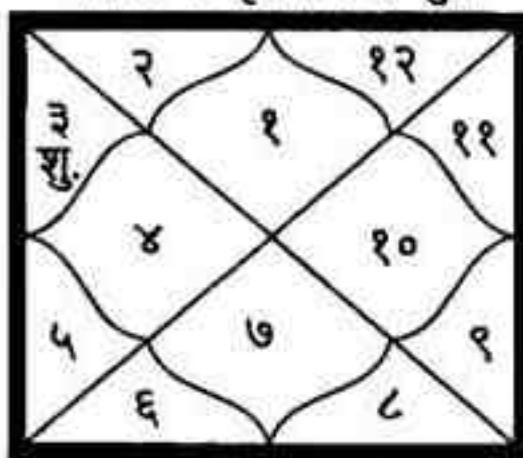
चौथे केंद्र माता तथा सुख के चतुर्थभाव में अपने शत्रु चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को धन एवं कुटुंब का सुख प्राप्त होता है, परंतु माता एवं भूमि के सुख में कुछ कमी बनी रहती है। इसी प्रकार स्त्री के संबंध में कुछ कमी के साथ सुख मिलता है। इस स्थान से शुक्र सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखता है, अत: जातक को राज्य एवं पिता के क्षेत्र में प्रतिष्ठा एवं उन्नति की प्राप्ति होती है। साथ ही पैतृक-धन एवं व्यावसायिक सफलता भी मिलती है।

मेष लग्न: चतुर्थभाव: शुक्र

१६४

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पांचवें त्रिकोण, विद्या एवं संतान के भाव में अपने शत्रु सूर्य की राशि में स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को विद्या एवं संतान के पक्ष में सफलता प्राप्त होती है, परंतु यह स्थान बंधन का भी है, अत: कुछ कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ता है। इस स्थान से शुक्र सातवीं मित्रदृष्टि से लाभ स्थान को अपने मित्र शनि की कुंभ राशि में देख रहा है, अत: जातक को आमदनी का भी श्रेष्ठ योग प्राप्त होता है। संक्षेप में, ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक भाग्यशाली, विद्यावान, संतानवान तथा लाभ उठाने वाला होता है, परंतु संतान एवं स्त्री के पक्ष में सामान्य कठिनाइयां आती रहती हैं।
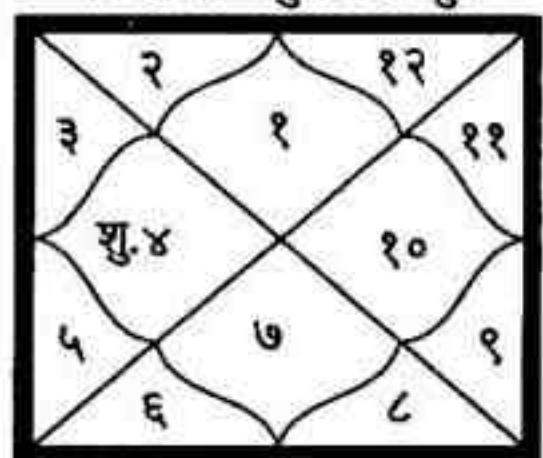
मेष लग्न: पंचमभाव: शुक्र

१६५

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: षष्ठभाव: शुक्र

१६६
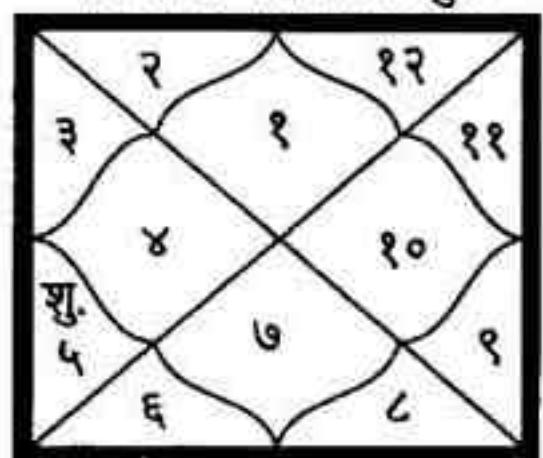
छठे शत्रु स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित नीच के शुक्र के प्रभाव से जातक को शत्रु पक्ष में गुप्त चतुराई से काम लेना पड़ता है एवं कठिनाइयां उपस्थित होती रहती हैं। इस स्थान से शुक्र सातवीं दृष्टि से व्ययभाव को अपने शत्रु गुरु की मीन राशि में देखता है, अतः खर्च की अधिकता बनी रहती है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से शक्ति प्राप्त होती है। संक्षेप में, ऐसी ग्रह स्थिति वाले जातक को अपनी स्त्री, कुटुंब तथा व्यवसाय के संबंध में परेशानियों का सामना करना पड़ता है तथा प्रत्येक क्षेत्र में बुद्धि, बल का अधिक प्रयोग करना होता है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: सप्तमभाव: शुक्र

१६७

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भाव में स्वक्षेत्री शुक्र के प्रभाव से जातक स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त करता है। इस स्थान से शुक्र की सातवीं दृष्टि अपने सामान्य शत्रु मंगल की मेष राशि वाले शरीर स्थान पर पड़ती है, अतः जातक को शारीरिक सौंदर्य, मान-प्रतिष्ठा तथा कार्य-कुशलता की प्रगति भी होती है। संक्षेप में, ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक होशियार, धनवान, सुंदर, प्रतिष्ठित, सुखी तथा कौटुंबिक शक्ति से संपन्न होता है, परंतु धन स्थान का स्वामी बंधन का कार्य भी करता है, अतः उसे व्यवसाय एवं स्त्री के पक्ष में कुछ कठिनाइयां भी उठानी पड़ेंगी।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: अष्टमभाव: शुक्र

१६८

आठवें मृत्यु तथा आयु भवन में अपने सामान्य शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में अत्यधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। साथ ही धन की भी कमी बनी रहती है, परंतु उसे पुरातत्त्व एवं आयु की शक्ति विशेष रूप से प्राप्त होती है। इस स्थान से शुक्र अपनी सातवीं दृष्टि से धन एवं कुटुंब के द्वितीयभाव को अपनी राशि में देखता है, अतः कठिन परिश्रम के साथ जातक के धन एवं कुटुंब की वृद्धि होती है। ऐसा जातक अपने परिश्रम एवं चतुराई से प्रतिष्ठा भी प्राप्त करता है।
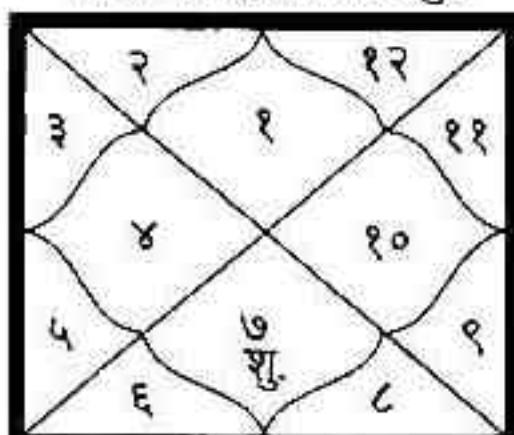
जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
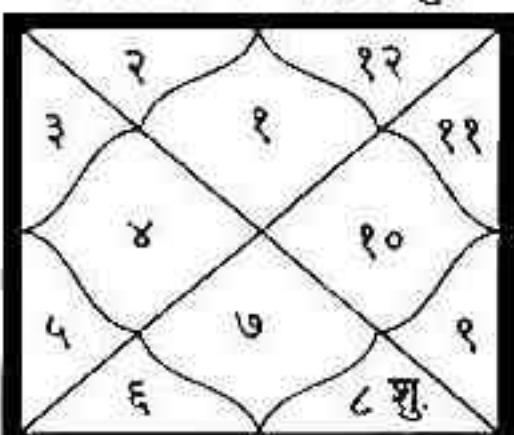
नवें त्रिकोण तथा भाग्य भवन में अपने सामान्य शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक बहुत भाग्यवान तथा चतुर होता है और उसे गृहस्थी, स्त्री तथा कुटुंब का भी श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। इस स्थान से शुक्र सातवीं मित्रदृष्टि से तीसरे पराक्रम एवं सहोदर स्थान को अपने मित्र बुध की मिथुन राशि में देखता है, अत: जातक को पराक्रम एवं भाई-बहन के श्रेष्ठ सुख का भी लाभ होता है। संक्षेप में, ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक सुखी, धनी, धर्मात्मा, पराक्रमी तथा भाई-बहन के सुख से संपन्न होता है।

मेष लग्न: नवमभाव: शुक्र

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'शु की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
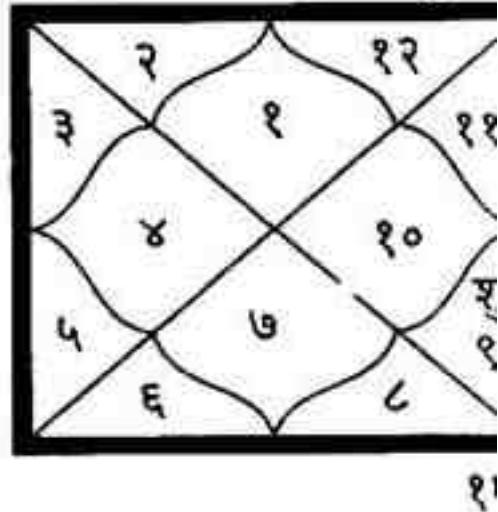
दसवें केतु तथा पिता एवं राज्य स्थान में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को अपने पिता एवं राज्य के संबंध से विशेष लाभ प्राप्त होता है। इस स्थान से शुक्र की सातवीं दृष्टि अपने शत्रु चंद्रमा की कर्क राशि में चौथे माता एवं सुख के भवन में पड़ती है, अत: जातक को माता एवं भूमि, मकान आदि का भी सुख प्राप्त होगा। संक्षेप में ऐसी स्थिति वाला धनी, सुखी, भू-संपत्तिवान, यशस्वी, माता, पिता एवं स्त्री का सुख प्राप्त करने वाला अत्यंत चतुर होता है।

मेष लग्न: दशमभाव: शुक्र

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
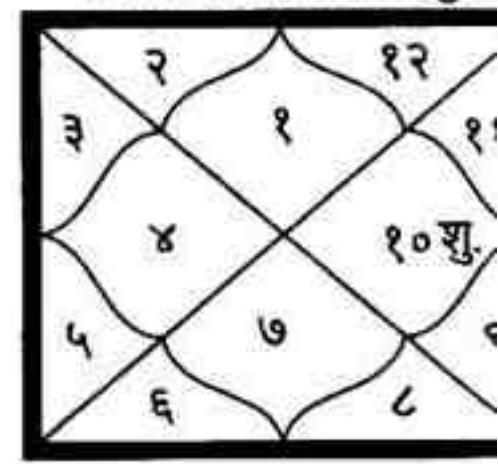
ग्यारहवें लाभ स्थान में अपने मित्र शनि की कुंभ राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक बड़ी चतुराई के साथ धन का सुख लाभ प्राप्त करता है और धनी होता है। उसे अपनी स्त्री एवं व्यवसाय से भी सुख तथा लाभ की प्राप्ति होती है। इस स्थान से शुक्र अपनी सातवीं दृष्टि से शत्रु सूर्य की सिंह राशि में पंचम भवन में देखता है, अत: जातक को विद्या, बुद्धि तथा संतान के क्षेत्र में बड़ी बुद्धिमानी एवं चतुराई के साथ सफलता मिलती है। संक्षेप में, ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक धनी, सुखी, बुद्धिमान चतुर तथा स्वार्थी होता है।

मेष लग्न: एकादशभाव: शुक्र

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'शु की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
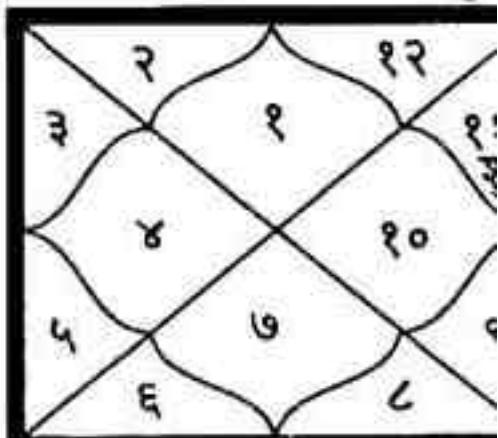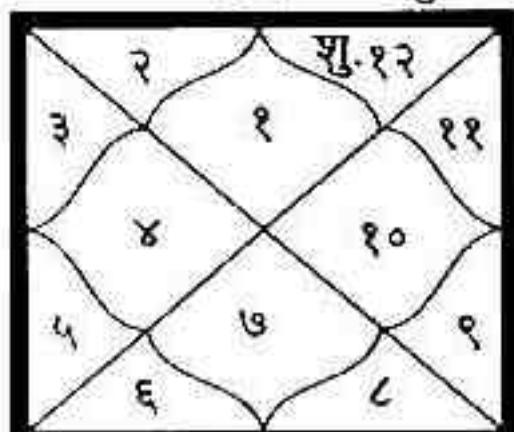
बारहवें व्यय स्थान में अपने सामान्य शत्रु गुरु की मीन राशि पर उच्च के शुक्र के प्रभाव से जातक बहुत अधिक खर्चीला होता है तथा बाहरी संबंधों द्वारा बड़ी चतुराई से धन तथा व्यवसाय की शक्ति प्राप्त करता है। इस स्थान से शुक्र सातवीं नीचदृष्टि से अपने मित्र बुध की कन्या राशि वाले छठे शत्रु-भवन को देखता है, अतः शत्रु पक्ष में भेद तथा गुप्त युक्ति द्वारा कुछ कमजोरी के साथ काम निकालने की शक्ति प्राप्त होती है। संक्षेप में, ऐसा जातक सामान्य तथा संघर्षपूर्ण जीवन व्यतीत करता है।

मेष लग्न: द्वादशभाव: शुक्र

१७२

'मेष' लग्न में 'शनि' का फल
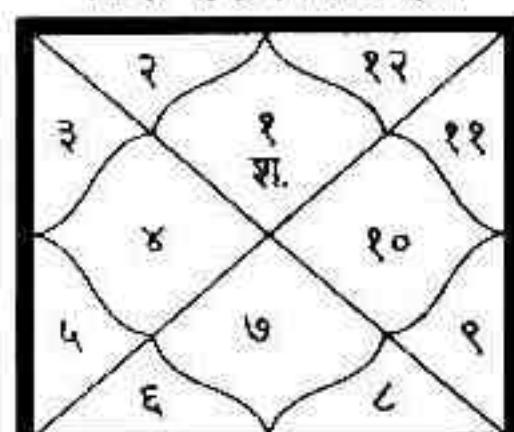
जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केंद्र तथा शरीर स्थान में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौंदर्य, मान-प्रतिष्ठा तथा आमदनी के क्षेत्र में कुछ कमी बनी रहती है, साथ ही राज्य के क्षेत्र में भी परेशानियां उत्पन्न होती रहती हैं। इस स्थान से शनि तीसरी मित्रदृष्टि से पराक्रम भवन को देखता है, अतः जातक को पराक्रम एवं भाई-बहिनों के क्षेत्र में सफलता एवं सामर्थ्य प्राप्त होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से स्त्री तथा व्यवसाय भवन को देखने के कारण जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है। दसवीं दृष्टि से अपनी राशि में पिता तथा राज्य भवन को देखने के कारण जातक को पिता तथा प्रतिष्ठा के क्षेत्र में थोड़ी सफलता मिलती है।

मेष लग्न: प्रथमभाव: शनि

१७३

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
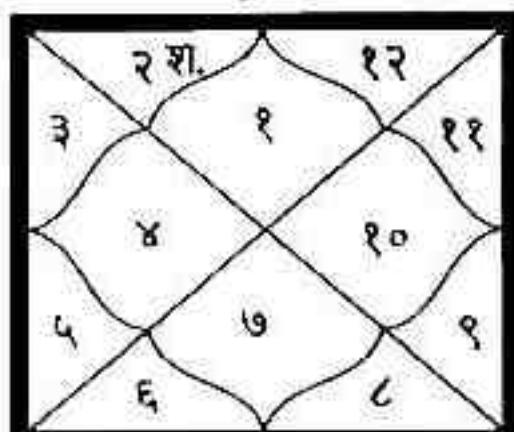
दूसरे धन तथा कुटुंब भवन में अपने मित्र शुक्र की वृष राशि में स्थित शनि के प्रभाव से जातक को आर्थिक क्षेत्र में सफलता मिलती है तथा धन कुटुंब की वृद्धि होती है। इस स्थान से शुक्र तीसरी शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखता है, अतः माता एवं भू-संपत्ति के क्षेत्रों में कुछ परेशानी आती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण जातक को पुरातत्त्व का लाभ तो होता है, परंतु दिनचर्या में अशांति बनी रहती है। दसवीं दृष्टि से स्वराशि में लाभ भवन को देखने के कारण जातक को अच्छी आमदनी होती है। संक्षेप में, ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक धनी तथा ऐश्वर्यशाली होता है।

मेष लग्न: द्वितीयभाव: शनि

१७४

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'शनि की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्नः तृतीयभावः शनि

श. ३ २ १ १२ ११ ४ १० ५ ७ ९ ६ ८

१७

तीसरे पराक्रम भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहनों का यथेष्ठ सुख प्राप्त होता है। साथ ही पिता एवं राज्य के क्षेत्र से भी सहयोग मिलता है। इस स्थान से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से पंचमभाव को देखता है, अतः विद्या तथा संतान के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है सातवीं शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण जातक को भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से व्यय स्थान को देखने के कारण खर्च अधिक होता है तथा बाहरी संबंधों से असंतोष रहता है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'शनि की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्नः चतुर्थभावः शनि

१७६

चौथे केंद्र, माता, सुख तथा भूमि भवन में अपने शत्रु चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को माता तथा भूमि के संबंध में कुछ असंतोष युक्त सफलता प्राप्त होती है, परंतु सुख के साधनों में वृद्धि होती रहती है। इस स्थान से शनि तीसरी दृष्टि से शत्रु भवन को देखता है, अतः शत्रु-पक्ष से लाभ और उसमें प्रभाव रखने का योग बनता है। सातवीं दृष्टि दशमभाव में पड़ने से राज्य एवं पिता द्वारा व्यवसाय की वृद्धि एवं मान-प्रतिष्ठा प्राप्त होती रहेगी। दसवीं नीचदृष्टि से शरीर स्थान को देखता है, अतः शारीरिक सौंदर्य में कमी रहेगी तथा कुछ चिंताएं भी बनी रहा करेंगी।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'शनि की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्नः पंचमभावः शनि

१७७

पांचवें त्रिकोण तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि में स्थित शनि के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि द्वारा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है, परंतु संतान पक्ष से मतभेद बना रहता है। यहां से शनि तीसरी उच्चदृष्टि से सप्तमभाव को देखता है, अतः स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में विशेष लाभ होता है। सातवीं दृष्टि से एकादशभाव को स्वक्षेत्र में देखने के कारण बुद्धि तथा सत्तापक्ष के योग से आमदनी के क्षेत्र में अत्यधिक सफलता मिलती है तथा पिता द्वारा लाभ होता है। दसवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण धन तथा कुटुंब का भी विशेष लाभ होता है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: षष्ठभाव: शनि

१७८

छठे शत्रु भाव में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक का पिता के साथ वैमनस्य रहता है तथा राजकीय क्षेत्र में कठिन प्रयत्नों के बाद सफलता मिलती है। छठे भाव में क्रूर ग्रह की उपस्थिति प्रभावकारी मानी गई है, अतः जातक की आमदनी अच्छी होगी तथा शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त होती रहेगी। यहां से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देख रहा है, अतः जातक को आयु एवं पुरातत्त्व के संबंध में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता प्राप्त होगी। सातवीं दृष्टि व्यय भाव में पड़ने से खर्च में अधिकता के कारण परेशानी का अनुभव होता रहेगा तथा बाहरी संबंधों के कारण असंतोष प्राप्त होगा। दसवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देख रहा है, अतः पराक्रम विशेष रहेगा और भाई-बहनों का सुख भी प्राप्त होगा। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक बहुत हिम्मती तथा प्रभावशाली भी होता है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: सप्तमभाव: शनि

१७९

सातवें केंद्र एवं स्त्री तथा व्यवसाय के घर में शनि अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर उच्च का होकर बैठा हो, तो उसके प्रभाव से जातक व्यवसाय तथा स्त्री के पक्ष में विशेष सफलता प्राप्त करता है। पिता एवं राज्य द्वारा भी उसे बहुत लाभ होता है। यहां से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखता है, अतः भाग्य वृद्धि में कुछ कठिनाइयां आती हैं और यश में कमी रहती है। सातवीं नीचदृष्टि से शरीर स्थान को अपने शत्रु मंगल की मेष राशि में देखता है, अतः शारीरिक सौंदर्य में कमी तथा हृदय में अशांति बनी रहती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता एवं भूमि स्थान के संबंध में भी कुछ असंतोष बना रहता है तथा घरेलू सुखों में कमी आ जाती है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: अष्टमभाव: शनि

१८०

आठवें मृत्यु एवं पुरातत्त्व के घर में, अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को आमदनी के क्षेत्र में कमजोरी रहती है, परंतु पुरातत्त्व का लाभ होता है और आयु के संबंध में भी श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त होती है। यहां से शनि तीसरी दृष्टि से दशमभाव को देखता है, अतः पिता एवं राज्य द्वारा अल्प लाभ होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण धन तथा कुटुंब के संबंध में कठिन परिश्रम द्वारा सफलता मिलती है और

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्नः तृतीयभावः शनि

१७५

तीसरे पराक्रम भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहनों का यथेष्ठ सुख प्राप्त होता है। साथ ही पिता एवं राज्य के क्षेत्र से भी सहयोग मिलता है। इस स्थान से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से पंचमभाव को देखता है, अतः विद्या तथा संतान के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है सातवीं शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण जातक को भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से व्यय स्थान को देखने के कारण खर्च अधिक होता है तथा बाहरी संबंधों से असंतोष रहता है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्नः चतुर्थभावः शनि

१७६

चौथे केंद्र, माता, सुख तथा भूमि भवन में अपने शत्रु चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को माता तथा भूमि के संबंध में कुछ असंतोष युक्त सफलता प्राप्त होती है, परंतु सुख के साधनों में वृद्धि होती रहती है। इस स्थान से शनि तीसरी दृष्टि से शत्रु भवन को देखता है, अतः शत्रु-पक्ष से लाभ और उसमें प्रभाव रखने का योग बनता है। सातवीं दृष्टि दशमभाव में पड़ने से राज्य एवं पिता द्वारा व्यवसाय की वृद्धि एवं मान-प्रतिष्ठा प्राप्त होती रहेगी। दसवीं नीचदृष्टि से शरीर स्थान को देखता है, अतः शारीरिक सौंदर्य में कमी रहेगी तथा कुछ चिंताएं भी बनी रहा करेंगी।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्नः पंचमभावः शनि

१७७

पांचवें त्रिकोण तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि में स्थित शनि के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि द्वारा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है, परंतु संतान पक्ष से मतभेद बना रहता है। यहां से शनि तीसरी उच्चदृष्टि से सप्तमभाव को देखता है, अतः स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में विशेष लाभ होता है। सातवीं दृष्टि से एकादशभाव को स्वक्षेत्र में देखने के कारण बुद्धि तथा सत्तापक्ष के योग से आमदनी के क्षेत्र में अत्यधिक सफलता मिलती है तथा पिता द्वारा लाभ होता है। दसवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण धन तथा कुटुंब का भी विशेष लाभ होता है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: षष्ठभाव: शनि

१७८

छठे शत्रु भाव में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक का पिता के साथ वैमनस्य रहता है तथा राजकीय क्षेत्र में कठिन प्रयत्नों के बाद सफलता मिलती है। छठे भाव में क्रूर ग्रह की उपस्थिति प्रभावकारी मानी गई है, अत: जातक को आमदनी अच्छी होगी तथा शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त होती रहेगी। यहां से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देख रहा है, अत: जातक को आयु एवं पुरातत्त्व के संबंध में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता प्राप्त होगी। सातवीं दृष्टि व्यय भाव में पड़ने से खर्च में अधिकता के कारण परेशानी का अनुभव होता रहेगा तथा बाहरी संबंधों के कारण असंतोष प्राप्त होगा। दसवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देख रहा है, अत: पराक्रम विशेष रहेगा और भाई-बहनों का सुख भी प्राप्त होगा। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक बहुत हिम्मती तथा प्रभावशाली भी होता है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: सप्तमभाव: शनि

१७९

सातवें केंद्र एवं स्त्री तथा व्यवसाय के घर में शनि अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर उच्च का होकर बैठा हो, तो उसके प्रभाव से जातक व्यवसाय तथा स्त्री के पक्ष में विशेष सफलता प्राप्त करता है। पिता एवं राज्य द्वारा भी उसे बहुत लाभ होता है। यहां से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखता है, अत: भाग्य वृद्धि में कुछ कठिनाइयां आती हैं और यश में कमी रहती है। सातवीं नीचदृष्टि से शरीर स्थान को अपने शत्रु मंगल की मेष राशि में देखता है, अत: शारीरिक सौंदर्य में कमी तथा हृदय में अशांति बनी रहती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता एवं भूमि-स्थान के संबंध में भी कुछ असंतोष बना रहता है तथा घरेलू सुखों में कमी आ जाती है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: अष्टमभाव: शनि

१८०

आठवें मृत्यु एवं पुरातत्त्व के घर में, अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को आमदनी के क्षेत्र में कमजोरी रहती है, परंतु पुरातत्त्व का लाभ होता है और आयु के संबंध में भी श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त होती है। यहां से शनि तीसरी दृष्टि से दशमभाव को देखता है, अत: पिता एवं राज्य द्वारा अल्प लाभ होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण धन तथा कुटुंब के संबंध में कठिन परिश्रम द्वारा सफलता मिलती है और

दसवीं शत्रुदृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या तथा संतान के संबंध में त्रुटि बनी रहती है। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक क्रोधी, वाणी में तेजी रखने वाला तथा अल्प लाभ प्राप्त करने वाला होता है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्नः नवमभावः शनि

१८१

नवें, त्रिकोण एवं भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर बैठे हुए शनि के प्रभाव से जातक के भाग्य की प्रारंभ में कम परंतु बाद में विशेष उन्नति होती है, धर्म का पालन भी थोड़ा-बहुत होता है। पिता तथा राज्य की शक्ति एवं इनके द्वारा लाभ भी मिलता है। यहां से शनि तीसरी दृष्टि से एकादश भवन को अपनी राशि में देखता है, अतः लाभ अधिक होगा एवं संपत्ति तथा ऐश्वर्य की विशेष प्राप्ति होगी। सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखता है, अतः पराक्रम की वृद्धि होगी एवं भाई-बहनों का सुख मिलेगा। दसवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखता है, अतः शत्रु पक्ष में अपना प्रभाव स्थिर रखेगा। संक्षेप में, ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक धन-संपत्तिवान, यशस्वी तथा शत्रुओं पर विजय पाने वाला होता है।
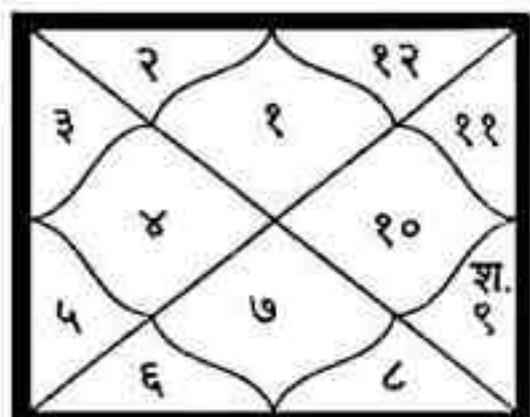
जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्नः दशमभावः शनि

१८२

दसवें केंद्र, पिता एवं राज्य भवन में मकर राशि स्थित स्वक्षेत्री शनि के प्रभाव से जातक पिता तथा राज्य को विशेष शक्ति प्राप्त करता है तथा इनसे लाभ उठाता है। यहां से शनि तीसरी दृष्टि से व्यय भाव को गुरु की मीन राशि में देखता है, अतः खर्च अधिक रहेगा एवं बाहरी संबंधों से असंतोष प्राप्त होगा। सातवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थ भवन को देखता है, अतः माता एवं भू-संपत्ति, मकान आदि के सुख में कुछ कमी रहेगी और दसवीं उच्चदृष्टि से सप्तम भवन को देखता है, अतः स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष में पूर्ण सफलता प्राप्त होगी। संक्षेप में, ऐसा जातक ऐश्वर्यवान, भोगी, विलासी तथा सुखी जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्नः एकादशभावः शनि

१८३
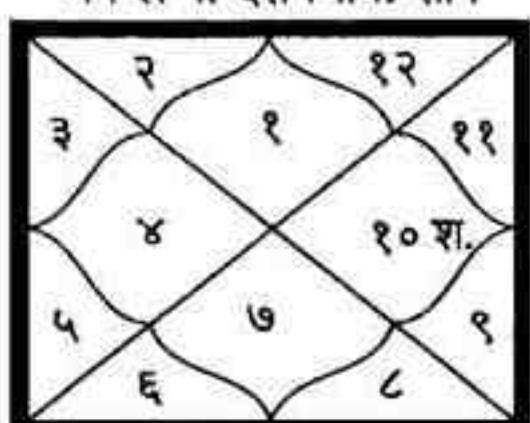
ग्यारहवें लाभ स्थान में अपनी कुंभ राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को आमदनी के क्षेत्र में अत्यधिक सफलता प्राप्त होती है। पिता तथा राज्य से भी अच्छा सुख एवं लाभ मिलता है। यहां से शनि अपनी तीसरी नीचदृष्टि से प्रथमभाव को शत्रु मंगल की मेष राशि में देखता है, अतः शारीरिक सौंदर्य में कमी बनी रहेगी। सातवीं शत्रुदृष्टि से पंचमभाव को सूर्य की सिंह राशि में देखने के कारण विद्या के क्षेत्र में पूर्ण सफलता नहीं मिलेगी तथा संतानपक्ष भी कमजोर रहेगा। दसवीं शत्रुदृष्टि से
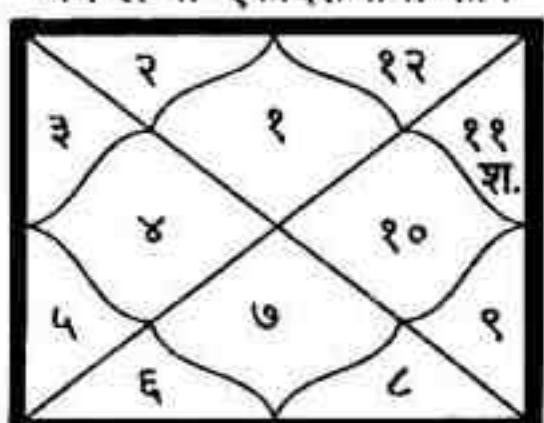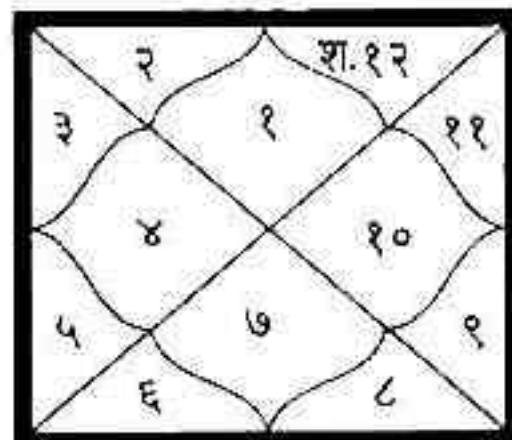
अष्टमभाव को देखने के कारण पुरातत्त्व का सामान्य लाभ होगा तथा दैनिक जीवन में परेशानियों व कठिनाइयों का अनुभव होता रहेगा।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्नः द्वादशभावः शनि

२ श.१२ ३ १ ११ ४ १० ५ ७ ९ ६ ८

१८४

बारहवें व्यय भाव में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक का खर्च बहुत अधिक होता है। साथ ही पिता एवं राजपक्ष से हानि उठानी पड़ती है। यहां से शनि तीसरी दृष्टि से मित्र शुक्र की वृष राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अतः जातक को धन एवं कुटुंब की वृद्धि के लिए विशेष प्रयत्न करना पड़ेगा। सातवीं शत्रुदृष्टि से छठें भाव को देखने के कारण जातक शत्रु-पक्ष में प्रभाव प्राप्त करेगा तथा दसवीं शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्योन्नति के लिए विशेष परिश्रम करने की आवश्यकता पड़ेगी तथा बहुत कठिनाइयों के बाद अपनी प्रतिष्ठा बना पाएगा।
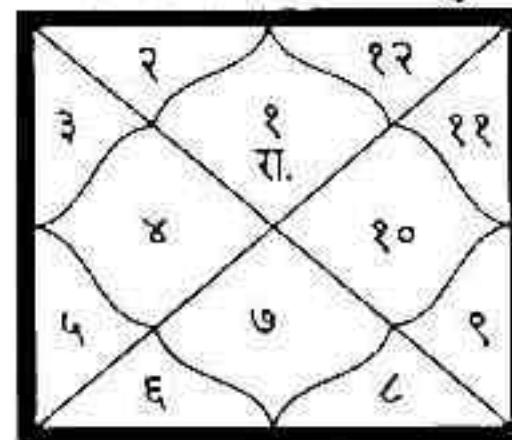
'मेष' लग्न में 'राहु' का फल

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्नः प्रथमभावः राहु

१८५

पहले केंद्र तथा शरीर स्थान में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौंदर्य में कमी तथा स्वास्थ्य में परेशानी उत्पन्न होती है। साथ ही हृदय में चिंताओं का निवास भी रहता है। ऐसा व्यक्ति अपनी उन्नति के लिए गुप्त युक्तियों का आश्रय लेता है। मंगल चूंकि क्रूर ग्रह है, अतः उसकी राशि पर राहु के होने के कारण जातक स्वार्थ सिद्धि के लिए झूठ, दुराव, गुप्त युक्तियों, हिम्मत तथा गुप्त बुद्धि का भी आश्रय लेता है और उसी से तरक्की करता है।
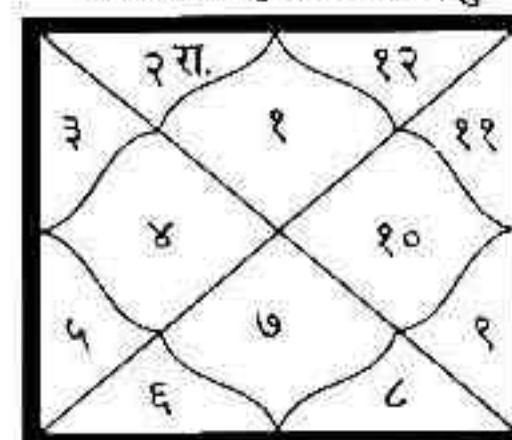
जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्नः द्वितीयभावः राहु

१८६

दूसरे धन एवं कुटुंब भाव में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक धन संबंधी चिंताओं से ग्रस्त बना रहता है और उसे अनेक प्रकार के कष्ट भी उठाने पड़ते हैं। इसके साथ ही उसे कौटुंबिक क्लेश तथा परेशानियों का सामना भी करना पड़ता है। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक गुप्त युक्तियों से काम लेता है और बारम्बार हानियां उठाकर भी अपने युक्तिबल से पुनः क्षति-पूर्ति करवाने में समर्थ हो जाता है तथा समाज में धनी व्यक्ति के रूप में सम्मानित बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: तृतीयभाव: राहु

१८७

तीसरे पराक्रम स्थान में मिथुन राशि का उच्च होकर बैठे हुए राहु के प्रभाव से जातक के पराक्रम तथा भाई-बहन की शक्ति में विशेष वृद्धि होती है। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक युक्तबल में प्रवीण होता है तथा भीतरी रूप से कमजोरी का अनुभव करने के बावजूद भी प्रकट रूप में बड़ी दिलेरी, हिम्मत तथा साहस व परिचय देता है। फलस्वरूप उसे इच्छित सफलता प्राप्त होती है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: चतुर्थभाव: राहु

१८८
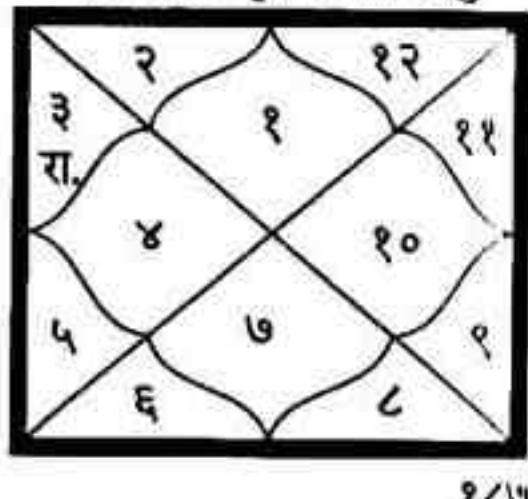
चौथे केंद्र, माता तथा भूमि के भवन में अपने शत्रु चंद्रमा की कर्क राशि बैठे हुए राहु के प्रभाव से जातक को माता, भूमि, मकान तथा मातृभूमि के सुख में कमी का सामना करना पड़ता है तथा घरेलू शांति में भी कमी आ जाती है। ऐसा व्यक्ति मानसिक अशांति का शिकार बना रहता है तथा कभी सुख और कभी दुःख को प्राप्त करता रहता है। गुप्त युक्तियों द्वारा विशेष प्रयत्न करने पर भी उसे अधिक सफलता प्राप्त नहीं होती।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

१८९

पांचवें त्रिकोण, विद्या एवं संतान के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को विद्याध्ययन के क्षेत्र में बहुत कठिनाइयों के बाद थोड़ी सफलता मिलती है तथा गुप्त युक्तियों में प्रवीणता प्राप्त होती है। इसके साथ ही उसे संतान पक्ष से भी कष्ट का अनुभव होता है। अंततः अत्यधिक गुप्त युक्तियों के बल पर उसे सामान्य सफलता प्राप्त होती है। संक्षेप में, ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक परेशानियों एवं झंझटों में फंसा रहता है तथा अधिक विद्वान भी नहीं होता।
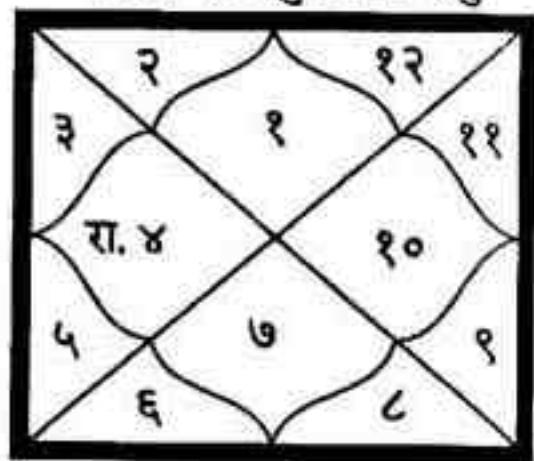
जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
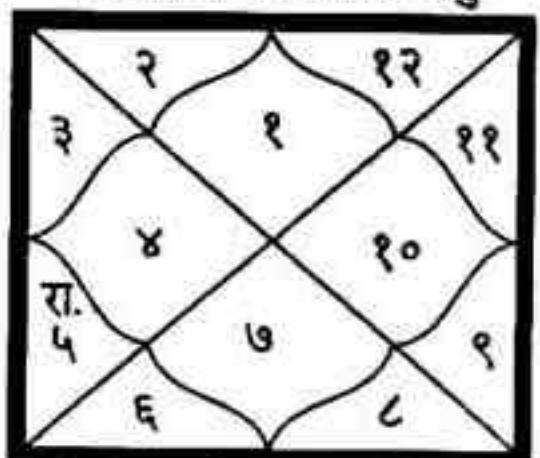
छठे शत्रु तथा रोग भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि में स्थित राहु के प्रभाव से जातक शत्रुओं, झगड़ों तथा परेशानियों के बीच अत्यधिक हिम्मत से काम लेकर अपना प्रभाव स्थापित करता है तथा कठिन-से-कठिन परिस्थिति में भी अपने धैर्य और साहस को नहीं छोड़ता। राहु की ऐसी स्थिति के कारण जातक को कभी-कभी बहुत मुसीबतों में फंस जाना पड़ता है, परंतु हर बार वह अपने साहस एवं हिम्मत के द्वारा उन सब पर विजय प्राप्त कर लेता है।

मेष लग्न: षष्ठभाव: राहु

१९०

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
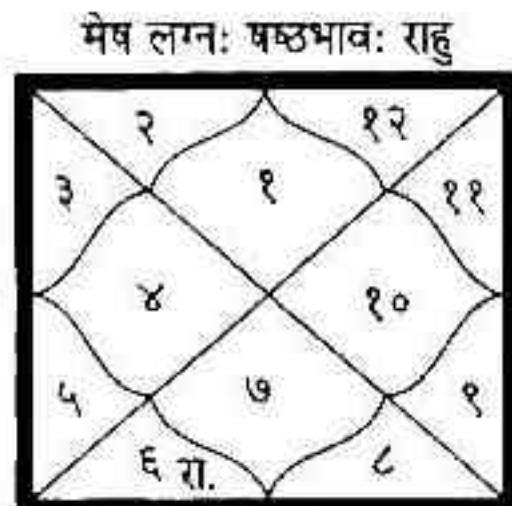
सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर बैठे हुए राहु के प्रभाव से जातक स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में चिंता, परेशानी एवं कष्टों का अनुभव करता है, परंतु मित्र राशिस्थ होने के कारण अपनी चतुराई एवं गुप्त युक्तियों से उन कठिनाइयों पर विजय प्राप्त कर लेता है। ऐसी ग्रह स्थिति वाले जातक को पारिवारिक जीवन में अनेक प्रकार की मुसीबतों का सामना करना पड़ता है तथा बड़े प्रयत्नों के बाद उसका येन केन प्रकारेण निर्वाह हो पाता है।

मेष लग्न: सप्तमभाव: राहु

१९१

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
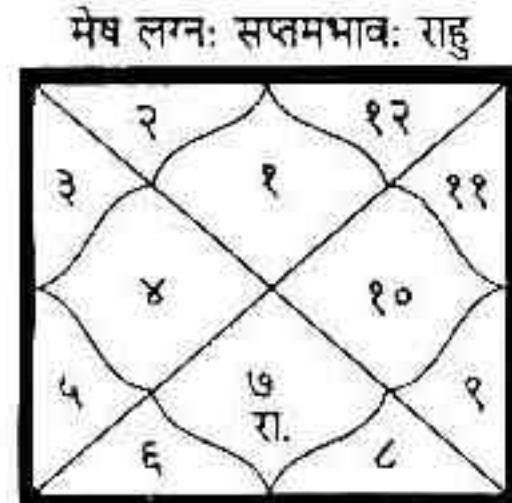
आठवें आयु एवं पुरातत्त्व भवन में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को अपने जीवन में अनेक बार मृत्यु तुल्य कष्टों का सामना करना पड़ता है तथा एक के बाद दूसरी कठिनाइयों, संघर्षों एवं मुसीबतों में फंस जाना पड़ता है। इसके साथ ही उसे पुरातत्त्व के संबंध में भी हानि उठानी पड़ती है। उसे जीवन-निर्वाह के लिए गुप्त-युक्तियों का सहारा लेना पड़ता है तथा सभी क्षेत्रों में चिंताएं तथा परेशानियां बनी रहती हैं। ऐसे जातक का जीवन सुखमय व्यतीत नहीं हो पाता।

मेष लग्न: अष्टमभाव: राहु

१९२

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नवें त्रिकोण तथा भाग्य भवन में अपने शत्रु गुरु की राशि पर स्थित नीच के राहु के
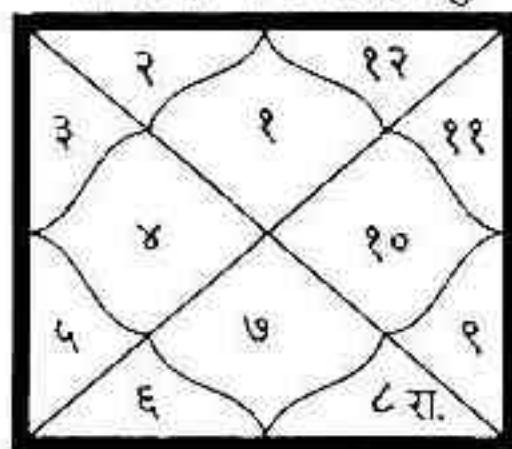
प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में अनेक प्रकार की कठिनाइयां एवं परेशानियां उपस्थित रहती हैं। साथ ही धर्म-पालन से भी श्रद्धा बनी रहती है। ऐसी ग्रह स्थिति वाले व्यक्ति का जीवन निराशा एवं कष्टों से भरा रहता है और अन्त में बहुत तकलीफें उठाने के बाद बहुत थोड़ी सफलता प्राप्त होती है।

मेष लग्नः नवमभावः राहु

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
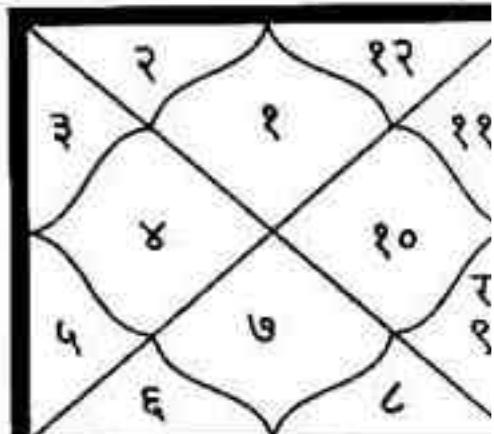
दसवें केंद्र, पिता एवं राज्य के घर में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर बैठे हुए राहु के प्रभाव से जातक को अपने पिता तथा राज्य के पक्ष में कठिनाइयों एवं परेशानियों का सामना करना पड़ता है। इसी प्रकार मान, प्रतिष्ठा, अधिकार, नौकरी अथवा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कष्ट उठाने पड़ते हैं। भाग्योन्नति के लिए अत्यधिक प्रयत्नशील रहने पर भी बहुत कम सफलता प्राप्त होती है। संक्षेप में, ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक दुखी, चिंतित तथा परेशानियों का शिकार बना रहता है।

मेष लग्नः दशमभावः राहु

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लि अनुसार समझना चाहिए—
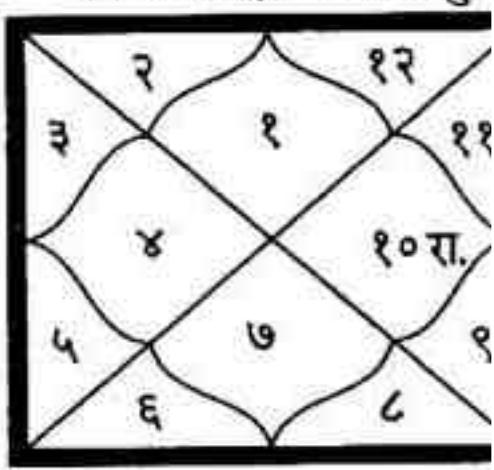
ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र शनि की राशि पर बैठे राहु के प्रभाव से जातक को आमदनी के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त होती है तथा उपार्जित लाभ होने के योग उपस्थित होते रहते हैं, परंतु राहु के क्रूर ग्रह होने के कारण जातक को लाभ प्राप्ति के लिए कठोर परिश्रम करना आवश्यक होता है तथा कभी-कभी आमदनी में कमी एवं हानि के योगों का भी सामना करना पड़ता है। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक परिश्रमी, स्वार्थी, मितव्ययी ऐश्वर्यवान तथा संपत्तिशाली होता है।

मेष लग्नः एकादशभावः राहु

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'र की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्नः द्वादशभावः राहु

१९६
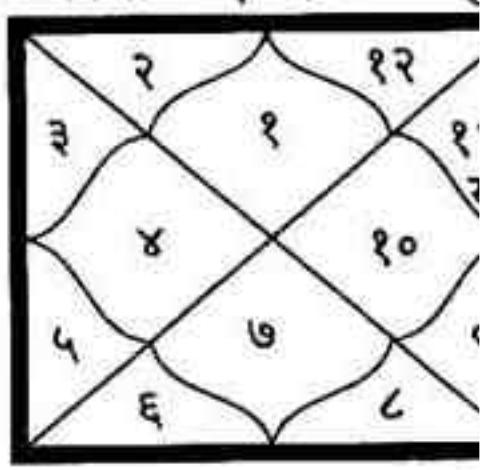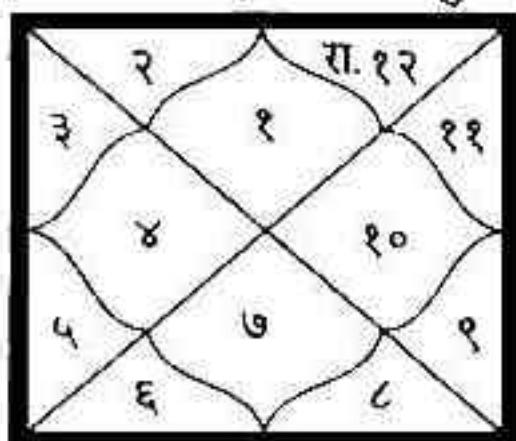
बारहवें व्यय-स्थान में अपने शत्रु गुरु की राशि में **स्थित राहु के** प्रभाव से जातक को जीवन में खर्च की **अधिकता के** कारण विशेष कठिनाइयों एवं मुसीबतों का **सामना करना** पड़ता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से **भी कष्ट** प्राप्त होता रहता है, परंतु शुभ ग्रह की राशि पर **शुभ ग्रह की** उपस्थिति के कारण जातक शान-शौकत एवं **ठाट-बाट के** कामों में ही अधिक खर्च करेगा और उसके **कारण समय**-समय पर उपस्थित होने वाली कठिनाइयों **पर बीच**-बीच में विजय प्राप्त कर लिया करेगा। फिर भी **वह खर्च** एवं कर्ज के बोझ से मुक्त नहीं हो सकेगा।
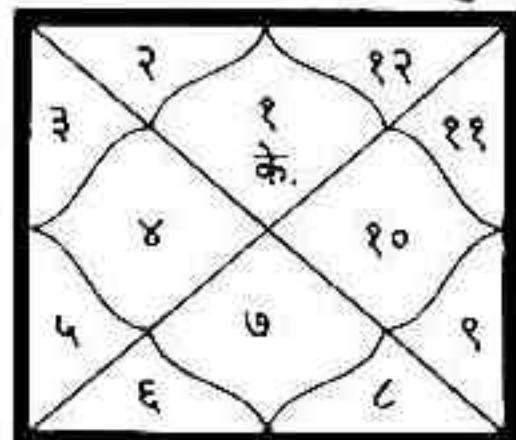
'मेष' लग्न में 'केतु' का फल

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में **'केतु'** की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्नः प्रथमभावः केतु

१९७

पहले केंद्र एवं शरीर स्थान में अपने शत्रु मंगल की **मेष राशि** पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को शारीरिक **कष्ट**, मानसिक चिंताओं तथा अन्य प्रकार की परेशानियों **का निरंतर** सामना करना पड़ता है और उसके शरीर में कोई **चोट भी** लगती है। केतु के प्रभाव से जातक के शारीरिक **सौंदर्य में** कमी भी आ जाती है। उसे अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने **के लिए** अत्यधिक परिश्रम करना पड़ता है तथा गुप्त युक्तियों **एवं हिम्मत** का आश्रय लेना पड़ता है। फिर भी, उसके जीवन **में अनेक** प्रकार की त्रुटियां बनी रहती हैं।
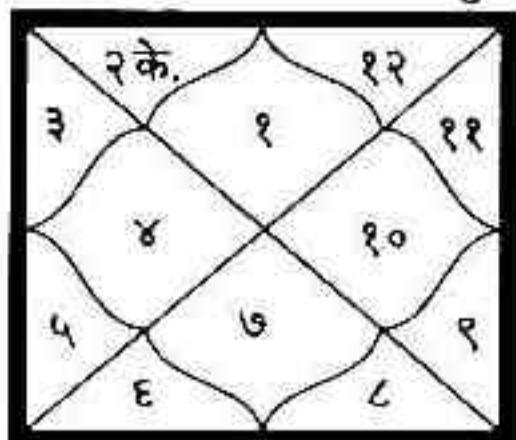
जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में **'केतु'** की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्नः द्वितीयभावः केतु

१९८

दूसरे धन एवं कुटुंब के घर में अपने मित्र शुक्र की **वृष राशि** पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को शारीरिक **कष्ट**, चिंता, धन स्थान में कमी, कौटुंबिक परेशानी, **झगड़े**-झंझट एवं मतभेदों का शिकार हर समय बना रहता **है, परंतु** शुक्र की राशि पर स्थित होने कारण वह गुप्त **युक्तियों**, चतुराई एवं कठिन परिश्रम के बल पर अपनी **आर्थिक** स्थिति में थोड़ा बहुत सुधार कर लेता है। यद्यपि **वह भीतर** से चिंतित, परेशान तथा निर्धन होता है, परंतु **प्रकट** रूप से लोग उसे धनवान ही समझते रहते हैं।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में **'केतु'** की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई एवं पराक्रम के घर में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित नीचे के केतु के प्रभाव से जातक के पराक्रम एवं भाई-बहन के पक्ष में कमजोरी आ जाती है। उसके भीतर हिम्मत की कमी पाई जाती है, परंतु वह भीरु स्वभाव का होने पर भी गुप्त युक्तियों से काम लेकर अपना स्वार्थ-साधन करता है। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक अत्यधिक परिश्रम करने के उपरांत भी अल्प-सफलता प्राप्त करता है तथा उसके पास के बल गुप्त युक्तियों का ही सहारा रहता है।

मेष लग्नः तृतीयभावः केतु

१९

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केंद्र, माता तथा भूमि के भवन में अपने शत्रु चंद्रमा की कर्क राशि में स्थित केतु के प्रभाव से जातक को माता एवं भूमि, संपत्ति, मकान आदि के पक्ष में कष्ट प्राप्त होता रहता है तथा कौटुंबिक मामलों में भी अशांति बनी रहती है। चंद्रमा की राशि पर केतु की स्थिति के कारण जातक को मानसिक-शक्ति का बल प्राप्त होता है तथा उसी के द्वारा थोड़े बहुत सुख की भी प्राप्ति होती है। ऐसी ग्रह स्थिति वाले जातक को अपना देश छोड़कर विदेशों में निवास करना पड़ता है।
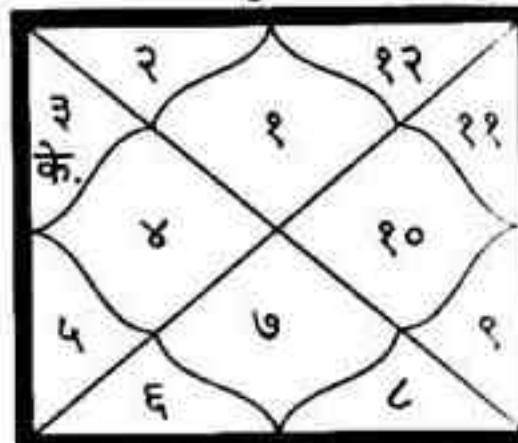
मेष लग्नः चतुर्थभावः केतु

२०

जिस जातक को जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पांचवे त्रिकोण, विद्या एवं संतान के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि में स्थित केतु के प्रभाव से जातक को विद्याध्ययन में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। उसकी मस्तिष्क शक्ति निर्बल होती है, अतः विद्या की शक्ति भली-भांति प्राप्त नहीं हो पाती। इसी प्रकार उसे संतान पक्ष से भी कष्ट का अनुभव होता है। अत्यधिक उद्योग एवं परिश्रम करते रहने पर भी सफलता बहुत कम मिल पाती है। ऐसी ग्रह स्थिति वाले जातक का स्वभाव भी उग्र होता है और उसकी वाणी कठोर होती है।

मेष लग्नः पंचमभावः केतु

२०

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
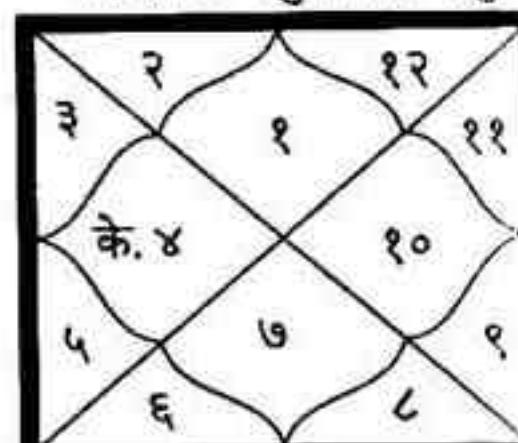
छठे शत्रु स्थान में अपने मित्र बुध की कन्याराशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक अपने शत्रु पक्ष पर सदैव विजय प्राप्त करता रहता है। उसकी विवेक शक्ति, हिम्मत एवं

मेष लग्नः षष्ठभावः केतु

२
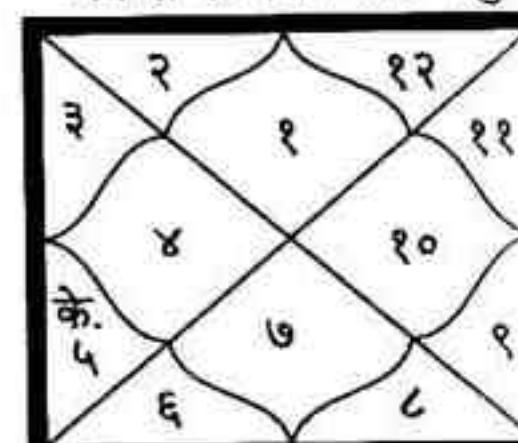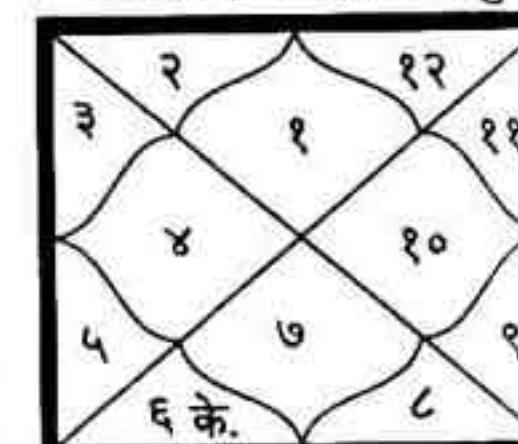
चतुराई प्रबल होती है, परंतु ऊपर से बहुत शक्तिशाली प्रतीत होने पर भी मन के भीतर थोड़ी बहुत कमजोरी छिपी रहती है तथा ननसाल के पक्ष से कुछ हानि उठानी पड़ती है। संक्षेप में, ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक झगड़े, मुकदमे एवं शत्रुओं पर विजय पाने वाला, विवेक शक्ति से संपन्न तथा प्रभावी होता है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: सप्तमभाव: केतु

२०३

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर बैठे हुए केतु के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा पारिवारिक गुत्थियों को सुलझाने में बड़ी चतुराई से काम लेना पड़ता है। केतु के स्वाभाविक गुण के फलस्वरूप जातक अपने व्यवसाय में परिवर्तन करता रहता है तथा स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष में त्रुटियों का अनुभव करते हुए भी गुप्त युक्तियों द्वारा सफलता प्राप्त करता है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: अष्टमभाव: केतु

२०४

आठवें आयु, मृत्यु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर बैठे हुए केतु के प्रभाव से जातक को अपने जीवन में अनेक बार मृत्यु-तुल्य कष्ट का सामना करना पड़ता है तथा पुरातत्त्व के संबंध में भी हानि उठानी पड़ती है।

ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक गुप्त युक्तियों के द्वारा थोड़ी बहुत शक्ति प्राप्त करता है परंतु सुखी नहीं होता। उसके शरीर में कोई-न-कोई रोग भी अपना घर किए रहता है।
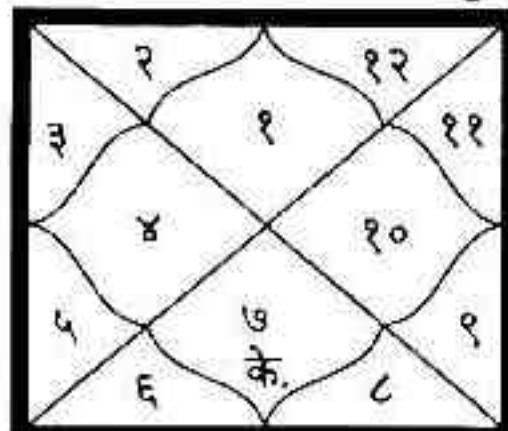
जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे आगे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: नवमभाव: केतु

२०५

नवें त्रिकोण तथा धर्म के भवन में बृहस्पति की मीन राशि पर स्थित उच्च के केतु के प्रभाव से जातक के भाग्य की विशेष उन्नति होती है तथा धर्म के क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त होती है।

ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक अत्यंत साहसी, मजबूत हृदय वाला, भाग्यवान, धनी तथा धर्मात्मा होता है परंतु केतु के स्वाभाविक गुण के फलस्वरूप उसके जीवन में अनेक प्रकार के परिवर्तन आते रहते हैं और कभी-कभी कठिनाइयों तथा परेशानियों का सामना भी करना पड़ता है।
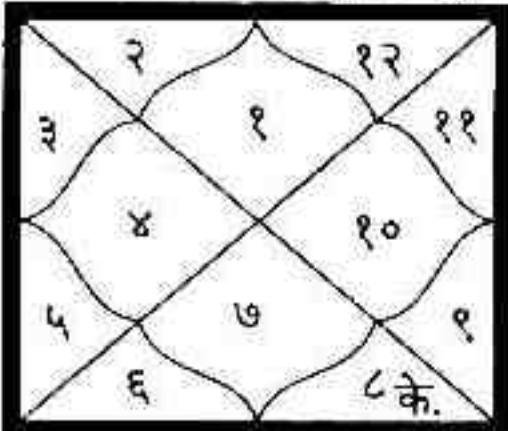
जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्नः दशमभावः केतु

२०
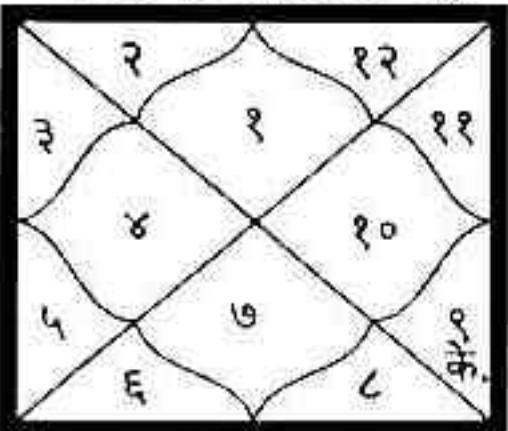
दसवें राज्य तथा पिता के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को पिता एवं राज्य के द्वारा संकट एवं परेशानी के योग उपस्थित होते रहते हैं तथा व्यवसाय-संचालन के क्षेत्र में भी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। केतु के स्वाभाविक प्रभाव के फलस्वरूप उसे अपने व्यवसाय में कई बार प्रयत्न करना पड़ता है तथा गुप्त युक्तियों एवं कठिन परिश्रम के द्वारा सफलता एवं मान-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।
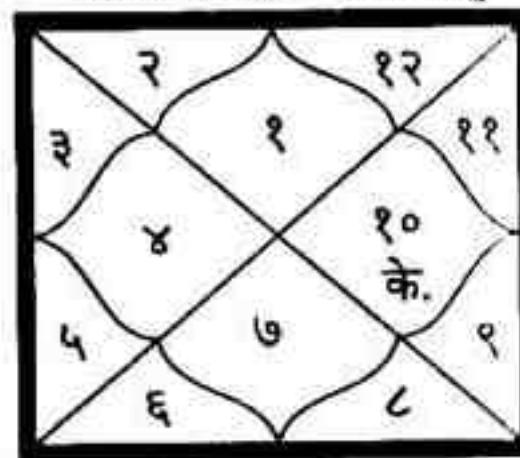
जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लि अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्नः एकादशभावः केतु

२०

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र शनि की कुंभ राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को आमदनी के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त होती है और वह सामान्य से अधिक मुनाफा उठाने का ऐबी होता है। ऐसा जातक कठिन परिश्रम एवं गुप्त युक्तियों के बल पर लाभ के विशेष योग प्राप्त करता है, परंतु केतु के स्वाभाविक गुण के फलस्वरूप उसे अपनी आय के साधनों में अनेक बार परिवर्तन करने पड़ते हैं तथा विशेष उद्योग भी करना पड़ता है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्नः द्वादशभावः केतु

२
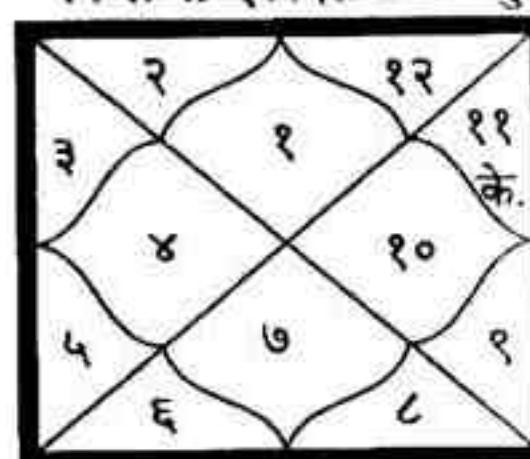
बारहवें व्यय स्थान में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को खर्च के मामलों में अनेक प्रकार की कठिनाइयों तथा परेशानियों का अनुभव करना पड़ता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से भी कष्ट प्राप्त होता है। केतु के स्वाभाविक गुण के फलस्वरूप खर्च तथा बाहरी स्थानों के संबंध में अनेक प्रकार के परिवर्तन होते रहेंगे, परंतु शुभ ग्रह की राशि पर केतु की स्थिति होने के कारण थोड़ा बहुत लाभ भी मिलता रहेगा।
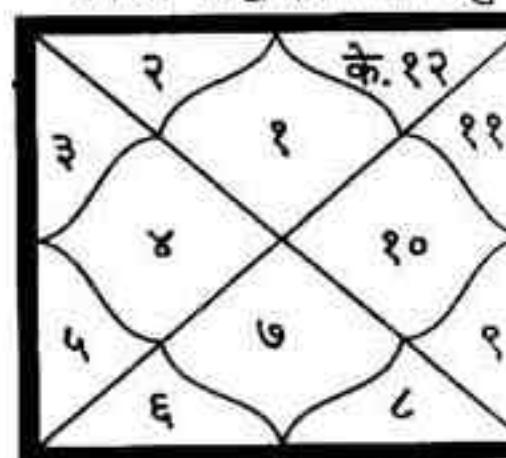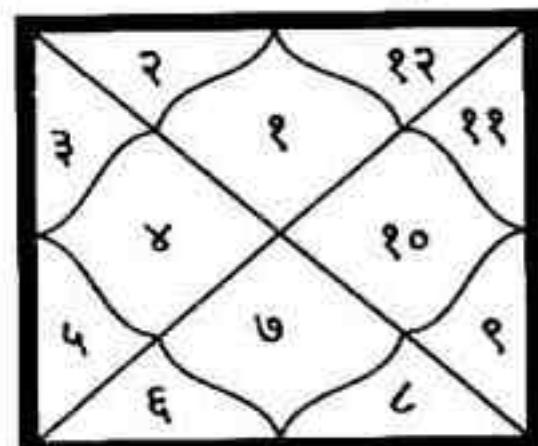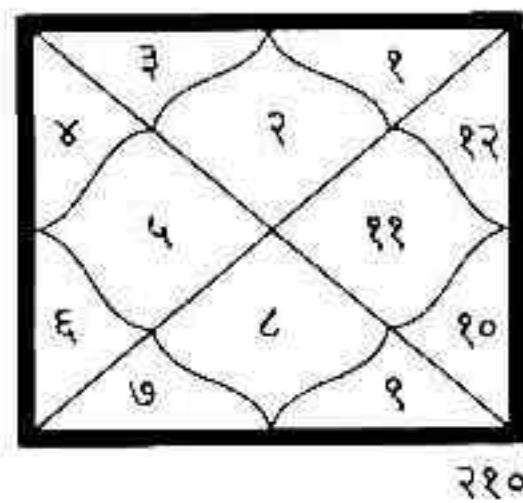
'मेष' लग्न का फलादेश समाप्त

२०९

वृषभ लग्न

२१०

वृषभ लग्न वाली कुंडलियों के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का अलग-अलग फलादेश

वृषभ लग्न का संक्षिप्त फलादेश

वृषभ लग्न में जन्म लेने वाले जातक के शरीर का रंग गोरा अथवा गेहुंआ होता है। वह स्त्रियों जैसे स्वभाव वाला शौकीन तबीयत का, मधुर भाषी, रजोगुणी, लम्बे दांत तथा कुंचित केशों वाला, श्रेष्ठ संगति में बैठने वाला, ऐश्वर्यशाली, उदार स्वभाव वाला, भक्त, गुणवान, बुद्धिमान, धैर्यवान, शूर-वीर, साहसी, अत्यंत यशस्वी, अत्यंत शांत प्रकृति का, परंतु अवसर पर लड़ने अथवा युद्ध करने में अपने प्रबल पराक्रम को प्रकट करने वाला, अपने परिवार वालों से अनाहत, कलहयुक्त, शास्त्र से अभिघात पाने वाला, धन-क्षय से युक्त, मानसिक-रोग अथवा चिंताओं से पीड़ित एवं दुखी रहने वाला, मित्र-वियोगी तथा पूर्णायु प्राप्त करने वाला होता है। कुछ विद्वानों के मतानुसार वृषभ लग्न में जन्म लेने वाला जातक अपनी ३६ वर्ष की आयु के पश्चात् अनेक प्रकार के दुःख भी भोगता है।

वृषभ लग्न

यह बात पहले बताई जा चुकी है कि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन पर नवग्रहों का प्रभाव मुख्यत: दो प्रकार से पड़ता है—

(१) ग्रहों की जन्म-कालीन स्थिति के अनुसार।

(२) ग्रहों की दैनिक गोचर गति के अनुसार।

जातक की जन्म-कालीन ग्रह स्थिति 'जन्म-कुंडली' में दी गई होती है। उसमें जो ग्रह जिस भाव में और जिस राशि पर बैठा होता है, वह जातक के जीवन पर अपना निश्चित प्रभाव निरंतर स्थायी रूप से डालता रहता है।

दैनिक गोचर गति के अनुसार विभिन्न ग्रहों की जो स्थिति होती है, उसकी जानकारी पंचांग द्वारा दी जा सकती है। ग्रहों की दैनिक गति के संबंध में या तो किसी ज्योतिषी से पूछ लेना चाहिए अथवा स्वयं ही उसे मालूम करने का तरीका सीख लेना चाहिए। इस संबंध में पुस्तक के पहले प्रकरण में विस्तारपूर्वक लिखा जा चुका है।

२११
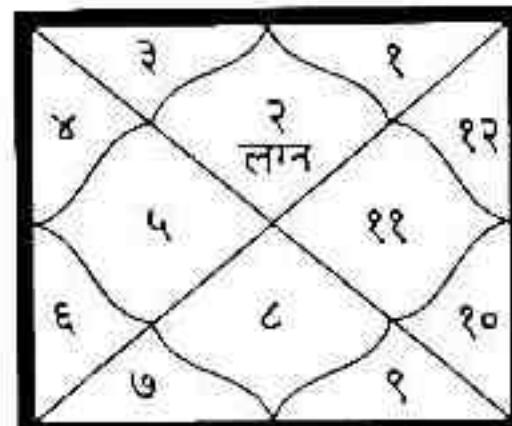
दैनिक गोचर गति के अनुसार विभिन्न ग्रह जातक के जीवन पर अस्थायी रूप से अपना प्रभाव डालते हैं।

उदाहरण के लिए यदि किसी जातक की जन्म-कुंडली में सूर्य वृष राशि पर प्रथमभाव में बैठा है, तो उसका स्थायी प्रभाव जातक के जीवन पर आगे दी गई उदाहरण-कुंडली संख्या २१२ के अनुसार स्थायी रूप से पड़ता रहेगा, परन्तु यदि दैनिक ग्रह गोचर में कुंडली देखते समय सूर्य मिथुन राशि के द्वितीयभाव में बैठा है, तो उस स्थिति में वह उदाहरण-कुंडली संख्या ३२४ के अनुसार उतनी अवधि तक जातक के जीवन पर अपना अस्थायी प्रभाव अवश्य डालेगा, जब तक कि वह मिथुन राशि से हटकर कर्क राशि में नहीं चला जाता। कर्क राशि में पहुंचकर वह कर्क राशि के अनुरूप प्रभाव डालना आरंभ कर देगा। अत: जिस जातक की जन्म-कुंडली में सूर्य वृष राशि के प्रथमभाव में बैठा हो, उसे, उदाहरण-कुंडली संख्या २१२ में फलादेश देखने के पश्चात्, यदि उन दिनों सूर्य मिथुन राशि के द्वितीयभाव में बैठा हो, तो उदाहरण-कुंडली संख्या ३२४ का फलादेश भी देखना चाहिए तथा इन दोनों फलादेशों के समन्वय स्वरूप जो निष्कर्ष निकलता हो, उसी को अपने वर्तमान समय पर प्रभावकारी समझना चाहिए। इसी प्रकार प्रत्येक ग्रह के विषय में जान लेना चाहिए।

वृषभ लग्न में जन्म लेने वाले जातकों की जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित वि... ग्रहों के फलादेश का वर्णन उदाहरण-कुंडली संख्या २१२ से ३१६ तक में किया गया ... पंचांग की दैनिक ग्रह-गति के अनुसार वृष लग्न में जन्म लेने वाले जातकों को किन ... उदाहरण-कुंडलियों द्वारा विभिन्न ग्रहों के तात्कालिक प्रभाव को देखना चाहिए—इसका वि... वर्णन अगले पृष्ठों में किया गया है। अतः उसके अनुसार ग्रहों की तात्कालिक स्थिति ... सामयिक प्रभाव की जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए। तदुपरांत दोनों फलादेशों के सम... स्वरूप जो निष्कर्ष हो, उसी को सही फलादेश समझना चाहिए।

इस विधि से प्रत्येक व्यक्ति प्रत्येक जन्म-कुंडली का ठीक-ठाक फलादेश सहज में ... ज्ञात कर सकता है।

टिप्पणी—(१) पहले बताया जा चुका है कि जिस समय जो ग्रह २७ अंश से ... अथवा ३ अंश के भीतर होता है, वह प्रभावकारी नहीं रहता। इसी प्रकार जो ग्रह सूर्य ... अस्त होता है, वह भी जातक के ऊपर अपना प्रभाव या तो बहुत कम डालता है, या ... पूर्णतः प्रभावहीन रहता है।

(२) स्थायी जन्म-कुंडली स्थित विभिन्न ग्रहों के अंश किसी ज्योतिषी द्वारा अपनी कुं... में लिखवा लेने चाहिए, ताकि उनके अंशों के विषय में बार-बार जानकारी प्राप्त करने ... झंझट से बचा जा सके। तात्कालिक गोचर के ग्रहों के अंशों की जानकारी पंचांग द्वारा अथ... किसी ज्योतिषी से पूछकर प्राप्त कर लेनी चाहिए।

(३) स्थायी जन्म-कुंडली अथवा तात्कालिक ग्रह-गति कुंडली में यदि किसी भाव ... एक से अधिक ग्रह एक साथ बैठे होते हैं अथवा जिन-जिन स्थानों पर उनकी दृष्टियां पड़... हैं, जातक का जीवन उनके द्वारा भी प्रभावित होता है। इस पुस्तक के तीसरे प्रकरण में 'ग्र... की युति का प्रभाव' शीर्षक के अंतर्गत विभिन्न ग्रहों की युति के फलादेश का वर्णन कि... गया है, अतः इस विषय की जानकारी वहां से प्राप्त कर लेनी चाहिए।

(४) विंशोत्तरी दशा के सिद्धांतानुसार प्रत्येक जातक की पूर्णायु १२० वर्ष की मानी जा... है। इस आयु-अवधि में जातक नवग्रहों की दशाओं का भोग कर लेता है। विभिन्न ग्रहों ... दशा-काल भिन्न-भिन्न होता है। परंतु अधिकांश व्यक्ति इतनी लम्बी आयु तक जीवित न... रह पाते, अतः वे अपने जीवन-काल में कुछ ही ग्रहों की दशाओं का भोग कर पाते हैं। जातक के जीवन के जिस काल में जिस ग्रह की दशा—जिसे 'महादशा' कहा जाता है— चल रही होती है, जन्म-कालीन ग्रह-स्थिति के अनुसार उसके जीवन-काल की उतनी अवधि उस ग्रह-विशेष के प्रभाव से विशेष रूप से प्रभावित रहती है। जातक का जन्म किस ग्रह की महादशा में हुआ है और उसके जीवन में किस अवधि से किस अवधि तक किस ग्रह की महादशा चलेगी और वह महादशा जातक के ऊपर अपना क्या विशेष प्रभाव डालेगी— इन सब बातों का उल्लेख भी तीसरे प्रकरण में किया गया है।

इस प्रकार (१) जन्म-कुंडली, (२) तात्कालिक ग्रह-गोचर कुंडली एवं (३) ग्रहों की महादशा—इन तीनों विधियों से फलादेश प्राप्त करने की सरल विधि का वर्णन इस पुस्तक में किया गया है। अतः इन तीनों के संबंध स्वरूप फलादेश का ठीक-ठीक निर्णय करके अपने भूत, वर्तमान तथा भविष्य-कालीन जीवन के विषय में सम्यक् जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए।

वृष (२) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'सूर्य' का फलादेश

वृष (२) जन्म लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २१२ से २२३ तक में देखना चाहिए।

वृष (२) जन्म- लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'सूर्य' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण- कुंडली संख्या २१२ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'सूर्य' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २१३ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'सूर्य' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण- कुंडली संख्या २१४ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'सूर्य' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण- कुंडली संख्या २१५ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'सूर्य' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २१६ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'सूर्य' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण- कुंडली संख्या २१७ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'सूर्य' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २१८ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'सूर्य' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २१९ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'सूर्य' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २२० के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'सूर्य' 'कुंभ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २२१ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'सूर्य' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २२२ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'सूर्य' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २२३ के अनुसार समझना चाहिए।

वृष (२) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'चंद्रमा' का फलादेश

वृष (२) जन्म लग्न वालों को अपनी जन्म कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'चंद्रमा' का स्थायी- फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २२४ से २३५ तक में देखना चाहिए।

वृष (२) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह गोचर कुंडली के विभिन्न-भावों में स्थित् 'चंद्रमा' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए।

(१) जिस दिन 'चंद्रमा' 'वृष ' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २२४ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस दिन 'चंद्रमा' 'मिथुन ' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २२५ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस दिन 'चंद्रमा' 'कर्क' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २२६ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस दिन 'चंद्रमा' 'सिंह ' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २२७ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस दिन 'चंद्रमा' 'कन्या ' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २२८ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस दिन 'चंद्रमा' 'तुला ' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २२९ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस दिन 'चंद्रमा' 'वृश्चिक ' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २३० के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस दिन 'चंद्रमा' 'धनु ' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २३१ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस दिन 'चंद्रमा' 'मकर ' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २३२ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस दिन 'चंद्रमा' 'कुंभ ' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २३३ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस दिन 'चंद्रमा' 'मीन' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २३४ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस दिन 'चंद्रमा' 'मेष ' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २३५ के अनुसार समझना चाहिए।

वृष (२) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'मंगल' का फलादेश

वृष (२) जन्म लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २३६ से २४७ तक में देखना चहिए।

वृष (२) जन्म लग्न वालों को दैनिक ग्रह गोचर कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए।

(१) जिस महीने में 'मंगल' 'वृष ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २३६ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने 'मंगल' 'मिथुन ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २३७ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने 'मंगल' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या २३८ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने 'मंगल' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २३९ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने 'मंगल' 'कन्या' राशि पर हो, उस-महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या २४० के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने 'मंगल' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या २४१ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने 'मंगल' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २४२ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने 'मंगल' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २४३ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने 'मंगल' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २४४ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने 'मंगल' 'कुंभ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २४५ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने 'मंगल' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २४६ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने 'मंगल' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या २४७ के अनुसार समझना चाहिए।

वृष (२) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह गोचर कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'बुध' का फलादेश

वृष (२) जन्म लग्न वालों को अपनी जन्म कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का स्थायी फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या २४८ से २५६ तक में देखना चाहिए।

वृष (२) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह गोचर कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने 'बुध' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २४८ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने 'बुध' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या २४९ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने 'बुध' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २५० के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने 'बुध' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २५१ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने 'बुध' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या २५२ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने 'बुध' 'तुला ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २५३ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने 'बुध' 'वृश्चिक ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या २५४ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने 'बुध' 'धनु ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २५५ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने 'बुध' 'मकर ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २५६ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने 'बुध' 'कुंभ ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २५७ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने 'बुध' 'मीन ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २५८ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने 'बुध' 'मेष ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २५९ के अनुसार समझना चाहिए।

वृष (२) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'गुरु' का फलादेश

वृष (२) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २६० से २७१ तक में देखना चाहिए।

वृष (२) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए।

(१) जिस वर्ष 'गुरु' 'वृषभ ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २६० के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष 'गुरु' 'मिथुन ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २६१ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष 'गुरु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २६२ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष 'गुरु' 'सिंह ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २६३ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष 'गुरु' 'कन्या ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २६४ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष 'गुरु' 'तुला ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २६५ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष 'गुरु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २६६ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष 'गुरु' 'धनु ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २६७ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष 'गुरु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २६८ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष 'गुरु' 'कुंभ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २६९ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष 'गुरु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २७० के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष 'गुरु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २७१ के अनुसार समझना चाहिए।

वृष (२) जन्म लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'शुक्र' का फलादेश

वृष (२) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का **स्थायी** फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २७२ से २८३ तक में देखना चाहिए।

वृष (२) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का **अस्थायी** फलादेश विभिन्न उदाहरण कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए।

(१) जिस महीने 'शुक्र' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २७२ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने 'शुक्र' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २७३ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने 'शुक्र' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २७४ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने 'शुक्र' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २७५ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने 'शुक्र' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २७६ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने 'शुक्र' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २७७ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने 'शुक्र' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या २७८ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने 'शुक्र' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २७९ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने 'शुक्र' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २८० के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने 'शुक्र' 'कुंभ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २८१ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने 'शुक्र' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २८२ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२)जिस महीने 'शुक्र ''मेष ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २८३ के अनुसार समझना चाहिए।

वृष (२) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का फलादेश

वृष (२) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २८४ से २९५ तक में देखना चाहिए।

वृष (२) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए।

(१) जिस वर्ष में 'शनि' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २८४ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'शनि' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २८५ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'शनि' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २८६ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'शनि' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २८७ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'शनि' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २८८ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'शनि' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २८९ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'शनि' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २९० के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'शनि' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २९१ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'शनि' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २९२ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'शनि' 'कुंभ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २९३ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'शनि' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २९४ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'शनि' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २९५ के अनुसार समझना चाहिए।

वृष (२) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का फलादेश

वृष (२) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या २९६ से ३०७ तक में देखना चाहिए।

वृष (२) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित '**राहु**' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए।

(१) जिस वर्ष में 'राहु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली **संख्या** २९६ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'राहु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली **संख्या** २९७ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'राहु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली **संख्या** २९८ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'राहु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली **संख्या** २९९ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'राहु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली **संख्या** ३०० के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'राहु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली **संख्या** ३०१ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'राहु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली **संख्या** ३०२ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'राहु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली **संख्या** ३०३ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'राहु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली **संख्या** ३०४ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'राहु' 'कुंभ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली **संख्या** ३०५ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'राहु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली **संख्या** ३०६ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'राहु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली **संख्या** ३०७ के अनुसार समझना चाहिए।

वृष (२) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'केतु' का फलादेश

वृष (२) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' **का स्थायी** फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३०८ से ३१९ तक में देखना चाहिए।

वृष (२) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित '**केतु**' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए।

(१) जिस वर्ष में 'केतु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली **संख्या** ३०८ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'केतु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली **संख्या** ३०९ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'केतु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३१० के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'केतु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३११ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'केतु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३१२ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'केतु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३१३ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'केतु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३१४ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'केतु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३१५ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'केतु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३१६ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'केतु' 'कुंभ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३१७ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'केतु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३१८ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'केतु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३१९ के अनुसार समझना चाहिए।

'वृष' लग्न में 'सूर्य' का फल

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न से हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्नः प्रथमभावः सूर्य

२२

पहले केंद्र तथा शरीर स्थान में शत्रु शुक्र की वृष राशि पर बैठे हुए सूर्य के प्रभाव से जातक को माता तथा भूमि, मकान आदि का सामान्य सुख प्राप्त होता है तथा शारीरिक सौंदर्य में कुछ कमी रहती है। यहां से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को मंगल की वृश्चिक राशि में देखता है, अतः जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में सुख, सफलता तथा प्रभाव की प्राप्ति होती है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

द्वितीय धन-कुटुंब के घर में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर बैठे हुए सूर्य के प्रभाव से जातक को धन-संपत्ति तथा कुटुंब का सुख प्राप्त होता है, परंतु माता के सुख में कुछ कमी बनी रहती है और भूमि मकान आदि का सुख प्राप्त होते हुए भी उसका श्रेष्ठ उपयोग नहीं हो पाता। यहां से सूर्य अपनी सातवीं दृष्टि से आयु तथा पुरातत्त्व के अष्टमभाव को अपने मित्र गुरु की धनु राशि में देखता है, अतः जातक को आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ प्राप्त होता है तथा दैनिक जीवन में भी सुख मिलता रहता है।

वृष लग्नः द्वितीयभावः सूर्य

२१३

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे पराक्रम एवं सहोदर स्थान पर अपने मित्र चंद्रमा की कर्क राशि पर बैठे हुए सूर्य के प्रभाव से जातक को माता एवं भूमि, मकान आदि घरेलू सुख की प्राप्ति होती है। तृतीयभाव में उष्णस्वभावी ग्रह विशेष शक्तिशाली होता है, अतः इस स्थान पर सूर्य के कारण जातक अपने पराक्रम द्वारा सफलता एवं सुख के अर्जित तथा उसमें वृद्धि करता रहेगा तथा भाई-बहन के यथेष्ट सुख को भी प्राप्त करेगा। इस स्थान से सूर्य अपनी सातवीं दृष्टि से नवमभाव को अपने शत्रु शनि की मकर राशि में देखता है, अतः जातक को भाग्योन्नति के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ेगा तथा धर्म का पालन करने में कुछ लापरवाही बनी रहेगी।

वृष लग्नः तृतीयभावः सूर्य

२१४

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे माता एवं भूमि के भवन में स्वराशि सिंह स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को अपनी माता तथा भूमि, मकान, संपत्ति आदि का पूर्ण सुख प्राप्त होता है तथा घरेलू जीवन भी उल्लासमय बना रहता है। तेजस्वी सूर्य के प्रभाव से ऊपरी दिखावा अत्यधिक रहने पर भी जातक के मन के भीतर थोड़ी बहुत अशांति बनी रहेगी। इस स्थान से सूर्य अपनी सातवीं दृष्टि से दशमभाव को देखता है, अतः पिता, व्यवसाय एवं राज्य के पक्ष में जातक को थोड़ा बहुत असंतोष बना रहेगा एवं कठिनाई के साथ सफलता एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी।
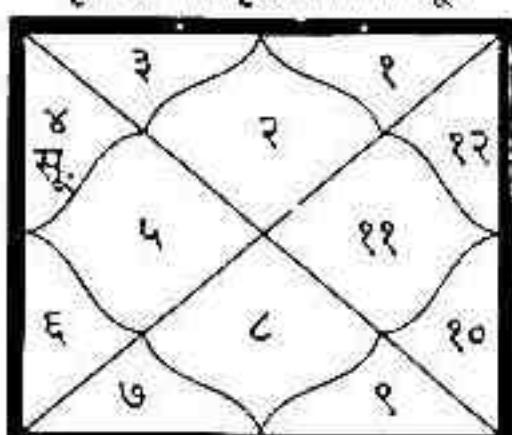
वृष लग्नः चतुर्थभावः सूर्य

२१५

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्नः पंचमभावः सूर्य

२१६
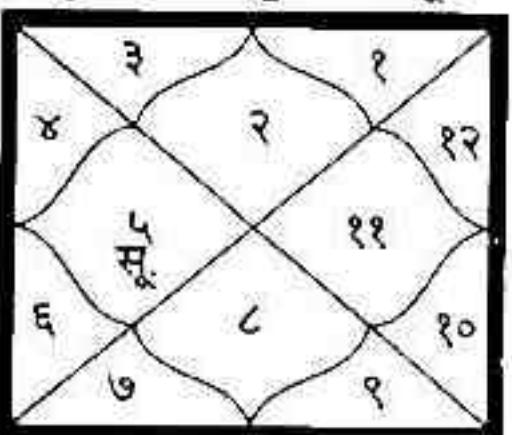
पांचवें त्रिकोण विद्या एवं संतान के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को विद्या तथा संतान के पक्ष में वृद्धि एवं सुख की प्राप्ति होगी। ऐसा जातक गंभीर स्वभाव वाला, बुद्धिमान तथा दूरदर्शी होता है। उसका घरेलू जीवन भी सुख, शांति एवं प्रसन्नतापूर्ण बना रहता है तथा माता एवं भूमि का सुख भी प्राप्त होता है। इस स्थान से सूर्य सातवीं दृष्टि से अपने मित्र गुरु की मीन राशि में ग्यारहवें लाभ भवन को देखता है, अतः जातक की आमदनी के साधन भी अच्छे बने रहते हैं, और उसे यथेष्ट लाभ प्राप्त होता रहता है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्नः षष्ठभावः सूर्य

३ १ ४ २ १२ ५ ११ ६ ८ १० ७ सू. ९

२१७
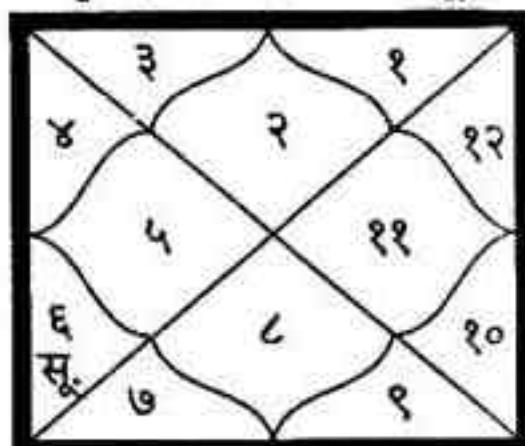
छठे शत्रु स्थान में अपने शत्रु की तुला राशि पर स्थित नीच के सूर्य के प्रभाव से जातक को अपने शत्रु पक्ष से कठिनाइयां प्राप्त होती रहती हैं, परंतु सूर्य चूंकि उष्णग्रह हैं, अतः वह नीच का होने पर भी शत्रुओं के ऊपर जातक के प्रभाव को बनाए रहता है। ऐसा जातक माता तथा भूमि, मकान आदि का सुख भी कम पाता है और उसे अपनी जन्मभूमि से दूर जाकर रहना पड़ता है। इस स्थान से सूर्य सातवीं उच्चदृष्टि से बारहवें भाव को अपने मित्र मंगल की मेष राशि में देखता है, अतः जातक का खर्च अधिक रहता है, परंतु बाहरी स्थानों के संबंध से उसे सुख प्राप्त होता रहता है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्नः सप्तमभावः सूर्य

२१८

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सुख एवं सफलता प्राप्त करता है, साथ ही उसे माता, भूमि, भवन आदि का भी यथेष्ट लाभ होता है। इस स्थान से सूर्य सातवीं दृष्टि से प्रथमभाव को अपने शत्रु शुक्र की वृष राशि में देखता है, उसके कारण जातक के शारीरिक सौंदर्य में कुछ कमी रहती है तथा पारिवारिक सुख-साधनों में कुछ कमी बनी है, जिनकी निवृत्ति के लिए शरीर को विशेष परिश्रम करना पड़ता है तथा हृदय में भी थोड़ी बहुत अशांति बनी रहती है।
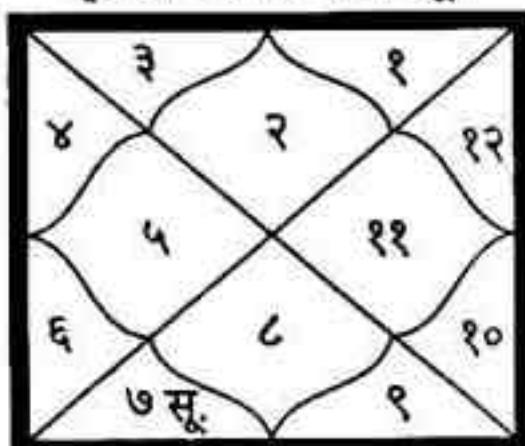
जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्नः अष्टमभावः सूर्य

२१९
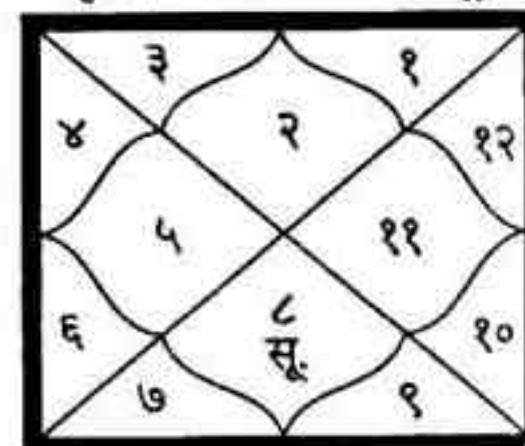
आठवें मृत्यु तथा पुरातत्त्व के घर में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को अपने जन्म स्थान से दूर रहना पड़ता है तथा माता, भूमि एवं भवन के सुख में भी कमी आती है, साथ ही पारिवारिक सुख-शांति में भी विघ्न उत्पन्न होते रहते हैं। परंतु सूर्य के सुखेश होकर अष्टमभाव में बैठने के कारण जातक की आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ प्राप्त होता है। यहां से सूर्य सातवीं दृष्टि से द्वितीयभाव को अपने मित्र बुध की मिथुन राशि में देखता है, अतः जातक कुटुंब द्वारा सुख पाता है तथा धन की वृद्धि करने में सफल होता है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्नः नवमभावः सूर्य

२२०
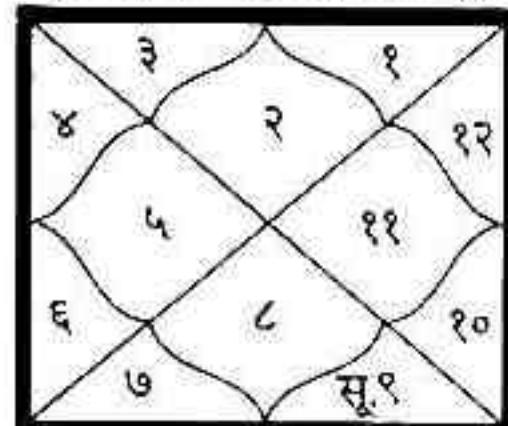
नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को माता तथा भूमि-भवन आदि के संबंध में कुछ असंतोष तथा परेशानियों के साथ सफलता प्राप्त होती है, परंतु घरेलू सुख एवं भाग्य की वृद्धि भी होती रहती है। यहां से सूर्य सातवीं दृष्टि से तृतीयभाव को अपने मित्र चंद्रमा की कर्क राशि में देखता है, उसके कारण जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहन का सुख भी मिलता है। संक्षेप में, ऐसी ग्रह स्थिति वाले जातक को अपने बुद्धि-बल तथा पराक्रम के द्वारा ही सफलता मिलती है, परंतु वह भी पूर्ण सफलता नहीं होती।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्नः दशमभावः सूर्य

२२१

दसवें केंद्र, राज्य तथा पिता के भवन में अपने शत्रु शनि की कुंभ राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को पिता तथा राज्य के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता एवं सम्मान की प्राप्ति होती है, परंतु शत्रु के राशिस्थ होने के कारण पूर्ण सफलता नहीं मिल पाती। यहां से सूर्य अपनी सातवीं दृष्टि से चतुर्थभाव को स्वराशि में देखता है, उसके प्रभाव से जातक को माता के सुख एवं भूमि-भवन आदि के सुख का लाभ होता है तथा पारिवारिक सुख में वृद्धि होती है।
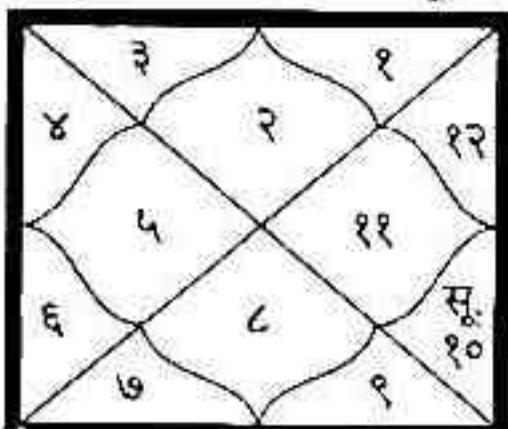
जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
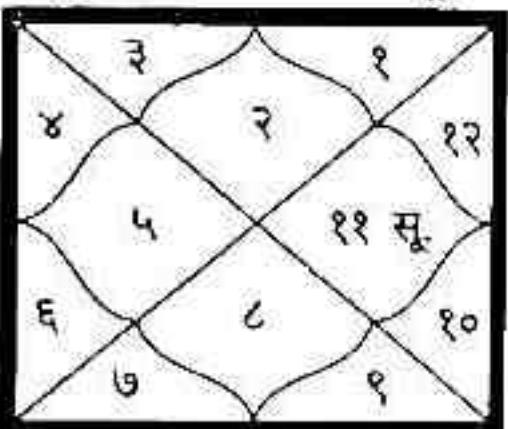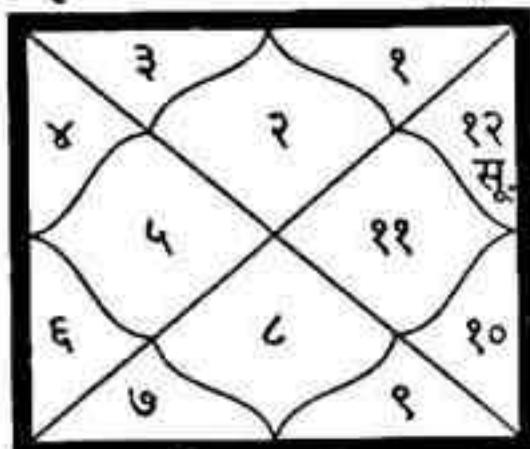
ग्यारहवें लाभ तथा ऐश्वर्य भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को आमदनी के क्षेत्र मे विशेष सफलता प्राप्त होती है। इसके साथ ही माता, भूमि, भवन तथा कुटुंब का सुख भी पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होता है। इस स्थान से सूर्य सातवीं दृष्टि से पंचमभाव को अपने सामान्य मित्र बुध की कन्या राशि में देखता है, अत: जातक की विद्या, बुद्धि एवं संतान के पक्ष में भी वृद्धि होती है तथा उसका जीवन आनंदपूर्वक व्यतीत होता है।

वृष लग्न: एकादशभाव: सूर्य

२२२

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्ययभाव में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित उच्च के सूर्य के प्रभाव से जातक को खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों का संबंध सुखदायक बना रहता है, परंतु पारिवारिक सुख एवं माता के पक्ष में कुछ कमी बनी रहती है। इसके साथ ही भूमि-मकान अदि के संबंध में भी थोड़ी बहुत हानि उठानी पड़ती है। ऐसा जातक यदि अपने जन्म स्थान को छोड़कर अन्य स्थान पर रहे, तो उसे विशेष लाभ होता है। यहां से सूर्य सातवीं दृष्टि से शत्रु शुक्र को तुला राशि से षष्ठभाव में देखता है। जिसके कारण जातक को शत्रु पक्ष में कठिनाइयों से प्रभाव कम रखना पड़ता है।

वृष लग्न: द्वादशभाव: सूर्य

२२३
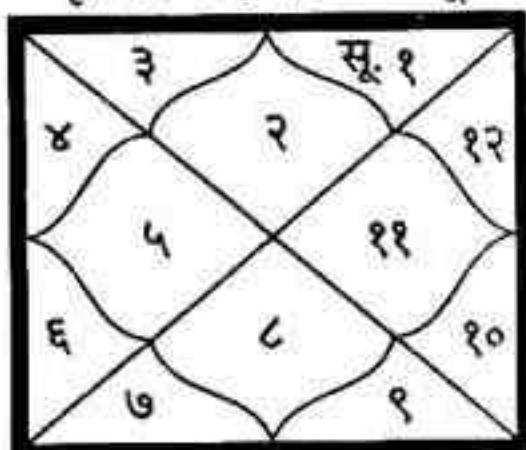
'वृष' लग्न में 'चंद्रमा' का फल

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केंद्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र शुक्र की वृष राशि पर उच्च चंद्रमा की स्थिति के प्रभाव से जातक का मनोबल बहुत बढ़ा रहता है। साथ ही उसे भाई-बहनों का सुख एवं पराक्रम द्वारा सफलता तथा सम्मान की प्राप्ति होती है। परंतु यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं नीचदृष्टि से सप्तमभाव को भी देखता है, अत: उसे स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष में कुछ असंतोष बना रहता है तथा परिवार का संचालन करने में भी उसे कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।
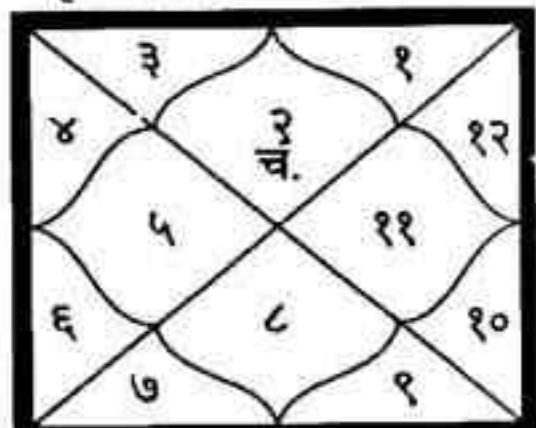
वृष लग्न: प्रथमभाव: चंद्रमा

२२४

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: द्वितीयभाव: चंद्रमा

२२५

दूसरे धन तथा कुटुंब के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि में स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक अपने पराक्रम द्वारा धन-संचय तथा कौटुंबिक सुख को प्राप्त करता है, परंतु भाई-बहनों के सुख एवं शारीरिक पुरुषार्थ में कुछ कमी भी बनी रहती है। इस स्थान से सूर्य सातवीं दृष्टि से अष्टमभाव को अपने मित्र गुरु की धनु राशि में देखता है, अत: जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है। संक्षेप में ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक ऐश्वर्यपूर्ण जीवन व्यतीत करता है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: तृतीयभाव: चंद्रमा

२२६
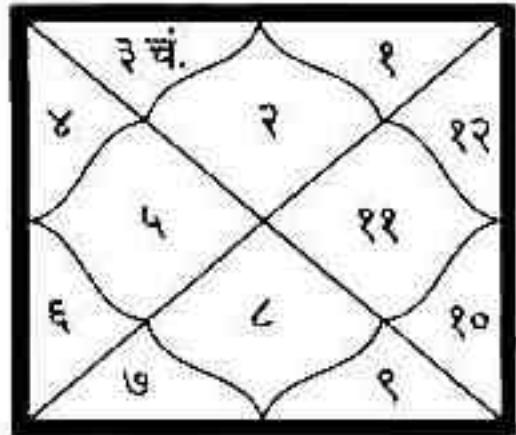
तीसरे भाई एवं पराक्रम के घर में अपनी राशि पर बैठे हुए चंद्रमा के प्रभाव से जातक को भाई-बहनों का सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है, जिसके कारण जातक बड़ा हिम्मती, परिश्रमी, पुरुषार्थी, साहसी तथा प्रसन्नचित बना रहता है और इन सबके कारण उसे यश तथा मान भी प्राप्त होता है। यहां से चंद्रमा सातवीं दृष्टि से अपने शत्रु शनि की मकर राशि में नवमभाव को देखता है, जिसके कारण जातक को अपने भाग्य की वृद्धि के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है तथा धर्म पालन में भी कोई अधिक रुचि नहीं होती।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: चतुर्थभाव: चंद्रमा

२२७

चौथे केंद्र, माता, सुख तथा भूमि के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर बैठे हुए चंद्रमा के प्रभाव से जातक को माता के सुख में वृद्धि तथा भूमि, मकान, सुख इत्यादि का लाभ होता है। इसके साथ ही उसके भाई-बहन तथा पराक्रम के पक्ष में भी उन्नति होती है। घरेलू सुख के साधनों में भी सफलता मिलती है। यहां से चंद्रमा सातवीं दृष्टि से दशमभाव को अपने शत्रु शनि की कुंभ राशि में देखता है, अत: जातक को पिता तथा राज्य के क्षेत्र में कुछ परिश्रम के बाद सफलता प्राप्त होगी—ऐसा समझना चाहिए।
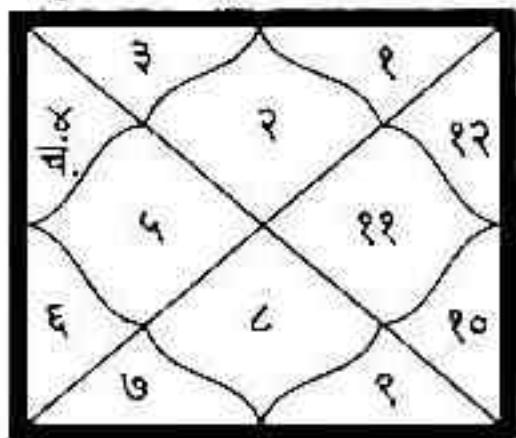
जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म कुंडली के 'पंचमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
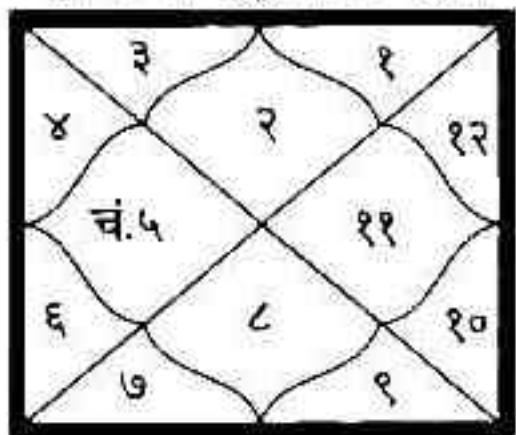
पांचवें त्रिकोण एवं विद्या-बुद्धि तथा संतान के भाव में अपने मित्र बुध की राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि तथा संतान के पक्ष में विशेष सफलता प्राप्त होती है। साथ ही छोटे भाई-बहनों से सुंदर संबंध बना रहता हैं। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं दृष्टि से अपने सामान्य मित्र बृहस्पति की मीन राशि में एकादश भाव को देखता है, अत: जातक को अपने मनोबल एवं बुद्धि योग के द्वारा आय, संपत्ति तथा ऐश्वर्य के पक्ष में भी विशेष सफलता प्राप्त होती रहेगी तथा जातक सुखी एवं धनी बना रहता है।

वृष लग्न: पंचमभाव: चंद्रमा

२२८

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
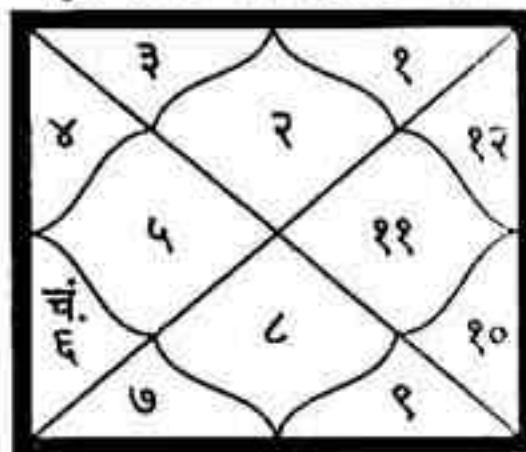
छठे शत्रु एवं रोग स्थान में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक को शत्रु पक्ष में प्रभाव प्राप्त होगा तथा कुछ परेशानियों के साथ झगड़े-झंझटों के मामलों में सफलता प्राप्त करेगा। पराक्रमेश चंद्रमा की छठे भाव में स्थिति के कारण जातक के मन के भीतर बड़ी हिम्मत तथा शक्ति रहने पर भी कुछ परेशानियां बनी रहेंगी तथा भाई-बहन के संबंधों में भी कुछ मन-मुटाव रहेगा। यहां से चंद्रमा सातवीं दृष्टि से अपने मित्र मंगल की मेष राशि में व्यय भाव को देखता है, अत: जातक खर्च खूब करेगा तथा बाहरी स्थानों के संबंध में लाभ उठाएगा।

वृष लग्न: षष्ठभाव: चंद्रमा

२२९

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में स्थित अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित नीचे के चंद्रमा के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में चिंता, हानि तथा कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। साथ ही भाई-बहन के संबंधों में भी त्रुटि बनी रहेगी। यहां से चंद्रमा सातवीं उच्चदृष्टि से अपने सामान्य मित्र शत्रु की वृष राशि में शरीर स्थान को देखता है, अत: जातक का शरीर सुंदर होगा और उसे हृदय के भीतर शक्ति एवं बाहर यश तथा मान-प्रतिष्ठा की प्राप्ति भी होती रहेगी।

वृष लग्न: सप्तमभाव: चंद्रमा

२३०
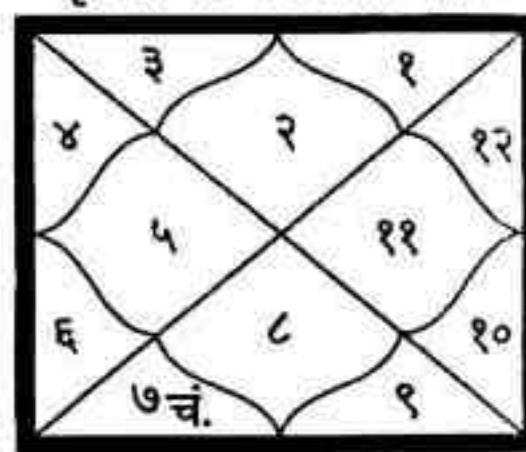
जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे चंद्रमा का फलादेश आगे समझना चाहिए—

वृष लग्न: अष्टमभाव: चंद्रमा
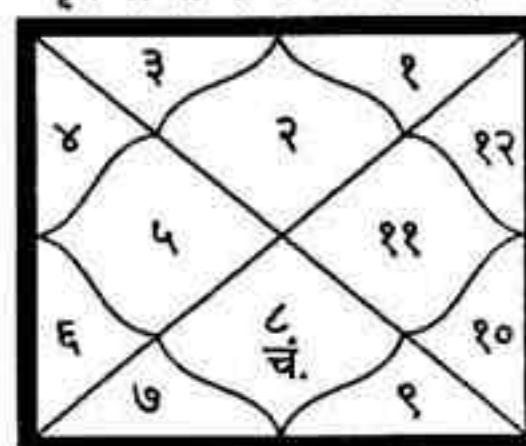
२३१

आठवें मृत्यु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व के संबंध में लाभ प्राप्त होगा, परंतु पराक्रम स्थान कमजोर हो जाने के कारण पुरुषार्थ एवं भाई-बहन के सुख में कमी बनी रहेगी। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं दृष्टि से अपने मित्र बुध की मिथुन राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अत: जातक को धन तथा कुटुंब के संबंध में कुछ सफलता प्राप्त होगी, परंतु उसके लिए उसे विशेष परिश्रम करना पड़ेगा।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' की फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: नवमभाव: चंद्रमा

२३२
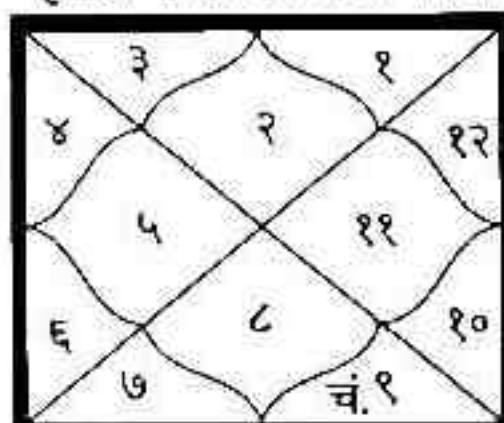
नवें त्रिकोण तथा भाग्य भवन में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक को भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है। साथ ही भाई-बहन का सहयोग भी मिलता है। फलत: जातक भाग्यवान एवं धर्मात्मा समझा जाता है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं दृष्टि से कर्क राशि के स्वक्षेत्र में तृतीयभाव को भी देखता है, अत: उसे भाई-बहन तथा पराक्रम के क्षेत्र में भी विशेष शक्ति प्राप्त होती है। ऐसी ग्रह स्थिति का जातक उद्योगी, स्फूर्तिवान, हिम्मतवर तथा प्रसन्न स्वभाव वाला होता है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: दशमभाव: चंद्रमा

२३३

दसवें केंद्र, राज्य तथा पिता के भवन में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक का अपने पिता के साथ थोड़ा मतभेद बना रहता है तथा राजकीय क्षेत्र में कठिन परिश्रम के द्वारा सफलता प्राप्त होती है, परंतु भाई-बहन के सुख एवं पराक्रम की सहज वृद्धि होती रहती है। इस स्थान से चंद्रमा की सातवीं दृष्टि अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि वाले चतुर्थ भवन में पड़ती है, अत: जातक को माता, भूमि, मकान आदि का सुख भी प्राप्त होता है और पुरुषार्थ द्वारा घरेलू सुख में भी वृद्धि होती है।
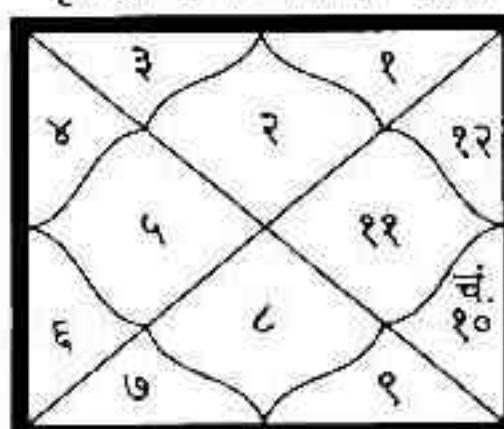
जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
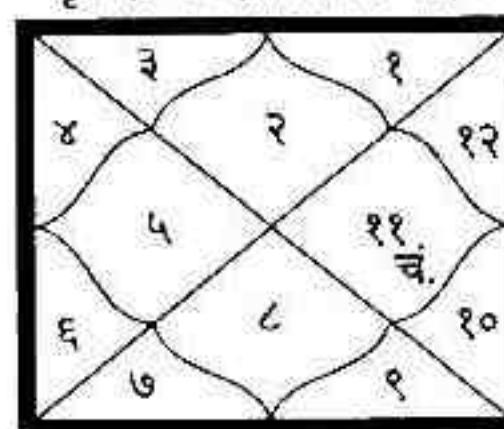
ग्यारहवें लाभ एवं आमदनी के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक को आय के क्षेत्र में अपने पुरुषार्थ द्वारा बड़ी सफलता प्राप्त होती है। साथ ही भाई-बहन एवं पराक्रम का लाभ भी मिलता है। उन्नति करने के लिए उसके विचारों में निरंतर परिवर्तन होता रहता है तथा उसे इच्छित संपत्ति एवं ऐश्वर्य प्राप्त होते रहते हैं। इसी स्थान से चंद्रमा सातवीं दृष्टि से अपने मित्र बुध की कन्या राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः जातक को विद्या, बुद्धि एवं संतान के पक्ष में सफलता प्राप्त होती रहेगी। ऐसा जातक विद्वान, बुद्धिमान तथा मधुरभाषी होता है।

वृष लग्नः एकादशभावः चंद्रमा

२३४

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्नः द्वादशभावः चंद्रमा

२३५

बारहवें व्यय-स्थान में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहेगा तथा बाहरी स्थानों के संबंध से उसे शक्ति प्राप्त होगी। साथ ही भाई-बहन के सुख एवं पराक्रम की भी हानि होगी। इस स्थान से चंद्रमा अपनी सातवीं दृष्टि से अपने सामान्य मित्र शुक्र की तुलाराशि में षष्ठभाव को देख रहा है, अतः जातक शत्रु पक्ष एवं झगडे-झंझट के मामलों में बड़ी युक्तियों से काम लेकर सफलता प्राप्त करेगा।
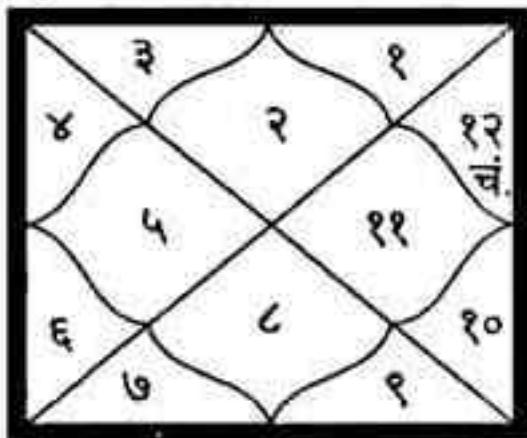
'वृष' लग्न में 'मंगल' का फल

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केंद्र तथा शरीर स्थान में अपने सामान्य मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को शारीरिक-शक्ति का लाभ होता है तथा बाहरी स्थानों से अच्छे संबंध स्थापित होते हैं। परंतु मंगल के व्ययेश होने के कारण धातुक्षीणता, रक्त विकार, निर्बलता आदि की शिकायत भी रहती है। यहां से मंगल अपनी चौथी मित्रदृष्टि से माता एवं भूमि के भवन को देखता है, अतः माता एवं भूमि के सुख में कमी रहती है। सातवीं दृष्टि से सप्तम केंद्र भाव को स्वक्षेत्र में देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सुख प्राप्त होता है और आठवीं मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखने के कारण आयु एवं पुरातत्त्व संबंधी कठिनाइयां तथा हानियां उपस्थित होती रहती हैं।
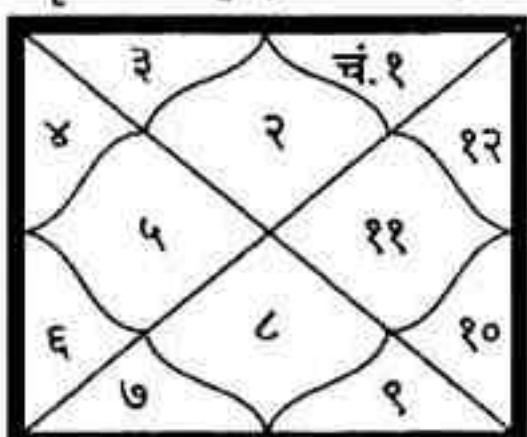
वृष लग्नः प्रथमभावः मंगल

२३६

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: द्वितीयभाव: मंगल

२३७
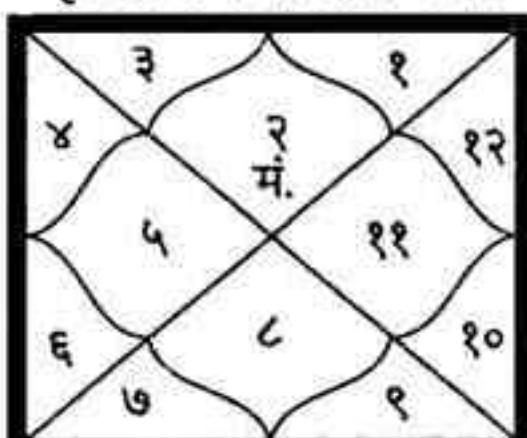
दूसरे धन एवं कुटुंब के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुंब के संबंध में परेशानियां बनी रहती हैं, साथ ही स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष में भी कठिनाइयां आती हैं, परंतु बाहरी संबंधों से लाभ होता है। यहां से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखता है, अतः विद्या, बुद्धि एवं संतान के पक्ष में हानि उठानी पड़ती है। सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखता है, अतः आयु एवं पुरातत्त्व के संबंध में भी हानि एवं चिंताओं का सामना करना पड़ता है। आठवीं उच्चदृष्टि से नवमभाव को देखता है, अतः भाग्य एवं धर्म की वृद्धि होती रहती है और जातक भाग्यवान समझा जाता है।
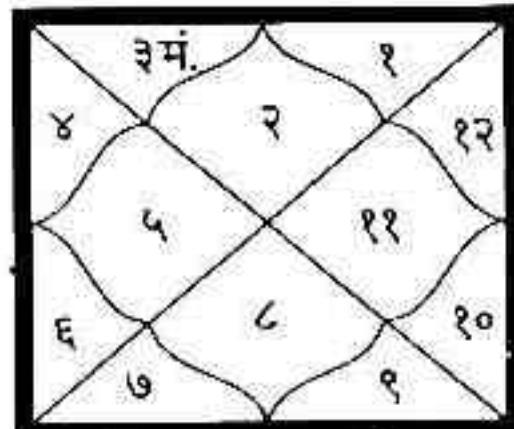
जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो, और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: तृतीयभाव: मंगल

२३८

तीसरे पराक्रम एवं भाई के भवन में अपने मित्र चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित नीच के मंगल के प्रभाव से जातक को पराक्रम तथा भाई बहन के पक्ष में हानि उठानी पड़ती है, साथ ही स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी हानि एवं कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। यहां से मंगल की चौथी शत्रुदृष्टि षष्ठभाव में पड़ती है, अतः जातक के शत्रु नष्ट हो जाते है। सातवीं उच्चदृष्टि नवमभाव में पड़ती है, अतः भाग्य एवं धर्म की वृद्धि होती है और आठवीं शत्रु दृष्टि दशमभाव में पड़ने से जातक को पिता तथा राज्य के पक्ष से हानि एवं परेशानियों का सामना करना पड़ता है। साथ ही उनकी मान-प्रतिष्ठा एवं उन्नति के क्षेत्र में भी रुकावटें आती रहती हैं।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: चतुर्थभाव: मंगल

२३९
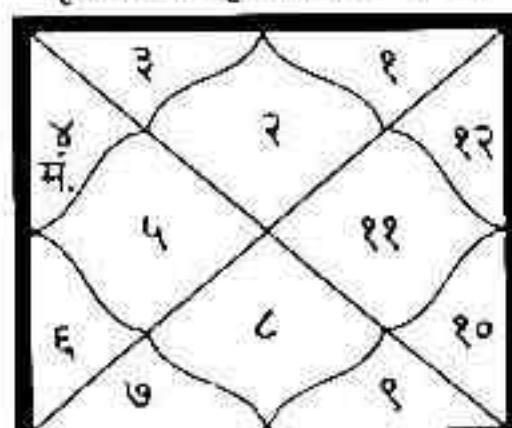
चौथे केंद्र, माता तथा सुख स्थान में अपने सूर्य की सिंह राशि में स्थित व्ययेश मंगल के प्रभाव से जातक को माता के सुख एवं भूमि-मकान आदि के संबंध में हानि प्राप्त होती है तथा घरेलू सुख में भी अशांति का वातावरण बनता है। यहां से मंगल चौथी दृष्टि से स्वक्षेत्र में सप्तमभाव को देखता है, अतः जातक को स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष में सफलता मिलती है। खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से उन्नति प्राप्त होती है। सातवीं शत्रुदृष्टि के दशमभाव में पड़ने से पिता एवं
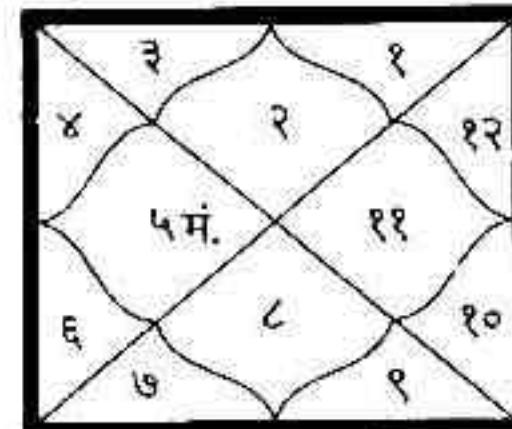
राज्य के पक्ष में हानि होती है तथा आठवीं मित्रदृष्टि से लाभ स्थान को देखने से आमदनी के साधनों में वृद्धि होती है, परंतु बाहरी स्थानों के संबंध से देर में लाभ मिलने का योग बनता है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: पंचमभाव: मंगल

२४०
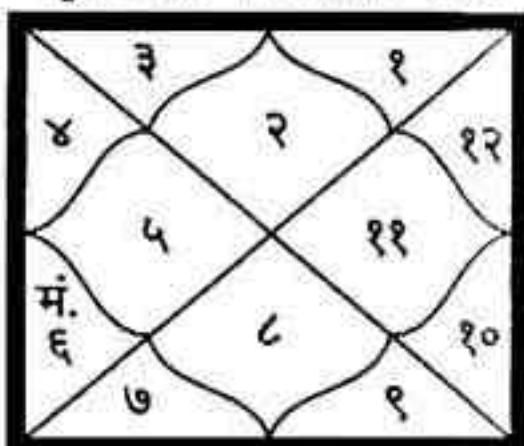
पांचवें त्रिकोण, विद्या एवं संतान के भाव में अपने मित्र बुध की वृष राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि तथा संतान के क्षेत्र में हानि एवं चिंता के योग उपस्थित होते हैं। साथ ही मंगल के व्ययेश होने के कारण स्त्री-पक्ष से असंतोष रहता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाई के साथ सफलता मिलती है। यहां से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखता है, अत: जातक को आयु एवं पुरातत्त्व के संबंध में हानि के अवसर उपस्थित होते हैं। सातवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ होता है तथा आठवीं दृष्टि से द्वादशभाव को स्वराशि में देखने के कारण खर्च की अधिकता रहती है तथा परिश्रम एवं खर्च के द्वारा व्यवसाय में वृद्धि होती है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: षष्ठभाव: मंगल

२४१

छठे शत्रु तथा रोग स्थान में सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक अपने शत्रु पक्ष पर प्रबल बना रहता है परंतु व्ययेश होने के कारण वह स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में चिंता तथा हानियों का शिकार बनता है। यहां से मंगल चौथी उच्चदृष्टि से नवमभाव को देखता है अत: जातक के भाग्य एवं धर्म की वृद्धि होती है। सातवीं दृष्टि से द्वादशभाव को स्वराशि में देखने के कारण खर्च अधिक होगा, परंतु बाहरी स्थानों के संबंध से शक्ति प्राप्त होगी। साथ ही आठवीं शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देख रहा है, अत: शरीर में कमजोरी बनी रहेगी। वीर्य-विकार तथा रक्त विकार के दोष भी उत्पन्न होंगे।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: सप्तमभाव: मंगल

२४२

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में स्वक्षेत्री मंगल की स्थिति के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में शक्ति प्राप्त होने पर भी मंगल के व्ययेश होने के कारण कुछ कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ेगा, परंतु बाहरी स्थानों के संबंध से सफलता मिलेगी, साथ ही खर्च भी अधिक रहेगा। यहां से मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखता है, अतः पिता एवं राज्य के संबंध में कठिनाइयां उत्पन्न होंगी तथा व्यवसाय में दिक्कतें आएंगी। सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण शरीर में कुछ दुर्बलता रहेगी तथा आठवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण धन एवं कुटुंब के संबंध में भी चिंता, कठिनाई एवं परेशानियों का सामना करना पड़ेगा।
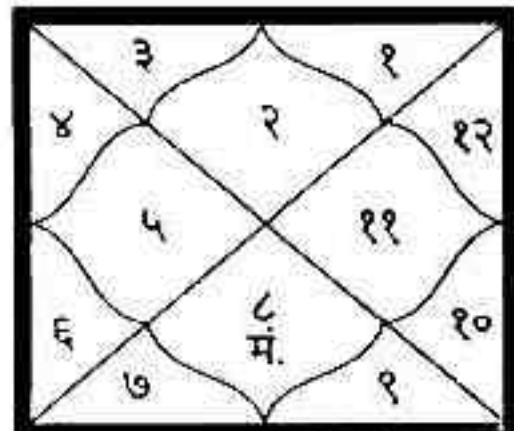
जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: अष्टमभाव: मंगल

२४३

आठवें मृत्यु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र मंगल की धनु राशि पर स्थित व्ययेश मंगल के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में बहुत मुसीबत एवं हानियों का सामना करना पड़ता है और अपने स्थान से हटकर परदेश में आजीविका उपार्जित करनी होती है। साथ ही पुरातत्त्व संबंधी हानि भी उठानी पड़ती है। यहां से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखता है, अतः विदेश से धन का लाभ होगा। सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीयभाव को देखता है, अतः धन तथा कुटुंब के संबंध में परेशानी रहेगी एवं आठवीं नीचदृष्टि से तृतीयभाव को देखता है, अतः पराक्रम तथा भाई बहन के सुख में भी कमी रहेगी। संक्षेप में, जातक की आर्थिक उन्नति परदेश में जाकर रहने पर ही होती है।

जिस जातक-जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: नवमभाव: मंगल

२४४
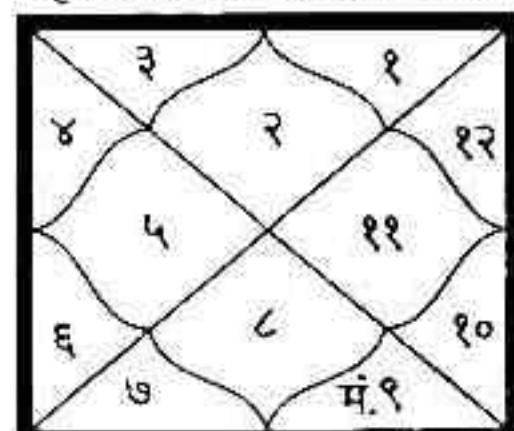
नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित उच्च के मंगल के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष से लाभ होता है तथा भाग्य की शक्ति से व्यवसाय में भी उन्नति होती है और धर्म में भी आस्था रहती है। यहां से मंगल की चौथी दृष्टि स्वराशि वाले द्वादशभाव में पड़ती है, अतः खर्च अधिक रहेगा तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ होगा। सातवीं नीचदृष्टि तृतीयभाव में पड़ने से भाई बहन के सुख तथा पराक्रम में कमी रहेगी। आठवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि, मकान तथा घरेलू सुख में भी कुछ कमी इसलिए बनी रहेगी कि मंगल व्ययेश होने का भी दोषी है।
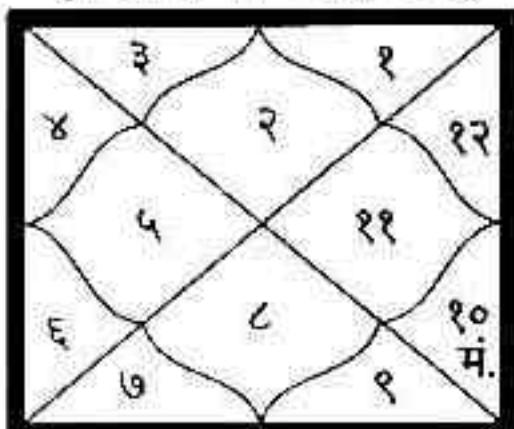
जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए-

वृष लग्नः दशमभावः मंगल

२४५

दसवें केंद्र, राज्य तथा पिता के भवन में अपने शत्रु शनि की कुंभ राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को पिता तथा राज्य के संबंध में हानि तथा परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। साथ ही स्त्री-पक्ष में प्रभाव की अधिकता होने पर भी कुछ कटुता बनी रहेगी एवं बाहरी स्थानों के संबंध से व्यवसाय में उन्नति प्राप्त होगी। यहां से मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखता है, अतः शरीर में कमजोरी तथा रक्त-विकार आदि रोग रहेंगे। सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि तथा घरेलू सुख में कमी रहेगी। आठवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण संतानपक्ष में कुछ अनबन रहा करेगी, परंतु सम्मान की वृद्धि होगी।
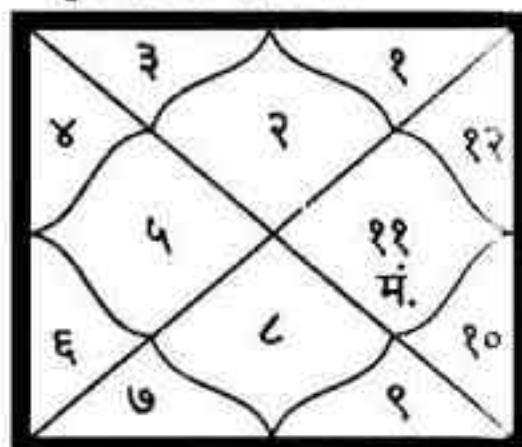
जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए-

वृष लग्नः एकादशभावः मंगल

२४६

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र गुरु की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक की आमदनी में वृद्धि होती है तथा स्त्री-पक्ष से भी लाभ मिलता है। बाहरी स्थानों के संबंध से उन्नति होती है परंतु मंगल के व्ययेश होने के कारण स्त्री तथा आय के पक्ष में कुछ असंतोष भी रहता है। यहां से मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से द्वितीयभाव को देखता है, अतः धन-कुटुंब के पक्ष में कुछ हानि तथा परेशानी प्राप्त होगी। सातवीं शत्रुदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण विद्या तथा संतान के पक्ष में कमजोरी रहेगी एवं आठवीं सम-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु पक्ष में प्रभाव बना रहेगा। ऐसा जातक बहुत स्वार्थी तथा चालाक होता है।
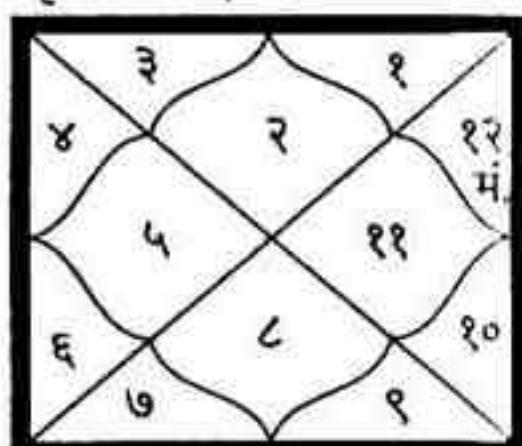
जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए-

बारहवें व्ययभाव में स्वराशि मेष पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से शक्ति प्राप्त होती रहती है, परंतु मंगल के स्त्री भवन के अधिपति होने एवं व्ययेश होकर स्वक्षेत्र में बैठने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सामान्य सफलता प्राप्त होती है। यहां से मंगल चौथी नीचदृष्टि से तृतीयभाव को देखता है, अतः पराक्रम एवं भाई-बहन के सुख में न्यूनता रहेगी। सातवीं दृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु पक्ष में प्रभाव बना रहेगा एवं आठवीं दृष्टि से सप्तमभाव को स्वराशि में देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में हानिकारक होते हुए भी थोड़ी-बहुत शक्ति देता रहेगा।
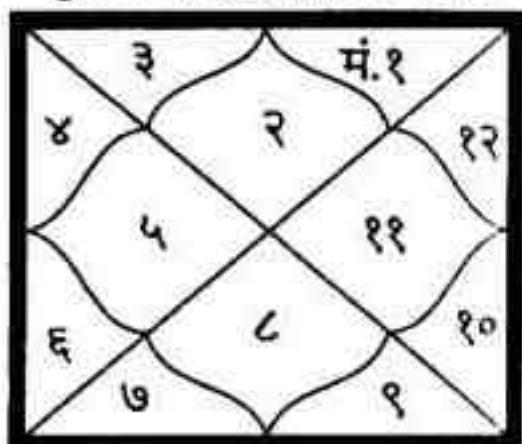
वृष लग्नः द्वादशभावः मंगल

२४७
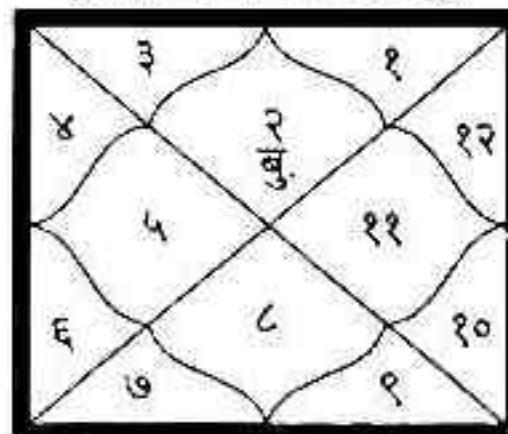
'वृष' लग्न में 'बुध' का फल

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए:

वृष लग्न: प्रथमभाव: बुध

२४८

पहले केंद्र तथा शरीर भवन में अपने मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक का शरीर सुंदर होता है और वह उद्योग द्वारा मान-प्रतिष्ठा, यश, धन, संतान तथा कुटुंब की श्रेष्ठ शक्ति को प्राप्त करता है। बुध के मित्र भाव में स्थित होने के कारण जातक को श्रेष्ठ बुद्धि एवं प्रसन्नता प्राप्त होती है। यहां से बुध सातवीं दृष्टि से सप्तमभाव को अपने सामान्य मित्र मंगल की वृश्चिक राशि में देखता है, अत: उसे स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में भी सहयोग, सफलता एवं उन्नति प्राप्त होती है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए:

वृष लग्न: द्वितीयभाव: बुध

२४९

दूसरे धन व कुटुंब के भाव में अपनी मिथुन राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुंब की श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त होती है, परंतु उसे संतान पक्ष से कुछ परेशानी बनी रहती है। यहां से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखता है, अत: जातक को आयु की उन्नति एवं पुरातत्त्व का लाभ प्राप्त होता है। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक भाग्यवान होता है और ऐश्वर्यशाली जीवन व्यतीत करता है।
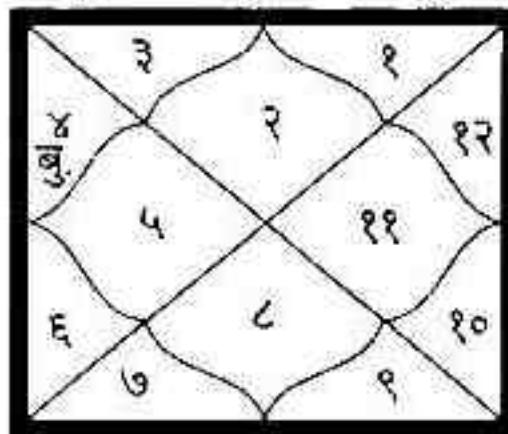
जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए:

वृष लग्न: तृतीयभाव: बुध

२५०

तीसरे पराक्रम एवं सहोदर के स्थान में चंद्रमा की राशि पर बैठे हुए बुध के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहनों का सुख मिलता है। साथ ही वह अपने पुरुषार्थ द्वारा धन उपार्जित करता है तथा पारिवारिक सुख को प्राप्त करता है। यहां से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखता है, अत: जातक के भाग्य की वृद्धि होती है और धर्म की ओर रुचि बनी रहती है। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक उद्यमी, परिश्रमी, पराक्रमी, साहसी, विद्वान, धनवान, धर्मात्मा तथा सज्जन होता है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए:

चौथे केंद्र, माता एवं सुख के स्थान में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा मकान का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। वह विवेकी, गंभीर, विद्वान तथा बुद्धिमान होता है और विद्या के द्वारा धन का संग्रह करता है, संतान एवं कुटुंब के सुख को प्राप्त करता है। यहां से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखता है, अतः जातक को पिता तथा राज्य द्वारा भी यथेष्ट लाभ हंाता है, व्यवसाय में उन्नति होती हैं और राज-समाज में यश तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।

वृष लग्नः चतुर्थभावः बुध

२५१

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पांचवें त्रिकोण एवं विद्या-बुद्धि के स्थान में स्वराशि कन्या स्थित उच्च के बुध के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि एवं संतान के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त होती है तथा बुद्धि द्वारा धन की भी अधिकता रहती है। इसी प्रकार उसे कुटुंब का भी सुख मिलता है। यहां से बुध सातवीं नीचदृष्टि से अपने मित्र गुरु की मीन राशि में एकादशभाव को देखता है, अतः जातक को आमदनी के क्षेत्र में कमी का अनुभव होगा, परंतु विद्या एवं संतानपक्ष की सहायता से धन की वृद्धि होगी तथा बुद्धि-बल से प्रतिष्ठा भी प्राप्त होती रहेगी।

वृष लग्नः पंचमभावः बुध

२५२

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु स्थान में अपने मित्र शुक्र की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को शत्रु पक्ष द्वारा अशांति का सामना करना पड़ेगा, परंतु बुद्धियोग से उसे कुछ सफलता भी मिलेगी। इसी प्रकार कौटुंबिक एवं संतानपक्ष के सुख में भी कुछ कष्ट, मतभेद एवं परेशानी का योग बना रहेगा। यहां से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को मंगल की मेष राशि में देखता है, अतः खर्च की अधिकता रहेगी तथा बाहरी स्थानों के संबंध से धन एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती रहेगी।
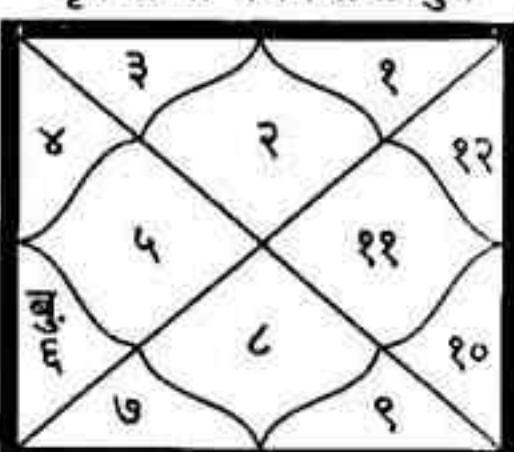
वृष लग्नः षष्ठभावः बुध

२५३

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: सप्तमभाव: बुध

२५४
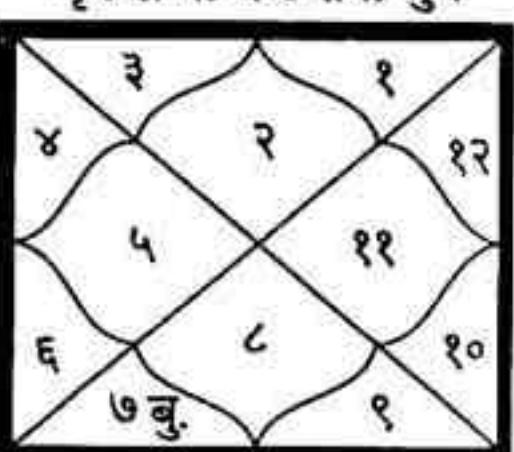
सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र **शुक्र की तुला राशि** पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को बुद्धिमती **स्त्री की प्राप्ति** होगी तथा व्यवसाय में भी सफलता प्राप्त **होगी। धन,** विद्या एवं संतानपक्ष से सुख प्राप्त होता रहेगा **तथा कौटुंबिक** सुख भी यथेष्ट मात्रा में प्राप्त होगा। यहां **से बुध सातवीं** दृष्टि से प्रथमभाव को अपने मित्र शुक्र की **वृष राशि** में देखता है, अतः जातक का शरीर सुंदर होगा **और उसे** यश, मान, बुद्धि, विवेक, धन एवं सफलता की **निरंतर प्राप्ति** होती रहेगी।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में **'बुध' की** स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: अष्टमभाव: बुध

२५५
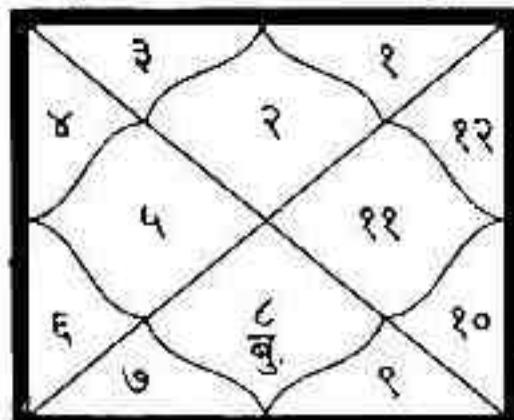
आठवें मृत्यु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र **गुरु की** धनु राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक **को आयु** एवं पुरातत्त्व का लाभ होगा तथा धन की संग्रह **शक्ति में** वृद्धि होगी। परंतु कौटुंबिक सुख, विद्या एवं **संतान के** पक्ष में परेशानियों का अनुभव होगा। **साथ ही जातक** का रहन-सहन ऐश्वर्यशाली होगा। **यहां** से बुध **सातवीं दृष्टि** से द्वितीयभाव को स्वराशि मिथुन में देखता **है, अतः** जातक को धन में वृद्धि के लिए कठिन परिश्रम **करना पड़ेगा** तथा कौटुंबिक सुख भी अल्प मात्रा में प्राप्त **होगा।**

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'बुध' **की स्थिति** हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: नवमभाव: बुध

२५६

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने मित्र **शनि की मकर** राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक **अपनी बुद्धि के** योग से भाग्य तथा धन की वृद्धि करेगा। **साथ ही धर्म**, विद्या, संतान एवं कौटुंबिक सुखों को भी **प्राप्त करेगा।** इस स्थान से बुध सातवीं दृष्टि से चंद्रमा की **कर्क राशि** में तृतीयभाव को देखता है, अतः जातक को **भाई-बहन** एवं पराक्रम की शक्ति विशेष रूप से प्राप्त **होगी।** संक्षेप में ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक धनी, सुखी **तथा** ऐश्वर्यशाली जीवन व्यतीत करता है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में **'बुध'** की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्नः दशमभावः बुध

२५७
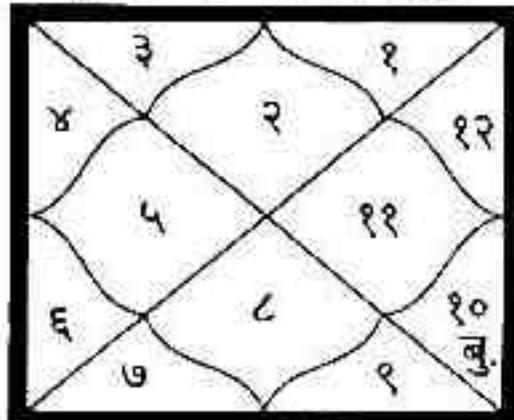
दसवें केंद्र, राज्य एवं पिता के भवन में अपने मित्र शनि की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को पिता एवं राज्य के पक्ष से विशेष शक्ति एवं सम्मान की प्राप्ति होगी। साथ ही वह अपनी बुद्धि के उपयोग द्वारा व्यवसाय से धन एवं संतानपक्ष से सुख प्राप्त करेगा। उसका पारिवारिक जीवन भी आनंदमय बना रहेगा। इस स्थान से बुध सातवीं दृष्टि से चुतर्थभाव को अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि में देखता है, अत: जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख भी प्राप्त होगा तथा घरेलू वातावरण भी सुंदर तथा सुखद बना रहेगा।
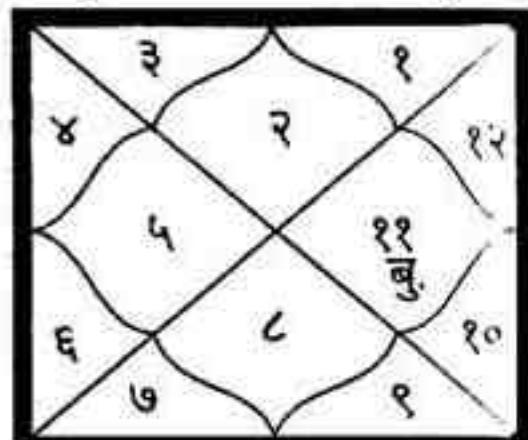
जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए-

वृष लग्नः एकादशभावः बुध

२५८

ग्यारहवें लाभ एवं आय के स्थान में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित नीच के बृहस्पति के प्रभाव से जातक को आमदनी के क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा तथा धन के संचय में भी कमी बनी रहेगी। कुटुंब, विद्या एवं संतानपक्ष से भी अल्प लाभ मिलेगा एवं दूसरी चिंताओं के कारण मस्तिष्क में परेशानी बनी रहेगी। यहां से बुध सातवीं दृष्टि से अपनी कन्या राशि में पंचमभाव को देखता है, अत: जातक को विद्या की शक्ति प्राप्त होगी और इसी के बल से संतानपक्ष भी प्रबल बना रहेगा।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्नः द्वादशभावः बुध

२५९
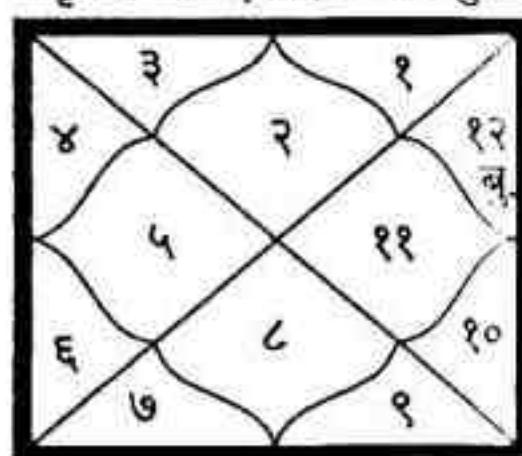
बारहवें व्ययभाव में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहेगा परंतु बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ होता रहेगा। साथ ही विद्या, संतान धन तथा कुटुंब के पक्ष से भी असंतोष बना रहेगा। विशेषकर संतान के पक्ष में हानि उठानी पड़ेगी। यहां से बुध सातवीं दृष्टि से अपने मित्र शुक्र की तुला राशि में षष्ठभाव को देखता है, अत: जातक शत्रु-पक्ष में अपने बुद्धि-बल से सफलता प्राप्त करता रहेगा।
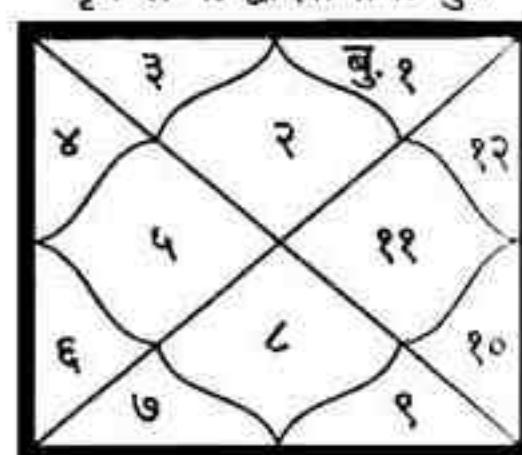
'वृष' लग्न में 'गुरु' का फल

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केंद्र तथा शरीर स्थान में अपने शत्रु शुक्र की राशि पर स्थिति गुरु के प्रभाव से जातक को शारीरिक परिश्रम द्वारा लाभ प्राप्त होगा तथा आयु एवं पुरातत्त्व के संबंध में भी उन्नति होगी। यहां से गुरु पांचवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखता है, अतः संतानपक्ष में कुछ लाभ-तथा कुछ परेशानी रहेगी एवं विद्या-बुद्धि का लाभ मिलेगा। सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखता है, अतः स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष में त्रुटि पूर्ण सफलता मिलेगी तथा नवीं शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखता है, अतः भाग्य एवं धर्म के क्षेत्र में कुछ त्रुटि बनी रहेगी। ऐसा जातक शारीरिक रूप से कुछ परेशान रहता है तथा परिश्रम द्वारा लाभ एवं उन्नति को प्राप्त करता है।

वृष लग्नः प्रथमभावः गुरु

२६०
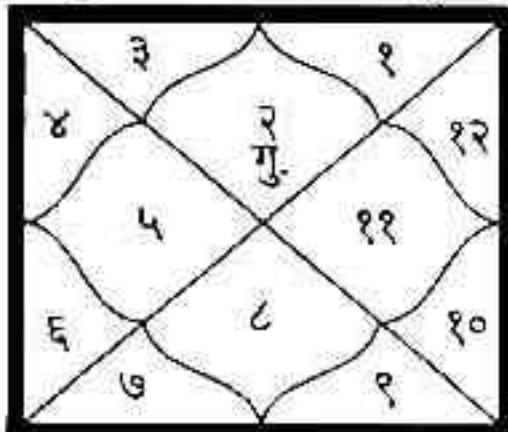
जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'गुरु' की स्थिति, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन तथा कुटुंब के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुंब की शक्ति कुछ कठिनाइयों के साथ प्राप्त होती है। यहां से गुरु सातवीं दृष्टि से स्वक्षेत्र अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का भी कुछ लाभ मिलता है। पांचवीं दृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु पक्ष में प्रभाव स्थापित होता है तथा नवीं दृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण पिता से वैमनस्य एवं राज्य संबंध में सामान्य सफलता मिलती है। ऐसा जातक अपने व्यवसाय की उन्नति के लिए विशेष परिश्रम करता है तथा प्रतिष्ठित होता है।

वृष लग्नः द्वितीयभावः गुरु

२६१

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे पराक्रम एवं भाई के स्थान में अपने मित्र चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित उच्च के बृहस्पति के प्रभाव से जातक के पराक्रम एवं भाई बहनों के सुख में वृद्धि होती है। यहां से गुरु नवीं दृष्टि से लाभ भवन के स्वक्षेत्र में देखता है, अतः जातक को आमदनी खूब होती है। पांचवीं मित्र-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता एवं उन्नति प्राप्त होती है। साथ ही आयु की वृद्धि तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है। सातवीं नीचदृष्टि से नवमभाव में देखने के कारण भाग्य में कुछ कमजोरी आती है तथा धार्मिक भावना की भी कमी बनी रहती है।

वृष लग्नः तृतीयभावः गुरु
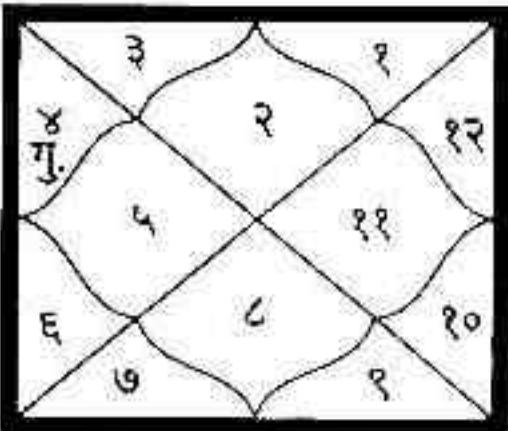
२६२

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्नः चतुर्थभावः गुरु

२६३

चौथे केंद्र, माता तथा सुख भवन में अपने मित्र सूर्य की राशि पर स्थित अष्टमेश गुरु के प्रभाव से जातक को माता के सुख में कमी रहती है तथा लाभेश होने के कारण भूमि, मकान, संपत्ति एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। यहां से गुरु पांचवीं दृष्टि से अष्टमभाव को स्वराशि में देखता है, अतः आयु की वृद्धि होती है, परंतु पारिवारिक सुख में कुछ विघ्न उपस्थित होते हैं। सातवीं दृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण पिता, राज्य एवं प्रतिष्ठा के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है। नवीं दृष्टि से व्यवसाय को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ प्राप्त होता है, परंतु खर्च आमदनी से हमेशा अधिक बना रहता है।
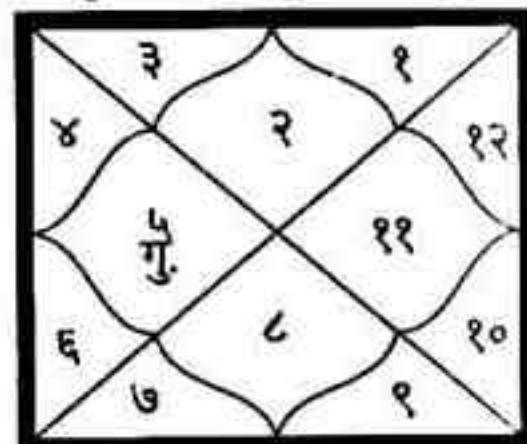
जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्नः पंचमभावः गुरु

२६४

पांचवें त्रिकोण एवं विद्या-बुद्धि संतान के स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि, एवं संतान के पक्ष में विशेष सफलता प्राप्त होती है। गुरु के अष्टमेश होने के कारण संतानपक्ष से बाधाएं मिलती हैं, परंतु लाभेश होने के कारण लाभ भी रहता है। साथ ही आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ भी होता है। यहां से गुरु अपनी, पंचम नीचदृष्टि से नवमभाव को देखता है, अतः भाग्य एवं धर्म के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है। सातवीं दृष्टि से एकादशभाव को स्वराशि में देखने के कारण बुद्धि से लाभ खूब होता है तथा नवीं शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण आजीविका तथा लाभ के लिए शारीरिक परिश्रम अधिक करना पड़ता है। ऐसा जातक देखने में भला, स्वार्थ-साधन में चतुर, दीर्घायु तथा धनी होता है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्नः षष्ठभावः गुरु

२६५
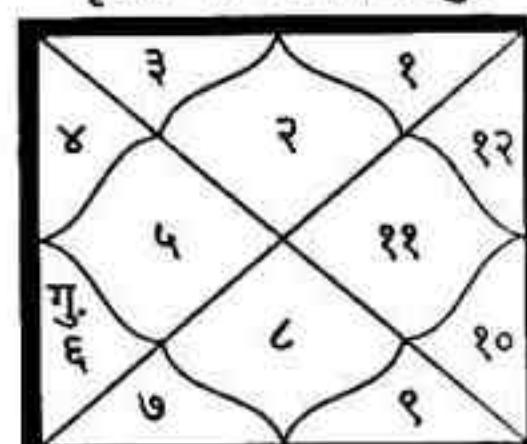
छठे शत्रु रोग भवन में अपने शत्रु शुक्र की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष में बुद्धिमानी से सफलता प्राप्त करता है, परंतु लाभ के मामले में कुछ कमी रहती है। अष्टमेश होने के कारण आयु तथा पुरातत्त्व के पक्ष में हानि रहती है। इस स्थान से गुरु पांचवीं शत्रु दृष्टि से दशमभाव को देखता है, अतः पिता, व्यवसाय एवं
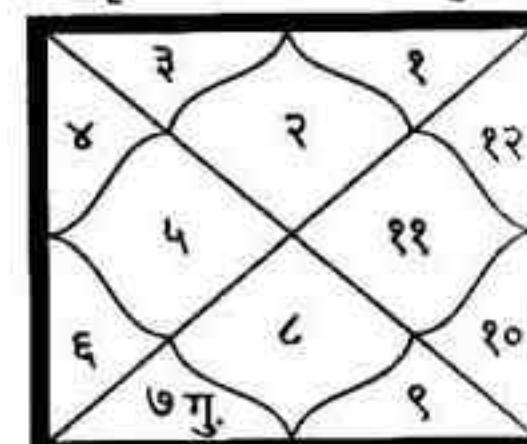
[illegible] के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ लाभ होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से व्ययभाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से लाभ मिलता है एवं नवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण धन-संचय के लिए विशेष परिश्रम करने पर सफलता प्राप्त होती है तथा कौटुंबिक पक्ष में भी कठिनाइयां आती रहती हैं।
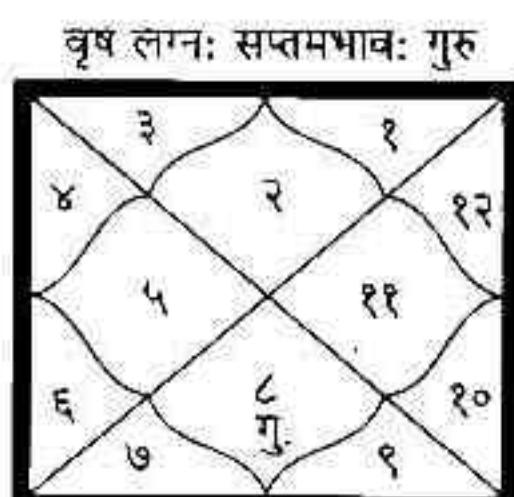
जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्नः सप्तमभावः गुरु

२६६

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयां उपस्थित होती हैं, परंतु आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। इस स्थान से गुरु पांचवीं दृष्टि से स्वराशि में एकादशभाव को देखता है, अतः आमदनी का अच्छा योग बना रहता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखता है, अतः शरीर में थकान और दुर्बलता बनी रहती है तथा नवीं उच्चदृष्टि से तृतीयभाव को देखता है, अतः भाई-बहन के सुख, धैर्य तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति स्वार्थी, धन संचयी तथा ऊपर से देखने में सज्जन होता है।
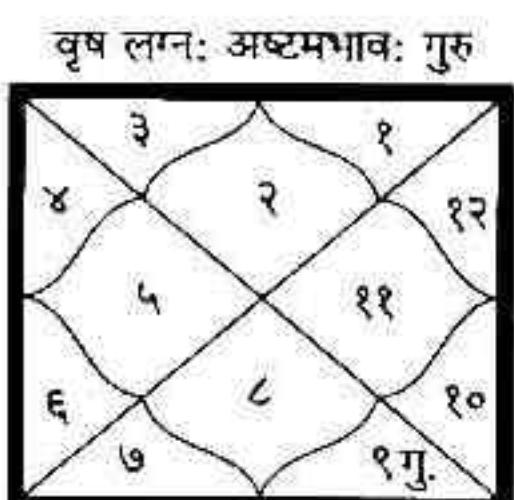
जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्नः अष्टमभावः गुरु

२६७

आठवें मृत्यु, आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपनी शत्रु राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ मिलता है, परंतु अष्टमेश होने के कारण आय के साधनों में कुछ कठिनाइयां उपस्थित होती रहती हैं। यहां से गुरु पांचवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखता है, अतः खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों से लाभ मिलता है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण परिश्रम द्वारा धन एवं कुटुंब की वृद्धि होती है तथा नवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता के सुख में अष्टमेश होने के कारण कुछ कमी आती है और सुख एवं आमदनी के संबंध में भी कुछ असंतोष बना रहता है, परंतु बाहरी संबंध से धनागम होता रहता है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए–

वृष लग्नः तृतीयभावः शुक्र

तीसरे पराक्रम एवं भाई-बहन के भवन में अपने शत्रु चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहन का सुख भी कुछ वैमनस्य के साथ प्राप्त होता है। यहां से शुक्र सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखता है, अतः जातक भाग्यशाली होता है तथा धर्मपालन में भी रुचि रखता है। संक्षेप में, ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक अपने पराक्रम एवं चातुर्य के बल पर यश, मान-प्रतिष्ठा, धन आदि प्राप्त करता है और अत्यधिक शारीरिक श्रम करने के कारण कभी-कभी थक भी जाता है, परंतु हिम्मत नहीं हारता।

२७

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए–

वृष लग्नः चतुर्थभावः शुक्र

चौथे केंद्र माता, भूमि तथा सुख भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को माता के सुख में कमी तथा भूमि, संपत्ति, मकान आदि के संबंध में भी असंतोष प्राप्त होता है। परंतु समस्त त्रुटियों एवं परेशानियों के बावजूद भी सुख के साधन अवश्य प्राप्त होते रहते हैं तथा शत्रु पक्ष में चतुराई एवं शांति के साथ सफलता मिलती है। यहां से शुक्र सातवीं दृष्टि से दशमभाव को देखता है। अतः पिता राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता, उन्नति, यश एवं सम्मान की प्राप्ति होती है।

२७

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लि अनुसार समझना चाहिए–

वृष लग्नः पंचमभावः शुक्र

२७

पंचम त्रिकोण एवं विद्या-बुद्धि संतान के भवन में नीच राशिस्थ शुक्र के प्रभाव से जातक को विद्या में अपूर्णता तथा संतानपक्ष से कष्ट प्राप्त होता है, परंतु बुद्धियोग एवं गुप्तचातुर्य के बल पर शत्रु-पक्ष में सफलता मिलती है। यहां से शुक्र सातवीं उच्चदृष्टि से एकादशभाव को देखता है, अतः जातक अपने मस्तिष्क की सूझबूझ तथा कठिन परिश्रम द्वारा लाभ के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक शारीरिक सौंदर्य में कमी, मस्तिष्क में परेशानी तथा बुद्धि में असंतोष एवं चिंता के योग प्राप्त करता है।
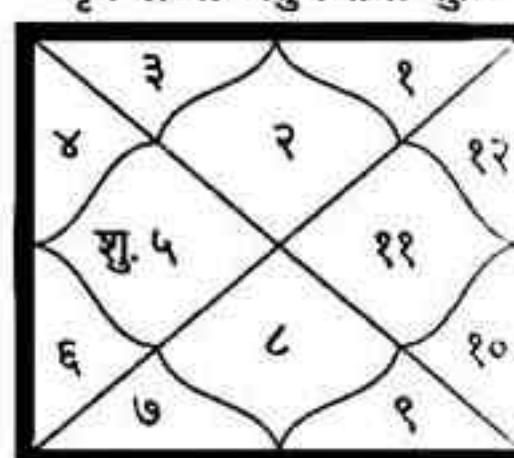
जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'शुक्र की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए–
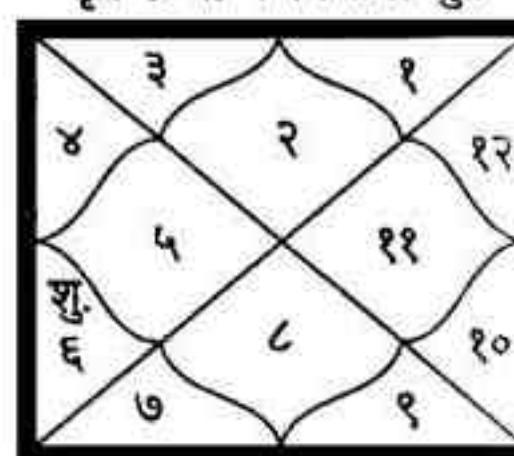
छठे शत्रु तथा रोग भवन में तुला राशिस्थ स्वक्षेत्री शुक्र के प्रभाव से जातक को शारीरिक शक्ति एवं चातुर्य की प्राप्ति होती है, जिससे वह शत्रु पक्ष पर विजय प्राप्त करता है, परंतु शारीरिक सौंदर्य में कुछ कमी, परतंत्रता एवं मामा के पक्ष से लाभ के योग भी बनते हैं। इस स्थान से शुक्र सातवीं दृष्टि से द्वादशभाव को देखता है, अतः खर्च अधिक होता है एवं बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ प्राप्त होता है। शरीर-भवन के स्वामी के षष्ठभाव में बैठ जाने से जातक को शत्रु पक्ष के कारण किसी-न-किसी झंझट में फंसे रहना पड़ता है परंतु वह स्वाभिमानी एवं प्रतापी होता है।

वृष लग्नः षष्ठभावः शुक्र

२७७

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
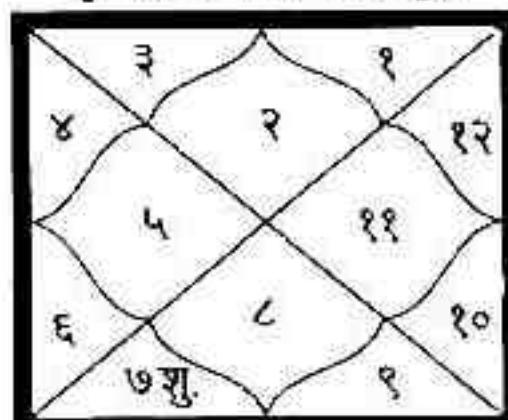
सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित षष्ठेश शुक्र के प्रभाव से जातक को स्त्री के पक्ष से वैमनस्य एवं परेशानी बनी रहती है, परंतु व्यवसाय के क्षेत्र में शारीरिक परिश्रम एवं कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। चातुर्य, गुप्त-युक्ति एवं परेशानियों के साथ इंद्रियभोगादि में भी सफलता प्राप्त होती है। इस स्थान से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक के शरीर में कुछ रोग बना रहेगा, परंतु लौकिक कार्यों को करने में वह बड़ा दक्ष होगा।

वृष लग्नः सप्तमभावः शुक्र

२७८

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें मृत्यु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक के शरीर में रोगादि का कष्ट होगा तथा सौंदर्य में भी कमी रहेगी। आयु की शक्ति प्राप्त होने पर भी पुरातत्त्व के संबंध में कुछ कठिनाई तथा गुप्त-चातुर्य के बल पर ही सफलता प्राप्त होगी। यहां से शुक्र सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखता है, अतः कठिन परिश्रम के द्वारा धन की वृद्धि होगी तथा शत्रु पक्ष से कष्ट, मामा के पक्ष में कमजोरी, उदर विकार एवं प्रभाव में कमी के योग भी उपस्थित होंगे।

वृष लग्नः अष्टमभावः शुक्र

२७९

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
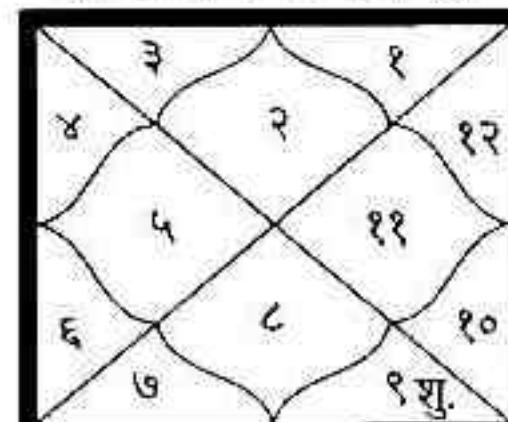
नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक अपने शारीरिक परिश्रम के बल पर भाग्योन्नति करेगा तथा शत्रु पक्ष में भी सफलता प्राप्त करेगा। धर्म के पालन में भी कुछ कठिनाइयों के साथ रुचि लेगा। शरीर में सुंदरता, रोग तथा कठिनाइयों के योग भी उपस्थित होंगे। यहां से शुक्र सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखता है, अत: भाई-बहन के सुख तथा पराक्रम कर शक्ति में भी कुछ परेशानियों के साथ सफलता प्राप्त होगी की ऐसे व्यक्ति को झगड़ों के मामलों में स्वाभाविक रूप में विजय मिलती रहती है।

वृष लग्न: नवमभाव: शुक्र

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केंद्र, राज्य तथा पिता भवन में अपने मित्र शनि की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को पिता के साथ सामान्य वैमनस्य एवं राजकीय तथा व्यावसायिक क्षेत्र में सामान्य कठिनाइयों एवं परिश्रम के द्वारा सफलता और यश की प्राप्ति होगी। साथ ही शत्रु पक्ष पर भी प्रभाव बना रहेगा। यहां से शुक्र सातवीं दृष्टि से चतुर्थभाव को देखता है, अत: जातक अपनी उन्नति की धुन में सुख की चिंता नहीं करेगा। माता तथा भूमि-भवन के पक्ष में भी उसे कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता प्राप्त होगी। संक्षेप में, ऐसा जातक अहंकारी, चतुर, सुखी तथा उन्नति करने वाला होता है।

वृष लग्न: दशमभाव: शुक्र

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ भवन में उच्च राशिस्थ शुक्र के प्रभाव से जातक परिश्रम द्वारा पर्याप्त द्रव्योपार्जन करता है तथा आय के क्षेत्र में विशेष चतुराई एवं अनेक प्रकार के प्रयत्नों से काम चलाता है। उसके शरीर में सुंदरता तथा रोग का निवास रहता है। एवं शत्रु पक्ष से लाभ होता है। यहां से शुक्र सातवीं नीचदृष्टि से पंचमभाव को देखता है, अत: संतानपक्ष में कमी, विद्याध्ययन के पक्ष में लापरवाही तथा सफलता प्राप्ति के लिए असत्य भाषण आदि के योग भी बनते हैं। ऐसा जातक अनेक प्रकार के प्रयत्नों द्वारा श्रेष्ठ लाभ प्राप्त करता है।
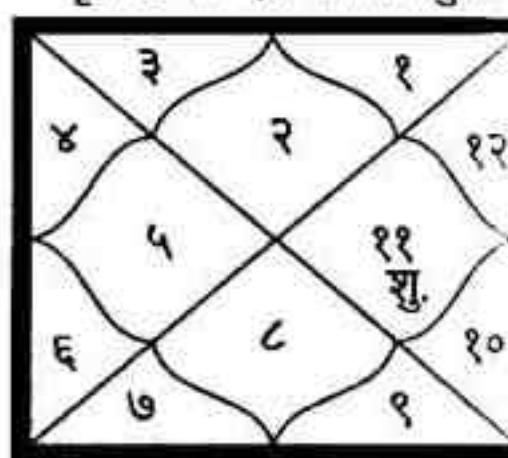
वृष लग्न: एकादशभाव: शुक्र

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्नः द्वादशभावः शुक्र

२८३
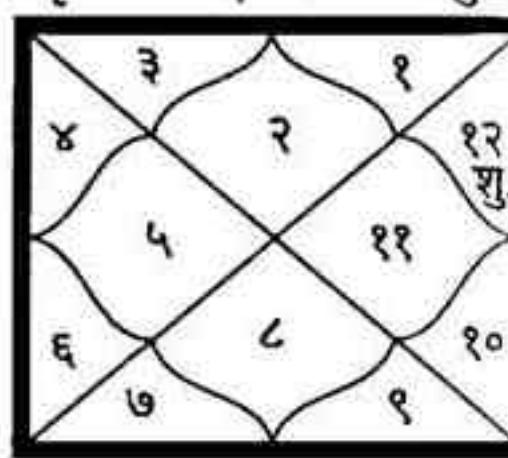
बारहवें व्ययभाव में अपने मित्र मंगल की मेष राशि स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक खूब खर्चीला होता तथा बाहरी स्थानों के संबंध से शक्ति प्राप्त करता है। शरीर में कुछ कमजोरी रहती है, फिर भी वह बहुत [illegible]मी होता है। यहां से शुक्र अपनी सातवीं दृष्टि से [illegible]शि को षष्ठभाव में देखता है, अतः जातक शत्रु पक्ष [illegible] कमजोर बना रहेगा। इसी प्रकार माता का पक्ष कमजोर रहेगा। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक अत्यंत [illegible], रोगी, धनोपार्जन करने में दक्ष तथा शत्रुओं द्वारा हानि [illegible] वाला होता है।

'वृषभ' लग्न में 'शनि' का फल

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'शनि ' [illegible] स्थिति हो, उसे 'शनि ' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्नः प्रथमभावः शनि

२८४
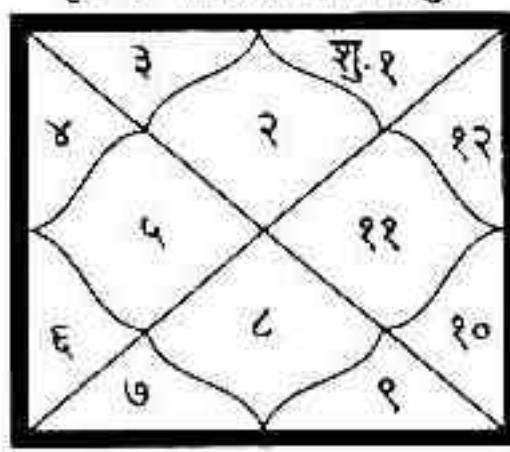
पहले केंद्र, तथा शरीर स्थान में अपने मित्र शुक्र की [illegible] पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक शारीरिक दृष्टि [illegible] सुंदर होता है तथा भाग्यवान समझा जाता है। यहां से [illegible] दसवीं दृष्टि से राज्य एवं पिता भवन को देखता है, [illegible] जातक को पिता द्वारा शक्ति एवं राज्य द्वारा लाभ [illegible] सम्मान की प्राप्ति होती है। इसके साथ ही व्यवसाय [illegible] भी पर्याप्त उन्नति होती है। तीसरी शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव [illegible] देखने के कारण भाई बहनों के सुख में कमी आती [illegible] परंतु पराक्रम अधिक होता है सातवीं शत्रुदृष्टि से [illegible]भाव को देखने के कारण तथा स्त्री व्यवसाय के पक्ष में कठिनाइयों के साथ वृद्धि होती [illegible] ऐसे जातक को शारीरिक शक्ति के कार्यों के विशेष सफलता प्राप्त होती है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में [illegible] ' की स्थिति हो, उसे 'शनि ' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन तथा कुटुंब स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित शनि के प्रभाव [illegible] जातक के धन तथा कुटुंब की वृद्धि होती है, परंतु जातक [illegible] सुख में कुछ कमी आ जाती है और राज्य के क्षेत्र में [illegible]भाव तथा सम्मान की वृद्धि होती है। यहां से शनि दसवीं [illegible]दृष्टि से एकादशभाव को देखता है, अतः आमदनी [illegible] विशेष योग प्राप्त होता है। तीसरी शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव [illegible] देखता है, अतः माता के सुख में कमी होगी तथा सातवीं [illegible]दृष्टि से अष्टमभाव को देखता है, इसलिये आयु के [illegible] में शक्ति प्राप्त होगी। ऐसा जातक धर्म की अपेक्षा [illegible] की वृद्धि में तत्पर बना रहता है।
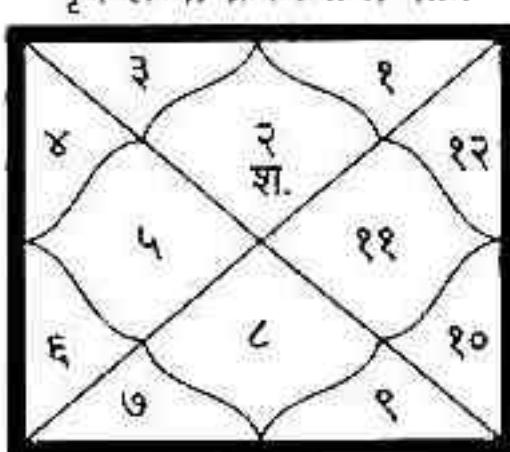
वृष लग्नः द्वितीयभावः शनि
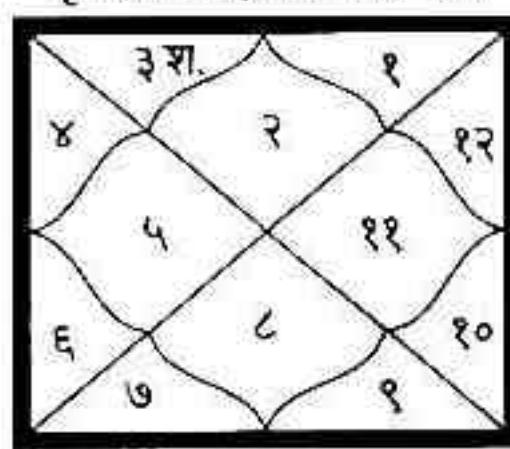
२८५

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

तीसरे पराक्रम एवं भाई-बहन के स्थान में अपने शत्रु चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक का भाई-बहनों के साथ सामान्य वैमनस्य रहेगा, परंतु पराक्रम की विशेष वृद्धि होगी। यहां से शनि सातवीं दृष्टि से नवमभाव को स्वराशि में देखता है, अतः भाग्य की वृद्धि होगी। तीसरी मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण संतान तथा विद्या के क्षेत्र में सफलता मिलेगी तथा दसवीं नीचदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च कम होगा एवं बाहरी स्थानों के संबंध में भी लापरवाही बनी रहेगी। संक्षेप में, ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक भाग्यवान, पुरुषार्थी, उद्योगी तथा प्रभावशाली होता है।

वृष लग्नः तृतीयभावः शनि

२८६
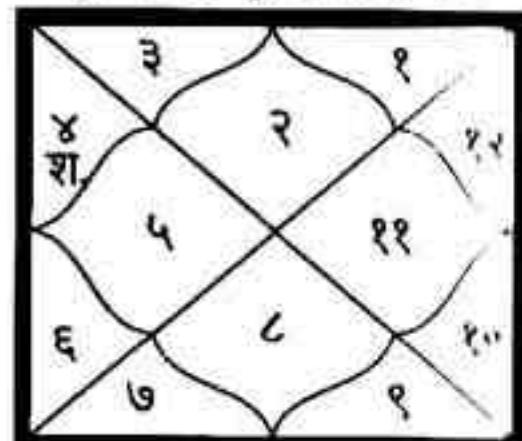
जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

चौथे केंद्र, माता, सुख तथा भूमि के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक का माता के साथ वैमनस्य रहेगा तथा भूमि भवन के सुख में भी कमी बनी रहेगी। यहां से शनि सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले दशम भाव को देखता है, अतः पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता एवं सम्मान की प्राप्ति होगी, परंतु धर्मपालन में कुछ उदासीनता रहेगी। तीसरी उच्चदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु पक्ष में अत्यधिक प्रभाव रहेगा तथा मामा के पक्ष में शक्ति प्राप्त होगी एवं दसवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण शारीरिक प्रभाव एवं सम्मान में वृद्धि होगी तथा जातक प्रतिष्ठित एवं भाग्यवान समझा जाएगा।

वृष लग्नः चतुर्थभावः शनि

२८७

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए--

पांचवें त्रिकोण एवं विद्या, बुद्धि के स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से विद्या, बुद्धि एवं संतान के पक्ष में अत्यधिक सफलता प्राप्त होगी तथा बुद्धियोग से व्यवसाय में सफलता एवं पिता द्वारा स्नेह प्राप्त होगा। यहां से शनि तीसरी दृष्टि से सप्तम भाव को देखता है, अतः स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ असंतोषपूर्ण सफलता मिलेगी। सातवीं शत्रुदृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण आय के साधनों से सामान्य असंतोष रहेगा एवं दसवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण धन-कुटुंब को शक्ति मिलेगी। संक्षेप में ऐसा जातक अपनी बुद्धि एवं वाणी के बल पर यश, प्रतिष्ठा एवं सफलता प्राप्त करता है तथा भाग्यवान होता है।

वृष लग्नः पंचमभावः शनि

२८८

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'शनि ' की स्थिति हो, उसे 'शनि ' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

२८९

छठे शत्रु तथा रोग स्थान में उच्च राशिस्थ शनि के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष में बहुत प्रभावशाली होता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में भी सफलता प्राप्त करता है, पिता से कुछ वैमनस्य रखते हुए शक्ति पाता है तथा [illegible] के लिए धर्माचरण करता है। यहां से शनि तीसरी दृष्टि से अष्टमभाव को देखता है, अतः आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ कुछ चिंताओं के साथ होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च के संबंध में परेशानी रहती है तथा बाहरी स्थानों का संबंध असंतोषजनक रहता है। दसवीं शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण पराक्रम अत्यधिक होता है, जिसके कारण जातक परेशानी का अनुभव भी करता है। वह भाई-बहनों से भी असंतुष्ट रहता है। ऐसा जातक अपने परिश्रम द्वारा भाग्य की विशेष उन्नति करता है।
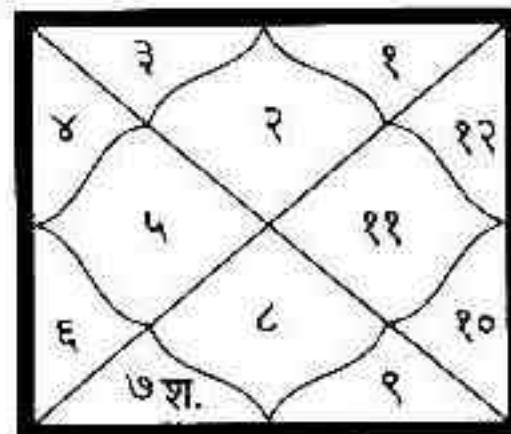
जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'शनि ' की स्थिति हो, उसे 'शनि ' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: सप्तमभाव: शनि

२९०

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के स्थान में अपने शत्रु मंगल की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक व्यवसाय तथा स्त्री के पक्ष में उन्नति एवं सफलता प्राप्त करता है, परंतु शनि के शत्रु राशि पर होने के कारण व्यवसाय तथा कुटुंब के संचालन में कुछ कठिनाइयां भी पाता है। साथ ही पिता द्वारा शक्ति एवं राज्य के क्षेत्र के उन्नति एवं सम्मान प्राप्त करता है। यहां से शनि तीसरी दृष्टि से नवमभाव को स्वराशि में देखता है, अतः भाग्य की शक्ति बलवान होती है। वह धर्म का पालन भी करता है। सातवीं मित्रदृष्टि से लग्नभाव को देखने के कारण शरीर में सौंदर्य एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है और दसवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि एवं मकान आदि के सुख में कुछ कमी का अनुभव होता है, परंतु कुल मिलाकर जातक सुखी और भाग्यशाली बना रहता है।

वृष लग्न: अष्टमभाव: शनि

२९१

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'शनि ' की स्थिति हो, उसे 'शनि ' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
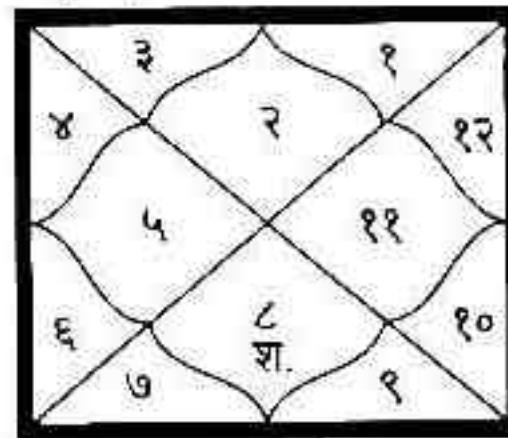
आठवें आयु, मृत्यु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की आयु में कठिनाइयों के साथ वृद्धि होती है भाग्य-स्थान तथा पिता के स्थान में कमी रहती है एवं धर्म का पालन
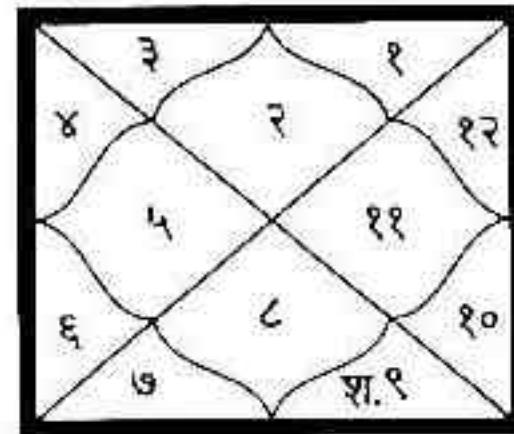
भी यथावत् नहीं होता। यहां से शनि तीसरी दृष्टि से स्वराशि में दशमभाव को देखता है, अतः पिता एवं सम्मान के क्षेत्र में त्रुटिपूर्ण सफलता प्राप्त होती है एवं भाग्योन्नति के लिए अ... कष्ट उठाना तथा परिश्रम करना पड़ता है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण धन की वृद्धि के लिए प्रयत्नशील रहता है एवं दसवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण विद्या एवं संतान के पक्ष में सफलता प्राप्त होती है। राज्येश के अष्टमभाव में स्थिति के कारण यश और उन्नति के मार्ग में कठिनाइयां आती हैं, परंतु आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्नः नवमभावः शनि

२९२
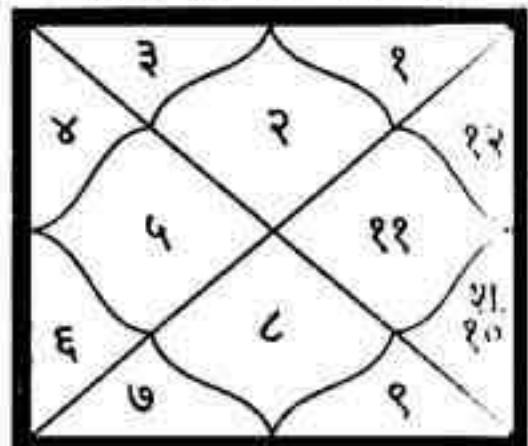
नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के घर में मकर राशिस्थ स्वक्षेत्री शनि के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की बहुत वृद्धि हाती है तथा पिता के द्वारा भी पूर्ण शक्ति प्राप्त होती है। इसके साथ ही राज्य द्वारा यश, लाभ तथा सम्मान प्राप्त होता है यहां से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से एकादशभाव को देखता है, अतः आय के साधनों द्वारा कुछ अरुचिकर तरीके से लाभ होता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण पुरुषार्थ तो प्रबल होता है, परंतु भाई-बहनों के द्वारा असंतोषपूर्ण तरीकों से सहायता मिलती है। दसवीं उच्चदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु-पक्ष पर महान प्रभाव होता है तथा मामा द्वारा भी लाभ होता है। संक्षेप में, ऐसा जातक परिश्रम द्वारा उन्नति एवं लाभ प्राप्त करने वाला, धनी, यशस्वी, धार्मिक तथा सुखी होता है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए-

वृष लग्नः दशमभावः शनि

२९३

दसवें केंद्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में कुंभ राशिस्थ स्वक्षेत्री शनि के प्रभाव से जातक को पिता, व्यवसाय एवं राज्य द्वारा यथेष्ट लाभ, यश एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है और वह धर्म-कर्म का पालन भी करता है। यहां से शनि तीसरी नीचदृष्टि से द्वादशभाव को देखता है, अतः खर्च के मामले में कुछ परेशानी रहती है तथा बाहरी स्थानों के संबंध में त्रुटि रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि, संपति तथा घरेलू सुख से असंतोष बना रहता है। दसवीं शत्रुदृष्टि से स्त्रीभाव को देखने के कारण स्त्री-पक्ष में भाग्यशाली होता है तथा दैनिक जीवन में कुछ चिंतित-सा रहता है। ऐसा जातक अपने परिश्रम द्वारा महान सफलता प्राप्त करता है। वह बड़ा भाग्यवान तथा बड़ा सफल व्यवसायी होता है।
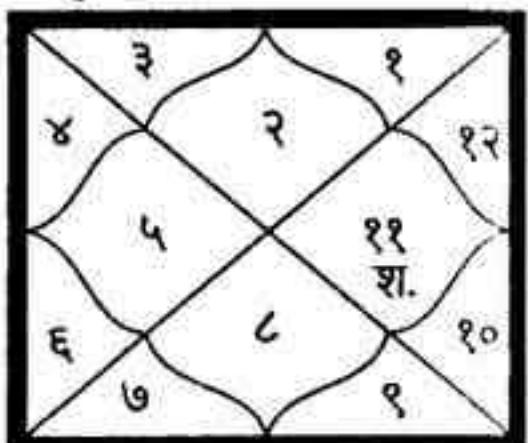
जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए-

वृष लग्नः एकादशभावः शनि

२९४

ग्यारहवें लाभ एवं ऐश्वर्य के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को आमदनी के मार्ग में कुछ कठिनाइयों के बाद सफलता मिलती है। साथ ही पिता-पक्ष के द्वारा लाभ से भी असंतोष रहता है। ग्यारहवें भाव में क्रूर ग्रह के अधिक शक्तिशाली होने के कारण भाग्य की शक्ति प्रबल बनी रहती है। यहां से शनि तीसरी मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखता है, अत: जातक को शरीर एवं आयु के पक्ष में प्रभाव की प्राप्ति होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव में देखने के कारण विद्या-बुद्धि एवं संतान के पक्ष में सफलता मिलती है तथा दसवीं शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण दैनिक जीवन एवं पुरातत्त्व के संबंध में कुछ कठिनाइयों का अनुभव होता रहता है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्नः द्वादशभावः शनि

२९५
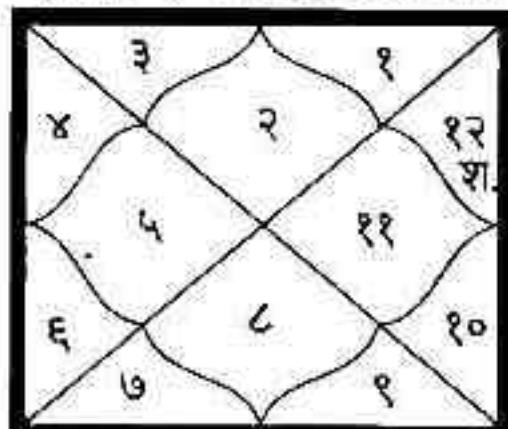
बारहवें व्यय तथा बाहरी संबंध के घर में मेष राशिस्थ शत्रु के शनि के प्रभाव से जातक को खर्च तथा बाहरी स्थानों के संबंध में परेशानियों का सामना करना पड़ता है, साथ ही राज्य, व्यवसाय, भाग्य एवं धर्म के क्षेत्र में भी कमी बनी रहती है। वहां से शनि तीसरी मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखता है, अत: धन-जन की सामान्य सफलता प्राप्त होती है। सातवीं उच्चदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु पक्ष पर प्रभाव बना रहता है तथा झगड़े-झंझटों के मामलों में लाभ होता है। दसवीं दृष्टि स्वक्षेत्र में पड़ने के कारण भाग्य की शक्ति थोड़ी-बहुत प्राप्त होती है परंतु यश-सम्मान में कमी बनी रहती है।

'वृष' लग्न में 'राहु' का फल

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
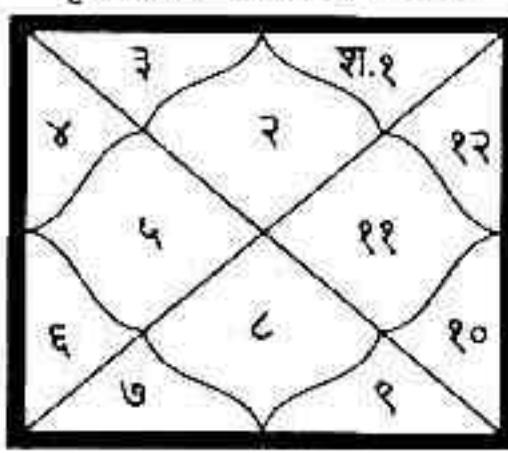
पहले केंद्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र शुक्र की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौंदर्य तथा स्वास्थ्य में कुछ कमी तथा चिंता का योग बनता है, परंतु गुप्त चतुराई एवं मनोबल द्वारा स्वार्थ साधन में सफलता मिलती है। ऐसी स्थिति वाला जातक बहुत-सी परेशानियों को सहन करने के बाद शक्ति तथा हिम्मत प्राप्त करता है। वह अनेक युक्तियों द्वारा अपने व्यक्तित्व तथा प्रभाव की उन्नति करता है और उसमें सफलता पाता है। ऐसे व्यक्ति को कभी-कभी चोट अथवा मूर्च्छा का शिकार भी बनना पड़ता है।
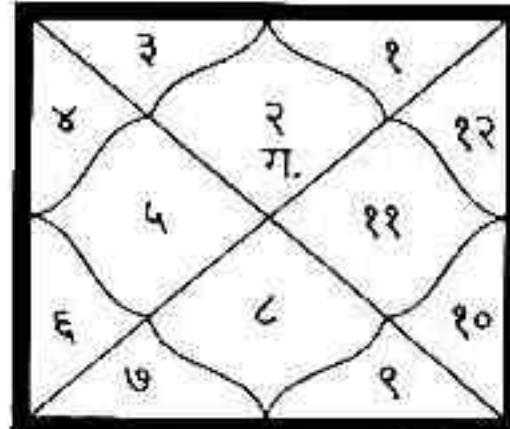
वृष लग्नः प्रथमभावः राहु

२९६

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभ
'राहु ' की स्थिति हो, उसे 'राहु ' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहि

वृष लग्नः द्वितीयभाव:

दूसरे धन व कुटुंब भवन में मिथुन राशि स्थित उच्च के राहु के प्रभाव से जातक अनेक युक्तियों एवं चतुराइयों द्वारा अपने धन की वृद्धि करता है, परंतु कभी-कभी वह कुछ कठिनाइयां भी अनुभव करता है। ऐसी ग्रह स्थिति वाले जातक के कुटुंब तथा धन की वृद्धि होती रहती है, परंतु इन दोनों ही पक्षों में उसे समय-समय पर संघर्षों का सामना भी करना पड़ता है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'राहु ' की स्थिति हो, उसे 'राहु ' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्नः तृतीयभाव:
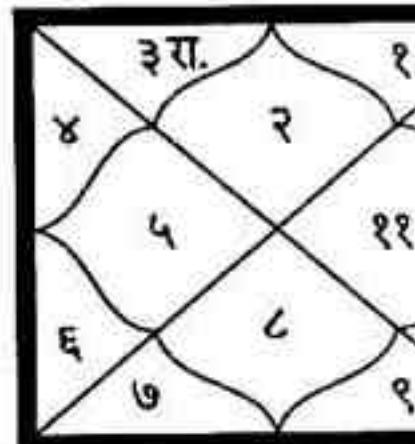
तीसरे पराक्रम तथा भाई के घर में अपने शत्रु चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के पराक्रम में कमी आती है तथा भाई-बहनों के पक्ष में भी कष्ट का अनुभव करता है। इसके बावजूद भी तृतीयभाव में स्थित क्रूर ग्रह अधिक शक्तिशाली होता है। इस सिद्धांत के आधार पर जातक का हौसला बढ़ा रहेगा। मन के भीतर गुप्त चिंताओं तथा कमजोरियों के रहते हुए भी प्रकट रूप में जातक हिम्मत वाला बना रहेगा।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'राहु ' की स्थिति हो, उसे 'राहु ' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्नः चतुर्थभाव:
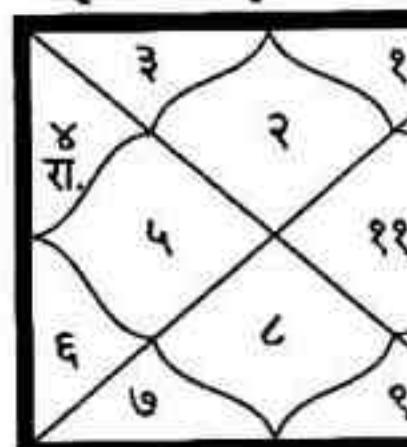
चौथे केंद्र, माता, भूमि तथा सुख के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को माता के पक्ष में हानि तथा कष्ट का योग प्राप्त होता है तथा भूमि, संपत्ति एवं सुख के साधनों में भी कमी तथा परेशानियों का सामना करना पड़ता है। इसके प्रभाव से जातक अपनी जन्मभूमि से अलग जाकर रहता है तथा अनेक प्रकार के दुःख एवं झंझटों से घिरा रहता है। परंतु सूर्य की राशि पर स्थित होने के कारण बाद में कठिन श्रम एवं गुप्त उपायों द्वारा उसे धन तथा सुख की सामान्य प्राप्ति भी होती है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचम
'राहु ' की स्थिति हो, उसे 'राहु ' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहि
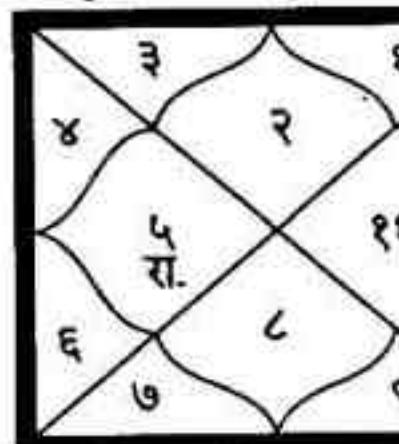
वृष लग्न: पंचमभाव: राहु

३००

पांचवें त्रिकोण, विद्या एवं संतान के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को संतान के द्वारा कष्ट सहित सहयोग की प्राप्ति होती है। इसी प्रकार विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में अत्यधिक उन्नति प्राप्त करने पर भी मस्तिष्क में कुछ कमी तथा परेशानी अनुभव होती रहती है। कन्या राशि पर स्थित राहु स्वक्षेत्री जैसा माना जाता है, अतः ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक अधिक बोलने वाला, नशेबाज तथा गुप्त युक्तियों से काम लेने में प्रवीण होता है।
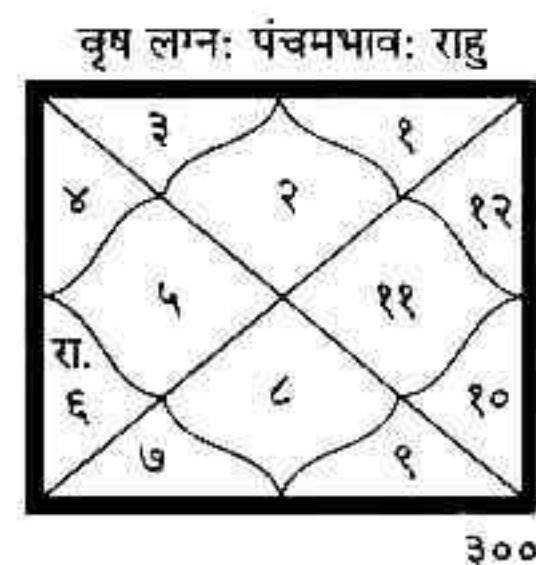
जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'राहु ' की स्थिति हो, उसे 'राहु ' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: षष्ठभाव: राहु

३०१

छठे शत्रु एवं रोग भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता रहता है और वह गुप्त युक्तियों तथा विद्याओं में प्रवीण होता है। शत्रु पक्ष द्वारा कभी-कभी अशांति के कारण उपस्थित होने पर वह सदैव हिम्मत से काम लेता है और कठिनाइयों का सफल मुकाबला करता है। परंतु 'राहु' के प्रभाव से मामा के सुख में कुछ कमी आ सकती है।
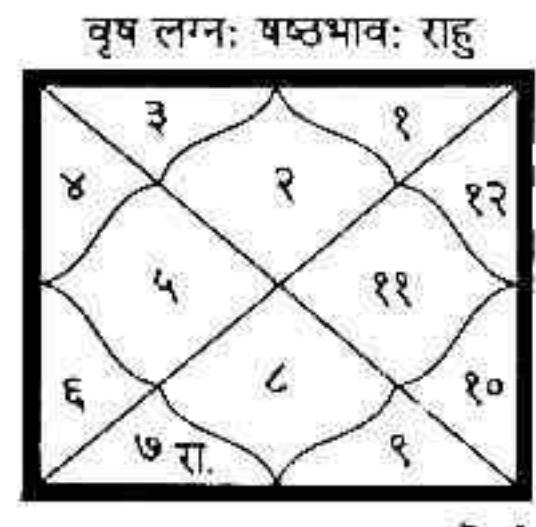
जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'राहु ' की स्थिति हो, उसे 'राहु ' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: सप्तमभाव: राहु

३०२

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष से कष्ट प्राप्त होता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। अत्यधिक काम करने एवं गुप्त युक्तियों का आश्रय लेने पर जातक को अपने व्यवसाय में थोड़ी-बहुत सफलता प्राप्त होती है। इसी प्रकार काम सुख के क्षेत्र में भी उसे अनेक प्रकार की युक्तियों से काम लेना पड़ता है और उसे इंद्रिय विकारों का भी सामना करना पड़ता है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'राहु ' की स्थिति हो, उसे 'राहु ' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें मृत्यु, आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में गुरु की धनु राशि पर स्थित नीच के राहु के प्रभाव से जातक को अपनी आयु तथा जीवन के क्षेत्र में बड़ी कठिनाइयों एवं संकटों का सामना करना पड़ता है, परंतु वृहस्पति की राशि पर स्थित होने के कारण उसमें सज्जनता एवं योग्यता बनी रहती है। राहु की ऐसी स्थिति के कारण जातक को पुरातत्त्व के क्षेत्र में भी हानि उठानी पड़ती है तथा गुप्त चिंताएं बनी रहती हैं। उसे गुप्त युक्तियों तथा बाहरी संबंधों के आश्रय से जीवन निर्वाह करना पड़ता है।

वृष लग्न: अष्टमभाव: राहु

३०३

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कमी का सामना करना पड़ता है, यद्यपि ऊपरी दिखावे में वह धनी एवं धर्मात्मा प्रतीत होता है। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक अपनी भाग्य की वृद्धि के हेतु अनेक प्रकार की गुप्त युक्तियों, धैर्य, कठिन परिश्रम तथा साहस का आश्रय लेता है। उसके जीवन में सुख तथा दु:ख, अमीरी एवं गरीबी का क्रम निरंतर चलता रहता है।

वृष लग्न: नवमभाव: राहु

३०४

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केंद्र, राज्य तथा पिता के भवन में अपने मित्र शनि की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को अपने पितृ पक्ष द्वारा परेशानी का सामना करना पड़ता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयां उपस्थित होती हैं। उसे जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए बड़े परिश्रम, धैर्य एवं गुप्त युक्तियों का आश्रय लेना पड़ता है, फिर भी ऊपरी तौर पर वह धनी एवं प्रतिष्ठित समझा जाता है।
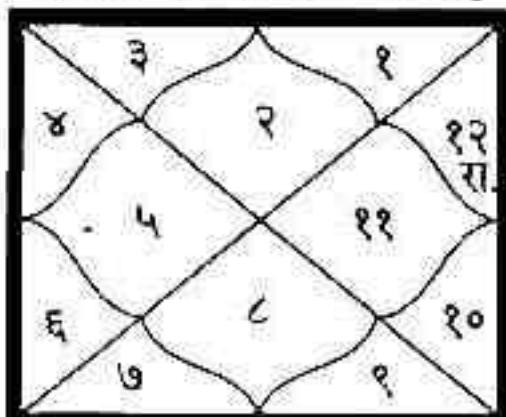
वृष लग्न: दशमभाव: राहु

३०५

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि में स्थित राहु के प्रभाव से जातक की आमदनी के मार्ग में कुछ रुकावटें आती हैं, परंतु ग्यारहवें भाव में स्थित क्रूर ग्रह विशेष प्रभावशाली होता है, इसलिए धन प्राप्ति के क्षेत्र में जातक को विशेष सफलता भी प्राप्त होती है। ऐसा जातक अर्थोपार्जन के लिए गुप्त युक्तियों का आश्रय लेता और विशेष परिश्रम करता है। वह स्वार्थी भी होता है। कभी-कभी संकटों के आने पर भी वह अपना धीरज नहीं छोड़ता, फलतः अंत में उसे सफलता प्राप्त होती है।

वृष लग्नः एकादशभावः राहु

३०६

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
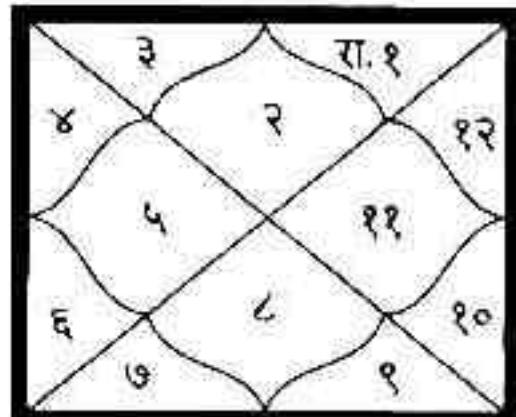
बारहवें व्यय एवं बाहरी स्थानों के संबंध वाले व्ययभाव में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को खर्च के मामलों में कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा अपने खर्च को चलाने के लिए कुछ गुप्त युक्तियों एवं चतुराई का आश्रय लेना पड़ता है। उष्ण ग्रह की राशि पर उष्ण ग्रह की स्थिति के कारण जातक का प्रभाव ऊपरी दिखावे में अच्छा बना रहता है तथा कठिन परिश्रम द्वारा सफलता भी प्राप्त होती है।

वृष लग्नः द्वादशभावः राहु

३०७
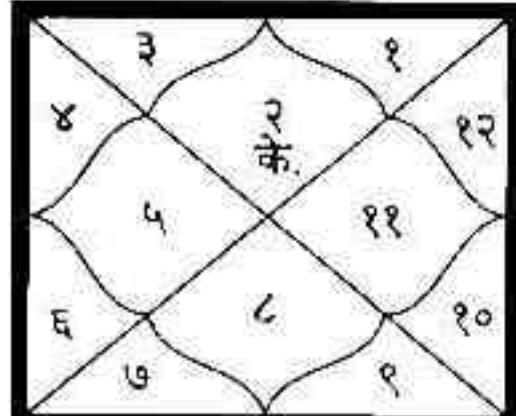
'वृष' लग्न में 'केतु' का फल

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्नः प्रथमभावः केतु

३०८

पहले केंद्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौंदर्य में कुछ कमी आती है तथा मन में गुप्त चिंताएं भी बनी रहती हैं, परंतु इसके साथ ही उसका मनोबल बहुत बढ़ा हुआ रहता है, फलस्वरूप वह जिद्दी, हठी, चतुर तथा चालाक भी होता है। ऐसा जातक अपने शारीरिक परिश्रम एवं योग्यता के प्रभाव से अन्य लोगों को प्रभावित करने की सामर्थ्य भी रखता है। साथ ही उसके शरीर में किसी घाव अथवा चोट का निशान भी होता है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन व कुटुंब के भवन मे धनु राशि स्थित नीच के केतु के प्रभाव से जातक को धन एवं कुटुंब के क्षेत्र में बड़ी कठिनाइयों, परेशानियों एवं चिंताओं का सामना करना पड़ता है। फलत: कभी-कभी उसे प्रतिष्ठा बचाना भी कठिन हो जाता है। ऐसा जातक अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए गुप्त युक्तियों एवं कठिन परिश्रम का सहारा लेता है। परंतु उसके बावजूद भी उसे धन तथा कुटुंब का यथोचित सुख प्राप्त नहीं होता।

वृष लग्न: द्वितीयभाव: केतु

३०९

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
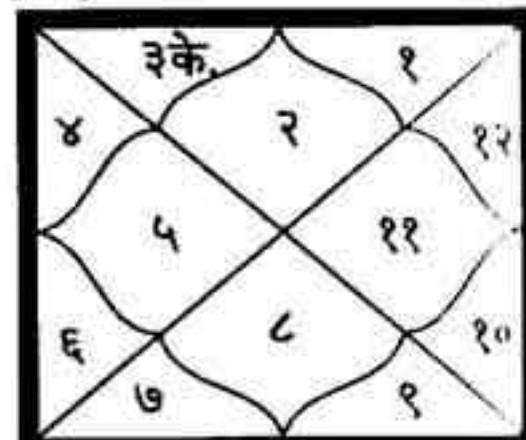
तीसरे पराक्रम एवं भाई के स्थान में अपने शत्रु चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के पराक्रम में कमी आती है। इसी प्रकार भाई-बहनों के संबंध से भी उसे कष्ट और हानि का सामना करना पड़ता है, परंतु तीसरे स्थान में बैठा हुआ क्रूर ग्रह विशेष शक्तिशाली होता है। इस कारण जातक अपनी आंतरिक कमजोरी एवं अभावों की चिंता न करते हुए बहुत हिम्मत, हठ, धैर्य एवं परिश्रम से काम लेता है तथा थोड़ी-बहुत सफलता भी प्राप्त करता है।

वृष लग्न: तृतीयभाव: केतु

३१०

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केंद्र, माता, भूमि एवं सुख के भवन में अपने शत्रु की सिंह राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को माता, भूमि, भवन तथा सुख के क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा इन सबकी प्राप्ति के लिए उसे कठिन परिश्रम, धैर्य एवं गुप्त युक्तियों का आश्रय लेना पड़ता है। ऐसी ग्रह स्थिति वाले जातक को अपनी जन्मभूमि का वियोग भी सहन करना पड़ता है तथा उसके घरेलू सुख-साधनों में भी कमी और कष्ट बने रहते हैं।
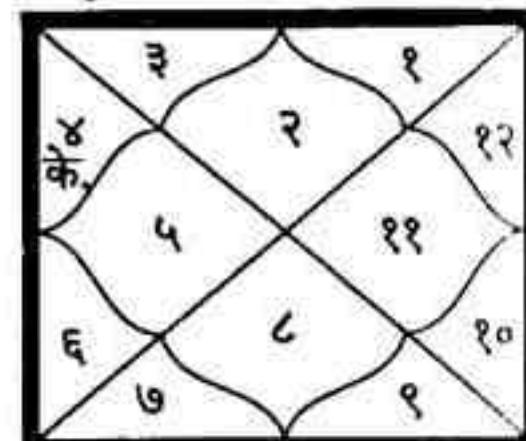
वृष लग्न: चतुर्थभाव: केतु

३११

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
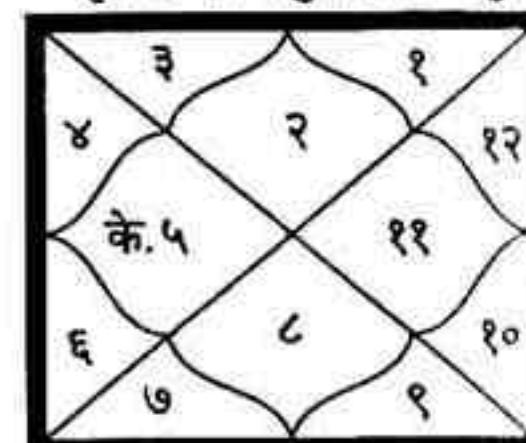
पांचवें त्रिकोण तथा विद्या-संतान के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि तथा संतान के क्षेत्र में कमी एवं कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, परंतु मित्रक्षेत्री होने के कारण गुप्त युक्तियों, धैर्य एवं साहस के द्वारा उसे सामान्य सफलता प्राप्त हो जाती है। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक अपने आशय को स्पष्ट शब्दों में प्रकट नहीं कर पाता, परंतु बहुत जापी तथा धैर्यवान होता है।

वृष लग्न: पंचमभाव: केतु

३१२

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'केतु ' की स्थिति हो, उसे 'केतु ' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: षष्ठभाव: केतु

छठे शत्रु तथा रोग भवन में अपने मित्र शुक्र की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक शत्रुओं पर अपना विशेष प्रभाव बनाए रखता है तथा अपनी हिम्मत, धैर्य एवं गुप्त युक्तियों के बल पर अनेक प्रकार की कठिनाइयों तथा विघ्न-बाधाओं पर विजय प्राप्त करता रहता है। ऐसा जातक चतुर, बड़ा परिश्रमी, साहसी, धैर्यवान तथा गुप्त युक्तियों का जानकार होता है, परंतु मामा के पक्ष से कुछ हानि प्राप्त होती है।
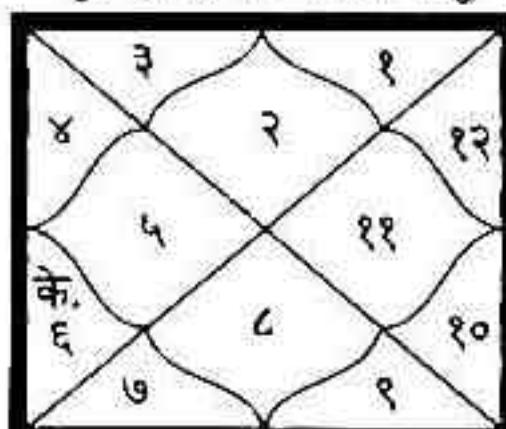
३१३

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'केतु ' की स्थिति हो, उसे 'केतु ' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु मंगल की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को अपनी स्त्री के पक्ष में कष्ट तथा हानि उठानी पड़ती है। उसे मूत्राशय में किसी रोग तथा प्रमेह आदि का शिकार भी बनना पड़ता है। व्यवसाय के पक्ष में जातक को कठिन संघर्ष एवं संकटों का सामना करते हुए गुप्त युक्तियों एवं धैर्य से काम लेना पड़ता है। घरेलू जीवन तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कभी-कभी बड़ी विफलताओं का सामना करना पड़ता है, परंतु परेशानियों के द्वारा उसे कुछ शक्ति भी प्राप्त होती है।
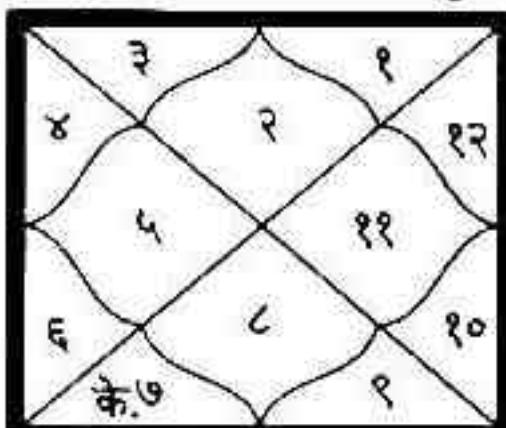
वृष लग्न: सप्तमभाव: केतु

३१४

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'केतु ' की स्थिति हो, उसे 'केतु ' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
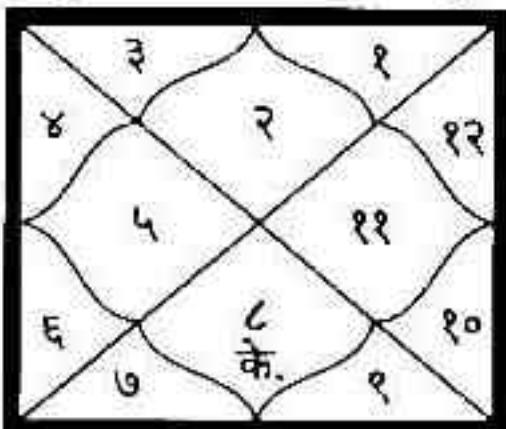
आठवें मृत्यु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित उच्च के केतु के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व संबंधी कोई विशेष लाभ भी मिलता है। ऐसे जातक को अपने जीवन निर्वाह के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है तथा कभी-कभी सामान्य परेशानियों का सामना भी करना पड़ता है, परंतु वह अत्यंत साहसी, गुप्त युक्ति से संपन्न तथा धैर्यवान होता है और अपना जीवन शान-शौकत के साथ व्यतीत करता है।

वृष लग्नः अष्टमभावः केतु

३१५

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
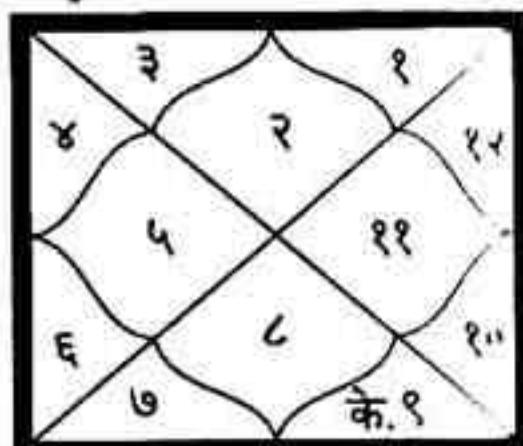
नवें त्रिकोण तथा भाग्य भवन में अपने मित्र शनि की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक कठिन परिश्रम के द्वारा अपने भाग्य की उन्नति करता है। इसी प्रकार धार्मिक क्षेत्र में भी कुछ कमी के साथ सफलता प्राप्त करता है। वह अपनी भाग्य वृद्धि के लिए बड़ी हिम्मत तथा गुप्त शक्तियों से काम लेता है तथा धर्म में आस्था होते हुए भी उसमें कोई विशेष श्रद्धा नहीं रखता।

वृष लग्नः नवमभावः केतु

३१६

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केंद्र, पिता एवं राज्य भवन में अपने मित्र शनि की कुंभ राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को पिता के संबंध में कुछ कमी आ जाती है। इसी प्रकार राज्य तथा मान-प्रतिष्ठा के क्षेत्र में भी उसे कुछ कठिनाइयों के साथ सामान्य सफलता प्राप्त होती है। ऊपरी तौर पर जातक धनी, सुखी तथा सम्मानित प्रतीत होता है, परंतु भीतरी रूप में वह कमजोर बना रहता है। अपनी उन्नति के क्षेत्र में उसे कभी-कभी विशेष संकटों का सामना करना पड़ता है। ऐसा जातक परिश्रमी तथा साहसी होता है।
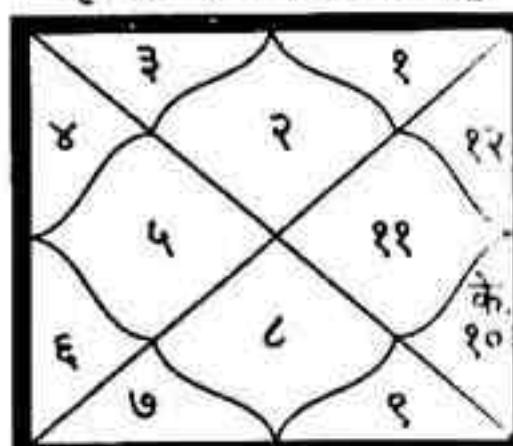
वृष लग्नः दशमभावः केतु

३१७

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
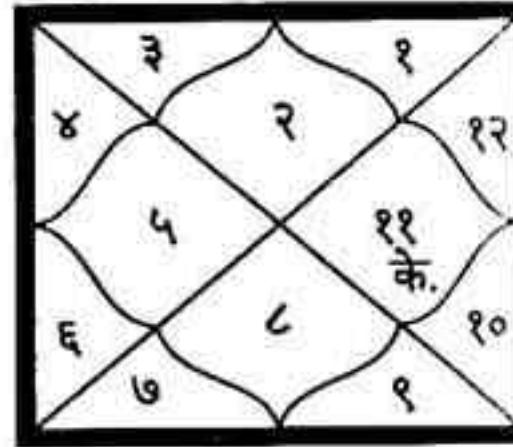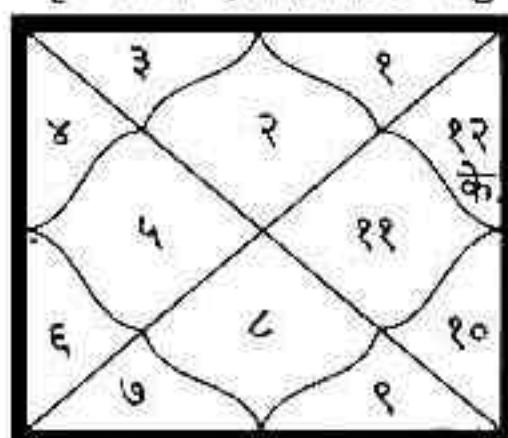
ग्यारहवें लाभ भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को आमदनी के क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, परंतु एकादशभाव में बैठा हुआ क्रूर ग्रह विशेष प्रभावशाली होता है, इसलिए उसे अच्छा लाभ भी प्राप्त होता है। कठिन परिश्रम के द्वारा जातक को यथेष्ट धन की प्राप्ति होती है तथा कभी-कभी विशेष संकटों का सामना भी करना पड़ता है। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक आशावादी, हिम्मती, धैर्यवान, चतुर तथा परिश्रमी होता है।

वृष लग्न: एकादशभाव: केतु

३१८

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
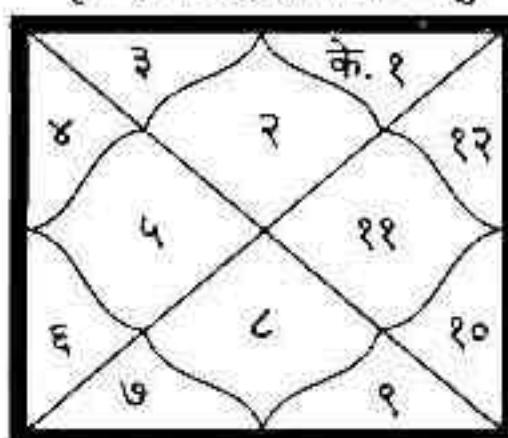
बारहवें व्ययभाव में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को अपना खर्च चलाने में बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इसी प्रकार बाहरी स्थानों के संबंध से भी उसे परेशानियां उठानी पड़ती हैं। क्रूर ग्रह की राशि पर क्रूर ग्रह की उपस्थिति के कारण जातक घोर परिश्रमी तथा कठिनाइयों पर विजय पाने वाला होता है, अतः ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक बड़ा साहसी, उद्योगी, धैर्यवान तथा चतुर भी होता है।

वृष लग्न: द्वादशभाव: केतु

३१९

'वृषभ' लग्न का फलादेश समाप्त

३२०
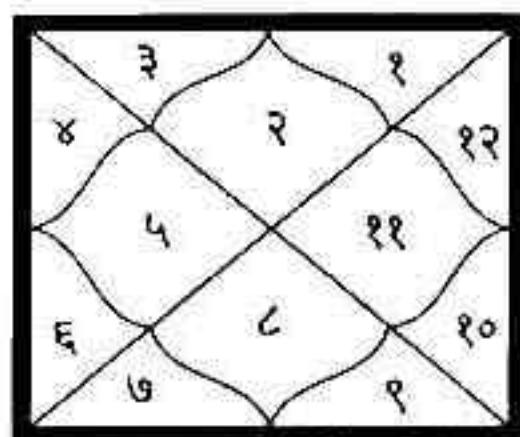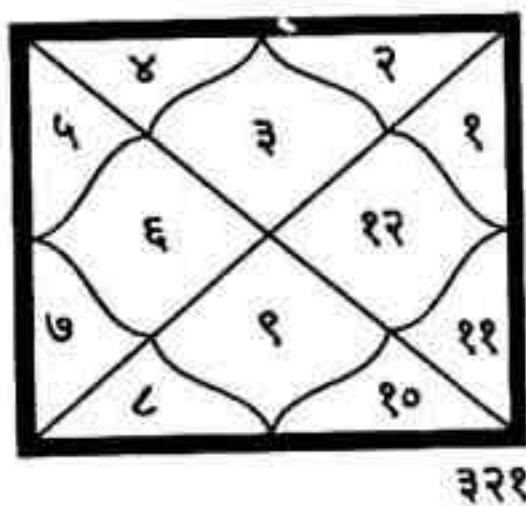
मिथुन लग्न

मिथुन लग्न वाली कुंडलियों के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का अलग-अलग फलादेश

मिथुन लग्न का संक्षिप्त फलादेश

मिथुन लग्न में जन्म लेने वाले जातक के शरीर का रंग गेहुंआ तथा चेहरा गोल होता है। वह स्त्रियों में आसक्त, नृत्य-संगीत-वाद्य आदि का प्रेमी, हास्य प्रवीण, दूत-कर्म करने वाला, मधुर भाषी, चित्रम, शिल्पज्ञ, विषयी, चतुर, कवि, परोपकारी, सुखी, तीर्थयात्री, गणितज्ञ, ऐश्वर्यवान, बहु संतति एवं मित्रवान, सुशील, दानी, अनेक प्रकार के भोगों का उपयोग करने वाला, राजा के समीप रहने वाला तथा राजा से ही पीड़ित होने वाला तथा सुंदर केशों वाला होता है।

मिथुन लग्न वाले व्यक्ति की आयु मध्यम होती है। वह अपनी प्रारंभिक अवस्था में सुखी, मध्यावस्था में दु:खी तथा अंतिम अवस्था में पुन: सुखोपभोग करने वाला होता है। उसका भाग्योदय ३२ से ३५ वर्ष की आयु के बीच का होता है।
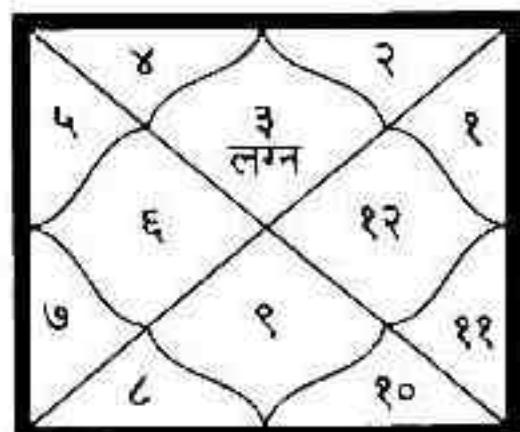
मिथुन लग्न

यह बात पहले बताई जा चुकी है कि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन पर नवग्रहों का प्रभाव मुख्यत: दो प्रकार से पड़ता है—

(१) ग्रहों की जन्म-कालीन स्थिति के अनुसार।

(२) ग्रहों की दैनिक गोचर गति के अनुसार।

जातक की जन्म-कालीन ग्रह स्थिति 'जन्म-कुंडली' में दी गई होती है। उसमें जो ग्रह जिस भाव में और जिस राशि पर बैठा होता है, वह जातक के जीवन पर अपना निश्चित प्रभाव निरंतर स्थायी रूप से डालता रहता है।

दैनिक गोचर गति के अनुसार विभिन्न ग्रहों की जो स्थिति होती है, उसकी जानकारी पंचांग द्वारा दी जा सकती है। ग्रहों की दैनिक गति के संबंध में या तो किसी ज्योतिषी से पूछ लेना चाहिए अथवा स्वयं ही उसे मालूम करने का तरीका सीख लेना चाहिए। इस संबंध में पुस्तक के पहले प्रकरण में विस्तारपूर्वक लिखा जा चुका है।

३२२

दैनिक गोचर गति के अनुसार विभिन्न ग्रह जातक के जीवन पर अस्थायी रूप से अपना प्रभाव डालते हैं। उदाहरण के लिए यदि किसी जातक की जन्म-कुंडली में सूर्य मिथुन राशि पर प्रथमभाव में बैठा है, तो उसका स्थाई प्रभाव जातक के जीवन पर आगे दी गई उदाहरण-कुंडली संख्या ३२३ के अनुसार पड़ता रहेगा, परंतु यदि दैनिक ग्रह गोचर में कुंडली देखते समय सूर्य कर्क राशि के द्वितीयभाव में बैठा है, तो उस स्थिति में वह उदाहरण-कुंडली संख्या ४३५ के अनुसार उतनी अवधि तक जातक के जीवन पर अपना अस्थायी प्रभाव अवश्य डालेगा, जब तक कि वह 'कर्क' राशि से हटकर 'सिंह'

राशि में नहीं चला जाता। सिंह राशि में पहुंच कर वह सिंह राशि के अनुरूप अपना प्रभाव डालना आ
कर देगा। अत: जिस जातक की जन्म-कुंडली मे सूर्य मिथुन राशि के प्रथमभाव में बैठा हो,
उदाहरण-कुंडली संख्या ३२३ में फलादेश देखने के पश्चात् यदि उन दिनों सूर्य कर्क राशि के द्विती
में बैठा हो, तो उदाहरण-कुंडली संख्या ४३५ का फलादेश भी देखना चाहिए तथा इन दोनों फला
के समन्वय स्वरूप जो निष्कर्ष निकलता हो, उसी को अपने वर्तमान समय पर प्रभावकारी सम
चाहिए। इसी प्रकार प्रत्येक ग्रह के विषय में जान लेना चाहिए।

'मिथुन' लग्न में जन्म लेने वाले जातकों की जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में वि
विभिन्न ग्रहों के फलादेश का वर्णन उदाहरण-कुंडली संख्या ३२३ से ४३० तक में किया गया
पंचांग की दैनिक ग्रह-गति के अनुसार मिथुन लग्न मे जन्म लेने वाले जातकों को किन
उदाहरण-कुंडलियों द्वारा विभिन्न ग्रहों के तात्कालिक प्रभाव को देखना चाहिए—इसका वि
वर्णन अगले पृष्ठों में किया गया है, अत: उसके अनुसार ग्रहों की तात्कालिक स्थिति के साम
प्रभाव की जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए। तदुपरांत दोनों फलादेश के समन्वय-स्वरूप
निष्कर्ष निकलता हो, उसी को सही फलादेश समझना चाहिए।

इस विधि से प्रत्येक व्यक्ति प्रत्येक जन्म-कुंडली का ठीक-ठाक फलादेश सहज में ही ज्ञ
कर सकता है।

टिप्पणी—(१) पहले बताया जा चुका है कि जिस समय जो ग्रह २७ अंश से ऊपर अथ
३ अंश के भीतर होता है, वह प्रभावकारी नहीं रहता। इसी प्रकार जो ग्रह सूर्य से अस्त होता
वह भी जातक के ऊपर अपना प्रभाव या तो बहुत कम डालता है या पूर्णत: प्रभावहीन रहता

(२) स्थायी जन्म-कुंडली स्थित विभिन्न ग्रहों के अंश किसी ज्योतिषी द्वारा अपनी कुंड
में लिखवा लेने चाहिए, ताकि उनके अंशों के विषय में बार-बार जानकारी प्राप्त करने के झंझ
से बचा जा सके। तात्कालिक गोचर के ग्रहों के अंश की जानकारी पंचांग द्वारा अथवा कि
ज्योतिषी से पूछकर प्राप्त कर लेनी चाहिए।

(३) स्थायी जन्म-कुंडली अथवा तात्कालिक ग्रह-गति कुंडली में यदि किसी भाव में ए
से अधिक ग्रह एक साथ बैठे होते हैं अथवा जिन-जिन स्थानों पर उनकी दृष्टियां पड़ती
जातक का जीवन उनके द्वारा भी प्रभावित होता है। इस पुस्तक के तीसरे प्रकरण में 'ग्रहों
युति का प्रभाव' शीर्षक के अंतर्गत विभिन्न ग्रहों की युति के फलादेश का वर्णन किया गया
अत: इस विषय की जानकारी वहां से प्राप्त कर लेनी चाहिए।

(४) विंशोत्तरी दशा के सिद्धांतानुसार प्रत्येक जातक की पूर्णायु १२० वर्ष की मानी जा
है। इस आयु अवधि में जातक नवग्रहों की दशाओं का भोग कर लेता है। विभिन्न ग्रहों का दशा
काल भिन्न-भिन्न होता है, परंतु अधिकांश व्यक्ति इतनी लंबी आयु तक जीवित नहीं रह पा
अत: वे अपने जीवन-काल में कुछ ही ग्रहों की दशाओं का भोग कर पाते हैं। जातक के जीव
के जिस काल में जिस ग्रह की दशा—जिसे 'महादशा' कहा जाता है—चल रही होती है, जन्म
कालीन ग्रह-स्थिति के अनुसार, उसके जीवन-काल की उतनी अवधि, उस ग्रह-विशेष के प्रभा
से विशेष रूप से प्रभावित रहती है। जातक का जन्म किस ग्रह की महादशा में हुआ है अ
उसके जीवन में किस अवधि से किस अवधि तक किस ग्रह की महादशा चलेगी और व
महादशा जातक के ऊपर अपना क्या विशेष प्रभाव डालेगी इन सब बातों का उल्लेख भी ती
प्रकरण में किया गया है।

इस प्रकार (१) जन्म कुंडली, (२) तात्कालिक ग्रह-गोचर कुंडली एवं (३) ग्रहों की अवस्था—इन तीनों विधियों से फलादेश प्राप्त करने की सरल विधि का वर्णन इस पुस्तक में किया गया है, अतः इन तीनों के समन्वय-स्वरूप फलादेश का ठीक-ठाक निर्णय करके अपने भूत, वर्तमान तथा भविष्यत्-कालीन जीवन के विषय में सम्यक्-जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए।

मिथुन (३) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'सूर्य' का फलादेश

मिथुन (३) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का **स्थायी**-फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ३२३ से ३३४ तक में देखना चाहिए।

मिथुन (३) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित **'सूर्य' का** अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'सूर्य' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३२३ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'सूर्य' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३२४ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'सूर्य' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३२५ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'सूर्य' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३२६ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'सूर्य' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३२७ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'सूर्य' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३२८ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'सूर्य' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३२९ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'सूर्य' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३३० के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'सूर्य' 'कुंभ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ३३१ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'सूर्य' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३३२ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'सूर्य' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३३३ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'सूर्य' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३३४ के अनुसार समझना चाहिए।

मिथुन (३) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'चंद्रमा' का फलादेश

मिथुन (३) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'चंद्रमा' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३३५ से ३४६ तक में देखना चाहिए।

मिथुन (३) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'चंद्रमा' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'मिथुन' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३३५ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'कर्क' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३३६ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'सिंह' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३३७ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'कन्या' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३३८ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'तुला' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३३९ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ३४० के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'धनु' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३४१ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'मकर' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३४२ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'कुंभ' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३४३ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'मीन' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३४४ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'मेष' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३४५ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'वृष' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३४६ के अनुसार समझना चाहिए।

मिथुन (३) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'मंगल' का फलादेश

मिथुन (३) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' **स्थायी**-फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३४७ से ३५८ तक में देखना चाहिए।

मिथुन (३) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित **गल' का** अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना **हिए**—

(१) जिस महीने में 'मंगल' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-**ली संख्या** ३४७ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'मंगल' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-**ली संख्या** ३४८ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'मंगल' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली **या** ३४९ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'मंगल' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-**ली संख्या** ३५० के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'मंगल' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-**ली संख्या** ३५१ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'मंगल' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-**ली संख्या** ३५२ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'मंगल' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली **या** ३५३ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'मंगल' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-**ली संख्या** ३५४ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'मंगल' 'कुंभ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली **या** ३५५ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'मंगल' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-**ली संख्या** ३५६ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'मंगल' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-**ली संख्या** ३५७ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'मंगल' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-**ली संख्या** ३५८ के अनुसार समझना चाहिए।

मिथुन (३) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'बुध' का फलादेश

मिथुन (३) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' **स्थायी**-फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३५९ से ३७० तक में देखना चाहिए।

मिथुन (३) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए।

(१) जिस महीने में 'बुध' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३५९ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'बुध' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३६० के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'बुध' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३६१ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'बुध' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३६२ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'बुध' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३६३ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महजजजजजाएगा' वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३६४ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'बुध' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३६५ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'बुध' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३६६ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'बुध' 'कुंभ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३६७ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'बुध' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३६८ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'बुध' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३६९ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'बुध' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३७० के अनुसार समझना चाहिए।

मिथुन (३) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'गुरु' का फलादेश

मिथुन (३) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३७१ से ३८२ तक में देखना चाहिए।

मिथुन (३) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का अस्थाई-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३७१ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'गुरु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली ३७४ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'गुरु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'गुरु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली ३७६ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'गुरु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कुंभ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली ३८० के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'गुरु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या के अनुसार समझना चाहिए।

मिथुन (३) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'शुक्र' का फलादेश

मिथुन (३) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' **स्थायी**-फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३८३ से ३९४ तक में देखना चाहिए।

मिथुन (३) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित **' का** अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना **ए—**

(१) जिस महीने में 'शुक्र' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-**ली** संख्या ३८३ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'शुक्र' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली ३८४ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'शुक्र' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली ३८५ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'शुक्र ' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ३८६ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'शुक्र ' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३८७ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'शुक्र ' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ३८८ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'शुक्र ' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३८९ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'शुक्र ' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ३९० के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'शुक्र ' 'कुंभ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३९१ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'शुक्र ' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ३९२ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'शुक्र ' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ३९३ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'शुक्र ' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३९४ के अनुसार समझना चाहिए।

मिथुन (३) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'शनि ' का फलादेश

मिथुन (३) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि ' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३९५ से ४०६ तक में देखना चाहिए।

मिथुन (३) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि ' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'शनि ' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३९५ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'शनि ' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३९६ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'शनि ' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३९७ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'शनि ' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३९८ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'शनि ' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ३९९ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'शनि ''वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ४०० के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'शनि ''धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ४०१ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'शनि ''मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ४०२ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'शनि ''कुंभ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ४०३ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'शनि ''मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ४०४ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'शनि ''मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ४०५ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'शनि ''वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ४०६ के अनुसार समझना चाहिए।

मिथुन (३) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'राहु ' का फलादेश

मिथुन (३) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु ' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ४०७ से ४१८ तक में देखना चाहिए।

मिथुन (३) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'राहु''मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ४०७ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'राहु''कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ४०८ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'राहु''सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ४०९ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'राहु''कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ४१० के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'राहु''तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ४११ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'राहु''वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ४१२ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'राहु''धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ४१३ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'राहु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ४१४ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'राहु' 'कुंभ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ४१५ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'राहु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ४१६ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'राहु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ४१७ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'राहु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ४१८ के अनुसार समझना चाहिए।

मिथुन (३) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'केतु' का फलादेश

मिथुन (३) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ४१९ से ४३० तक में देखना चाहिए।

मिथुन (३) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे अनुसार देखना चाहिए

(१) जिस वर्ष में 'केतु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ४१९ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'केतु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ४२० के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'केतु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ४२१ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'केतु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ४२२ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'केतु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ४२३ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'केतु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ४२४ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'केतु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ४२५ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'केतु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ४२६ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'केतु' 'कुंभ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ४२७ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'केतु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली ४२८ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'केतु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली ४२९ के अनुसार समझना चाहिए।
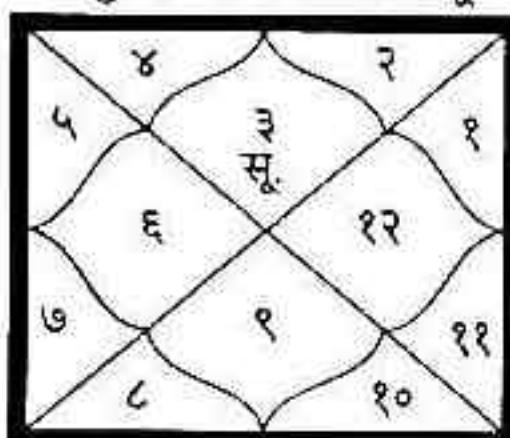
(१२) जिस वर्ष में 'केतु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली ४३० के अनुसार समझना चाहिए।

'मिथुन' लग्न में 'सूर्य' का फल

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उस 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्नः प्रथमभावः सूर्य

३२३

पहले केंद्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र बुध की **मिथुन राशि** पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक बड़ा **परिश्रमी**, हिम्मती, साहसी, पुरुषार्थी, तथा उद्योगी होता है। **वह अपने** परिश्रम द्वारा ऊंचे-ऊंचे काम करता है तथा **वाहन** की शक्ति भी प्राप्त करता है। यहां से सूर्य सातवीं **दृष्टि** से बृहस्पति की धनराशि वाले सप्तमभाव को **देखता है**, अतः जातक को स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष में **सफलता** मिलती है। ऐसे जातक का गृहस्थ जीवन **सुखपूर्ण** होता है और वह स्वयं बड़ा हिम्मती, फुर्तीला, **क्रोधी**, प्रभावशाली तथा क्रोधी होता है।
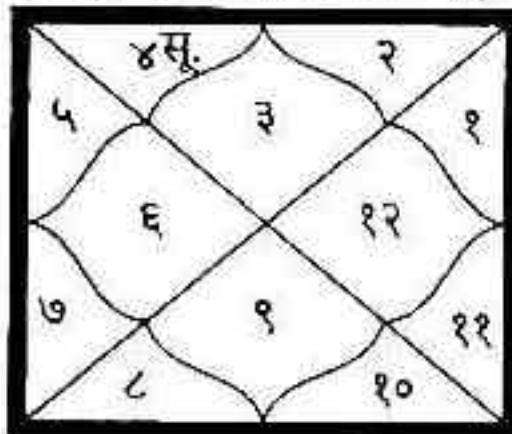
जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उस 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन तथा कुटुंब भवन में अपने मित्र चंद्रमा की **कर्क राशि** पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक अपने पुरुषार्थ **से धन तथा** कुटुंब के सुख में वृद्धि करता है, परंतु भाई-**बहन की** शक्ति में कुछ कमी रहती है। यहां से सूर्य सातवीं **दृष्टि से** शनि को मकर राशि में अष्टमभाव को देखता **है, अतः** जातक को दैनिक जीवनचर्या में कुछ अशांति **का अनुभव** होता है तथा पुरातत्त्व के लाभ में कमी आ **जाती है**। यों, ऐसा जातक धनी, प्रभावशाली तथा हिम्मतवर **होता है**।

मिथुन लग्नः द्वितीयभावः सूर्य
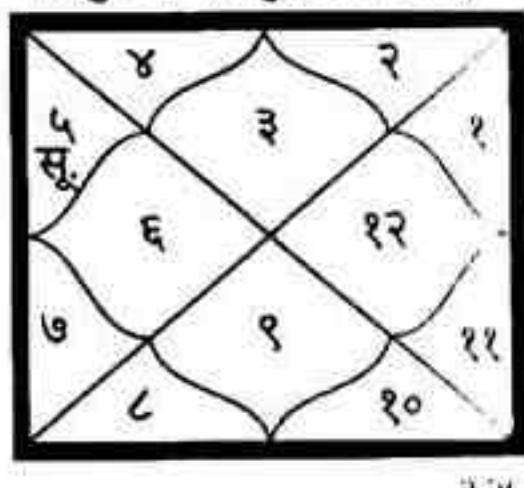
३२४

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और **जन्म-कुंडली** के 'तृतीयभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे **अनुसार** समझना चाहिए—

तीसरे पराक्रम एवं भाई-बहन के घर में अपनी सिंह राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक अत्यंत पराक्रमी होता है और उसे भाई-बहनों की भी शक्ति प्राप्त होती है। यहां से सूर्य सांतवीं शत्रुदृष्टि से शनि की कुंभ राशि में नवमभाव को देखता है, उसके कारण जातक को अपने संबंध में कुछ असंतोष बना रहता है तथा धार्मिक मामलों में भी कुछ विशेष श्रद्धा नहीं होती। यों, ऐसा जातक बड़ा प्रभावशाली, हिम्मतवर, पराक्रमी तथा सुखी होता है।

मिथुन लग्नः तृतीयभावः सूर्य
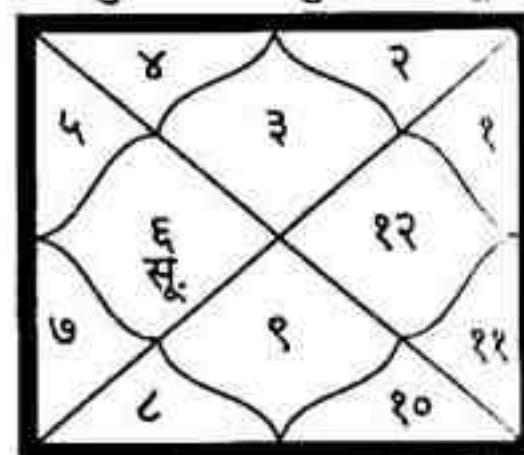
३२५

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केंद्र, माता एवं भूमि-भवन के घर में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक का पराक्रम बढ़ा रहता है, उसे भाई-बहनों का सुख तथा सम्मान प्राप्त होता है, माता द्वारा शक्ति मिलती है तथा भूमि-भवन, संपत्ति एवं सुख का भी लाभ होता है। यहां से सूर्य सातवीं दृष्टि से अपने मित्र गुरु की मीन राशि मे दशमभाव को देखता है। अस्तु, जातक को पिता द्वारा सहयोग, राजकीय क्षेत्र में सफलता, व्यवसाय के क्षेत्र में उन्नति एवं यश की प्राप्ति होती है। संक्षेप में, ऐसा जातक धनी, यशस्वी, सुखी तथा परिश्रमी होता है।

मिथुन लग्नः चतुर्थभावः सूर्य
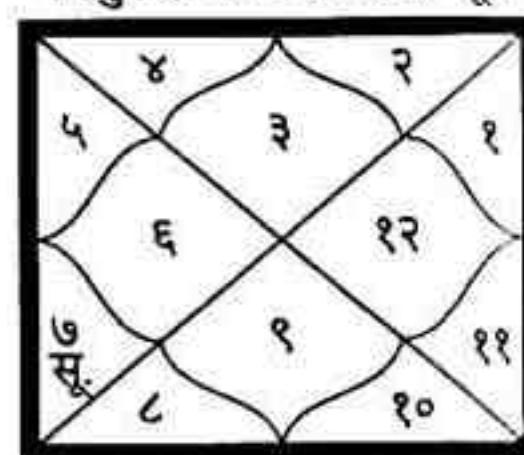
३२६

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्नः पंचमभावः सूर्य

३२७

पांचवे त्रिकोण एवं विद्या-बुद्धि के स्थान में मिथुन राशि नीच के सूर्य के प्रभाव से जातक को संतानपक्ष से कष्ट का अनुभव होता है तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में भी कमी बनी रहती है। ऐसा जातक गुप्त युक्तियों से काम लेने वाला होता है तथा उसके बाहुबल एवं पराक्रम में कमजोरी रहती है। यहां से सूर्य सातवीं उच्चदृष्टि से मंगल की मेष राशि वाले एकादशभाव को देखता है, अतः जातक धन-लाभ के लिए असत्य भाषण एवं गुप्त युक्तियों का आश्रय लेता है तथा लाभ उठाता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्न: षष्ठभाव: सूर्य

३२८

छठे शत्रु एवं रोग भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है तथा उसकी पराक्रम शक्ति बहुत बढ़ी रहती है। ऐसे जातक का भाई-बहनों के साथ कुछ वैमनस्य भी रहता है। यहां से सूर्य सातवीं दृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में द्वादशभाव को देखता है, अतः जातक को खर्च के मामलों में असंतोष का अनुभव होता रहेगा तथा बाहरी स्थान के संबंधों से भी सामान्य सुख मिलेगा। ऐसा जातक कठिन परिश्रमी तथा साहसी भी होता है।
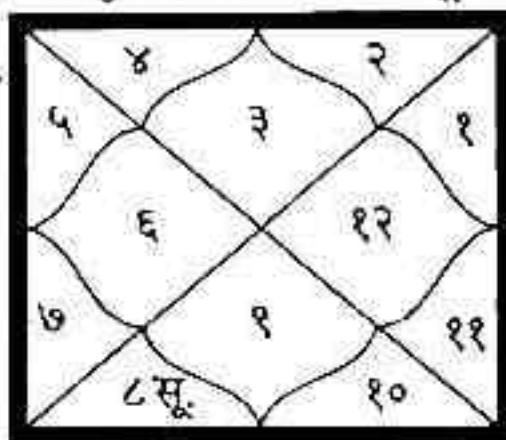
जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे सूर्य का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्न: सप्तमभाव: सूर्य

३२९

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक स्त्री-पक्ष से सुख, शक्ति एवं प्रभाव प्राप्त करता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी परिश्रम द्वारा पर्याप्त सफल होता है। उसे भाई-बहनों का सुख भी मिलता है। यहां से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक को शारीरिक शक्ति, सौंदर्य एवं गृहस्थ जीवन की प्राप्ति होती है। साथ ही उसे अपने गृहस्थ-जीवन के सुख तथा भोगादि में भी सफलता मिलती है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्न: अष्टमभाव: सूर्य

३३०
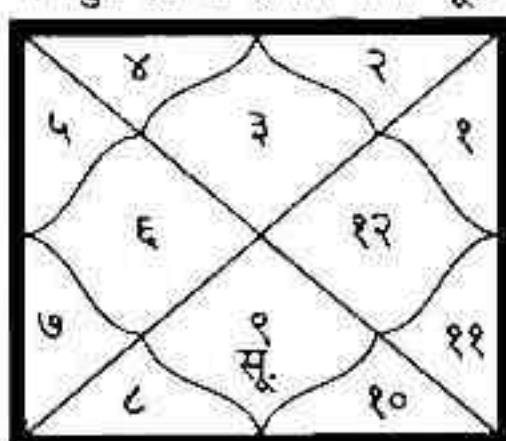
आठवें आयु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक की आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति में कुछ कमी आ जाती है। साथ ही भाई-बहन के सुख तथा पराक्रम में भी कमजोरी बनी रहती है। उसे अशांति एवं निराशा का अक्सर सामना करना पड़ता है। यहां से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से चंद्रमा की कर्क राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अतः जातक को परिश्रम के द्वारा आर्थिक क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है तथा कुटुंब का सामान्य-सुख भी मिलता है, परंतु वह उत्साहहीन बना रहता है।
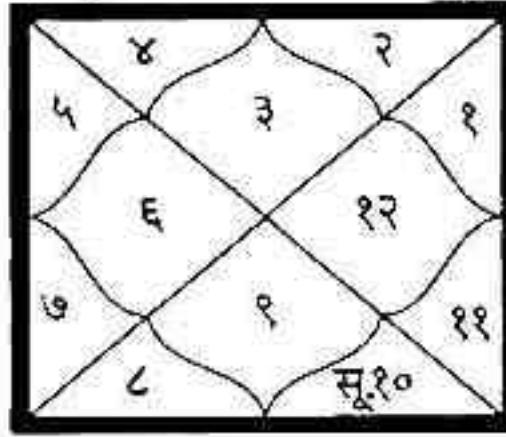
जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्न: नवमभाव: सूर्य

३३१

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने शत्रु शनि की कुंभ राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक कठिन परिश्रम द्वारा अपने भाग्य की उन्नति तथा कुछ लापरवाही के साथ धर्म का पालन करता है। साथ ही उसे भाई-बहन के संबंधों से भी असंतोष रहता है। यहां से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से अपनी सिंह राशि में तृतीयभाव को देखता है, अत: जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई के द्वारा भी कुछ सहयोग प्राप्त होता है ऐसा जातक हिम्मती, उत्साही, परिश्रमी, तेजस्वी तथा प्रभावशाली होता है।
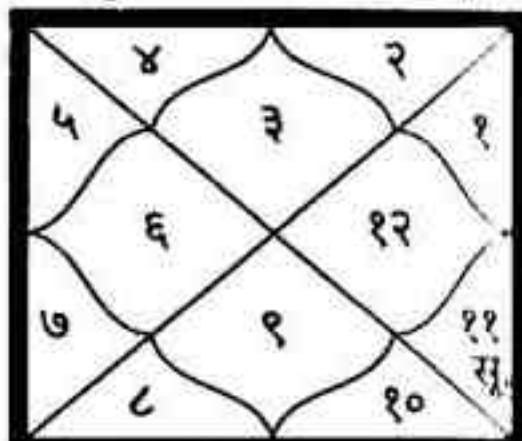
जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्न: दशमभाव: सूर्य

३३२

'दसवें केंद्र' राज्य तथा पिता के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक अपने पिता की श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त करता है तथा राज्य के क्षेत्र में भी लाभ एवं सम्मान अर्जित करता है तथा पराक्रम में भी वृद्धि होती है। यहां से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की कन्या राशि वाले चतुर्थभाव को देखता है, अत: वह अपने पराक्रम द्वारा सुख की वृद्धि करता है। तथा माता, भूमि भवन एवं संपत्ति के पक्ष में भी संतुष्ट एवं सुखी बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्न: एकादशभाव: सूर्य

३३३
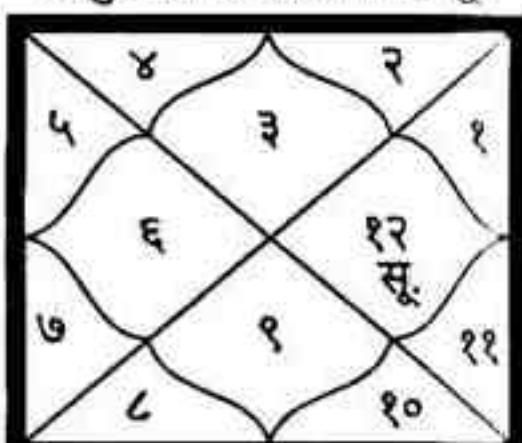
ग्यारहवें लाभ भवन में मेष राशि पर स्थित उच्च के सूर्य के प्रभाव से जातक के पराक्रम में विशेष वृद्धि होती है और वह उसके द्वारा पर्याप्त धन अर्जित करता है। साथ ही उसे भाई-बहनों की शक्ति भी मिलती है और उत्साह एवं उमंग की प्राप्ति होती है। यहां से सूर्य सातवीं नीचदृष्टि से शुक्र की तुला राशि में पंचम-भाव को देखता है, अत: संतानपक्ष के सुख में कुछ कमी आती है तथा विद्याध्ययन में भी रुकावटें पड़ती हैं। ऐसा जातक बड़ा परिश्रमी, हिम्मती एवं स्वभाव का कुछ रूखा होता है।
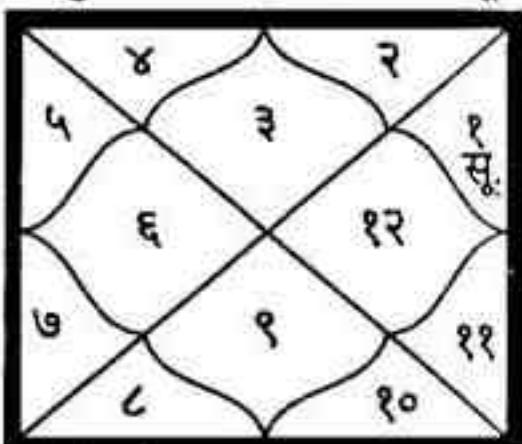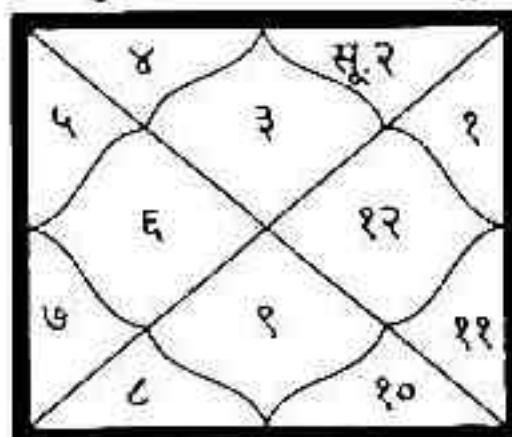
जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'सूर्य' स्थित हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्न: द्वादशभाव: सूर्य

३३४

बारहवें व्यय भवन में अपने शत्रु शुक्र की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परंतु बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ होता है। उसे भाई बहन के सुख तथा पराक्रम के क्षेत्र में भी हानि उठानी पड़ती है। सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में षष्ठभाव में देखता है, अत: जातक शत्रु पक्ष में प्रभाव कायम रखता है। ऐसा जातक भीतरी तौर पर कमजोरी लिए रहता है, उसे छिपाकर प्रकट रूप में हिम्मत दिखाता है तथा परिश्रमी होता है।
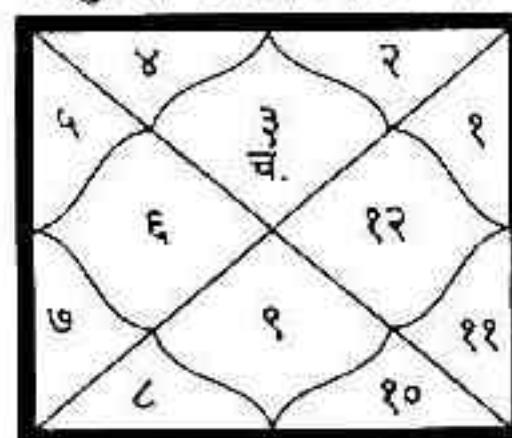
'मिथुन' लग्न में 'चंद्रमा' का फल

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्न: प्रथमभाव: चंद्रमा

३३५

पहले केंद्र तथा शरीर में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रताप से जातक शारीरिक-शक्ति एवं मनोबल के योग से धनोपार्जन करने में कुशल होता है। साथ ही उसे कौटुंबिक-सुख भी यथेष्ट मात्रा में प्राप्त होता है। यहां से चंद्रमा सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में सप्तभाव को देखता है, अत: जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष से भी अच्छी शक्ति प्राप्त होती है। ऐसा जातक सुंदर, धनी, सुखी, प्रतिष्ठित तथा सुंदर पत्नी वाला होता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्न: द्वितीयभाव: चंद्रमा

३३६
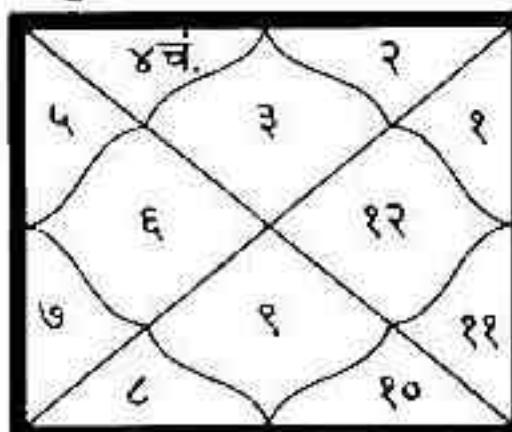
दूसरे धन तथा कुटुंब स्थान में अपनी कन्या राशि स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक के धन एवं कौटुंबिक सुख में वृद्धि होती है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं दृष्टि से शत्रु शनि की मकर राशि में अष्टमभाव को देखता है, अत: जातक को अपने दैनिक जीवन में कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा तथा पुरातत्व के संबंध में भी कुछ दैनिक जीवन में कुछ हानि होगी। ऐसा जातक अपने मन को धनोपार्जन की दिशा में लगाए रखता है तथा लाभ प्राप्त करता है। वह यशस्वी एवं सुखी होते हुए भी मानसिक रूप से कुछ चिंतित बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

तीसरे पराक्रम एवं भाई-बंधु के स्थान में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक के पुरुषार्थ में वृद्धि होती है तथा भाई-बहनों को सुख भी प्राप्त होता है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की कुंभ राशि में नवमभाव को देखता है, जातक को भाग्योन्नति में कुछ कठिनाइयां भी आती है तथा धर्म के पक्ष में भी कमी रहती है। ऐसा जातक धर्म से धन को अधिक महत्त्व देता है। वह पुरुषार्थी धनी, प्रतिष्ठित तथा यशस्वी भी होता है।

मिथुन लग्न: तृतीयभाव: चंद्र॥

३३७

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्न: चतुर्थभाव:चंद्र॥
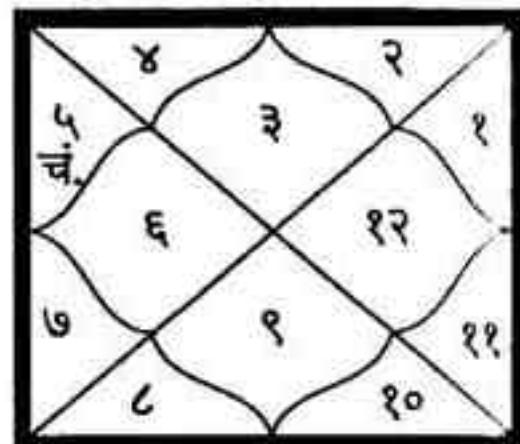
चौथे केंद्र, माता तथा सुख स्थान में अपने मित्र बुध की मकर राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक को माता के सुख में तो कमी आती है; परंतु धन, भूमि, संपत्ति तथा कुटुंब का सुख प्राप्त होता है। यहां से चंद्रमा सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की मीन राशि में दशमभाव को देखता है, अत: जातक को पिता एवं राज्य के द्वारा सुख तथा सम्मान की प्राप्ति होती है। साथ ही व्यवसाय में सफलता एवं धन की उन्नति के योग भी बनते है। ऐसा जातक धनी, सुखी तथा प्रभावशाली होता है।

३३८

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पांचवे त्रिकोण तथा विद्या व संतान के भाव में अपने सामान्य मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक को संतान के सुख में तो कुछ रुकावटें आती हैं परंतु विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है और वह अपनी विद्या-बुद्धि के द्वारा धन भी उपार्जित करता है। यहां से चंद्रमा सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की मेष राशि में एकादशभाव को देखता है, अत: जातक की आमदनी अच्छी रहती है और वह ऐश्वर्यशाली, प्रतिष्ठित, सुखी, धनी तथा चतुर होता है।
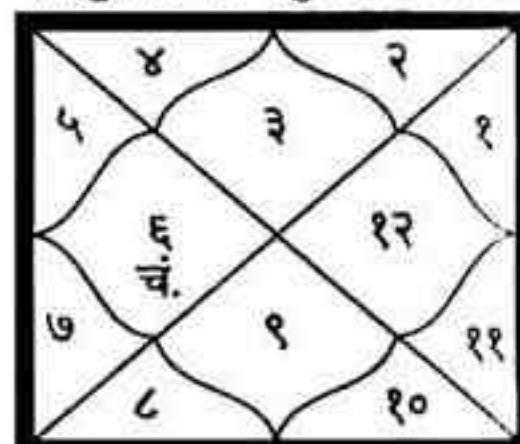
मिथुन लग्न: पंचमभाव: चंद्र॥

३३९

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्न: षष्ठभाव: चंद्रमा

३४०
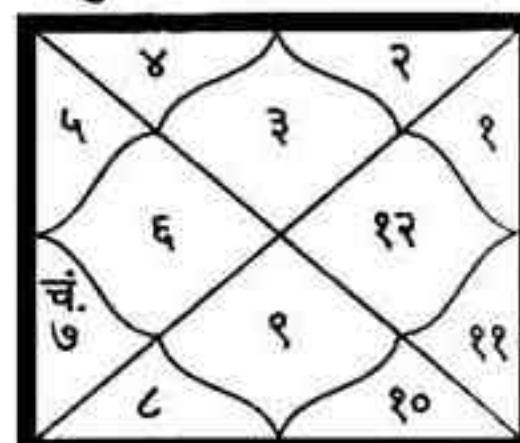
छठे शत्रु एवं रोग के स्थान में अपने मित्र मंगल की राशि वृश्चिक पर स्थित नीच के प्रभाव से जातक को धन संचय के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है तथा शत्रु पक्ष द्वारा हानि पहुंचने की सम्भावना भी रहती है। यहां से चंद्रमा सातवीं दृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में द्वादशभाव को देखता है, अतः जातक का खर्च अधिक रहता है, जिसके कारण धन का संचय नहीं हो पाता परंतु बाहरी स्थानों से लाभ होता है। ऐसी ग्रह स्थिति वाले जातक को ऋणी भी बनना पड़ता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्न: सप्तमभाव: चंद्रमा

३४१
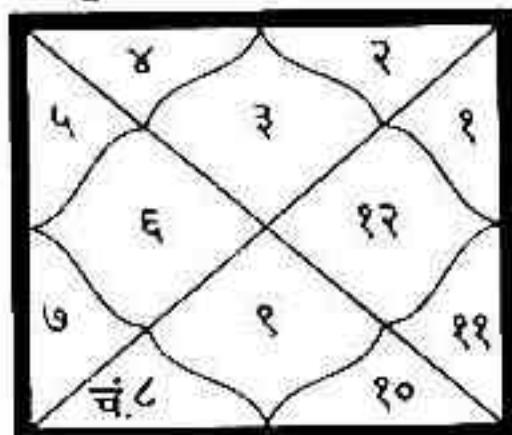
सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र गुरु की धन राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से सुख के साधनों में कुछ रुकावटों के साथ सफलता की प्राप्ति होती है तथा विवाहोपरांत धन, व्यवसाय एवं भोगादि की उन्नति होती है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक शारीरिक सौंदर्य एवं प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है तथा धन-वृद्धि के लिए निरंतर प्रयत्नशील बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्न: अष्टमभाव: चंद्रमा

३४२

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व के पक्ष में कुछ परेशानी बनी रहती है तथा धन-कोष एवं कुटुंब के सुख में भी बाधा पड़ती है। दैनिक जीवन में परेशानियों का सामना करते हुए भी जातक प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं दृष्टि से अपनी ही कर्क राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अतः जातक को धन प्राप्ति के साधन मिलते रहते हैं तथा कुटुंब की उन्नति के लिए विशेष परिश्रम भी करना पड़ता है।
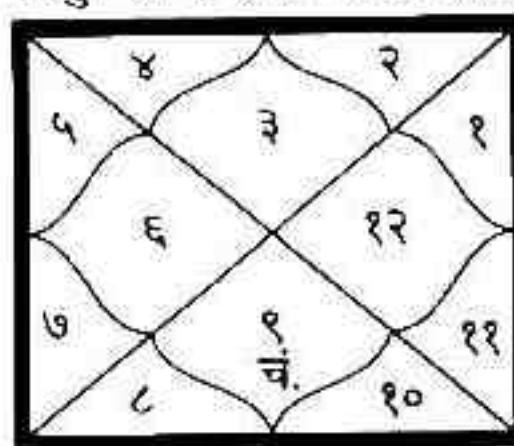
जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्न: नवमभाव: चन्द्रमा

३४३
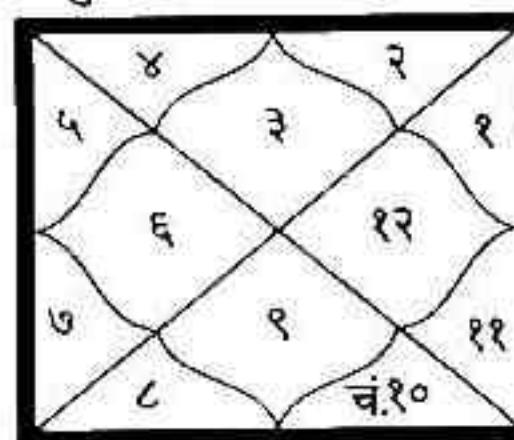
नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने शत्रु शनि की कुंभ राशि में स्थित शनि के प्रभाव से जातक को भाग्य पक्ष में कुछ असंतोष के साथ लाभ होता है और वह धन की वृद्धि के लिए धर्म का पालन करता है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में तृतीयभाव को देखता है अत: जातक को भाई-बहन का सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम में भी वृद्धि होती है। संक्षेप मे, ऐसा जातक धनी, सुखी यशस्वी, प्रभावशाली, पराक्रमी, हिम्मतदार तथा भाई-बहनों का सुख पाने वाला होता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

मिथुन लग्न: दशमभाव: चन्द्रमा

४ २ ५ ३ १ ६ १२ चं. ७ ९ ११ ८ १०

३४४
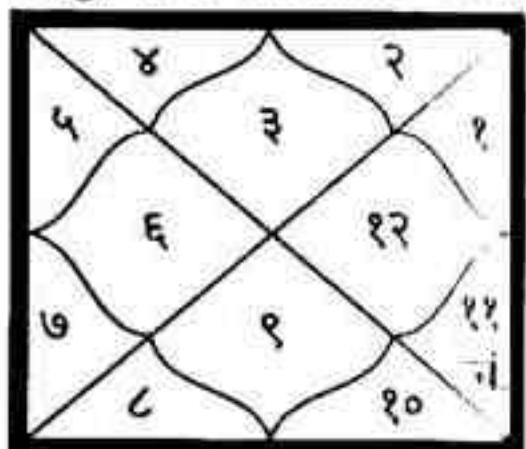
दसवें केंद्र, पिता तथा राज्य के भवन में अपने मित्र गुरु की मिथुन राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक को पिता एवं राज्य द्वारा लाभ, सुख, धन तथा मान-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है। यहां से चंद्रमा सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की कन्या राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अत: उसे माता, भूमि, मकान एवं घरेलू सुखों की प्राप्ति होती है, परंतु धन की उन्नति में उसे कुछ घिराव का-सा भी अनुभव होता रहता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्न: एकादशभाव: चन्द्रमा

३४५

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र मंगल की राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक को धन का विशेष लाभ होता है। साथ ही कुटुंब का सुख भी मिलता है। यहां से चंद्रमा सातवीं मित्रदृष्टि से शुक्र की तुला राशि में पंचमभाव को देखता है, अत: जातक को संतान, विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त होती है। संक्षेप में, ऐसा जातक संतति-वान्, विद्वान् बुद्धिमान, सुखी, धनी, प्रतिष्ठित, यशस्वी एवं कुटुंब का सुख पाने वाला होता है।
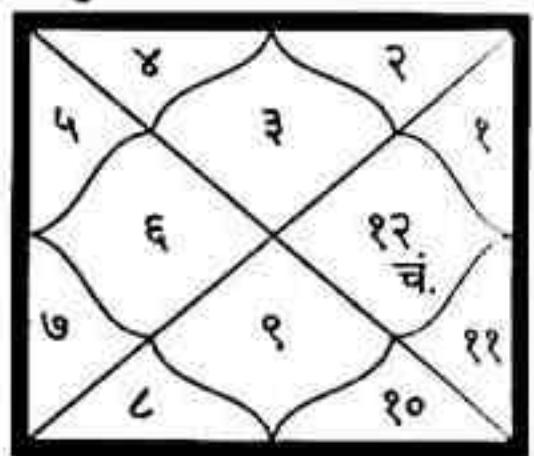
जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
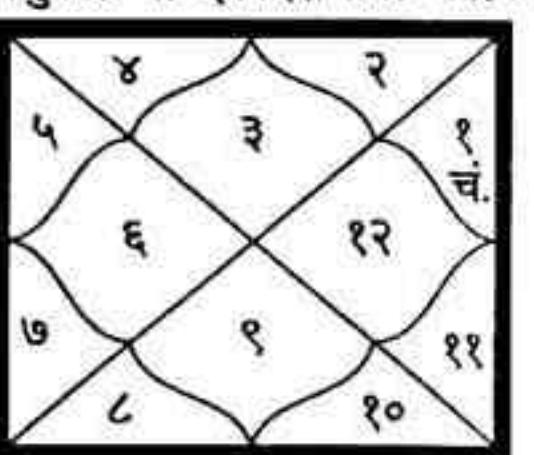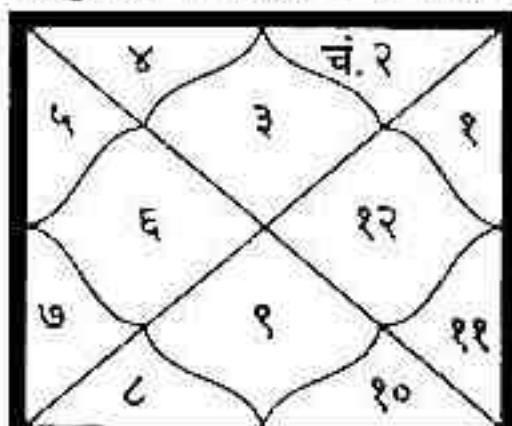
बारहवें व्यय भाव में शुक्र की वृष राशि पर स्थित के चंद्रमा के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ प्राप्त होता साथ ही कुटुंब की शक्ति में कुछ कमी बनी रहती यहां से चंद्रमा सातवीं नीचदृष्टि से अपने शत्रु पक्ष में झुककर अपना काम निकालना पड़ता है, साथ ही झगड़े आदि के कारण मन में कुछ अशांति भी बनी है।

मिथुन लग्न: द्वादशभाव: चन्द्रमा

३४६

'मिथुन' लग्न में 'मंगल' का फल
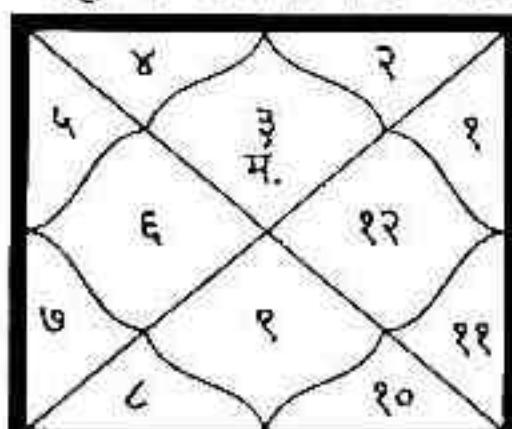
जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केंद्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र बुध की पर स्थित प्रभाव से जातक को शारीरिक श्रम द्वारा का यथेष्ट लाभ होता है तथा शत्रु पक्ष में भी विजय होती है। यहां से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव देखता है, अत: माता तथा सुख के पक्ष में कुछ में असंतोषयुक्त लाभ होता है। सातवीं दृष्टि के सप्तमभाव पड़ने से स्त्री के संबंध में कुछ रोग तथा परेशानी होती एवं परिश्रम द्वारा व्यवसाय से लाभ होता है। आठवीं दृष्टि से अष्टमभाव मे पड़ने से जातक की आयु में होती है तथा पुरातत्त्व का भी लाभ होता है। ऐसा जातक क्रोधी, परिश्रमी, झगड़ालू तथा लाभ कमाने वाला होता है।

मिथुन लग्न: प्रथमभाव: मंगल

३४७

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
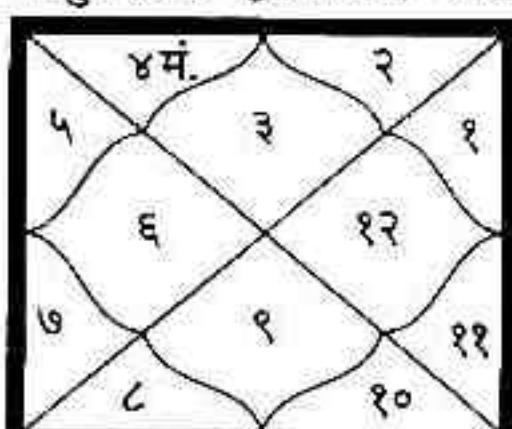
दूसरे धन-कुटुंब के स्थान में अपने मित्र चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित नीच के मंगल प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुंब के संबंध में हानि पड़ती है तथा शत्रुओं द्वारा उत्पन्न किए गए झगड़ों भी नुकसान उठाना होता है। धन हानि के कार्य जुए- द्वारा भी हो सकते है। यहां से बुध चौथी दृष्टि से पंचमभाव को देखता है, अत: संतान के पक्ष में भी कुछ होता है तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में गुप्त युक्तियों द्वारा होता है। सातवीं उच्चदृष्टि से अष्टमभाव को देखने कारण आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। आठवीं शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखने से

मिथुन लग्न: द्वितीयभाव: मंगल

३४८

भाग्योन्नति में कठिनाई पड़ती है तथा धर्म में सच्ची श्रद्धा नहीं होती। ऐसा जातक धन पा॥
के लिए कठिन परिश्रम करता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' ॥
'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहि॥

मिथुन लग्न: तृतीयभाव: मंगल

४		२
मं. ५	३	१
६		१२
७	९	११
८		१०

३४९
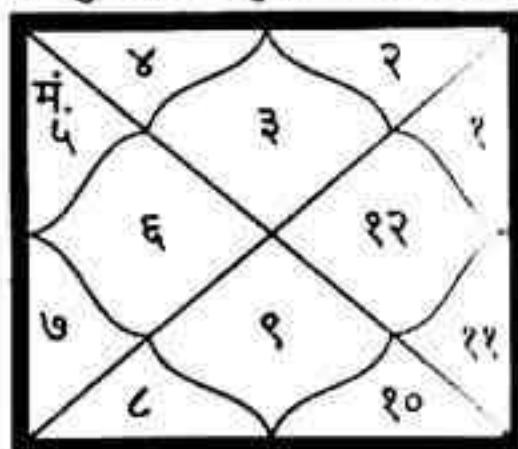
तीसरे पराक्रम एवं भाई के स्थान में अपने मित्र सूर्य की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को भाई-बहन की कुछ परेशानी के साथ सहयोग तथा सुख प्राप्त होता है एवं पराक्रम की वृद्धि होती है। यहां से मंगल चौथी दृष्टि से स्वराशि के षष्ठभाव को देखता है, अत: शत्रु पक्ष पर विजय प्राप्त करता है और उनसे लाभ भी उठाता है, सातवीं शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण भाग्य तथा धर्म के पक्ष में सामान्य लाभ होता है तथा आठवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण पिता तथा राज्य पक्ष से धन, सम्मान, यश एवं प्रभाव की वृद्धि होती है और जातक अपने परिश्रम द्वारा धनोपार्जन के क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त करता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' ॥
'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए

मिथुन लग्न: चतुर्थभाव: मंगल

३५०

चौथे केंद्र, माता, भूमि एवं स्थान के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को माता के पक्ष में सामान्य वैमनस्ययुक्त लाभ प्राप्त होता है तथा भूमि, मकान आदि के सुख में कुछ परेशानियों के साथ लाभ होता है। यहां से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखता है। अत: स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष से भी कुछ झंझट के साथ लाभ होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण पिता एवं राज्य के क्षेत्र से परिश्रम द्वारा लाभ एवं यश की प्राप्ति होती है तथा आठवीं दृष्टि से एकादशभाव को अपनी मेष राशि में देखने के कारण आमदनी अच्छी होती है। संक्षेप में, जातक को कुछ परेशानियों के साथ परिश्रम द्वारा सभी क्षेत्रों में लाभ एवं उन्नति के योग प्राप्त होते हैं।
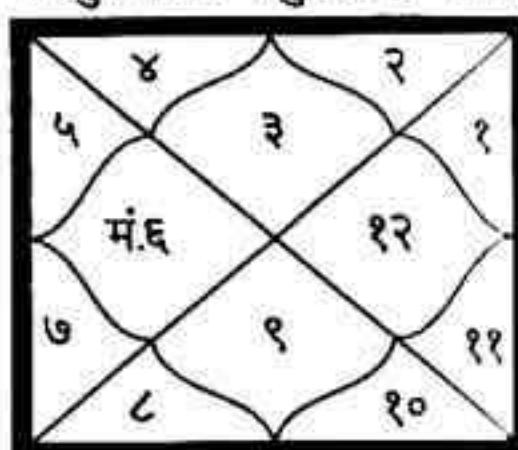
जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' ॥
'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए

मिथुन लग्न: पंचमभाव: मंगल

३५१

पांचवें त्रिकोण एवं विद्या, बुद्धि तथा संतान के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को संतान के पक्ष में सामान्य वैमनस्य के साथ लाभ होता है तथा परिश्रम के द्वारा विद्या-बुद्धि की प्राप्ति होती है। यहां से मंगल चौथी उच्चदृष्टि से अष्टमभाव को देखता है, अतः आयु की वृद्धि तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है एवं दैनिक जीवन प्रभावपूर्ण रहता है। सातवीं दृष्टि से राशि के एकादशभाव में पड़ने से जातक गुप्त युक्तियों तथा परिश्रम द्वारा पर्याप्त लाभ कमाता है एवं आठवीं दृष्टि व्ययभाव में पड़ने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ होता है। जातक को पेट संबंधी बीमारियां भी बनी रहती हैं। संक्षेप में, ऐसा जातक परिश्रम द्वारा तथा सुखी होता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्न: षष्ठभाव: मंगल

३५२
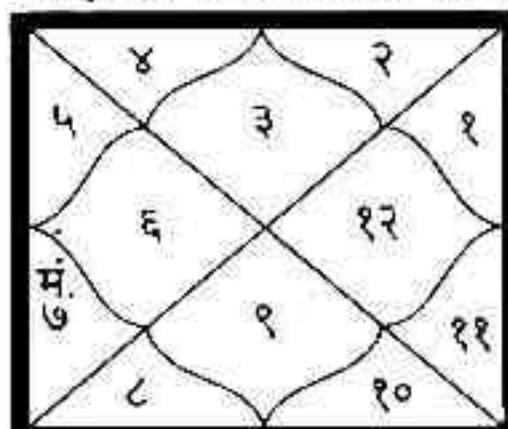
छठे शत्रु एवं रोग भवन में अपनी ही वृश्चिक राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष पर अत्यंत प्रभाव रखता है तथा कठिन परिश्रम द्वारा अपनी आमदनी की भी वृद्धि करता है। उसे झगड़े-झंझटों के मामलों तथा ननिहाल के पक्ष से भी लाभ प्राप्त होता है। यहां से मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखता है, अतः भाग्य एवं धर्म के पक्ष में कुछ कमी एवं असंतोष रहता है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ मिलता है। आठवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण जातक शरीर से परिश्रमी होता है तथा परिश्रम द्वारा ही धनोपार्जन करता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्न: सप्तमभाव: मंगल

३५३
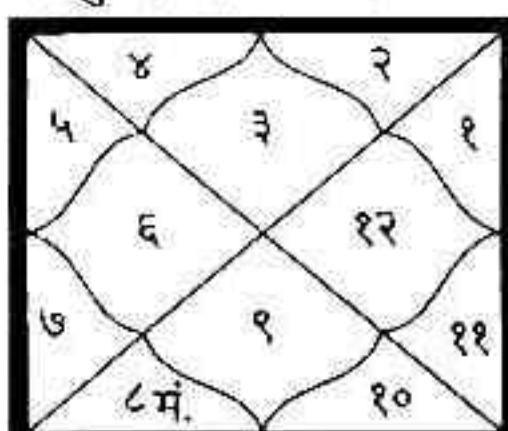
सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से कुछ झंझटों के साथ व्यावसायिक क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है तथा स्त्रीपक्ष में भी रोग एवं झंझटों के साथ लाभ होता है। यहां से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखता है, अतः जातक को पिता तथा राज्य के द्वारा भी कुछ परेशानियों के साथ धन, मान एवं सफलता की प्राप्ति होती है। सातवीं

मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण जातक की शारीरिक शक्ति में वृद्धि होती है, परन्तु रक्त-विकार आदि रोग भी होते हैं। आठवीं नीचदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण धन संग्रह में कमी रहती है, जिसके कारण दुःख का अनुभव होता है। साथ ही, कुटुंब के कारण भी क्लेश प्राप्त होता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्नः अष्टमभावः मंगल

३५४
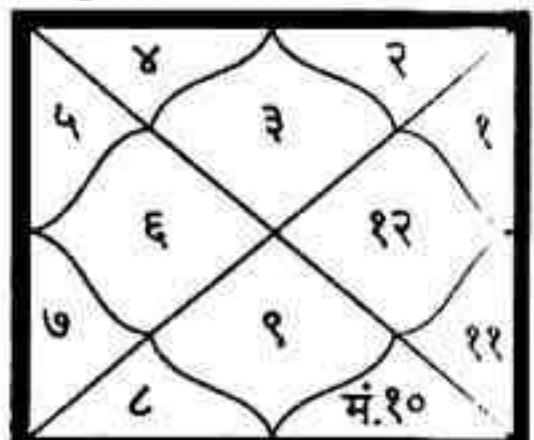
आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में शत्रु शनि की मकर राशि में स्थित उच्च के मंगल के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का भी लाभ होता है। साथ ही शत्रु पक्ष में भी कुछ परेशानी के बाद सफलता मिलती है। यहां से मंगल चौथी दृष्टि से अपनी ही मेष राशि में एकादशभाव को देखता है, अतः परिश्रम द्वारा धन का लाभ होता है। जीवन-निर्वाह के लिए बंधी हुई आमदनी का योग रहता है। सातवीं नीचदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण धन-संग्रह में कमी तथा कुटुंब से क्लेश रहता है। आठवीं दृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहन के संबंध में कुछ परेशानी के साथ लाभ प्राप्त होता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
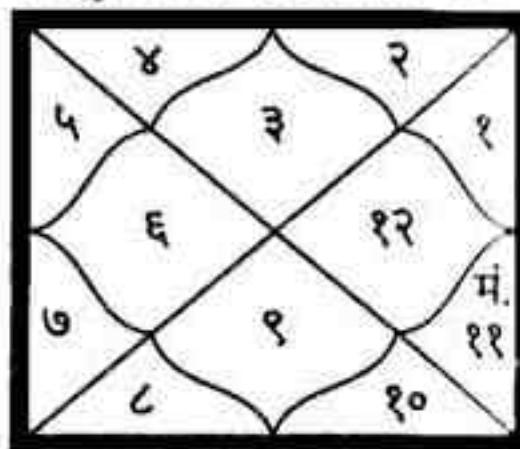
मिथुन लग्नः नवमभावः मंगल

३५५

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने शत्रु शनि की कुंभ राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति परिश्रम एवं कुछ कठिनाइयों के बाद होती है तथा अरुचिकर रूप से धर्म का पालन भी होता है। शत्रु पक्ष में भी कुछ कठिनाइयों के बाद सफलता प्राप्त होती है। यहां से मंगल चौथी दृष्टि से द्वादशभाव को देखता है, अतः खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ होता है सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहनों का सुख मिलता है। आठवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता तथा भूमि, मकान आदि के सुख में कुछ कठिनाइयों के बाद सफलता मिलती है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केंद्र, राज्य तथा पिता के भवन में अपने मित्र की मीन राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को द्वारा पिता तथा राज्य के क्षेत्र में लाभ तथा यश की होती है। साथ ही शत्रु पक्ष में भी बड़ा प्रभाव बना है। यहां से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को है, अत: शारीरिक शक्ति में वृद्धि होती है तथा -कभी रोग का शिकार भी होना पड़ता है। सातवीं दृष्टि चतुर्थभाव को देखने के कारण माता तथा भूमि आदि में कुछ परेशानियों के साथ सफलता मिलती है। वीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण संतानपक्ष से वैमनस्ययुक्त लाभ होता है तथा के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है। ऐसे जातक की आमदनी अच्छी रहती है।

मिथुन लग्न: दशमभाव: मंगल

३५६

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मेष राशि पर स्थित के प्रभाव से जातक को धन का लाभ पर्याप्त तथा रूप से प्राप्त होता है, परंतु मंगल के शत्रु स्थानाधिपति के कारण कभी-कभी कुछ कठिनाइयां उठानी पड़ती यहां से मंगल चौथी नीचदृष्टि से द्वितीयभाव को देखता अत: धन का संग्रह नहीं हो पाता तथा कुटुंब के मामलों भी कष्ट मिलता है। सातवीं दृष्टि से पंचमभाव को के कारण संतानपक्ष से कुछ परेशानी के साथ लाभ है तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में सफलता मिलती है। वीं दृष्टि से स्वयं अपनी वृश्चिक राशि में षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु पक्ष पर बना रहता है और शत्रुओं तथा झगड़ों द्वारा लाभ भी मिलता है।

मिथुन लग्न: एकादशभाव: मंगल

३५७

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में अपने सामान्य मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित मंगल के जातक खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ भी होता है। यहां से मंगल थी मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखता है, अत: पराक्रम वृद्धि होती है तथा भाई-बहन के पक्ष से भी कुछ शानियों के बाद लाभ होता है। सातवीं दृष्टि से अपनी वृश्चिक राशि में षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु से हानि और लाभ दोनों ही मिलते हैं तथा मामा पक्ष ोर रहता है। आठवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने कारण परिश्रम द्वारा लाभ होता है तथा स्त्रीपक्ष से कुछ शानी बनी रहती है। ऐसा ग्रह स्थिति वाले जातक को नेंद्रिय रोग हो सकते हैं।

मिथुन लग्न: द्वादशभाव: मंगल

३५८

मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण जातक की शारीरिक शक्ति में वृद्धि होती है, पर
रक्त-विकार आदि रोग भी होते हैं। आठवीं नीचदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण ध
संग्रह में कमी रहती है, जिसके कारण दुःख का अनुभव होता है। साथ ही, कुटुंब से
भी क्लेश प्राप्त होता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव'
में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में शत्रु शनि की मकर राशि में स्थित उच्च के मंगल के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का भी लाभ होता है। साथ ही शत्रु पक्ष में भी कुछ परेशानी के बाद सफलता मिलती है। यहां से मंगल चौथी दृष्टि से अपनी ही मेष राशि में एकादशभाव को देखता है, अतः परिश्रम द्वारा धन का लाभ होता है। जीवन-निर्वाह के लिए बंधी हुई आमदनी का योग रहता है। सातवीं नीचदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण धन-संग्रह में कमी तथा कुटुंब से क्लेश रहता है। आठवीं दृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहन के संबंध में कुछ परेशानी के साथ लाभ प्राप्त होता है।

मिथुन लग्नः अष्टमभावः मंगल

३५४

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने शत्रु शनि की कुंभ राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति परिश्रम एवं कुछ कठिनाइयों के बाद होती है तथा अरुचिकर रूप से धर्म का पालन भी होता है। शत्रु पक्ष में भी कुछ कठिनाइयों के बाद सफलता प्राप्त होती है। यहां से मंगल चौथी दृष्टि से द्वादशभाव को देखता है, अतः खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ होता है सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहनों का सुख मिलता है। आठवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता तथा भूमि, मकान आदि के सुख में कुछ कठिनाइयों के बाद सफलता मिलती है।

मिथुन लग्नः नवमभावः मंगल

३५५

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केंद्र, राज्य तथा पिता के भवन में अपने मित्र की मीन राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को द्वारा पिता तथा राज्य के क्षेत्र में लाभ तथा यश की होती है। साथ ही शत्रु पक्ष में भी बड़ा प्रभाव बना है। यहां से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को ता है, अतः शारीरिक शक्ति में वृद्धि होती है तथा -कभी रोग का शिकार भी होना पड़ता है। सातवीं दृष्टि तुर्थभाव को देखने के कारण माता तथा भूमि आदि सुख में कुछ परेशानियों के साथ सफलता मिलती है।

मिथुन लग्न: दशमभाव: मंगल

३५६

वीं मित्रदृष्टि से पष्ठभाव को देखने के कारण संतानपक्ष से वैमनस्ययुक्त लाभ होता है तथा के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है। ऐसे जातक की आमदनी अच्छी रहती है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मेष राशि पर स्थित ल के प्रभाव से जातक को धन का लाभ पर्याप्त तथा यी रूप से प्राप्त होता है, परंतु मंगल के शत्रु स्थानाधिपति के कारण कभी-कभी कुछ कठिनाइयां उठानी पड़ती । यहां से मंगल चौथी नीचदृष्टि से द्वितीयभाव को देखता अतः धन का संग्रह नहीं हो पाता तथा कुटुंब के मामलों भी कष्ट मिलता है। सातवीं दृष्टि से पंचमभाव को ने के कारण संतानपक्ष से कुछ परेशानी के साथ लाभ है तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में सफलता मिलती है।

मिथुन लग्न: एकादशभाव: मंगल

३५७

वीं दृष्टि से स्वयं अपनी वृश्चिक राशि में पष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु पक्ष पर बना रहता है और शत्रुओं तथा झगड़ों द्वारा लाभ भी मिलता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'गल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में अपने सामान्य मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित मंगल के जातक खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ भी होता है। यहां से मंगल वी मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखता है, अतः पराक्रम वृद्धि होती है तथा भाई-बहन के पक्ष से भी कुछ शानियों के बाद लाभ होता है। सातवीं दृष्टि से अपनी वृश्चिक राशि में पष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु से हानि और लाभ दोनों ही मिलते हैं तथा मामा पक्ष मजोर रहता है। आठवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने कारण परिश्रम द्वारा लाभ होता है तथा स्त्रीपक्ष से कुछ शानी बनी रहती है। ऐसा ग्रह स्थिति वाले जातक को नेंद्रिय रोग हो सकते हैं।

मिथुन लग्न: द्वादशभाव: मंगल

३५८

'मिथुन' लग्न में 'चंद्रमा' का फल

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए-

मिथुन लग्नः प्रथमभावः बुध

४ २ ५ ३ बु. १ ६ १२ ७ ९ ११ ८ १०

पहले केंद्र, एवं शरीर स्थान में स्वराशि मिथुन स्थित बुध के प्रभाव से जातक को शारीरिक सौंदर्य एवं स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है, साथ ही उसे माता, भूमि, मकान तथा घरेलू सुख भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होते हैं। ऐसा जातक विवेकी एवं यशस्वी भी होता है। यहां से बुध सातवीं दृष्टि से सप्तमभाव को देखता है। यहां स्त्री का विशेष सुख प्राप्त होता है एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। ऐसा जातक सुखी, शांत, धनी तथा प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने वाला होता है।
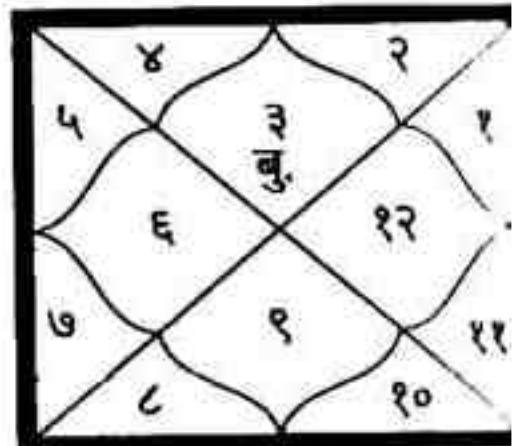
जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए

मिथुन लग्नः द्वितीयभावः बुध

दूसरे धन एवं कुटुंब के भवन में अपने शत्रु चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक धन एवं कुटुंब के सुख को प्राप्त करता है, परंतु शारीरिक सुख में कुछ कमी रहती है। उसे माता के सुख में भी कुछ कमी रहती है परंतु भूमि संपत्ति आदि का सुख प्राप्त होता है। यहां से बुध सातवीं दृष्टि से अपने मित्र शनि को मकर राशि में अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'बधु' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनु समझना चाहिए—

मिथुन लग्नः तृतीयभावः बु
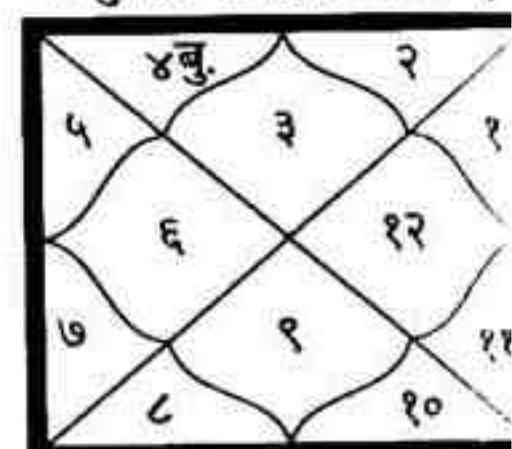
तीसरे पराक्रम एवं भाई-बहन के घर में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहन का सुख भी प्राप्त होता है। साथ ही जातक को माता के सुख एवं भूमि, मकान आदि की उपलब्धि भी होती है। ऐसा जातक बहादुर तथा हिम्मतवाला होता है। यहां से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को शनि की कुंभ राशि में देखता है, अतः जातक अपने पुरुषार्थ एवं विवेक द्वारा भाग्य की उन्नति तथा धर्म का पालन भी करता है। ऐसा जातक का स्वभाव सम-सज्जन, यशस्वी तथा धैर्यवान होता